© ››ææ×››ðÜÀÙÜãé¡Ù©

GAAM GEL CHHALAHUN
A Maithili novel by Satyanand Pathak
Price : Rs. 275.00

›æ×››ðÜÀÜÜãé¡U

सत्यानंद पाठक

मनोरमा प्रकाशन
गुवाहाटी

GAAM GEL CHHALAHUN

A Maithili novel by Satyanand Pathak

मूल्य : 275 टका

प्रथम संस्करण : जून 2004

प्रकाशक : **मनोरमा प्रकाशन**
द्वारा/**श्रीमती मंजु पाठक**
जनपथ, नवीननगर
गुवाहाटी–781024

आवरण सज्जा : **पुष्पा झा**

टंकण (डीटीपी) : **पी.एन. झा,** साउथ सरणिया, उलूबाड़ी, गुवाहाटी–7

आवरण संकल्पना : **रविकांत नीरज**

मुद्रक : **भवानी आफसेट एंड इमेजिंग सिस्टम्स प्रा. लि.**
राजगढ़ रोड, गुवाहाटी–7



कलम उठौलहुं कि
इ बाजल,
'बाबू गोड़ लगैत छी।'
बाबू, इ जीवन अहीं के देल अछि
इ जीवन कथा अहीं के समर्पित।

अहींक
सत्यानंद

प्राबेशन

जखने कौआ कुचरए तऽ दाई कहथिन–‘हे बौआ आबि रहल छथि।’ दाईक ई सतर्क वाणी आ उत्फुल्लित मोन कहियो–कहियो सत्य भऽ जाइक। बाबू, ददा, कका मे सँ कियो नहि कियो गाम आबि जाइत छलाह।

ओना कौआक की छैक? कुचरनाई तऽ ओकर स्वभाव छैक। पेट भरल रहैक तखनो कुचरत आ भूख लागल होइक तखनो कुचरत। हर्ष मे कुचरत, वियोग मे कुचरत। कुनू घटना विशेष पर कुचरत, अपन लोक सँ बतियाबऽ लेल कुचरत। हम सभ बजैत छी, ओ कुचरैईए। कौआ सन उपेक्षित जीवक कुचरनाई के मनुष्य अपन आशा–आकांक्षा सँ जोड़ि लेने अछि।

कौआ के कुचरब पर दाईक प्रतिक्रिया सँ मोन मे अनेक तरहक विचार उठैत छल। बाबू, ददा, कका सभ ‘बाहर’ किएक जाइत छथि। गामे पर किएक नहि रहैत छथि...आदि आदि।

एहि प्रश्न सभक उत्तर तत्काल नहि भेटैत छल। तखन कुनू प्रश्नक उत्तर खोजबाक हेतु चिंतन करबाक वयस नहि छल। तैं प्रश्न आयल–गेल। आब ई सभ प्रश्न पर चिंता करैत छी तऽ ततेक गहीर मे उतरय पड़ैत अछि जे तकर थाह नहि पाबि आकुल भऽ जाइत छी। प्रस्तुत उपन्यास **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜã颕UÓ** मे ई आकुलता तऽ भेटबे करत, संगहि प्रयास अछि जे संबंधित अनेक परिदृश्य सँ अपने कें साक्षात कराबी।

गाम सँ ‘बाहर’ रहय वाला लोक सभ समय–समय पर गाम अबैत–जाइत रहैत छथि। ई एकटा सतत् अनवरत रहय वाला प्रक्रिया भऽ गेल अछि, जाहि सँ हम–अहां सभ गोटे प्रभावित छी। गाम अयबाक–जयबाक मे बहुत रास बात अछि। एहि मे जीवनक अनेक रास घटनाक्रम आ रंग–बिरंगक परिस्थिति समाहित अछि। सभक अपन–अपन दृष्टिकोण छनि आ जीवाक अपन–अपन ढंग। एकर उपरांतो हम सभ कतहु नहि कतहु एक बिंदु पर आबि ठहरि जाइत छी। **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜã颕UÓ** मे वैह बिंदु कें खोजबाक एकटा विनम्र प्रयास अछि।

हमर सौभाग्य अछि जे सामाजिक संगठन मे उठ–बैस रहलाक कारणे चिंतनशील लोक सभक संगति भेटल। **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜã颕UÓ** कें दूटा किस्त ‘पूर्वोत्तर मैथिल’ मे प्रकाशित भेल। संभावित प्रतिक्रिया सँ आशंकित छलहुं। तकर प्रमुख कारण ई जे ‘पूर्वोत्तर मैथिलक’

प्रसार खूब विस्तृत भऽ गेल छैक। आम पाठक सँ लऽ कऽ मैथिली भाषा साहित्यक मर्मज्ञ लोकनि सभक बीच ई अपन पैठ बना लेने अछि। **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** पर विद्वान लोकनिक की प्रतिक्रिया हैतैन, की कहताह? मुदा पूर्वोत्तर मैथिल मे प्रकाशित **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** के दू टा किस्तक संदर्भ मे हमरा जे प्रतिक्रिया भेटल, ताहि सँ हमर उत्साह कय गुणा बढ़ि गेल। मिथिलांचल सँ अनेक पत्र आ फोन आयल। सभ पत्र-फोन मे **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** केर प्रशंसा छल। संगहि सलाह, मार्ग दर्शन सेहो।

एहि सभ सँ उत्साहित मित्र श्री रविकांत नीरज हमरा पर दबाव बनाबय लगलाह, जे एकरा पुस्तकाकार रूप दियौक। नीक भऽ रहल अछि। हम कहलियनि जे हम नवसिखुआ छी। लिखब सीखि रहल छी। अहां सभक सहयोग आ मार्ग दर्शन भेटत तऽ भविष्य मे एकरा पुस्तकाकार देबाक प्रयास करब। मुदा नीरजजी नहि मानलाह। कहलनि सभ भऽ जेतैक। *पानि के हेरा दियौक तऽ ओ ई नहि कहैत छैक जे हमरा बाट नहि देखल अछि। ओकर बाट बनि जाइत छैक। अहां लिखू। अहांक बाट हम स्पष्ट देखि रहल छी।* नीरजजीक दबाव हमर आत्मबल बनल आ हम दू किस्त सँ आगां बढ़लहुं। हम बुझैत छी जे अखबार मे काज करैत मौलिक लेखन सहज नहि छैक। अखबारक काज के लेल समय पर्याप्त नहीं होइत छैक तऽ अन्य रचना कार्य कोना होइतैक। तथापि मित्रक दबाव हमरा बाट देखौलक। अखबार पूर्वांचल प्रहरीक संपादक जी.एल. अग्रवालाक प्रति हम आभारी छी। मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति हुनका मे विशेष अनुराग छन्हि। गुवाहाटी मे मैथिली भाषी संस्थाक कुनू कार्यक्रम वा समारोह मे हिनक सहयोग अवश्य रहति छन्हि। पूर्वांचल प्रहरी मे मैथिलीक रचनाक प्रकाशन आदि मे ओ हमरा हरदम उत्साहित करैत रहलाह अछि।

पुस्तक लेखनक हेतु लेखक सभक व्यवस्थाक संबंध मे बहुत किछु सुनल छल। मुदा हमरा लेल ओहन व्यवस्था मे जायब संभव नहि छल। अखबार मे कुनू जिम्मेवार पद पर कार्य केनाईक अर्थ छैक ओझराओल जिनगी जिनाई। भरि दिन-भरि राति खबरि मे रहू। कार्यालय मे छी तहियो आ घऽर मे छी तहियो। अखबार छोड़ि कुनू काजक निर्धारित समय नहि भऽ सकैत अछि। तैं हेतु हम निश्चय कैलहुं जे पुस्तक लेखनक लेल व्यवस्थाक प्रपंच मे नहि पड़ब। जखन आ जतय मौका भेटत लीखब। गाम गेल छलहुंक रचना कुनू एक ठाम बैसि, कुनू कापी मे नहि भेल, अपितु जखन जतय समय भेटल ततहि जे कुनू कागज पर लिखलहुं। हमर पत्नी श्रीमती मंजु पाठक के बुझल छलन्हि जे समयक अभाव रहितहुं हम **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** लिखक निश्चय कयने छी। एहि काज मे हुनक सहयोग लीक से हटि कऽ रहल। ई धारणा छैक जे पत्नी अपन पति के एहि तरहक काज के सौतिया डाह रूपे बुझैत छथि। मुदा मंजु हमरा पुस्तक लिखक लेल सिर्फ प्रेरित नहि करथि अपितु घऽर मे उपयुक्त माहौल बनावथि, लिखक स्थान के सदिखनि ठीक राखथि आ जखन हम फुर्सत मे रहैत छलहुं तऽ लिखक लेल उकसाबथि। किताब लिखक लेल उकसाबय वाला मे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक अध्यक्ष, मैथिली भाषा साहित्यिक विशिष्ट अनुरागी आ हमर परम मित्र श्री प्रेमकांत चौधरी आ हुनक कनिया श्रीमती कल्पना चौधरी प्रमुख छथि। एहि दरम्यान दुनू गोटे सँ जखन गप्प भेल गाम गेल छलहुंक चर्चा बिना गप्प समाप्त नहि भेल।

हम अपन जीवन संघर्षक प्रेरणा पुरुष भैया श्री प्रेमानंद पाठक के मानैत छी। भैया सिलीगुड़ी मे रहैत छथि। बीच-बीच मे फोन पर हुनका सँ गप्प होइत रहल। गाम-घऽरक गप्पक अंत पुस्तक लेखन सँ होइत छल। अनुज सुनील कुमार पाठक कहलनि अपनेक अगिला किस्तक हमरा प्रतीक्षा रहैत अछि। मैथिली कथा साहित्यक एकटा विशिष्ट शैली के प्रबल संवाहक लक्ष्मण झा 'सागर' अपन व्यस्ततम समय मे सँ अवसर निकालि कएक बेर गुवाहाटी अयलाह आ पुस्तक पर चर्चा कऽ हमर मार्ग दर्शन कैलनि। तहिना अंग्रेजी भाषाक विद्वान आ मैथिली भाषा-साहित्य-संस्कृति के अनुरागी व्यक्ति डा. संजीव चौधरीक सहयोग के बिसरि नहि सकैत छी।

हमर सौभाग्य अछि जे हमरा अपन कार्यालय मे अभिन्न सहयोगी-सहकर्मी सभ भेटल छथि। श्री पवन कुमार झा 'मुरली', श्री रविशंकर रवि, श्री राजकुमार शर्मा, श्री संतोष कुमार अग्रवाल 'कल्पतरु', श्री अशोक कुमार झा, श्री प्रकाश कुमार सिंह झा, श्री ब्रजमोहन प्रसाद, श्री अशोक शर्मा 'अतुल', श्री जनार्दन चतुर्वेदी, श्री जितेंद्र कुमार ठाकुर, श्री बी.पी. सिंह आ श्री केदारनाथ दास प्रभृति मित्र लोकनि सँ गाम गेल छलहुंक संदर्भ मे सप्ताह मे एक-दू बैसार भऽ जाइत छल। हिनका सभ सँ अमूल्य सुझाव भेटल। मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक महासचिव श्री राजकुमार गिरि आ पूर्व महासचिव श्री चंद्रमोहन झा, यशस्वी साहित्यसेवी श्री प्रवीण भारद्वाज, युवा आ ऊर्जावान शिक्षक श्री रंजन आचार्य, डा. एन.के. मिश्रा, श्री राकेश शर्मा 'सुमन', श्री मदनकांत झा, श्री हरिगोविंद झा, भारतीय स्टेट बैंक मे शाखा प्रबंधक युवा मित्र श्री राजेश कुमार झा, पत्रकार श्री अरुण कुमार झा, दी नार्थ ईस्ट सन के पदाधिकारी श्री अरुण कुमार झा, श्री नारायण झा, श्री विनय कुमार झा प्रभृतिक सहयोग सेहो अविस्मरणीय अछि।

पछिला साल (2003) बाबूजी (श्री परमानंद चौधरी) गुवाहाटी आयल छलाह। मां (श्रीमती लालती देवी) सेहो संगे छलथिन। एक राति हम सभ गप्प-सप्प कऽ रहल छलहुं। बाबूजी 'पूर्वोत्तर मैथिल' देखि रहल छलाह। किछु क्षण पश्चात हमरा दिस ताकि बाबूजी पुछलनि-**Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** कि यात्रा वृतांत अछि?' हम कहलियनि नहि, ई जीवन प्रवाह थिक। तखन बाबूजी किछु नहि कहलाह। दोसर दिन सांझ मे जखन हम दुनू गोटे घूमय लेल निकललहुं तऽ हमर कनहा पर हाथ राखि आत्मीयता सँ कहलनि-'लिखू, हमरा नीक लागल।' मोन आत्मविभोर भऽ गेल। बाबूजी बोकारो लौटलाह तऽ ओहूठाम एकर चर्चा कयलनि। हमर साढ़ू श्री राम प्रवेश मिश्र फोन पर कहलनि जे बाबूजी एक-एकटा प्रसंग के मोन पाड़ि खूब आह्लादित छथि। बाबूजीक व्यवहार हमर ऊर्जा मे ईंधन जोड़लक।

गुवाहाटी सन शहर मे मैथिली भाषा मे प्रकाशन बड्ड कठिन छैक। यद्यपि आब हिंदी टाइपिस्टक कमी नहि रहल, मुदा मैथिली टाइप करयवालाक एखनो घोर अभाव छैक। एहि समस्याक समाधान श्री पी.एन. झा कैलनि। ओ ई भार अपना पर लेलनि आ खूब उत्साह सँ

कंप्यूटरक कार्य संपन्न कैलनि। हुनक प्रतिक्रिया छलनि– *'हिंदी मे तऽ काज करिते छी। मैथिली मे अपनेक काज करैत काल बुझाइत अछि जे गामे पर छी।'* झाजीक समर्पणभावक हम आभारी छी।

दुनिया ततेक व्यस्त भऽ गेल छैक जे ककरो लऽग अपन काज सँ फुर्सत नहि छैक। अहू मे साहित्य पर चर्चा..... ! मुदा हमर सहकर्मी श्री रत्नेश कुमारजी एकर व्यतिक्रम छथि। यद्यपि समय हुनको पास नहि छन्हि, मुदा साहित्यक प्रति हुनक अनुरागक फल थिक जे **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** केंचर्चा हुनका लग जखन कखनो कैलहुं, ओ हमर बात खूब मनोयोग सँ सुनलाह आ सलाह देलनि। हाजीपुरक रत्नेशजी के दड़िभंगा सँ विशेष लगाव छन्हि। मैथिली भाषा–साहित्यक प्रति स्नेहक अटूट बन्हन सँ बान्हल छथि।

उपरोक्त महानुभाव सभक अतिरिक्त आरो कतेक गोटे छथि, जिनकर नाम कुनू अपरिहार्य कारणवश नहि लीखि रहल छी, हमर प्रेरणाक स्रोत छथि। एहि सभ गोटे के प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी। हिनक सभक सहयोगक बिना ई कार्य संभव नहि छल।

कुनू काज कियो करैत अछि, तऽ अपन बुजुर्ग सँ आशीर्वाद लैत अछि। नीरजजी के पुछलियनि हमरा आशीर्वाद कतय सँ भेटत? ओ जे नाम कहलनि तिनका अपने मुंह सँ ई कहब जे हमर उपन्यासक भूमिका लीखि दियऽ, से साहस शीघ्र नहि जुटि सकल। कएक दिन मन:स्थिति ठीक करबा मे लागि गेल। मैथिली साहित्य के एतेक पैघ हस्ताक्षर सँ हम कोना आग्रह करियनु? नीरजजी हमर झिझक के तोड़लनि आ कहलनि एक बेर निवेदन करय मे की दिक्कत अछि? फोन घुमौलहुं तऽ ओम्हर सँ जे स्नेह आ ममताक फुहारा छूटल ताहि सँ हम सर्वांग भीजि गेलहुं। निवेदन करिते श्रद्धेय डा. प्रेमशंकर सिंह कहलनि हम दू टा किस्त पढ़ि चुकल छी। पांडुलिपि पठा दियऽ।

हमर विश्वास थिक जे मैथिली भाषा–साहित्य हिनक सभ सन संवेदनशील विद्वान लोकनिक कारणे टिकल अछि। हमरा सन नवसिखुआ के हाथ पकड़ि साहित्य जगत मे प्रवेश कराबय वाला डा. प्रेमशंकर सिंह के हम आजीवन ऋणी रहब।

Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ की छैक, बाबू प्रेमशंकर सिंह प्रासंगिकी मे बहुत किछु खोलि कऽ लिखने छथि। एहि सँ विशेष हम अपने सँ की कहू। पुस्तक हाथ मे अछि। गाम गेल छलहुंक' संबंध मे अपनेक विचार शिरोधार्य होयत। पहिल प्रयासक सभ तरहक त्रुटिक हेतु क्षमा याचना।

— सत्यानंद पाठक

प्रासंगिकी

विगत अनेक शताब्दी धरि भारत परतंत्रताक बेड़ी मे आबद्ध रहल जाहि सँ छुटकारा प्राप्त करबाक निमित्त समय–कुसमय कतिपय मुक्ति सँग्रामक आह्वान होइत रहलैक आ अंतत: भारतीय कें अपन जन्मसिद्ध अधिकार स्वतंत्रता प्राप्त भेलनि बीसम शताब्दीक पंचम् दशकक उत्तरार्द्ध बेला में। पराधीन भारतीय परिवेशान्तर्गत एकर विकास गति सभ दिशा मे सर्वथा अवरुद्धे रहलैक, किंतु भारत जखन सर्वतंत्र, स्वतंत्र गणराज्यक रूप मे स्थापित भेल तखन ओ अपन आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्र मे अपन सर्वांगीण विकासक संगहि संग आधुनिक भारतीय भाषा आ साहित्यिक अस्तित्वक स्थापत्यर्थ सार्थक प्रयास करब प्रारंभ कयलक। स्वातंत्र्योत्तर भारत मे आधुनिक भारतीय भाषाक समुचित विकासार्थ एक प्रबल ज्वारक उद्भावना जनमानस मे भेलैक जकर परिणाम भेल जे आधुनिक भारतीय भाषा आ साहित्यिक अभ्युत्थानार्थ कतिपय तप: पूत साहित्य–मनीषी मनसा–वाचा–कर्मणा अपन साहित्यिक अवदानक संबल सँ ओकर प्राण मे नव स्पंदन भरलनि, समृद्धिक सोपान पर चढ़ौलनि, जन–जनक हृदय धरि साहित्यिक सुमधुर संदेश पहुंचौलनि तथा अपन–अपन मातृभाषाक प्रति अनुराग प्रदर्शित करबाक आह्वान कयलनि।

मैथिली भाषा–भाषी सेहो अपन साहित्यिक आ पारंपरिक संस्कृति कें संरक्षित करबाक दिशा मे सचेष्टता देखौलनि तथा एकर सर्वांगीण अभ्युत्थानार्थ तन–मन–धन सँ कटिबद्ध भेलाह। अधुनातम संदर्भ में मैथिली भाषा आ साहित्य समृद्धिक शिखर पर अग्रसर भऽ अपन समग्र अधिकार प्राप्त कऽ सकल अछि तकर मूल मे अछि हमर भाषा आ साहित्यिक पुरोधा लोकनिक बलिदान जे अपन रक्तक तर्पण कऽ भाषा–साहित्य–सरिता आ संस्कृति कें सतत् प्रवाहमान बनयबा मे समर्थ भऽ सकलाह।

स्वतंत्रताक पश्चात् मैथिली भाषा आ साहित्य प्रगतिक पथ अग्रसर भेल अछि तकर सर्वाधिक श्रेय छैक प्रवासी लोकनि कें जे मिथिलांचल मे नियोजनक सर्वथा अभाव देखि जीविकोपार्जनार्थ प्रवासी बनलाह तथापि हुनका सभक हृदय मे अपन मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रति असीम अनुराग, स्नेह आ सद्भावनाक उद्भावनाक मूल कारण थिक जे जतय ओ गेलाह ततय ओ अनुभव कयलनि तथा अन्यान्य भारतीय मातृभाषी अनुरागीक मातृभाषानुराग कें देखलनि तऽ हुनको हृदय मे एहि बीजक अंकुरण भेलनि आ दृढ़ प्रतीज्ञ भेलाह जे मातृभाषाक

यथार्थ सेवा तखनहि संभव अछि जखन कि रचनात्मक आ सर्जनात्मक कार्यक शुभारंभ कयल जाय। मैथिली साहित्यक इतिहास साक्षी थिक जे मैथिलीक उन्नतिक हेतु पत्रिकाक अभाव देखि प्रवासी लोकनिक अवदानेक फलस्वरूप एकर नूतन साहित्य सर्जनक परंपरा मे ऐतिहासिक भूमिकाक निर्माण कयलक। प्रवासी लोकनिक सत्प्रयास सँ मातृभाषा मैथिलीक प्रति जनजागरणक अभियान शुभारंभ भेलैक गत शताब्दीक प्रथम दशकक मध्य मे जयपुर सँ मैथिली मे प्रथमे प्रथम 'मैथिल हित साधन' (1905) पत्रिकाक सूर्योदय भेलैक जकर आलोक मिथिलांचलक जनमानस पर पड़लैक आ एहि सत्प्रयासक सम्वर्द्धनार्थ मिथिलांचल सँ सेहो कतिपय पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेलैक।

मैथिली मे पत्रिकाक प्रकाशनक फलस्वरूप लेखक लोकनि मे एक नव स्पंदनक संचार भेलनि आ ओ सभ अपन हृदयानुभूति कैँ भाषाभिव्यक्तिक निमित्त एकर अवलंबन कयलनि। समसामयिक पत्रिकादि मे गद्य साहित्य कैँ सम्वर्द्धित करबाक दिशा मे अभूतपूर्व प्रयास शुभारंभ भेलैक जे जनसामान्यक भावाभिव्यक्तिक प्रमुख संसाधनक रूप मे व्यवहृत होमय लागल। अतएव स्वातंत्र्योत्तर मैथिली भाषा आ साहित्य मे पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप मैथिली गद्य गंगा सदृश प्रवाहित भेल आ रचनाकार लोकनि यमुना सदृश अपन विविध रचनादि सँ ओकरा सम्पोषित कयलनि आ लुप्त प्राय: सरस्वती सदृश मातृभाषानुरागी मैथिल जनसमुदाय ओकरा आत्मसात करबाक दिशा मे प्रयत्नशील भेलाह जकर फलस्वरूप मैथिली गद्य उपर्युक्त त्रिवेणीक संयोगक फलस्वरूप गद्य-गंगा उन्मुक्त भावें अनवरत प्रवाहित होमय लागल।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे प्रवासी लोकनिक हृदय मे अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति कतेक अनुरागधिक्य छनि तकर प्रकृष्ट उदाहरण थिक भारतक अन्यतम महानगर आ पश्चिम बंगालक राजधानी कोलकाता, जनिका मिथिलांचलान्तर्गत जीविकोपार्जनक संसाधन नहि उपलब्ध भऽ पौलनि तऽ ओ सभ ओहि महानगर मे हजारक हजार संख्या मे संपूर्ण महानगर मे छिड़िया गेलाह आ अद्यापि छिड़िया रहल छथि। हुनका सभक हृदय मे मातृभाषा मैथिलीक अभ्युत्थानार्थ अदम्य उत्साह, लगन आ तत्परता छनि तकरे फलस्वरूप अनेक संस्थादिक द्वारा शताधिक सँ बेसी मौलिक एवं अनुदित पुस्तकक प्रकाशन, दर्जन भरि पत्रिकाक प्रकाशन, मैथिलीक समुचित मान्यतार्थ कतिपय उग्र आंदोलन आ मैथिली रंगमंच कैँ नव आयाम आ नित-नूतन साहित्यक सृजन कए वा करबाक अपन मातृभाषाक प्रेमक अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत कयलनि तथा अनवरत अद्यापि कऽ रहल छथि जकर फलस्वरूप मैथिली भाषा आ साहित्यक निमित्त कोलकाता एक तीर्थस्थल बनि गेल अछि। कोलकाताक उदारचेता मातृभाषानुरागी लोकनिक संस्थादि द्वारा मैथिली साहित्यक अभ्युत्थानार्थ जे साहित्य-सृजन भेल आ अद्यापि ओ मीलक पाथर बनि गेल अछि। एहि महानगरक साहित्य सृजन परंपराक एतबा प्रभाव अवश्य पड़लैक जे भारतक विभिन्न महानगरादि मे मातृभाषा मैथिलीक यथार्थ विकासार्थ विभिन्न कार्यक्रमक शुभारंभ भेल आ कटिबद्ध रूपें कार्यरत अछि।

जहिना बङ्ग भूमिक हृदयस्थल कोलकाताक निमित्त मैथिल संस्थादि बंगाल आ मिथिलाक प्राचीन ऐतिहासिक संबंध कैँ पुनर्जीवित करबाक उद्देश्य सँ उत्प्रेरित भऽ स्वातंत्र्योत्तर काल सँ अद्यपर्यन्त मैथिली प्रकाशनक शुभारंभ कऽ दुनूक बीच एक सेतुक काज कयलक आ अद्यापि कऽ रहल अछि तहिना असम आ मिथिलाक प्राचीन सेतु कैँ पुनर्जीवित करबाक परिप्रेक्ष्य मे मैथिली भाषा आ साहित्य कैँ सम्वर्द्धित करबाक पुनीत संकल्पक संग ओकर राजधानी गुवाहाटी स्थित प्रवासी मैथिल जनमानस मैथिली भाषा आ संस्कृतिक अभ्युत्थानार्थ गत शताब्दीक अंतिम दशकक अवसान बेला मे 'मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक' स्थापना कयलक तथा एक सुदर्शन सुरुचि संपन्न पत्रिका 'पूर्वोत्तर मैथिल' (2000) क प्रकाशनक शुभारंभ कयलक जकर प्रधान संपादक बनलाह श्रीयुत् सत्यानंद पाठक जे गुवाहाटी सँ प्रकाशित भेनिहार प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक 'पूर्वांचल प्रहरीक' कार्यकारी संपादक सेहो छथि। हिनका मातृभाषाक प्रति असीम अनुराग छनि जे जीविकाक निमित्त असमी भाषी प्रदेश मे रहि राष्ट्रभाषाक हिंदी दैनिक पत्र सँ सम्बद्ध रहितहुं मातृभाषा मैथिलीक विकासार्थ ओकर वास्तविक उन्नयनार्थ, साहित्यिक सम्वर्द्धनार्थ एवं ओकर प्रगतिक निमित्त सतत् चिंतनशील रहनिहार एकैसम शताब्दीक प्रारंभिक चरण मे एक विशिष्ट साहित्यकारक रूप मे उदित भेलाह। ओ साहित्य-सरिताक सतत् रसास्वादन, अवगाहन करैत समाज मे घटित विभिन्न घटनादिक प्रत्यक्ष अनुभव कयलनि जकरा अभिव्यक्ति दऽ कए अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कयलनि। हम जाहि समाज मे जीवन-यापन करैत छी ओहि मे अनगिणत समस्या अछि जे साहित्यकार कैँ अनुकूल बुझना जाइछ तकरा ओ अपन कल्पनाक पुट दऽ ओकरा मनोरंजक शैली मे प्रस्तुत करबाक उपक्रम करैछ जाहि सँ साहित्य सत्यं शिवं सुन्दरम्क आदर्शक अनुगमन करैछ।

हिनक कुशल नेतृत्व आ संपादन कौशलक दक्षताक फलस्वरूप ई पत्रिका अल्पावधि मे गुरु-गंभीर रचना लऽ कए विगत अनेक वर्ष सँ पाठकक समक्ष आबि रहल अछि। पत्रकारिता सँ सम्बद्ध रहलाक कारणें पूर्वोत्तर मैथिल अपन रूप-रंगक कारणें जन मानस कैँ आकर्षित करबा मे सक्षम भऽ सकल आ अल्पावधि मे ई पत्रिका अधिक लोकप्रियता अर्जित करबा मे समर्थ भऽ सकल।

पूर्वोत्तर मैथिल सदृश प्रतिनिधि पत्रिकाक प्रधान संपादक हैबाक कारणें हिनकहुं हृदय मे मातृभाषा मे साहित्य सर्जनक प्रबल ज्वार अयलनि तकरे फलस्वरूप ओ अनुभव कयलनि जे जाहि अनुपात मे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे कथा-संग्रह प्रकाशित भऽ रहल अछि ताहि अनुपात मे एकैसम शताब्दीक प्रारंभिक चरण मे उपन्यासक प्रकाशन शिथिल पड़ि गेल अछि। ताहि व्यतिक्रम कैँ दूर करबाक दिशा मे ओ उपन्यास रचना दिस प्रवृत्त भेलाह जे स्वागत योग्य थिक। ओ एहि औपन्यासिक कृतिक शुभारंभ पूर्वोत्तर मैथिल जुलाई-सितंबर 2003 अंक सँ प्रारंभ कयलनि **Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** केर नामे। प्रारंभ मे ओकरा यात्रा संस्मरणक संज्ञा सँ अभिहित कयलनि, किंतु पश्चात् जा कऽ हुनका उद्भावना भेलनि जे एकरा औपन्यासिक कृतिक रूप मे परिवर्तित कयल जाय जे अपने लोकनिक हाथ मे अछि। यद्यपि मैथिली उपन्यास साहित्यान्तर्गत ई हुनक प्रथम कृति छनि तथापि एहि मे ओ मैथिली पूर्ववर्ती वा परवर्ती उपन्यास

सदृश मिथिलांचलक परंपरागत अनमेल विवाह चाहे ओ शिक्षा-दीक्षाक कारणें हो वा अवस्थाक कारणें हो वा रूप-गुणक कारणें हो ताहि सँ सर्वथा भिन्न एक नवीन कथानकक परिप्रेक्ष्य मे एकर कथाभित्तिक नियोजन कयलनि जे प्रवासी लोकनिक हृदय मे अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति अदम्य आकर्षण छनि जे जीवनक भोगल गेल यथार्थ पर आधृत अछि। एकर कथानक पृष्ठभूमि मे प्रवासीक अन्तर्व्यथा नियोजित अछि। जीविकोपार्जनार्थ लोक प्रवासी तऽ बनि जाइछ तथापि ओकरा मन मे अपन गाम-घऽर, खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी, पावनि-तिहार, यज्ञ-परोजन, दयादवादक मधुर स्मृति ओकर मानस पटल पर तेना ने अंकित रहैछ जे महानगरीय जीवन-यापन करतहुं ओकर कोलाहलपूर्ण वातावरण मे रहितहुं ओ सतत् अपना कँ एकाकी अनुभव करैछ। एहन विषम स्थिति मे जँ कियो अपन गाम-घऽरक दृष्टिगत भऽ जाइछ तऽ ओकरा संग सुमधुर आत्मालापक महानगरीय वातावरण कँ किछु क्षणक हेतु बिसरि जाइछ।

कथाक्रम कँ विकसित करबाक क्रम मे उपन्यासकार समस्त आवश्यक सामग्रीक नियोजन निपुणतापूर्वक कयलनि अछि जे कोनो महत्वपूर्ण विषयक अवहेलना नहि भऽ सकल अछि। कतहु ओ अनावश्यक आ अप्रामाणिक कथाक नियोजन नहि कयलनि जे खटकैत हो। एहि उपन्यासक वर्णनात्मक पक्ष कथाक नियोजन क्रम मे तेना ने उभरल अछि जाहि मे हिनक प्रौढ़ कल्पना शक्तिक परिचय पाठक कँ अनायासहि उपलब्ध होइत छनि। उपन्यास मे वर्णित विषय-वस्तु व्यर्थ आ अरुचिगर नहि प्रतीत होइछ। एकर वैशिष्ट्य थिक मानव चरित्रक व्याख्या आ एक कुशल मनोवैज्ञानिक सदृश उपन्यासकार मानव मनक गूढ़ रहस्यक अन्वेषण कयलनि, परखलनि आ सत्यताक संग ओकरा उद्घाटित कयलनि।

Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ वर्तमान सामाजिक स्वरूपक अतियथार्थ एलबम थिक। उपन्यासकार मिथिलांचलक महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक समस्यादिक वास्तविकताक चित्रण एहि मे कयलनि अछि जकरा मिथिलांचलक जनमानसक उत्थानक साहित्यिक श्रेणी मे परिगणित कयल जा सकैछ। ई जनमानसक यथार्थ साहित्य थिक। जनसामान्यक सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, असंतोष, कुंठा, संत्रास, जिजीविषा आदि सभ एहि मे मूर्तिमान अछि। एहि हेतु उपन्यासकार ने तँ भूतक आश्रय लेलनि अछि आ ने तँ भविष्यक, प्रत्युत वर्तमान समस्याक संग ओ उलझलनि अछि। एकरा अंतर्गत ओ मानवताक शाश्वत प्रश्न कँ उठौलनि अछि। ओ ओहि भावना, ओहि अनुभूति, ओहि संवेदना, संघर्ष आ कुंठा कँ अभिव्यक्ति देलनि जे मानव हृदय मे हेलि रहल अछि। मानव हृदयक यथार्थ विश्लेषण एकर कथान्तर्गत कयल गेल अछि। उपन्यासकार कँ मानवता सँ संबंध छनि, मानवताक प्रश्न शाश्वत अनुभूति सँ अछि तें प्रतिपाद्य उपन्यास सामयिक नहि भऽ कए चिरंतन शाश्वत रहत। एहि मे व्यक्ति, परिवार, गाम-घऽर, शहर-बजार आ देश मे भेनिहार आंदोलनक कलात्मक इतिहास थिक।

एहि मे प्रयुक्त पात्र जकरा उपन्यासकार हमरा समक्ष प्रस्तुत कयलनि अछि ओ वास्तविक आ स्वाभाविक अछि। ओकरा हृदय मे जतय सद्वृत्ति छैक, ओतय स्वार्थपरता, अहमन्यता आ मानवीय दुर्बलता सेहो कम नहि छैक। ओ नितांत आशावादिताक रूप नेने देवता नहि, प्रत्युत मानवीय गुण-अवगुणक वशीभूत साधारण मनुष्य मात्र अछि। विभिन्न परिस्थितिक बीच हम ओकर मानवीय गुणक झलक पबैत छी। इएह कारण अछि जे उपन्यास मे वर्णित चरित्र-विश्लेषण एतेक स्वाभाविक आ मानव जीवनक सहज सत्यता नेने अछि।

Ò»æ× »ðÜ ÀUÜãé¢UÓ एक सोद्देश्य उपन्यास थिक जाहि मे एक विशिष्ट उद्देश्यक प्रतिपादन करब उपन्यासकारक लक्ष्य छनि। एहि मे लेखकक अपन जीवन दर्शन छनि, अपन विचारधारा छनि जकरा माध्यमे उपन्यासकार घटनाचक्रक जन्म देलनि आ पात्रक सृष्टि कयलनि। उपन्यासकारक उद्देश्य छनि जे मिथिलांचलक दिनानुदिन अधोगतिक कारणक अन्वेषण करब। अंततः एहि अधोगतिक मूल कारण की थिकैक? मिथिलांचलवासी अपन तीक्ष्ण आ कुशाग्र बुद्धिक कारणें चिरंतन सँ विख्यात छथि जे उच्च-शिक्षा प्राप्त कऽ कालान्तर मे ओहो प्रवासी भऽ जाथि? जँ इएह गति रहतैक तँ वैश्वीकरणक फलस्वरूप सभ प्रवासी भऽ जायत तँ हमर भाषा, हमर साहित्य आ हमर संस्कृति भविष्यक अंधकार गर्त मे विलीन भऽ जायत जे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे एक चिंतनीय विषय थिक। उपन्यासकार एहि कारणक अन्वेषणार्थ चिंतित बुझना जाइत छथि तथा समाज कँ साकांक्ष होयबाक चेतावनी दऽ रहल छथि। यथा समय जँ एहि समस्याक समाधानार्थ समुचित कदम नहि उठाओल जायत तँ हमर भाषा, हमर साहित्य, हमर संस्कृति आ हमर पुरातन सभ्यताक अस्तित्व पर संकटक मेघ मड़ड़ा रहल अछि जाहि सँ बचबाक प्रयोजन अछि। प्रवासी भेला सँ हमरा लोकनि शनैः-शनैः अपन भाषा आ संस्कृति सँ विमुख भेल जा रहल छी। एकर दुष्परिणाम एखनो देखबा मे आबि रहल अछि जे अपन भाषा एवं साहित्य तथा संस्कृति एवं सभ्यताक समृद्धिक निमित्त मंच सँ पैघ लेक्चरबाजी तँ अवश्य करैत छी, किंतु ओतय सँ प्रत्यागत होइतहि पत्नी आ बाल-बच्चा सँ मातृभाषा मे नहि गप्प कऽ अन्य भाषाक आश्रय लऽ लैत छी।

मैथिलीक साम्प्रतिक गद्य मे एक नव शैलीक प्रयोग होमय लागल अछि जकरा कलात्मक गद्य कहल जा सकैछ। वर्तमान समय मे गद्य कँ कविताक समीप जयबाक मोह उत्पन्न भऽ रहल अछि। फलतः भावनाक कोमलता, कल्पनाक मधुरिमा एवं उक्तिक चमत्कारक सम्मिश्रण सँ लेखक लोकनि कलात्मक गद्य-रचना करब प्रारंभ कयलनि। एहन गद्य मे भाषाक अद्भुत व्यञ्जना शक्तिक बोध होइत अछि। चित्रात्मकता एवं लय संगीतक सम्मिश्रण सँ गद्य मनोरम भऽ जाइत अछि। गद्यकारक अंतः प्रवेशिनी दृष्टि मानवक सूक्ष्मतम भावक अभिव्यक्ति दैत अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे एकर गद्य-शैली मैथिली गद्य-गंगाक चतुर्मुखी विकास यात्रा मे अभूतपूर्व योगदान देलक अछि। एकर गद्य मे गद्यकारक भावाभिव्यक्तिक स्वतंत्रताक प्रयोग प्रचुर परिमाण मे करबा मे समर्थ भेलाह अछि। गद्यकार अपन सामाजिक दायित्वक यथार्थ निर्वाहार्थ हमर सामाजिक पृष्ठभूमि मे जे जहिना बजैछ तकरा यथावत् एहि मे उपन्यासकार मूर्तरूप प्रदान कयलनि अछि। उपन्यास मे सर्वत्र भाषाक स्वच्छन्द प्रवाह भेटैछ जे साहित्यान्तर्गत एक नव प्रयोग कहल जा सकैछ। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे अभिव्यक्तिक स्वातंत्र्य पर बल दऽ कए रचनाकार लोकनि नव-नव प्रयोग कयलनि अछि। इएह कारण अछि जे गद्यक

विभिन्न स्वरूप पाठकक सम्मुख उपस्थित भेल अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे उपन्यासकार गद्यक एहि स्वरूपक रूपायन करबा मे समर्थ भऽ पौलनि अछि जाहि मे सरलता आ सजीवता दुनूक समावेश भेल अछि। एहि मे सर्वत्र जनसामान्य द्वारा व्यवहार मे आनल गेल भाषाक प्रयोग भेल अछि। अतएव ओ कृत्रिम आ आडंबर शून्य अछि। लेखकक व्यक्तित्वक समान निस्पृह, निश्चल आ सरल अछि। शब्दक मायाजाल पसारनिहार कलाकारक समान एकर भाषा मे लेखक कोनो कौशलपूर्वक प्रयत्न नहि कयलनि अछि। वन्य-निर्झरक प्रसन्न निर्झर बेगक समान भाषा स्वत: फूटि पड़ल अछि। हिनक भाषा मे प्रवाह अछि। ओ कोनो स्थल पर नीरस आ उखड़ल नहि अछि।

मैथिली उपन्यासक क्षेत्र मे सत्यानंद पाठकक कृति **Ò››æ× ››ðÜ ÀUÜãé¢UÓ** एक अभिनव प्रयास थिक जे उपन्यासक कथानकक विस्तार कयलनि संगहि एकर भाषा-शैली कैँ अत्यंत रोचक बनौलनि तथा भाषागत प्रयोग मे नवीनता अनलनि अछि। मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक सजीव चित्र अपन अभिनव भाषाक माध्यमे अभिव्यक्त कयलनि अछि जे स्वागत योग्य थिक। आशा अछि जे मैथिलीक प्रबुद्ध पाठक एहि औपन्यासिक कृतिक स्वागत करताह। जहिना-जहिना संसार मे नव मानव संस्कृतिक निर्माणक दिशा मे अग्रसर हैत तहिना-तहिना नव-नव पृष्ठभूमि उपन्यास मैथिली पाठकक सम्मुख आओत से हमर धारणा अछि। हमर अशेष शुभकामना उपन्यासकारक एहि साहित्यिक कृतिक प्रति अछि तथा भविष्य मे आशान्वित रहब जे हिनक साहित्यिक रूझान मे उत्तरोत्तर विकास होइत रहनि तथा नव्यतम प्रवृत्तिक रचनाक संग पाठकक सम्मुख उपस्थित होयताह। हमर विश्वास अछि जे मिथिला, मैथिल ओ मैथिली भाषा आ साहित्य सँ स्नेह रखनिहार प्रबुद्ध पाठक निश्चये एहि उपन्यासक अभिनंदन करताह तथा महिमा मंडित मैथिली साहित्य-सरिताक अवगाहन करताह।

ऋचायन
24, राधारानी सिन्हा रोड
भागलपुर-812001
जून 1, 2004

डा. प्रेमशंकर सिंह
एम.ए. (मैथिली एवं हिंदी, गोल्ड मेडलिस्ट,
पी-एच.डी., डी.लिट्.)
निवर्तमान युनिभर्सिटी प्रोफेसर एवं
मैथिली विभागाध्यक्ष
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर-812007

›æ×››ðÜÀÜÃé¡U

ÑÑ°·ÇÑÑ

गाड़ी जखन खूब जोर सँ अपनो दायाँ-बायाँ, आगाँ-पाछाँ हिलय लागल आ हमरो सभकें भूकंप जेंका हिलाबय लागल, तऽ भेल जे हम सभ बिहार प्रांतक मिथिलांचल मे प्रवेश कऽ गेल छी। इ अद्‌भुत अनुभव मात्र एहि प्रांत आ क्षेत्र मे होइत छैक से हमरा बूझल छल। एहिना हिलैत-डोलैत जौं गाम पहुँच जाइ तऽ कोनो बात नहि, मुदा चिंता छल जे हिलैत-डोलैत कतहु दायाँ-बायाँ नहि खड़कि जाइ, अथवा नान्हिटा गाड़ीक दम नहि बैसि जाइक। तथापि मन मे भरोस छल जे आब किछुये समय बाद दलान पर पहुँचब आ यात्राक दुख कष्ट छूमंतर भऽ जायत। गाड़ी कें अनवरत हिलला-डोलला सँ मात्र हमही चिंतित नहि छलहुँ। हमर कनियाक मुँह पर चितांक अनेक छाया आबि-जा रहल छलैन। किछु बजलनि नहि। हम बुझैत छलियैन। ओ बाजिकय हमर मन:स्थिति कें आओर कमजोर करऽ नहि चाहैत छलीह। मुदा नेना तऽ नेने होइत छैक। जेठकी बेटी उकसा कय बजलीह, 'आहाँक आर कुनू दोसर रास्ता नहि देखल छल?' उत्तर देबाक समय नहि छलैक। हम कखनो दायाँ-कखनो बायाँ देखैत छलहुँ, कखनो ड्राइवर के हाथ-माथ दिस। ओ, जौं गाड़ी मिसियो भरि अनियंत्रित भेलैक तऽ अपन गाड़ी सँ गाम जयबाक सेहंता पूरक प्रयास बड्ड महँग पड़त। तखन की करबैक, कनियो पर कनेक पित्त होमय लागल। आखिर जौं हम गाड़िये सँ गाम जयबाक जिद ठनने रही, तऽ ओ हमरा रोकलनि नहि कियैक। ओ तऽ रोकि सकैत छलीह। हुनकर बातो हम मानैत रहैत छियनि। तहियो ओ एकोबेर नहि कहलीह जे छोड़ू गाड़ी लऽकऽ कियैक जायब। ट्रेने-बस सँ चलू।

ओना हम जखन पाँचेक वर्षक छलहुँ तखनहि सँ गाम जयबा-अयबाक लेल जे संघर्ष शुरू भेल से आई धरि चलि रहल अछि। बाट बदलैत-बदलैत थाकि गेलहुँ, मुदा संघर्ष चलिये रहल अछि। हमरा मोन अछि जखन हम पहिल बेर बाबू-माय-भाइ सभहक संगे गाम सँ

सिलीगुड़ीक लेल विदा भेल रही। चोरौत सँ पुपरीक लेल बैलगाड़ीक प्रबंध नहि भऽ सकलनि। सभटा पाइ किराये लेल राखल गेलैक। बट खर्चा तऽ रहबे करैक। चूरा-ठकुआ-टिकड़ी आ अचार। मुदा परदेश जयबाक हुलासक आगाँ चोरौत सँ पुपरीक चारि कोस कोना बितलैक से हमरा मोन नहि पड़ैत अछि। मोन अछि घुरनी बेरक इ चारि कोसक यात्रा। सिलीगुड़ी सँ मेल सँ बरौनी, बरौनी सँ समस्तीपुर, समस्तीपुर सँ दरभंगा आ दरभंगा सँ पुपरी, ट्रेन पकड़ैत-छोड़ैत पुपरी पहुँचलहुँ धरि खेलैत-धुपैत पहुँच गेलहुँ। ताबत धरि साँझ भऽ गेलैक। बाबू कहलथिन, 'स्टेशन पर रहला सँ बढ़िया गामे चलि चलू।' बैलगाड़ी अथवा टायरगाड़ी ताकल गेल। बाबू हमरा सभकें प्लेटफार्म पर बैसा कऽ बाहर निकललाह। किछु देर बाद लौटलाह। हुनका संगे एकटा कुली छलैक। बाबू माय सँ कहलथिन, 'बैलगाड़ी बला बड्ड बेसी पाइ मँगैत छल। टायर गाड़ीवाला कें नहि पुछलियैक।' कुली दिस तकैत कहलथिन, 'एकरा बजा लेलियइ। सात टका लेत। बिदाइ मे चूड़ा-नोन। आ पेटी-मोटा लऽ चलत। छोट-छिन समान हम सभ अपने लऽलेब।' बैलगाड़ी-टायरगाड़ी पर चढ़क लेल उत्साहित हम सभ भाइ बाबूक बात सुनि जेना मुरझा गेलहुं। बाबूक निर्णयक आगाँ नतमस्तक भेल हम सभ प्लेटफार्म सँ विदा भेलहुँ। प्लेटफार्म सँ निकलियते नजर पड़ल घुँघुरू पहिरने बरद आ महफा लागल गाड़ी सभ दिस। टमटम सेहो छलैक। कयेकटा घोड़ा ओहिठाम घास चरैत छलैक। चलैत काल टप-टप-टप-टप बजैत छलैक। दूरे सँ देखैत हम सभ पयरे गाम दिस विदा भेलहुँ......।

आगाँ-आगाँ कुली। तकरा पाछाँ बाबू, बगल मे एकटा पैघ मोटरी आ हाथ मे भरिगर झोरा नेने। हुनकर पाछाँ माय आ हम सभ चारू भाइ। सभक हाथ मे किछु-न-किछु छलैक। पुपरी सँ निकलैत-निकलैत सूर्य अस्त भऽ गेलाह। पुपरी सँ बाहर एकटा छोटकी नदी सँ पहिने बाटक दहिना कात मे स्थित होटल के बिसरब कठिन छैक। चूड़ा-मुरही-बेसनवला 'कच' के मिलाकय, ऊपर सँ पियाजक कतरा। ओह-ओ स्वाद दोसर ठाम नहि भेटि सकैत अछि। बाबू कुली के कहलथिन, 'कने थम्हऽ। बच्चा सभकें किछु जलपान करा दैत छियैक।' बाबूक वाक्य समाप्त भेलैन आ हम सभ होटलक बैंच पर बैसल छलहुँ। कुली समान लऽ कऽ बाहरे छल। ओहो खैलक। मुदा बाबू जल धरि स्पर्श नहि कैलनि। यात्रा मे फल छोड़ि कऽ किछु नहि लैत छलाह।

जलपान कयलाक पश्चात गामक यात्रा शुरू भेल। भिट्ठा जाइत-जाइत राति दस बाजि गेलैक। धुप्प अन्हार मे चलनाइ कठिन। सड़क नहि कच्चे आ नहि पक्के। रोड़ा पर पयर बैसत देरी बचऽ पड़ैत छलैक। भिट्ठा गाम मे नहरि वर्षाकाल मे उग्र नदी भऽ जाइत छैक। नदी लऽग पहुँचला पर पता चललैक जे किछुए दिन पूर्व आयल बाढ़ि मे पुल भसिया गेलैक। आब की उपाय हैत। बाबू चिंतित भऽ गेलाह। माय सेहो। हम सभ भाइ हाथुक झोरा-झपटा जमीन पर राखि बैस गेलहुँ। सुस्ताबय के नीक मौका भेटल। एहन समय जखन बाबू चिंतित छलाह गामक निर्धन झा अचानक उपस्थित भेलाह। निर्धन झा एहन व्यक्तित्व रहथि जिनका गाम मे बच्चा-बच्चा चिन्हैत छलैन। ओना तऽ हुनका रतौन्ही छल, मुदा ओ रातियो-बिराति

जजमनिका पुजा कऽ सकुशल गाम पहुँच जाइत छलाह। एहन व्यक्तित्व जिनका बिसरब कठिन छैक। पीयर गोराइ, खूब लंबा मुदा औसत मोटाइ वाला ठेहुन तक धोती, गँजी आ कान्ह पर दनहा अँगोछा। निर्धन झा कें सौंसे गाम चिन्हैत छलैन। ओहो अपन गाम कें नीक जकाँ चिन्हैत छलाह। तैं बुड़िबक भैयो कऽ नीक जकाँ गुजर-बसर करैत छलाह। निर्धन झा बाबूक आवाज सुनितहि चिन्ह गेलथिन। अन्हार आ ऊपर सँ रतौन्ही। बाबू आ माय कें पएर छूबि कय प्रणाम कैलथिन। पुछलथिन, 'ठाड़ कियैक छी?'

'पुल टूटल छैक, नदी मे पानि देखिते छियैक। परिवार लय कय पार कोना होयब! बाबू कहलथिन।

'ऐह-तऽ एहि मे दिक्कत की छैक। मलहा कें बजबैत छी। नाव लऽ कऽ आओत।' निर्धन झा आशाक किरण देखौलनि।

'हें-ओ-ओ-मलहा......' निर्धन झा कएक बेर चिकरलाह। मुदा ओइ पार सँ कोनो सुगबुगाहट नहि भेलैक। हारि कऽ निर्धन झा बजलाह, थम्हू। हमही किछु करैत छी।' आ ओ भींड़ पर सँ नीचाँ टपलाह। एम्हर-ओम्हर हथोड़ि कय बजलाह, 'नाव भेटिगेल। अबैत जाऊ। हम अपने खेबिकऽ ओइ पार लऽ चलब।'

बाबूक संकेत भेलनि आ हम सभ समान-तमान लऽ कऽ नाव पर चढ़लहुँ। ओ नाव छलैक बड़का। कएकटा नाव कें जोड़ि कऽ ऊपर सँ बाँस फाड़ि कऽ मचान जकाँ बनाओल छलैक। हमरा सभकें नाव पर चढ़िते नाव फूजि गेल। निर्धन झा नाव खेबय लगलाह। पानि पर नाव आ नाव पर हम सभ। खूब आनंददायक स्थिति छलैक। मोन भेल-जौं एहिना बैसिले-बैसल गाम पहुँच जयतहुँ। मुदा इ संभव नहि छलैक। मनक विचार असंभव भऽ कऽ अदृश्यो नहि भेल छलैक कि निर्धन झा कहलनि, 'नाव भसिया रहल अछि। भँवर दिस जा रहल।' सुनिते कंपकंपी दौड़ि गेल। हे भगवान इ राति मे हमरा सभकें की लिखल छैक। करीब आधा घंटा आगाँ-पाछाँ करैत-करैत निर्धन झा नाव कें संभारि लेलनि आ हम सभ ईश्वर कें धन्यवाद दैत ओहि पार पहुँचलहुँ। नाव सँ उतरलाक पश्चात कुली अपन भाँज छोड़ाबय चाहलक। ओकर गाम आबि गेल छलैक। निर्धन झा कहलथिन, 'ककाजी एकरा छोड़ि दियौक। हमही पेटी-मोटा लऽ चलब।'

जेना-तेना राति दुइ बजे मे गाम पहुँचलहुँ। बड़का काका दलाने पर भेटि गेलाह। बाबू कें पएर छूबि कऽ प्रणाम करैत बजलाह, 'निर्धन झा पर एतेक विश्वास नहि करबाक चाही। राति-बिराति चलनाइयो उचित नहि छल। बड़ होऊ, हाथ-पएर धोइ जाऊ।' ppp

ÑÑÌeS§ÚÑÑ

संभवत: एकरे कहैत छैक 'प्राण तरहत्थी पर लऽ कऽ यात्रा केनाई।' पानि मे कोनो वस्तु दहाइत काल मे कोम्हरो सँ हिलकोरा अयला पर थड़थड़ाय लगैत छैक, तहिना रोड़ा सभक अस्त-व्यस्तता गाड़ी कें थड़थड़ा देत छलैक। कनिया बाजि उठलीह! 'मारुति गाड़ी इ सभ रास्ता पर चलक योग्य नहि छैक। खधिया में कतहु मारुति कार चललैयऽ।' हमर छोटकी बेटी पिता कऽ बजलीह, 'गाड़ी रोकू। हम सब पएरे जायब।'

ओकरा बुझौनाई बड्ड कठिन छैक। कहलियनि, 'आब बेसी अगुताऊ नहि, जयनगर एखने आबि जायत।'

ताबत मे ओम्हर सँ एकटा जीप के कुदैत-फनैत अबैत देखलहुं। जीपक देह मिसिये भरि देखा रहल छल।

जीपक व्यवहार गाम-घर मे खूब होइत छैक। इहो कहि सकैत छी जे जीपक निर्माण गामे-घऽर लेल भेल छैक। जखन परमेश्वर बाबू हमरा कहलथि जे आब चालीसे टा बरियाती बाकी छैक। इ सभ लोकनि जीप सँ चऽल जेताह। अपने श्री गणेश करू..... तऽ हमरा विश्वासे नहि भेल। मोन मे भेल जे संभवत: परमेश्वर बाबू दू-तीन टा जीप कयने छथि। तैं जिज्ञासा केलियनि, 'कय टा जीप छैक?'

'एकटा..... आर कैयटा? कोनो जीपक मेला छैक जे दस-बारह टा राखब। यौ इ लगन ततेक तड़तड़ायल छैक जे जीप की एकटा साइकिलो भेटब मुश्किल। कहुँना एकटा जीप सट्टा पर कयल गेल अछि। ओकरा दरबज्जे पर ठाढ़ केने छी। के जाने-केयो कनेक बेसी नोट देखा दियऽ आ इहो जीप हाथ सँ निकलि जाय।'

हम अबाके रहि गेलहुँ। एक टा जीप आ चालीस आदमी। ओइ पर सँ एक बोरी चाउर सेहो देखैत छी। 'हाँ-हाँ, सभ चलि जतैक। अपने निश्चिंत रहू।'

'कोना जैतेक?'

'से जौं देखबाक हुए तऽ कनिक बिलंब करू।'

बिलंब करब। मोन मे विचार कैलहुँ-इ अजगुत आइ देखिये ली तखने प्रस्थान करब।

'ठीक छैक परमेश्वर बाबू। पहिने जीप के निकलऽ दियौक। हमर मारुति वैन तऽ हल्लुक छैक। हवा जंका आगाँ निकलि जायत।'

इ अजगुत हम बहुत दिन सँ सुनैत छलहुँ। कोनो बियाहक बरियातिक संबंध मे चर्चा होइत देरी चर्चा बरियातिक संख्या, ओकर आवागमन आ खान-पान पर केन्द्रित भऽ जाइत छलैक। बरियातिक खान-पान सुनल आ देखल छल। भैया के विवाह मे हमहुँ बरियाती छलहुँ।

किछु बरियातिक पातक सँगे ढेरियाओल मालदह आ बंबई आमक आंठी देखने छलहुँ। माउंसक सेरहीकें ढेरियाओल सेहो देखल छल। मुदा एकटा जीप पर चालीस आदमी केना लदय छैक से टा सुनिते छलियैक। देखबाक संयोग अही बेर आ परमेश्वर बाबूक कृपा सँ एखने भेटत, अहि भरोस सँ मोन प्रफुल्लित भऽ रहल छल।

कयेकटा संयोगे छलैक। हमर कानपुरवाला कका के कन्यादान छलैन। हमर साढ़ूक बेटाक उपनयन छलैक। कन्यादान ठीक भऽ गेल छलैक। वर कानपुरे मे कार्यरत छथि, मुदा हुनक पिताक आग्रह छलैन जे विवाह गामे सँ होय। हमरो लेल ठीक भेल। एकहि बेर मे दुनू काज संभारने जायब। पहिने उपनयनक दिन छलैक। हम सभ भाइक परिवार माय सँगे गाम पहुँचलहुं। गाम सँ हम अपन परिवार लऽ कऽ मिसरौली गेलहुँ। उपनयनक पश्चात गाम अयलहुं तऽ कका कहलथि, 'वर लाबक लेल अहीं कें जाय पड़त। सँगे ददा (हमर पिता सँ छोट पित्ती) सेहो रहताह। वरकें हाथ धरिकऽ वैह उठौथिन।'

हम सिलीगुड़ी सँ एकटा मारुति वैन भाड़ा पर आनने रही। कका कहलथिन, 'एकर जरूरत नहि पड़त। जीप केने छी। प्रात:काल छ: बजे जीप दरवाजा पर लागि जायत। तैं मारुति वैन कें छोड़ि दियौक।' ठीक छैक। मुदा एखन साँझ मे जे एकरा छोड़बै तऽ इ बंगाली ड्राइवर कतऽ जायत। नेपाल बोर्डर पार नहि भऽ सकत। एकरा दिक्कत हेतैक। ओकरा कहलियइ जे ओ पराते एहिठाम सँ विदा भऽ जायत। सब ठीक-ठाक छलैक। प्रात:भेने दृश्य बदलि गेलैक। कका कहलथिन, 'हौ-जीप तऽ एखन धरि नहि आयल। आब की करब। मरूकिया जाय मे चारि घंटा लगैत छैक। देरी हैत तऽ जुलुम भऽ जायत।' ककाक गप्प सुनिते चट्ट द हमरा अपन भाड़ावाला मारुति वैन मोन पड़ि गेल। ओ एखन 'नीमेबाड़ी' मे पंकचर ठीक करा रहल हैत, कनिक देखियो ओ सुनील।' हम अपन पितियौतकें कहलियनि। ओ साइकिल सँ धड़धड़ाइत विदा भेलाह। आधा घंटाक पश्चात ओ घुमला तऽ हुनक पाँछे-पाँछे मारुति वैन आबि रहल छल। कका के माथ पर सँ चेन्ह बिला गेल। हमहुँ आश्वस्त भेलहुँ। जलपान कय कऽ मरूकिया लेल विदा भेलहुँ। बाट मे ओ सट्टा वाला जीप सेहो भेटल। अरुण (हमर ककाक जेठ बालक) मारुति वैन रुकवा कऽ उतरलाह। जीप कें रोकक इशारा कैलथिन। साइड मे जीप लागल। जीपवाला विचारने छल, आब इ खेप मरूकिये जायब। भिनसर सँ ओ तीन खेप बाराती ढोने छल। मुदा मोटका सट्टा मरूकिये के छलैक। जीपक ड्राइवरक मोनक बात मोन मे रहि गेलैक। अरुण ठाढ़े-ठाढ़े दस हजार गारि पढ़ि देलथिन। अरुण के आवेश मे देखि जीपक ड्राइवर गुम्मे रहि गेल। अरुण लौटलाह। वैन मे बैसलाह। हम सभ मरूकिया दिस विदा भेलहुँ।

बियाह-दुरागमनक समय मे जीपक अनेक खिस्सा जन्म लैत रहैत छैक। कोरियाही कें झाजी सेहो जीप चलबैत छलाह। भौजी के दुरागमन हुनके जीप पर भेलैक। गाम लौटतिकाल मे ततेक कसि कय बरखा होमय लगलैक जे जीप के घाटगाँव पुल पर रोकय

पड़लैन। बरखा समाप्त भेला पर जीप स्टार्ट केनाई मुश्किल भऽ गेलैक। बरखा तेहन रहैक जे जीप मे बैसल सभ गोटे पानि सँ तर-बतर भऽ गेलाह। झाजी चाभी के एम्हर-ओम्हर, दहिना-बायाँ घुमाकय परेशान भऽ गेला, मुदा गाड़ी गुम्म छल। झाजी जीप मे बैसल लोक दिस ताकि कऽ बजलाह, 'यौ किनको लग टौर्च अथवा माचिस अछि?' प्रत्युत्तर नहि भेटलैन। जीप मे केओ बीड़ी-सिगरेट पीबय वाला जीव नहि छल आ नहि किनको पास टौर्च छलैन। ताबत धरि बरखा झीसी पर उतरि आयल छलीह। बाट पर एगो-दूगो बटोही सेहो देखा रहल छलाह। झाजी कें एकटा बटोही सँ माचिस भेटि गेलैन। ओ जीपक बोनट खोलला। एगोटे माचिस कें तिली जरौलखिन आ ओ चट सँ 'कार्बोरेटर' पकड़ि लेलाह। कनेक इजोत आ कनेक अन्हार मे कार्बोरेटर साफ कैलनि। पानि पोछलनि आ बोनट बन्न कय कऽ जीप स्टार्ट कैलनि। जीप हड़बड़ा कय जेना जागल। मने-मने सभ कियो खुश भेलाह। गाम पहुँचलाक उपरांत भौजी बजलीह, 'आइ बाँचि गेलहुँ। इ जीप के फेरा छल। अधमौगति कऽ देलक।' ppp

ÑÑÏÎeçÙÑÑ

'**हेयो** पाहुन एम्हर अबियौ। अपने आँखि सँ देखि लियौक जीप पर चालीस गोटा केना लदय छैक।' इ परमेश्वर बाबूक हमरा प्रति आह्वान छलैन। हमहुँ एही क्षणक अधीर प्रतीक्षा मे छलहुँ। बरियाती सब आबि गेल छथि। सभकें हाथ मे एक-एक टा झोरा बा बेग छलैन।

'हे-कका-बबा सभकें भीतर जाय दियौन।' परमेश्वर बाबू 'सीट अरेंजमेंट' शुरू कैलाह। ड्राइवर के पाँछावाला सीट पर छः गोटे आँगा-पाँछा कय कऽ बैसि गेलाह। पाँछा मे दुनू तरफ कें सीट पर तीन-तीन गोटे। बीच मे खबास आ ओकर बेटा। चौदह गोटे अटि गेलाह। आब ड्राइवर सँगे सेहो पाँच गोटे बैसलाह। बिचला सीट के दुनू तरफ दू-दू टा छौंड़ा लटकि गेल। जीपक पाँछा मे चारि गोटे लटकि गेलाह। ताबत मे देखलौं धड़धड़ा कऽ किछु नवयुवक (हाफ पैंट-फूल पैंटवाला) जीपक चाड़ पर बैसि रहलाह। चाड़ पर सामान राखय वाला लोहा कें छड़ पकड़ि लेलनि। गनल गेल तऽ एगारह 'मुँड' भेलनि। एहू सँ बचला तऽ दू गोटे गाड़ीक बोनट पर बोरा धऽकऽ बैसि रहलाह।

'आब गनियौक। चालीस टा मुँड अछि कि नहि?' विजेताक मुस्कान छोड़ैत परमेश्वर बाबू बजलाह।

'एतेक लदलाक उपरान्त की जीप आँगा बढ़तैक?' हम पुछलियैन। 'बढ़तैक—खूब बढ़तैक। अपनेक सुकुमार वैन सँ आँगे पहुँचतैक।' परमेश्वर बाबू बायाँ हाथ धोतीक कोर धेने बजलाह। 'हाँकू यौ डरेवर साहेब।' आ जीप हड़बड़ा कऽ स्टार्ट भऽ गेल। हम सभ वैन मे पाँच गोटे आ आँगा जीप मे (जीप पर सेहो) चालीस गोटे।

जीप के आँगा चलैत देखलहुँ। बुझायल कोनो मस्त हाथी जा रहल अछि। माड़रि-जयनगर छड़की पर कुदैत-फनैत अबैत जीप पर लोक बोरा जँका लदल छलैक। ड्राइवर साहब सेहो अगिला सीट पर कोनो तरहे स्टीयरिंग थमने छलाह। जीप कखनो दहिना झुकि जाइत छलैक तऽ कखनो बायाँ। झुकैत काल मे बुझाइत छलैक जे आब निच्चा खसत तऽ ताब। मुदा सरकस के कुशल खिलाड़ी जकां यात्री समेत जीप दोसरे पल दोसर दिस भऽ जाइत छलैक। सड़क के दुनू कात बीस-पच्चीस फुट खधिया। एक दिस खेत, दोसर दिस घऽर। सड़कक दुर्दशाक प्रर्तिमूर्ति घऽर सभ आधा पकिया-आधा कचिया छलैक। पकिया ततेक दूर धरि छलैक जाबत धरि सड़क परहक ईंट ओखाड़ल जा सकल। अपन अधिकार क्षेत्र ताकि ईंट ओखाड़ल भेलाक बाद माटिक भीत। एगो-दूगो पीटल छत वाला छोटकी-छोटकी घऽर सेहो देखलहुँ। इ सड़क कें खरंजा एहि घर सभक भाग्ये कैल गेल छलैक—से बुझबा मे कनिको दिक्कत नहि भेल। कनिया कहलथिन, 'बाट एहन धोंछ आ मकान सभकें देखियौक।' हम कहलियनि, 'बाटक पौष्टिकता कें इ मकान सभ नीक जकाँ भोगने छैक।'

ओहुना गाम घऽर मे इ आब रिवाज भऽ गेल छैक। किनको घर मे पेटी राखय मे दिक्कति भेलनि तऽ सड़क सँ दू-चारि-टा ईंटा उखाड़ि लेलनि। अधिकांश घरक चौकी ऊँच पर बैसाओल गेल छैक। ईंटा खरंजे सँ आयल छैक। उपलब्ध वस्तुक प्रयोग जौं देखबाक हुए तऽ गाम घऽर मे देखि सकैत छी। जखन घऽर मे ईंटाक एतेक प्रयोजन छैक तऽ खरंजा कें मरणासन्न भेला सँ कियो नहि रोकि सकैत अछि। माड़रि जयनगर रोड वास्तव मे यैह बीमारी सँ ग्रस्त छैक।

जीप जखन लगीच आयल तऽ बुझि पड़ल जेना आब हम सभ धकिया कऽ निच्चा खसि पड़ब। जीपक ड्राइवर इशारा केलक गाड़ी अपन दहिना दिस रोकू। गाड़ी रूकल। जीप सेहो। जीप सँ पंद्रह-बीस गोटे धड़धड़ा कऽ उतरलाह आ जीप के रास्ता देखाबय लगलथिन। 'हँ...हँ...कनिक बाम....आरो....आरो....। आब कनिक दहिना.....हाँ....हाँ....।' बस आब घीचियो। ऐना करैत-करैत जीप हमर गाड़ीक बायाँ आँगा निकलि गेलैक। मोन शान्त भेल। एगोटा सँ पुछलियनि, 'यौ जयनगर कतेक दूर छैक।' या तऽ आबि गेलैक। दस लग्गा हेतैक।' साहस बढ़ल। एहू सँ कनेक बेसी उत्साहित करैत एगोटा बजलाह, 'अपने जयनगर मे छी, बुझू।'

जीपक पैसेंजर सभ तऽ ओना पैसेंजर छलाह, मुदा हुनकर सभक वेशभूषा देखि कऽ एक पलक लेल कनिक आशंका सेहो भेल। मोन पड़ि गेल दलसिंहसरायक कथा। ओहो पैसेंजर छलाह। गोर धपधप। खादी के कुर्ता-पैजामा वाला। लागत जेना कि कोनो राजनीतिक दल कें नेता छथि। मुदा शुक्लपक्ष कें भीतरक कृष्णपक्ष कतेक भयावह छल सेऽ चना बेचय वाला बाद मे कहलक। देह सिहरि गेल। कोना बाँचि गेलहुँ?

भैया कें दुरागमनक पश्चात बाबू, ददा, भैया सभ सिलीगुड़ी चल गेलाह। पुरुष मे बाँचि गेलहुँ हम चौदह वर्षक मर्द। एक महीना बाद माय, भौजी, काकी, दीदी, पीसी आ धिया-पुता सभकें लऽ कऽ सिलीगुड़ी विदा भेलीह। नेतृत्व छल हमर। गाम सँ पुपरी, दरभंगा, समस्तीपुर पहुँचलहुँ। समस्तीपुर मे वैशाली एक्सप्रेस भेटल। बहुत कम यात्री। ओहुना वैशाली एक्सप्रेस जनता गाड़ी छलैक। कनिक चललहुँ आ बेसी ठहरलहुँ वाला। तैं एहि मे कोचम-कोच नहि छलैक। हम सभ पसरि-पसरि कऽ ट्रेन मे बैसलहुँ। बरौनी पार कयलाक पश्चात उज्जर धोती-कुर्ता वाला सँ भेंट भेल। सौंसे डिब्बा मे दुइये टा परिवार छलैक। सीट सभ यात्री विहीन। तइयो ओ व्यक्ति हमरा बलधकेल घुसका कऽ बैसि रहलाह। पुछय लगलाह, 'कहां से आया है? कहां जायेगा? और कौन-कौन है?' सभटा प्रश्न कें सज्जन बालक जकाँ जवाब देलियनि। ओ खुश भेलाह। मुँह पर मुस्की साफ देखा रहल छल। गाड़ी अगिला स्टेशन पर रूकल तऽ ओ भलामानस कुर्ता सम्हारैत उतरि गेलाह। गाड़ी सीटी मारलक आ अपन मंथर गति पकड़लक तऽ कान मे आवाज आयल-चऽऽना, चऽऽना....। जेबी सँ एकटा बीसपैसी निकालि कऽ बदाम किनलहुँ आ बाकी लोक सँ ओट भऽ गेट लग ठाढ़ भऽ कऽ फाँकऽ लगलहुँ। बदाम खत्म भेला पर कागज गेट सँ बाहर फेकैत काल ट्रेनक पाँछा दिस नजरि गेल

तऽ देखलहुँ वैह भलामानस गाड़ीक पौदान पकड़ने लटकल छलाह। सौंसे गाड़ी खाली छलैक। तैयो पौदान पकड़ि लटक'केर अर्थ नहि बुझायल। ताबत मे एकटा स्टेशन आबय लगलैक। स्टेशनक पहिने एकटा पैघ आ चौड़गर सिगनल हमरा माथे पर सँ 'क्रास' कैलक। आँखि देखि रहल छल। बुझि रहल छलहुँ, मुदा शब्द बाहर नहि भऽ रहल छल। ओ लटकल भलामानस लऽग सिगनल एलैक तऽ ओ जाबत अपने कें सम्हारता सिगनल पोस्ट सँ भीड़ गेलाह। भीड़िते ओ भारी देह हवा मे चित्त भऽ कऽ जमीन पर खसलाह। हंगामा भऽ गेलैक, लोक सभ दौड़ल। कनिके काल मे ओ भलामानस एकटा खाट पर बेसुध सुतल छलाह आ चारि गोटे खाट लऽ-कऽ हमरा आगू सँ निकललाह। आह! केना भऽ गेलैक। मोन मे इ सोच-विचार करिते छलहुँ कि चना वाला बाजि ऊठल, 'अच्छा हुआ। साला डकैत था।' हम अचकचा गेलहुँ। कहलियनि, 'ये हमारे पास बैठा था।' - 'अरे तब तो आप लोग बच गये।' चना वाला कहि उठल। ppp

ÑÑaeţÚÙÑ

बड्ड रोमांचक स्थिति रहैक। एहि सँ पहिने रेलगाड़ी नहि देखने छलहुँ। नाम सुनैत छलियैक। बाबू, ददा, कका जखन परदेस सँ अबैत छलाह तऽ सुनैत छलियैक। पहलेजाघाट एक्सप्रेस देरी कऽ देलक। तैं पुपरी मे साँझ भऽ गेल? हमर गाम सँ नजदीकी रेलवे स्टेशन पुपरी छैक। पुपरी सँ चारि कोस उत्तर मे हमर गाम। ओहि बेर जखन बाबू गाम एलाह तऽ दाई कें कहलथिन जे एहि बेर बच्चो सभ कें सिलीगुड़ी लऽ जेबैन। दाईक की प्रतिक्रिया रहनि से एखन मोन नहि अछि, मुदा सिलीगुड़ी जयबाक बात सुनिते जेना लागल पीठ पर पाँखि उगि आयल अछि आ बतासक साथ बहैत सिलीगुड़ी जा रहल छी।

आइ सँ प्राय: तीस वर्ष पहिनेक इ घटना छैक। गाम सँ पुपरी आ पुपरी सँ गाम। खूब चौड़गर सड़क होइतो नहि तऽ तखन गाड़ी-घोड़ाक बाट छलैक आ नहि आइ छैक। दुनिया कतऽ सँ कतऽ पहुँचि गेल। किछु गोटे चंद्रमा पर सँ सेहो भऽ एलाह। सूचना तकनीकी केर एहि क्रांतिकारी युग मे चोरौत-पुपरीक यात्रा एखनो आदिम सभ्यता के शुरुआती समयक छैक। इ एहन सड़क छैक जे सोझे नेपालक सीमा तक जाइत छैक। एखनो लोक ओहिना जाइत छथि, जेना पहिने जाइत छलाह।

सिलीगुड़ी जयबाक उत्साह सँ भरल हमरा पतो नहि लागल जे चोरौत सँ पुपरी कोना आबि गेलियैक। कनेक-कनेक मोन अछि। यात्रा संक्षिप्त करक लेल हम सभ खुरपैटिया बाट पकड़ने रही जे खेते-खेते, आड़िये-आड़िये जाइत छलैक। आड़ि के नीचा खेत मे बदाम, मटर के छीमी, हाथ निच्चा कय कऽ बालि तोड़ि कय मुँह मे टपाटप देबक अनुभव विस्मृत नहि भेल अछि। आ नहि खैसारीक लत्ती के ऊपरे सँ खोंटि खेबाक बात आ स्वाद।

पुपरी स्टेशन के बाहर पहुँचैत देरी मोन उमंग सँ भरि गेल। देखलौं बायाँ दिस खाली मैदान मे बैलगाड़ी, टम-टम लागल अछि। टमटमक सजल-धजल घोड़ा सभ एम्हर-ओम्हर घूमि-घूमि कऽ घास खा रहल छल। ओकरा एम्हर-ओम्हर घुमैत देरी ओकर गरा मे बान्हल घंटी बजैत छलैक टन-टन आ खूरक ध्वनि टप-टप। टन-टन, टप-टप ध्वनिक सम्मिश्रण लगैत अछि जे एखनो कान मे सहेजल राखल अछि। आत्मविभोर करयवाला स्मृति.........।

प्लेटफार्म पर अबिते रेल लाइन आ दुनू कात लोहा कें स्टैंड पर स्थित पीयर पटरी पर कारी सँ जनकपुर रोड आ ब्रेकेट मे पुपरी लिखल देखलहुँ तखने पता चलल जे शहर पुपरी वास्तव मे रेलक लेल जनकपुर रोड छैक।

स्टेशनक नाम जनकपुर रोड देखबाक संभवत: पैघ कारण इ छल हेतैक जे एहि ठाम सँ सोझे उत्तर मुँहे जे सड़क छैक से चेरौत होइत भिट्टामोड़ तक चलि जाइत छैक आ बोर्डर के ओहिपार जनकपुर से दक्षिण मुँहे निकलल सड़क मे मिल जाइत छैक। अर्थात् जनकपुर

रोड सँ जनकपुर (नेपाल) जयबाक सीधा रास्ता एही ठाम सँ छैक। तैं जनकपुर रोड। ओहि समय मे जखन जनकपुर रोड सँ साक्षात् भेल तऽ इ तर्क माथ मे नहि आयल छल। तकर एकमात्र कारण छलैक जे ताहि उम्र मे माथ मे अनेक दोसर तरहक गप्प-तर्क सभ अबैत-जाइत रहैत छैक। धिया-पुताक अवस्था मे जौं एहन गप्प सब अबैक तऽ ओ धिया-पुता नहि रहत। मनुक्ख भऽ जायत।

रेलवे स्टेशन पहिल बेर देखल। प्लेटफार्म पर चद्दरि ओछाओल गेल आ सभ कियो बैसि रहलाह। बच्चा सभ कतहु लाइन पर नहि चलि जाय, ताहिक लेल कका बेर-बेर घिरावथि, 'हे ! ओम्हर नहि जाऊ। एम्हरे सँ लघुशंका कऽ लियऽ। प्लेटफार्म पर जलखै भेलैक। हमरा तऽ चूड़ा-दही कंठ सँ नीचा नहि उतरि रहल छल। एतबा मे कका टिकट अनलाह। बाबू कें देलखिन तऽ बुझलौं जे कूट के छोटका-छोटका आयताकार वस्तु टिकट छैक। कका कहलथिन, 'एहन टिकट हम कतेको बेर कटौने छी। तोहर बाबा जखन कानपुर जाइत छलाह तऽ हमही टिकट कटा कऽ दैत छलियनि।

गप्प-सरक्का होति, खाइत-पीबति मे दूरे सँ गाड़ी सीटी देलकै। प्लेटफार्म पर ट्रेन पकड़निहार आ चढ़ौनिहार सभ सजग भेलाह। हमहुँ सभ कौतुहल सँ चकुआय लगलहुँ, आकि ट्रेन धड़धड़ाइत आयल आ थमि गेल। तकरा बाद हम सभ केना ट्रेन मे घुसलहुँ, ककाक छेकल सीट पर बैसलहुँ, आ कका पुन: प्लेटफार्म पर उतरि गेलाह से मोन नहि अछि। मोन अछि ट्रेन सँ यात्रा आरम्भ होयबाक पूर्व ककाक कहल एकटा वाक्य। कका दुनू हाथ के पाँछा सँ माथ पर धेने ललाइत आओर भरल आँखि सँ बजलाह, 'जो नै। शहर मे लाठी वाला बिजली देखिहें।'

लाठी वाला बिजली तऽ देखलहुँ, मुदा एकर अर्थ एखन धरि नहि लागल। कका सँ कतेक बेर पुछबो कैलियनि, 'कका अहाँक लाठी वाला बिजली की ट्यूब लाइट छैक?' सभ बेर कका सिर्फ हँसि दैत छथि। हम अपनो सँ कतेक बेर एकर अर्थ ताकय मे अपन मगजकें झकझोरने छी। आखिर लाठी वाला बिजली की छैक? ppp

ÑÑÃ&ê¿ÑÑ

जयनगर पुल सँ पहिने जतऽ माड़रि वाला सड़क जयनगरक मुख्य सड़क सँ मिल जाइत छैक, दूटा पानक गुमटी छैक। ओतय पहुँचैत देरी बुझायल जे आब बाँचि गेलहुँ। कनिया आ बच्चा सभ दिस तकलहुँ तऽ हुनको सभक मुँह पर आश्वस्तिक चेन्ह स्पष्ट भेटल। तनाव कें कोनो रेखा नहि छलैन। ड्राइवर डेका पुछलक, 'एतिया भाल रास्ता पाम ने की?' (आब तऽ नीके बाट भेटत तऽ)।

'हाँ–आब दिक्कत नहि छैक।' इ सुनिते ओकरो मन नवीन ऊर्जा सँ भरि गेलैक। मुदा हमरा विश्वास नहि भऽ रहल छल। पान दोकान पर गेलहुँ। पान कीनिकऽ पाइ देलियनि। दोकानदार पाइ लौटा देलक। कहलक, 'भारु दियौक। मोहर नहि चलत।' तखन हमरो भरोस भेल जे इ ठीके जयनगर छैक। आब कोम्हर जेबैक, एगोटा सँ पुछलियनि, 'यौ रहिका जेबैक?' चट्ट जवाब भेटल, 'दहिना चलि जाऊ।'

तखन तीन बजैत छल। गर्मी खूब छलैक। गाड़ीक एसी सँ बाहर निकलिते घाम–पसीनाऽ सँ तड़बतर भऽ गेल रही। 'दहिना' सुनिते ड्राइवर बुझि गेलैक। भाषा नहि जनितो संभवतः ओकर 'परामनोविज्ञान' काज कऽ गेल होइक। कनिये देर मे हम सभ रहिका दिस जा रहल छलहुँ। बच्चा दुनू अपन–अपन खिड़की सँ मिथिलाँचल देखि रहल छलीह। हमर नजरि सीधा सड़क पर। ओना सड़क तऽ छलैक, मुदा असंख्य ठाम टूटल आ कतौ–कतौ फाटल सेहो रहैक। सभ कें बचबैत मे गाड़ी तेजी पकड़िते नहि छल। ओम्हर बेर बीतल जा रहल छलैक। सबेरगहे रहिका पहुँचबाक छल। ककरौड़ बाटे मुरलियाचक'क रास्ता देखल नहि छल। साँझ सँ पहिने जौं ककरौड़ पहुँच जाइ तऽ मुरलियाचक जयबा मे दिक्कत नहि हैत। दिमाग मे यैह चिंतन चलि रहल छल। ओम्हर पछिला सीट पर कनिया कें दुनू कात बैसल बच्चा दुनू बतियाबऽ लगलीह। विषय छलैक मुरलियाचक मे हुनक सभक सँगी कें हेतैन?

गाम सँ परदेस प्रवासक पहिने हमरो लेल गामे सँसार छल। ओहि ठाम सब किछु। भोजन–स्नान, स्कूल–मास्टर, खेत–खलिहान, बाजार–मेला आ दोस्त आदि। दोस्त मे दोस्त ककना और दिनेश। ककना दूर सँ पितिऔत आ दिनेश ओहू सँ दूर सँ पितिऔत। करीब–करीब हमवयस्क। ककना एखन कोलकाता मे छथि। कोलकाता जखन कलकत्ता रहैक तखने ओ गेल छलाह। गाम अबैत छथि पावनि–तिहार अथवा कुनू काज मे। दिनेश गामे पर रहि गेला। माय–बापक असगर बेटा। चारि टा बहिन पर सँ दिनेश छथि। तैं खूब दुलरुआ। बाबू नजदीक कें एकटा स्कूल मे प्रधान शिक्षक छलथिन। आब 'अवकाश प्राप्त' कऽ लेलनि।

गाम पर दिनेश हमर अंतरंग मित्र छलाह। नीक–अधलाह सभक संगी। परदेस सँ गाम पहुँचैत देरी हुनका खबरि लागि जाइत छलैन आ ओ दरवज्जा पर आबि जाइत छलाह। गाम मे कका हमरा कतेक बेर डँटने हेताह, 'ओकरा सँगे नहि रह। ओ ठीक नहि छैक। ओकर चालि–चलन ठीक नहि छैक। बापक दुलरुआ पढ़ाइ–लिखाइ मे फिसड्डी छैक, आदि–

आदि।' मुदा हमर मोन ओकरे सँग लगैत छल। पोखरि मे हेलैत–हेलैत जाइठ छूनाइ, कलम घूमनाइ। साँझ मे चौक आ पेठियाक चक्कर लगौनाइ, इ सभ कार्यक्रम ओकरे सँग सँ संपूर्ण होइल छल। कतौ केओ जौं पूछि देलथिन जे इ बालक कें छथि तऽ जवाब दिनेशे दैत छलाह। गाम पहुँचैत देरी दिनेश हमरा लेल अनिवार्य भऽ जाइत छलाह।

एक बेर हम हुनका एकटा पोस्टकार्ड पर अंग्रेजी मे कुशल–क्षेम लिखलियनि तऽ बाद मे गाम गेला पर ओ हमरा सँ रूसल छलाह। बूझय मे आयल जे हमर चिट्ठी हुनकर पिता पढ़लथिन आ ओइ दिन दिनेश कें खूब फटकार भेटलनि। बौंसलाक उपरान्त दिनेशक उपराग छल, 'तोरा चिठिये लिखबाक छलौ तऽ हिन्दी मे कियैक नहि लिखलैं? अंग्रेजी की बड्ड बेसी आबि गेलहु।'

असल मे भेल रहैक जे हमरा स्कूल मे मास्टर साहब हमर कक्षा के सभ विद्यार्थी के चिट्ठी लिखब सिखौलथिन। एकटा चिट्ठी अपन अनाम मित्र के लिखबाक छलैक। हमहुँ लिखक प्रयास केलहुँ। मास्टर साहब ओकरा शुद्ध–दुरुस्त कऽ देलथिन। आब मोन मे इच्छा भेल जे इ चिट्ठी कें उपयोग करबाक चाही। अति उत्साह मे आबि कऽ पोस्टकार्ड किनलहुँ। दिनेशक नामे चिट्ठी लिखलहुँ आ पोस्ट आफिस जा कऽ डाक बाक्स मे खसा देलियइ। इ अति उत्साहक परिणाम भेलैक जे हम अपन अभिन्न मित्र के सँकट मे फँसा देलियनि। मित्रक पित्त ठीक छलैन।

दिनेश के पढ़य–लिखय मे मोन नहि लगलैन तऽ ओ अपना कें काज मे लगैबाक प्रयास कयलनि। कयेकटा दोकान खोललनि। बन्न भऽ गेलनि। लोक सभ खूब उधारी मे किनलक। उधारी ततेक भऽ गेलैक जे पूँजी–पट्टा सभ गायब भऽ गेलैन। आब खेतीबारी देखैत छथि। धिया–पुता कें तऽ बबा पढ़ा दैत छथिन। विवाह–दान सेहो हुनके बदौलति सँभव छनि। दिनेश कें एही सभ सँ कोनो मतलब नहि छनि। एम्हर सूर्य पश्चिम दिस विदा हेताह कि दिनेश कुर्ता–पैजामा झारि, सेंट छीटिकऽ चौक दिस विदा भऽ जेताह। चौक पर बहुत तरह कें काज रहैत छैक। परदेसिया सभ सँ भेंट केनाइ, हुनके सभ सँगे चाह पीनाइ। नव राजनीतिक घटनाक्रमक विश्लेषण आ आन–आन गाम सभक कथाक विस्तार चौके पर होइत छैक। गामघऽरक चौक पोखरि जकाँ गहीर होइत छैक जाहि मे ततेक गप्पक भंडार समायोजित छैक, जकर कल्पनो कनाइ मुश्किल। वास्तव मे चौकक विशिष्टताक वर्णन कनेक मे सँभव नहि छैक। चौक'क महिमा अपरंपार। एखन दिनेशक व्यक्तित्वक विश्लेषण चलि रहल अछि। दिनेश चौक'क शोभा सुन्दर छथि। ककरो सँ पूछि लियौक। ओ कहबे करताह–जाहि दिन दिनेश चौक पर नहि अबैत छथि ताहि दिन चौक अनाथ जकाँ बुझाइत छैक। दिनेशक सँगे चौक पर जेनाइ एकटा विशेष आनंद दैत छैक। गाम गेला पर इ आनंद सँ हम वंचित होबय नहि चाहैत छी। संभवतः दिनेश कें सेहो हमरा सँगे चौक जाय मे विशेष लाभ होइत छनि। हम जतेक दिन गाम पर रहैत छी, हुनकर चौक'क खर्च शून्य भऽ जाइत छनि। ओना मुरलियाचक'क चौक कें बात भिन्न छैक। आखिर हम ओहि गामक जमाय छी। ppp

ÑÃÅ¿ÛUÑ

जौं माड़रि सँ जयनगरक बाट आदिम जमाना मे आवागमन'क स्मरण कराबति अछि तऽ जयनगर सँ रहिका'क बाट सेहो कोनो आधुनिक दुनियाक दिग्दर्शन नहि कराबति अछि। सड़क पक्की छैक, मुदा ततेक ठाम सँ टूटल, जकर गणना संभव नहि छैक। कोनो छोट, कोनो पैघ। कतहु बीचे सँ नाला खोदल छैक। अहि कात सँ ओहि कात पानि बहाबक लेल। सड़कक एहन दशा'क लेल सिर्फ शासने टा जिम्मेवार नहि छैक, बल्कि गाम-घऽरक लोको सभ जिम्मेवार छथि। किनको बाटक एक कातक डबड़ा सँ दोसर कातक खेत पटैबाक छनि तऽ बाट कें बीचो-बीच कोड़ि कऽ पैन बना लैत छथि। अहि तरहक आत्मघाती गतिविधि कें कियो रोकनिहार नहि? आश्चर्य! हम अपन पयर अपने छकरि लेब, तऽ दोसर हमरा बचैबाक लेल कियाक आओत। जयनगर सँ रहिका तक'क सड़क'क अलग दशा तखने दूर भऽ सकैत छैक, जौं स्थानीय लोक सभ जागरुक होथि। सामूहिक चिंतन कें एतेक बड़का अभाव हमरा कतहु नहि भेटल।

रहिका सँ पूर्व एकटा दोकान पर पान खाइत एगोटा सँ पुछलियनि, 'यौ इ बाटक एहन दशा कहिया सँ छैक?'

-'अनंतकाल सँ। हम जन्मे सँ देखैत छी।' हुनकर उत्तर छलैन।

-'की इ कहियो नीको भऽ सकैत छैक?' हम पुछलियनि?

-'कहियो नहि। जाबत धरि लोक सभ अपन अधिकारक लेल सचेत नहि हेताह, मिसियो भरि परिवर्तन'क अपेक्षा नहि राखक चाही।' हुनक जवाब मे समस्या'क मूल भावना छलैक। एकटा परदेसी कें उपदेश देबाक अवसर भेटैत देरी ओ भभकय लगलाह।

-'हमरा जखन ज्ञान भेल, एहने टूटल फाटल बाटक दर्शन भेल। एक बेर सुनय मे आयल बाट बनि रहल छैक। संयोग सँ किछुये दिन बाद आबक मौका भेटल तऽ बाटक एम्हर-ओम्हर किछु अलकतरा छिटायल भेटल। मुदा सड़क ओहिना छलैक। अहुँ बूझि सकैत छी। कागज मे तऽ बाट बनलैक, मुदा वास्तव मे बाट पर अलकतरा छिटल गेल रहैक। आ इ लोक सभ तमाशा देखैत छलाह। किनको साहस नहि भेलैन, आकि विचार नहि सुझलैन जे ओ ठेकेदार कें गर्दनि पकड़ि कऽ पुछितथिन जे पूरा पाइ डकारि कऽ इ हल्लुक काज कियैक करैत छी। से कियो पुछनिहार नहि भेलथिन।'

आब ओ दार्शनिक भऽ गेलाह। बाजय लगलाह, 'जनैत छियैक। हमर सभहक दुर्भाग्य अछि जे हमरा सभ मे सामूहिक चेतना'क विकास नहि भऽ रहल अछि। सभ कियो अपने-अपने दुख-धनिया मे लागत छथि। रहैत सभ कियो छथिन्ह। कष्ट सभ कियो भौगेत छथि, मुदा बजैत नहि छथि। सभ केओ कें एकेटा चिंतन छनि। धुर हम कियैक देखार होमऽय जाऊ।

कतेक दिन पर तऽ आइ एलहुँ अछि। फेर कहिया आयब। ताहिक लेल हम कियाक व्यस्त होऊ। अहिना सोचैत-सोचैत युग बीतल जा रहल अछि। इ बाट अहि ठाम, अहिना पड़ल छथि। सभ ठामक बाट कतौ सँ कतौ जाइत छैक, इ बाट अहि ठाम पड़ल छथि। एहिना रहतैक।'

-'एकर किछु तऽ समाधान होयबाक तऽ चाही?' हम पुछलियनि।

-'मुदा समाधान हेतैक कोना? कें करतैक? इ ककर बेगरता छैक? आइयो, अहाँ बुझैत छियैक जे इ अमुक बाबू करताह आ अमुक बाबू बुझैत छथिन्ह जे तेसर बाबू करताह। इ तऽ भरसे वाला नहि भऽ गलैक। आहाँक पयर मे रोड़ा गड़ि गेल तऽ पयर बचा लेलहुँ। तहिना हमहुँ करैत छी।'

-'तऽ की रहिका धरि अहिना बाट छैक?'

-'यौ रहिके तक'क बात कियैक पुछैत छी। सौंसे यैह स्थिति छैक।' धैर्य जवाब दऽ रहल छल। पान'क खिल्ली मुँह मे दबा कऽ गाड़ी मे बैसलहुँ। डेका गाड़ी हँकलक।

रहिका पहुँचैत-पहुँचैत झलफलाय लगलैक। डेका कहलक गाड़ी मे अही ठाम तेल भरा लियऽ। गाम पर तेल कतऽ ताकब। ओहुना गाम पर एम्हर-ओम्हर खूब करऽ पड़त। हमहुँ सोचलहुँ। सासुर जाइत छी। गाड़ी अछि। लोक कें देखिये कऽ बेगरता सुझैत छैक। किनको जौं मना कऽ देलियनि, दूर-छी होयत। डेका कें कहलियनि, 'यहां टंकी फूल कर लो।' पेट्रोल पंप पर गेलहुँ। टंकी भरौलहुँ आ तहन सूझल जे आब मुरलियाचक फोन करबाक चाही। बगल मे पीसीओ छलैक। पीसीओ लग पहुँचैत छी कि अन्हर बिहारि शुरू भऽ गेलैक। टीन सभ तड़तड़ा-तड़तड़ा कऽ खसय लगलैक। फोन लगौलहुँ तऽ ओम्हर सँ एकटा बचियाक आवाज आयल। एम्हर अन्हर आयल छैक। अपनेंक सासुर सँ किनको बजायब असंभव अछि। पुछलियनि, 'हम सब रहिका मे छी। कोन बाटे आऊ।' बचियाक बुधियारी छलैन। कहलैन, 'ओहि ठाम किनको सँ पूछि लियौक। ओहि बाटे आऊ।'

प्रायः आधा घंटा पीसीओ मे बैसलहुँ। अन्हरक पश्चात झमकि कऽ बरखा भेलैक। बरखाक वेग शान्त भेलाह पर बिजली आबि गेलैक। सभ दोकान मे तड़ातड़ मरकरी-बल्ब सभ जरय लगलैक। मरकारी जरैत देखिते ककाक बात मोन पड़ि गेल। ppp

ÑÑâeeÌÑÑ

रहिकाक संबंध मे हमरा मोन मे एकटा दोसरे छवि अंकित छल। प्राय: चारि वर्ष पहिने सेहो रहिका दऽ कऽ गेल रही। गाड़ी सँ सरसराइत निकलि गेलाक कारणे रहिका कें चिन्हित नहि कऽ सकल रही। एहि बेर रहिका मे किछु समय रहै केर मौका भेटल। यद्यपि एहू बेर हड़बड़ी मे रही। ऊपर सँ अन्हर-बिहारि आबि गेलैक। दीने-देखारे मुरलियाचक जयबाक चिंता छल। तथापि एहि बेर रहिका कें आँखि-मोन भरि देखलहुं। चौक पर'क पान दोकान पर पान खेलहुँ। कतेक गोटा सँ प्राण भरि गप्प कैलहुं। मुदा रहिका'क जे छवि मोन मे छल से रहिका नहि भेटल। रहिका'क नाम सुनैत छलियैक। गाम-घऽरक लोक सभक मुँह सँ जे विवरण सुनैत छलहुँ ताहिक आधार पर होइत छल जे, आन-आन शहर जकाँ अट्टालिका हेतैक, बड़का-बड़का दोकान। खूब चौड़गर बाट आ व्यस्त ट्राफिक हेतैक। रहिका कें देखि कऽ मोनक छवि बदलि गेल। ओना इ शहर अपना मे चारू कात सँ असंख्य गाम के जोड़ने अछि। विशेष कार्यक लेल अगल-बगल स्थित गाम सभक लोक रहिके पर निर्भर करैत छथि। साँझ होइते बिजलीक प्रकाश सँ इ शहर चमचमा जाइत छैक। बिजली मे मरकरी'क (लाठी वाला बिजली) आकर्षण तऽ अद्‌भुत छैक।

यद्यपि लाठी वाला बिजली रहिको मे आबि गेल छैक। इ हमर पाछाँ नहि छोड़ि रहल अछि। एकर भीतरक दर्शन कें नहि बूझि पाबि कखनो-कखनो मोन बड्ड उद्वेलित भऽ जाइत अछि। लाठी वाला बिजली आगाँ-आगाँ, हम पाछाँ-पाछाँ। इ क्रम पछिला तीस वर्ष सँ चलि रहल अछि।

सिलीगुड़ी मे पैर रखिते हम सभ जेना एकटा अव्यक्त अनुशासनक परिधि मे आबि गेल रही। भोरे स्नान। स्नानक पश्चात नीक जकाँ केश सोंटनाई आ कमीज पैंट पहिरि कऽ व्यवस्थित भेनाइ प्रतिदिनक दिनचर्या बनि गेल। एकरा बादे जलपान आ दू घंटा पढ़ाइ। तकरा बाद स्कूल। टिफिन मे घऽर आबि कऽ भोजन, पुन: स्कूल। चारि बजे स्कूल सँ छुट्टीक उपरान्त कनेक नाश्ता आ एक घंटाक लेल खेलय-कुदय केर अवकाश। सेहो बेसि दूर नहि जा सकैत छी। कतय छी तकर सूचना घऽर मे होयबाक चाही। एकरा बाद हाथ पयर धोय कऽ पढ़ाइ। राति नौ बजे भोजन आ शयन। दिनचर्या मे जौं हमरा सभ सँ कतौ-कोनो हेर फेर भेल तऽ कनैठी, चाट मुक्का सँ भेंट होइत छल। बाबू सँ बेसि ददा (बाबू सँ छोट) अनुशासन कें महत्व दैत छलथिन। बाबू व्यस्त रहैत छलाह। भोर सँ दुपहर धरि काज आ फेर साँझ सँ राति दस बजे धरि। धिया-पुता'क लेल हुनका समय बड्ड कम छलैन।

एहिना करैत स्कूल सँ निकललहुं कि बाबू अपन जिम्मेवारी सँ मुक्त भऽ गेलाह। हुनक अंतिम समयक जखन मोन पड़ैत अछि तऽ करेज मुँह धरि आबि जाइत अछि। लिखलाहाक आगाँ किछु नहि छैक। मुदा मोन इ बात कखनो मानय लेल तैयार नहि अछि। ओहने बीमारी

सँ ग्रस्त रतन बाबू झिरकुट बूढ़ भऽ कऽ मरलाह। असमय जिम्मेवारी कन्हा पर एनाइ युवा अवस्था कें खत्म कऽ दैत छैक। बहुत जल्दी हम सभ लड़कपन सँ बाहर आबि गृहस्थिक ऊँच-नीच सँ अपना के चिन्हार कराबय लागल रही।

भैया कहलैन आब एहिना चलय पड़त। किछु अहुं करू किछु हमहुं करैत छी। बड़का भैया परमहंस। छोटका अबोधे। कान्ह पर आयल जिम्मेवारी के धकलि कऽ आगाँ बढ़ैबा मे सभ गति भऽ रहल छल। लाठी वाला बिजली केर रहस्य कनेक-कनेक बुझा रहल छल। गाम सँ शहर जेनाइ मनोरंजक होइत छैक। शहर मे जा कऽ खूब घूमू, मटरगश्ती करू, सिनेमा देखू, खाऊ-पीबू आ गाम लौटि जाऊ। इ भेल मनोरंजन। आ गाम छोड़ि परदेश पकड़ि आ अपन जीवन कें ओहि कंक्रीट के जंगल मे खपैबाक-प्रयास मे जीवन समर्पित कऽ दियऽ तऽ इ उधार जीवन जीनाइ सँ कम की हेतैक।

प्रवासी अपन जीवन नहि जीवैत छथि-इ हमर भोगल यथार्थ अछि। कतबो कमा-खटा लेब, संपत्ति अरजि लेब, मुदा कहायब प्रवासिये। अपनो प्रवासी, धियो-पुता प्रवासी। अगिला पीढी सेहो। कल्पना, अपेक्षा, महत्वाकांक्षाक ऐना राइ-छित्ती होइत देखैत रहू। बुझैत रहू। बाजि नहि सकैत छी। आखिर ककरा लग बजबैक। के बुझत प्रवासक इ दर्द। एखन धरि हम लाठी वाला बिजली कें बुझय मे लागल छी। हमरा बाद हमर धिया-पुता एहि प्रयास मे अपन जीवन खपा देत। ओकर बाद ओकर, आ........। ppp

ÑÑ¥ÉÆ±ÑÑ

जाबत धरि बाबू जीवित छलाह हम सभ भाइ बच्चे छलहुं। असाध्य रोग सँ ग्रस्त हुनका धऽर खसबिते हम सभ अपना कें प्रौढ़ जकाँ बूझय लगलहुँ। ताबत धरि गाम जयबाक बात सुनिते मोन प्रसन्नता सँ भरि जाइत छल। कोन ट्रेन सँ जायब। एहि बेर ट्रेन मे खिड़की सँ नहि हटब। सभ स्टेशन कें देखब। सभहक नाम लिखब। गाम पर कि सभ करब-तकर योजना बनय लगैत छल। कम-सँ-कम एतेक दिन गाम पर पढ़ब-लिखब सँ तऽ छुट्टी भेटत। मुदा शहरक अनुशासन गाम धरि पाछाँ नहि छोड़ैत छल। पैंट-शर्ट पहिरने, केश सोंटने दरवज्जा पर बैसल रहू जाबत धरि बाबू बैसल छथि। एहि बीच जौं केओ गौटे आबि गेलाह तऽ हुनकर पएर छूबि कऽ प्रणाम करू। आ पूछताह, कोन कलास मे पढ़ैत छी? अच्छा एकटा ट्रांशलेशन कहू— 'मैं खाता तो हूं'। अपन क्लास बतबैत जखने कहलियनि, 'आई डू इट'-बाबूक चेहरा पर प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेलैन। परिश्रम सार्थक भेल।

एतेक अनुशासन औपचारिकताक पश्चातो गाम मे नहायब-लोटायब, अपना मोने घूमब-फिरब केर बहुत समय छलैक। गाम-जाइते जेना मोन अपनत्व सँ भरि जाइत छल। बुझाइत छल जे मातृभूमि एकरे कहैत छैक। एकरे कहैत छैक-जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसे। ओ माटि स्वर्गो सँ नीक छैक। माय जकाँ। माय'क देह सँ मनुक्खक जन्म होइत छैक। मातृभूमि ओहि देह कें अपना मे मिला लैत छैक। माय दूध पिया कऽ पालति छथि। मातृभूमि अनाज दऽ देह बना दैत छैक। माय संस्कार दैत छथि। मातृभूमि ओहि संस्कार कें पल्लवित पुष्पित करैत छैक। एम्हर माय, ओम्हर मातृभूमि । दुनू एक्के। मुदा दुनू माय केर ममता-स्नेह भाग्यवाने कें उपलब्ध होइत छैक। प्रवास मे रहय वाला एतेक भाग्यवान कतय सँ हेताह। केयो आधा तऽ केओ कनिको नहि। हम सभ आधा भाग्यवान छलहुं। एकटा माय केर आंचर भेटल। प्रवास पर जाइते दोसर माय केर आंचर पएर तर सँ निकलि गेल। आबो मोन फटफट करैत अछि। तैं गाम जयबाक नाम लैते मोन एकटा अद्‌भुत प्रसन्नता सँ भरि जाइत अछि-दोसर माय केर ममता-स्नेहक अपेक्षा मे।

दोसर माय केर अभाव प्रवास मे ओहिना बुझाइत छैक जेना गाछ सँ खसल पात। घऽर-परिवार, संपत्ति, जमीन रहितो प्रवासीक पीड़ाक अन्त नहि छैक। ओकरा लेल प्रवास एकटा जरैत मरकरी छैक-लाठीवाला बिजली-जकर प्रकाश चमचम कऽ रहल छैक, मुदा ओकर भीतरक करंटक प्रवाह जीवन कें कखनो निस्पंद कऽ सकैत अछि। देखू-छूबू नहि।

गाम छूटल तऽ बुझू स्वाधीनताक हरण भऽ गेल। गाम अप्पन होइत छैक। परदेश तऽ परक देश। परदेश मे लोक खूब कमा लैत अछि। जमीन-घऽर कीनि लैत अछि। मुदा गाम सनक स्वाधीनता कतय भेटतैक। ओ तऽ किनलो सँ प्राप्त होबय वाला नहि छैक। गाम मे किछु नहि रहितो बहुत किछु छैक। अपन लोक-अपन घऽर, अपन जमीन-अपन आकाश सभ किछु।

एक छोटछिन कोठरी मे दस गोटेक निर्वाह होइत छैक। गाम पर दस गोटे दस टा दलान पर सुतैत छथि। जनसंख्या घनगर भेलाक उपरान्तो गाम फैलगर छैक। शहर मे तऽ देह सँ देह सटाकय निर्वाह होइत छैक। कोलकाता गेल छलहुं तऽ देखलहुं। ओहू सँ बेसि मुंबई मे छैक। घंटा पर सीट भेटैत छैक। चाल सभ कें कतय सँ नसीब हेतैन। तैं बंबई वाला कका गाम पर अवैत छलाह तऽ जतय-ततय बेसुध भऽ कऽ सुति रहैत छलाह। जीवन भरि प्रवास मे रहलाह। नौ बरखक छलाह तऽ घऽर सँ भागि गेल छलथि। तखन मरकरीक आकर्षण आँखि के चोन्हिया दैत छलैन। ओहि आकर्षण पर ओ दरभंगा, समस्तीपुर, बरौनी होइत मुंबई पहुँच गेलाह। एके बेर सात वर्ष पर घुमलाह। माय-बाबू नहि रहथिन भैया पकड़ि कऽ बियाह करा देलथिन। बियाहक उपरान्त साल भरि गाम पर रहलाह आ फेर उचाट लागि गेलैन। फेर बंबईक बाट पकड़लाह। काकी गामे पर रहि गेलथिन। एहि बेर ककाक गाम सँ संपर्क छलैन। चिट्ठी-पत्री लिखैत रहथिन। पार्सल पठौलथिन्ह तऽ ओहि मे काकी केर लेल प्रसाधनक साम्रगी आ दूइ खण्ड नूओ रहैक। दूइ वर्षक बाद कका गाम एलाह तऽ एके मास रहि कऽ काकी कें सँगे लैत लौटि गेलाह। फेर तऽ हुनका गाम सपना भऽ गेलनि।

ओना बंबई वाला कका दूइ-चारि बेर गाम एलाह। काजे-तिहार मे, गाम आबथि तऽ पोखरि मे आसन स्नान करैथ। पोखरि मे पानि पर आसन जमा लैत छलाह आ दूइ-दूइ घंटा छताइत रहैत छलाह। लोक सभक कहब छलैक कका योग जनैत छथि। गाम सँ भागि कऽ ओ साधू सभ सँगे रहैत छलाह। साधू सभ हुनका किछु अपन गुर सिखा देने रहैन। ताहि मे आसन स्नान सेहो छलैक। धिया-पुता सभक सँगे हुनका बड्ड मोन लगैत छलैन। हमरा बड्ड मानथि। दुइये की तीन-बेर हमरा हुनका सँ भेंट छल। जहिया हम सभ गाम आबी तऽ हुनक घऽर मे ताला देखियैन। जहिया ओ गाम जाइत छलाह तऽ हम नहि छलहुं। तथापि ककाक व्यक्तित्व हमरा बड्ड प्रभावित केनय छल। ppp

ÑÑàeÑÑ

रहिका सँ ककरौर आ ककरौर सँ मुरलियाचक। ओना ककरौर कें रहिके मे बुझू। रहिका चौक पर झिसियाइत वर्षा मे गाड़ी सँ निकलि कऽ पान दोकान पर गेलहुं। पान खेलहुं आ पुछलियनि ककरौर कतऽ छैक। पानवाला पुछलनि, 'कतऽ जयबै?'

'मुरलियाचक।'

'सोझे चलि जाऊ। एक किलोमीटर गेला पर त्रिमुहान भेटत। दहिना घूमि जायब। सोझे सिमरी होइत मुरलियाचक पहुँचि जायब।'

पुछलियनि, 'बाट केहन छैक।'

'ठीके भेटत। खरंजा छैक।'

जेबी सँ एक टकिया निकालि कऽ दोकानदार कें देलहुं आ फेर झीसी मे भीजति गाड़ी मे बैसलहुं। गाड़ी ककरौर दिस बढ़ल।

अनचिन्हार ठाम पान दोकान कुनू 'पूछताछ कार्यालय' सँ कम नहि होइत छैक। बटोही सँ जौं किछु पूछबनि तऽ हुनक प्रतिक्रिया रंग-बिरंगक भेटत। हुनक 'मूड' केहन छनि। स्थानीय छथि की नहि। मुदा पानवाला कें पास 'रेडीमेड' आ सर्वमान्य उत्तर उपलब्ध रहैत छनि। स्टेशनक 'पूछताछ' काउंटर जकां। दिल्ली वाली गाड़ी कब आयेगी..... तीन घंटा लेट है। फलाना गाड़ी कब आयेगी..... पांच घंटा लेट है। अमुक गाड़ी किस प्लेटफार्म पर आयेगी.... जब आयेगी तब बताया जायेगा... आदि आदि। मुदा पान दोकानवाला एहि सँ कनेक बढ़िकय सटीक जानकारी देत। कतेक किलोमीटर..... कोन दिस..... बाट केहन। सभटा प्रश्नक उत्तर जिह्वे पर रहैत छनि आ हाथ पान पर। कथ, चून, सुपारी, जर्दा, मीठा मसाला.... सभक उचित परिमाण। आ मोड़िकय पान पर कत्था लपेटति आगां बढ़ा देताह। संगहि जिज्ञासाक समाधान सेहो।

बंबई वाला कका अपने आपमे हमरा सभक लेल 'पूछताछ काउंटर' सँ कम नहि छलाह। कुनू तरहक प्रश्न पुछियौन-उत्तर तैयार।

- 'कका यौ बंबई जाय मे कतेक दिन लगैत छैक?'

- 'मेल गाड़ी सँ जाऊ तऽ तीन दिन, नहि तऽ चारि दिन।'

- 'मेलगाड़ी केहन होइत छैक?'

- 'ओहने, जेहन आन गाड़ी होइत छैक। बेसी ठाम नहि रुकेत छैक। तैं 'मेल' भेलेक।'

- 'बंबई केहन लगेत छैक?'

- 'पचास-सौ मंजिला मकान, पकिया सड़क, बड़का-बड़का दोकान, खूब गाड़ी आ सिनेमा।'

- 'सिनेमा केहन होइत छैक?'

- 'एकटा बरकाटा के घऽर मे लाइन सँ कुर्सी लागल रहैत छैक। आगां मे एकटा बरका उज्जर परदा टांगल रहैत छैक। पाछां सँ बिजली कें रोशनी फेकैत छैक तऽ परदा पर चित्र चलऽ लगैत छैक। हम 'संपूर्ण रामायण' फिल्म देखने छलहुं। मोना मे।'

एहने सन जिज्ञासा सभ। कका कखनो उत्तर देबा सँ पाछां नहि हटैत छलाह। ओना धिया-पुता सभके ओ दुलार बड्ड करैत छलाह, मगर खुअबैत खूब कम छलाह। हमरा मोन अछि-एक बेर बंबई सँ लेमनचूस आनने रहथि। खूबे मिठ छलैक। एकरा अलावे हमरा मोन नहि अछि जे ओ कहियो हमरा सभकें किछु खुएने हेताह।

हमर गाम मे सप्ताह मे चारि दिन बाजार लगैत छलैक। कयेक बेर हुनक संगे बाजार जयबाक मौका भेटल। दुइयो पाइ कें मुरही-कचरियो नहि खुआबथि। ओना हुनक छुच्छो दुलार मे बड्ड मिठास छलनि।

बंबई वाला ककाक सुदर्शन व्यक्तित्व बड्ड प्रभावशाली छलनि। जौं लगन समय मे ओ गाम पर रहैथ, तऽ गाम सँ सभटा बरिआती मे हुनक उपस्थिति अनिवार्य छलनि। उज्जर धोती, ठेहुन धरि कुर्ता आ कान्ह पर चादरि। बरियातीक शोभा हुनको सँ छलनि। आ तेहने मुखर वक्ता सेहो छलाह। पढ़ाइ-लिखाइ बड्ड बेसि नहि छलैन। प्रवेशिका सेहो नहि देने छलथिन। मुदा शास्त्रक ज्ञान अद्भुत छलनि। कतबो प्रकांड विद्वान आबि जाथु। ककाक आगां मे ठहरनाइ मुश्किल छलनि।

हमर गाम शिक्षाक बड़का केन्द्र छलैक। महंथक आश्रय मे हजारो विद्यार्थी शिक्षा लाभ करैत छलाह। एको पाइ खर्च नहि। सौंसे रामबाग विद्याध्ययनक केन्द्र छलैक। देशक कोना-कोना सँ विद्यार्थी सभ चोरौत अबैत छलाह-अध्ययनक लेल। विद्यालयक अध्यक्ष महंथ अपने छलाह। आचार्य सभ प्रकांड विद्वान। रामबाग मे यत्र-तत्र खड़हक छोट-छोट घऽर सभ मे विद्यार्थी रहैत छलाह। गुरुकुल जकां। ऐहन गामक विद्यार्थी बंबई वाला कका कें भाग्य मे उच्च शिक्षा नहि लिखल छलनि। मुदा ज्ञान अर्जित करक अथाह लिप्सा छलनि। तैं घुमिये-फिरि कऽ ओ विद्वता अर्जित कयलनि। प्रवेशिका परीक्षाक लेल टोकैत-टोकैत अकुताकें ओ गामे छोड़ि देलथिन। कतऽ गेलाह-ककरो पता नहि छल। नान्हिटा मे गाम छोड़लनि आ लौटलाह तऽ गाम आ कका दुनुक स्वरूप बदलि गेल छलैक। गाम आधुनिकताक दिस बढ़ि रहल छल आ ककाक मुंह पर दाढ़ी-मोंछ अपन उपस्थिति दर्ज करा रहल छल। प्रवासक इ काल कका कें गामक अनेक घटना सँ अज्ञात कऽ देलक। पिता स्वर्गवासी भऽ गेलथिन। भइया अभिभावक भऽ गेल छलाह।

प्रवासक पीड़ा पहिल बेर ककाक बुझय मे ऐलनि। कतेक अपन प्रिय वस्तु हेरा गेलनि। गामो अनचिन्हार लगैन। मुदा गाम तऽ गामे छलनि। दुइये-चारि दिन मे फेर अंग सँ लगा लेलकनि। ppp

ÑÑÎaÑÑ

पानवालाक निर्देशित दिशा मे जा रहल छी। आगाँ ककरौर भेटत। ओहि ठाम सँ दहिना घूमक छैक। वर्षा सँ तरबतर भेल बाट पर गाड़ी आगू बढ़ि रहल छल। बच्चा सभ आपस मे आब गप्प-सप्प शुरू कैलक। गाम पर मामा सभ सँ भेंट होयताह। बड़का मामा सेहो आयल होयताह। हुनक विवाह मे हम सभ शामिल नहि भेल रही? पप्पा सेहो नहि जा सकल छलाह।

- 'हे मम्मी, देखब मझिली नानी अहाँ पर खूब बजतीह।' बड़की बेटी बजलीह।

- 'कियैक गे। हम तऽ फोन पर हुनका सभ बात कहिये देने रहियनि।' कनियाक कहैत देरी ककरौर आबि गेल। ओना दहिना नहि घूमब। पहिने ठोकि-बजा लेब। ककरौर यैह छैक की नहि। ओना मिथिलांचलक इ खूबी छैक जे जतय मोड़ घुमाब छैक ततय पानक दोकान (पूछताछ केन्द्र) जरूर भेटत। ओहू ठाम एकटा दोकान खूजल छलैक। गाड़ी सँ मुरियारी दऽ पुछलियनि, 'यौ मुरलियाचक जयबै।'

- 'दहिना घूम जाऊ।' चट्ट उत्तर भेटल। डेका गीयर बदलति गाड़ी कें दहिना खरंजा पर चढ़ा देलक।

खरंजा पर चढ़िते देरी गाड़ीक ध्वनि बदलि गेल। कम चौड़गर बाट। बाटक दुनू कात खेत। कनिको असंतुलन भेल कि गाड़ी खेत मे। तैं सभ गोटे सावधान छलहुं। आब किनको मुंह सँ आवाज नहि खसि रहल छल। टकटकी लगा कऽ आगां दिस ताकि रहल छलहुं। कतहु-कतहु बाट पर खधिया सेहो छैक। मुदा वर्षाक पानि सँ भरल बुझा नहि रहल छलैक। तैं जखन पहिया ओहि पर पड़ैत छलैक तऽ गाड़ी सहित सभ केओ हीलि जाइत छलहुं। मोन आशंका सँ भरि जाइत छल। ककरौर आ मुरलियाचकक बीच मे कयेकटा गाम छैक। ओहि मे सिमरी प्रमुख। सिमरी कें लघु रहिका सेहो कहि सकैत छी। गाम-घऽरक आवश्यकताक पूर्ति हेतु नीक बाजार छैक। सिमरी सँ मुरलियाचक लऽग छैक। गामक लऽग आबियो कऽ भरोस नहि भऽ रहल छल। कनिकबा बाट सेहो पहाड़ बुझाइत छल। कखन पहुँचब.....।

ददा कहलनि आब आबि गेलहुं तऽ हुअए जे ओहि ठाम बैसि रहू। नान्हिटा पयर चलैत-चलैत थाकि गेल छल। बायां हाथ कें ऊपर उठौने गाम सँ चलल छलहुं तऽ अन्हरगरे छलैक। आब तऽ दिन भऽ गेलैक। मामा गाम नहि आयल। इ प्रसंग बड्ड पुरान छैक। तखन संभवत: हमर उम्र चारि वर्ष छल। ददा पटना सँ गाम आयल छलाह। हमर बायां हाथक तरहत्थी मे की भऽ गेल रहैक से ककरो नहि पता। सौंसे तरहत्थी फूलि कऽ बैलून जकां भऽ गेल रहैक। जखन ओहि मे सँ टीस उठै तऽ प्राण निकलय सन कें भऽ जाइक। कैकबेर हम अचेतो भऽ गेल रही। ओझा-गुनी, बैद्य सभ हारि गेलाह। दाइ कहलथिन, 'डनिया के घऽर फगुआ खेलय

गेल छल। ओहि ठाम एकरा हाथ मे किछु धय देलकैक।'

बहुत तरहक पातक लेप लगाओल गेल। गोइठाक आगि पर सेकल गेल। मुदा तरहत्थी फूलल कें फूलले रहल। यद्यपि गाम बड्ड पैघ छल। एकटा सरकारी दवाखाना सेहो छलैक। मुदा डाक्टर नहि छलाह। कंपाउंडर आ एकटा नर्स मीलि कऽ दवाखाना चलबैत छलैथ। स्थानक (महंतक संपत्ति) घऽर मे दवाखाना छलैक। दाइ हमरा ओहि दवाखाना मे लऽ गेलीह। कंपाउंडर आ नर्स हमर फूलल हाथ कें देखतहि अचंभित होमय लगलथि। कंपाउंडर साहब कहलनि-'दाइ इसको बलबा ले जाइये।'

- 'तोरा बुते किछु नहि हेतौ?' दाइ पुछलथिन।

एक तरह सँ चिचियाइत कंपाउंडर बाजल, नहि दाइ। इसको चीरना होगा। डाक्टर बलबा मे है। बलबा जाइये। कनिके तऽ दूर है।' दाइ संगे घऽर आबि गेलहुं। ओहि फूलल सँ हम कनिको चिंतित नहि छलहुं। की हेतैक। हाथ काटय तऽ नहि पड़तैक। इ सभ चिंता माय, दाइ, कका सभ करथि। हमरा लेल तऽ ओ टीस बड़का दुख छल। आगां-पाछां हमरा लेल धन्न सन।

लेप लगबथि, सेंकबैबथि किछु दिन बीति गेल कि पटना सँ ददाक गाम आगमन भेलैन। हुनका गाम अबिते जेना घऽर मे उत्सव जकां माहौल भऽ गेल। ददा दरवज्जा पर बैसल छलाह। हम ऊंचकी (घऽरक सामनेक ऊंचकी जमीन) पर छलहुं। ददाक इशारा भेलनि। हमरा बजा रहल छलाह। दरवज्जा पर माय आ दाइ सेहो छलथिन। काकी कोनिटा पकड़ि देखि रहल छलथिन।

- 'ला तऽ देखियौ की भेलउए?' ददा इ कहैत हमर बामा हाथ पकड़ि लेलनि। हम दर्द सँ छटपटा गेलहुं।

- ददा कहलथिन, 'इ किछु नहि छैक।' काल्हि धरि अपने सँ बहि जेतैक। देखियौक पीयर भऽ गेल छैक। चल काल्हि मामा गाम लऽ चलै छियौक।

ददा हमर कमजोरी बुझैत छलाह। ओहुना धिया-पुताक लेल मामा गाम अमृत प्राप्ति जकां होइत छैक। मामा गाम खूब घूमू फिरू। खाऊ-पीबू। जतय मोन हुअए जाऊ। कोनो प्रतिबंध नहि। नहि कनेठी आ नहि चाट। दुलारे-दुलार।

- 'हे ककर बेटा छैक?'

- 'फलनमा दाइ के।'

- 'बौआ की नाम अछि?'

- 'आऊ। बैसू। आम खायब?'

यैह छैक मामा गाम। हम सुनिते छलहुं मामा गामक दुलार। मामा गाम जयबाक मौका नहि भेटल छल। बाबू गाम पर रहिते नहि छलाह। मामा सभ सेहो कलकत्ते मे छलाह। नानीक

एतेक व्यवस्था नहि छलनि जे ओ बेटी कें विदागरी करा कऽ लाबथि। ओना नानी आ माय मे भेंट होइत छलनि दुर्गास्थान मे। एम्हर सँ संवाद गेलैक आ ओम्हर सँ पुष्टि भेलैक तऽ कोनो नीक दिन मे दुनू गोटे दुर्गास्थान आबथि। संगे हमहुं सभ। पयरे दुर्गास्थान जेनाइ बड्ड थकावटवाला काज छलैक। संगे चूड़ा, मुरही, चुल्लड़ि, अचार। दुर्गास्थान मे मलाई बरफ आ कच-घुघनी। नानीक दुलार.....।

तैं मामा गामक बड्ड आकर्षण छल आ ददा इ जनैत छलाह। ओ इहो जनैत छलाह जे जौं बलबा अस्पतालक नाम लेबैक तऽ बच्चा घबड़ा जायत आ जाय केर नाम नहि लेत।

एतेक छल प्रपंच नहि छल। ददा कहलनि मामा गाम जाइ छी तऽ भेल एतेक बड़का लोक कतहुं फूसि बजताह। भऽ नहि सकैत अछि। सुनने छलियैक मामा गामक बाट दुर्गास्थान होइत जाइत छैक। दुर्गास्थानक बाट चीन्हल छल। मुदा ददा तऽ दोसर बाटे लऽ जा रहल छलाह।

– 'इ बाट तऽ मामा गाम नहि जाइत छैक।' हम पुछलियनि।

– 'यैह जाइत छैक।' ददा विश्वास दियाबक प्रयास कैलनि।

– 'नहि दुर्गास्थानवाला बाट इ नहि छैक। धस कहां अयलैक?' ददा कहलनि, 'इ दोसर बाट छैक। जल्दी मामा गाम पहुँच जायब।' मोन मे विश्वास नहि भेल। ददाक कन्हा पर बैसल हमर कोनो वश नहि छल। घाव चिड़ैबाक डर सँ आंखि सँ नोर ढबकि गेल। नोर ककाक बामा छाती पर कुर्ताक जेबी पर खसल तऽ ददा हमरा दिस तकलथि।

– 'कियैक कनैत छी। हम छी नै। आहांक किछु नहि होयत।'

ओ बूझि गेल छलाह जे रहस्य फुजि गेल छैक। ददाक आश्वासन सँ हमरा भरोस भेल। हम कइयो की सकैत छी। इ सभ नमहर लोक सभ बुझैत छथि। ददा-माय हमरा नीके लेल किछु करताह, मुदा कष्ट तऽ हमरे भोगय पड़त। जौं इ घाव एहिना सुखा जइतैक तऽ हम साल-छह महीना एहिना रहक लेल तैयार छलहुं। घाव चिड़ला सँ जे कष्ट होइत छैक ताहि सऽ तऽ बांचब।

ददाक कान्ह दुखाय लगलनि तऽ हमरा कान्ह सँ उतारि कय नीचा कऽ देलथिन। दहिना हाथ पकड़ने लऽ चललाह। बहुत छागर कें देखने छलियैक बलि चढ़ैत। बलि चढ़ौला सँ पहिने ओकरा हरिहर-हरिहर कोमल घास खुआओल जाइत छैक। ददा कनिक निहुंरि कय बदामक एकटा गाछ उपारलनि आ ओहि मे सँ छीमी बीछि-बीछि कऽ हमरा खुआबय लगलाह।

कनेक दूर गेलाक बाद बाध समाप्त भऽ गेलैक आ एकटा पकिया मकान देखबा मे आयल। ददा एकटा बटोही सँ किछु पुछलथिन आ ओहि मकान दिस विदा भेलाह। ओहि मकानक अहाता मे घुसिते गामक दवाखानाक गंध नाक मे घुसल। आबि गेलैक। हमरा तऽ फेर कनाइ छूटि गेल।

एकटा नर्स, एकटा कंपाउंडर आ डाक्टर। हमरा ओहि ठाम टेबुल पर सुता देलक आ माथा कें दहिना भाग दिस मोड़ि कऽ सौंसे शरीर कें जकड़ि लेलक। तकरा बाद की भेलैक से नहि बुझलहुं। बामा हाथ सुन्न जकां भऽ गेल छल। टीसक अतो-पतो नहि छल। हल्लुक हाथ। ओहि ठाम सँ हम अपने पएरे गाम अयलहुं। मुदा ओ टीस एखनहुं मोन पड़ैत अछि। ppp

ÑÑ>ætÚÆÛÑÑ

सिमरी सँ आधा किलोमीटर पहिने गाड़ी पिछड़य लागल। ओहि ठाम खरंजा कें ईंट उखड़ल रहैक। माटि-पानि मिझर भऽ कय पिछड़य वाला भऽ गेल रहैक। गाड़ीक एक्सलेटर दबबिते गाड़ी खेत दिस घूमय लागल। हम गाड़ी सँ उतरि गेलहुं। डेका सेहो उतरल, आगां-पाछां देखलक। ओकरा किछु बुझय मे आबि गेलैक। ओ फेर गाड़ी मे बैसल आ 'बैक गियर' लगा कऽ पाछां दिस गेल। फेर दहिना पकड़ने आगां बढ़ल आ गाड़ी खरंजा पर चढ़ि गेलैक। हमहुं गाड़ी मे बैसबाक लेल प्रयत्न करय लगलहुं कि दहिना पयर कें तेसर आंगुरक नीचा मे टीस उठल। इ वैह टीस रहैक जे गाम पर तरहत्थी केर घाव सँ उठैत रहैक।

मनुक्ख अपना जीवन मे कतेको बेर शारीरिक दुख कष्ट सँ उबरैत अछि। कोनो व्याधि सँ, तऽ कोनो तरहक चोट-चपाट सँ। सभ मोन मे रहैत छैक। कोनो-कोनो घटना आजीवन मोन रहैत छैक। जेना हमरा मोन अछि तरहत्थीक घाव सँ उठैत टीस। ककरो-ककरो जीवन मे टीस सिर्फ मोने नहि रहैत छैक बल्कि जीवन भरि ओकर अनुभव होइत रहैत छैक। बंबई वाला कका केर जीवन मे कतेको घटना आयल-गेल, मुदा बंबई मे 'चाल' किनलाक बाद जे घाव हृदय पर अंकित भेलनि तकर टीस ओ आजीवन अनुभव करैत रहलाह।

हुनक लेल बंबई पकड़नाई विवशता छलनि। गाम पर खेत ततबे छलनि, जाहि मे सिर्फ जनेटाक गुजारा भऽ सकैत छलैक। तैं बड़का कका सेहो यजमानिये पकड़ने छलाह। यजमानो सभ पैघ धनाढ्य छलैन। तैं गुजारा सँ कनेक बेसिये आमदनी भऽ जाइत छलनि। ओहि आमदनी सँ बड़का कका अपन दुनू कन्याक कन्यादान कैलनि आ ओकरा उपरांत कन्या सभक धिया-पुता कें लालन-पालन सेहो। बंबई वाला कका के संतान नहि छलनि। हुनक हृदय विशाल छलनि। पटिदारीक सभ धिया-पुता कें ओ अपने संतान जकां बुझैत छलथिन। सभ किछु ठीके-ठाक छलनि। बंबई मे भाड़ा घऽर मे रहब तकलीफदेह बुझेलनि। तैं अपन 'चाल' किनबाक प्रयास कैलनि। किनबो केलाह आ एक दिन धूमधाम सँ गृह प्रवेश कैलनि। गृह प्रवेशक सूचना गाम पर सेहो देलथिन। भैया कें नाति-नातिन कें सेहो सूचना गेलनि। ओम्हर सँ केओ गोटे गृह प्रवेश मे उपस्थित नहि भेलाह। ककाक मोन मुरझा गेलनि। आखिर इ सब ककरा लेल कऽ रहल छी। किछु दिनक पश्चात बंबई मे 'बिहारी भगाओ' आंदोलन शुरू भेलैक। किछु कट्टरवादी संगठन अपन कट्टरता कें नग्न प्रदर्शन करय लगलाह। हुनक कहब छलैन जे इ बहरिया सभ हमर सभक हित मारने जा रहल अछि। एकरा सभकें निकाल बाहर केनाइ जरूरी अछि। ओ संकीर्ण मनोवृत्ति वाला सभकें इ समझि मे नहि आबि रहल छलैक, जे जकरा ओ बहरिया कहैत छैक, सैह सभ ओकर विकासक धुरी छैक।

'बिहारी भगाओ' आंदोलनक प्रभाव बंबईवाला कका कें जीवन पर तेहन पड़लैन जे ओ पाई-पाई जोड़िकय कीनल चाल कें कौड़ीक बदला मे बेचि कऽ गाम धऽ लेलाह। वास्तव

मे घटना बहुत मार्मिक छैक।

ककाक चालक पाछां मे एकटा स्थानीय परिवार छलैक। कका ओहि गरीब परिवार कें हर तरहक सहयोग करैत रहथिन। केओ बीमार भेलैक तऽ दवा-पथ्य सँ। ककरो कोनो बेगरता भेलैक तऽ टका-पाई सँ। एहि प्रकारे ओ परिवार ककाक बड्ड नजदीकी छलैक। ककाक आगां-पाछां करैत रहैत छल। स्थानीय उत्सव मे कका-काकी कें बजा कऽ खुआबैन। कका सेहो उपहार दऽ उपकृत करैथ। मुदा जखन बिहारी भगाओ शुरू भेलैक तऽ ओ परिवार सोझे मुंह मोड़ि लेलकनि। दुनू आवास परिसर के मध्य मे एकटा अदृश्य लकीर खिंचा गेलैक। कका मने-मने बड्ड व्यथित भेलाह। काकी सेहो। ओहि परिवारक लेल कयल गेल उपकार सभ व्यर्थ भऽ गेलनि। एकटा बच्चा तक देखऽ नहि आबनि। बच्चा सभक मोन मे सेहो गड़ि गेलैक जे इ बहरिया छथि।

इ प्रसंग ककाक मोन मे गड़ि गेलैन आ जखन-कखनो मोन पड़नि तऽ टीस जकां उठैन। आब काज-तिहार मे मोन नहि लगैत छलनि। प्रवासीक अर्थ आ दर्द बुझा रहल छलनि। कतबो कय आयब मुदा प्रवासीये रहब। तऽ अहि सँ नीक अपन जन्मभूमि। नोन-रोटी खा लेब आ रहब अपने गाम पर। कका बड्ड सोच विचार कैलनि। काकी सेहो आत्ममंथन कऽ रहल छलीह। ककाक वयस भेलनि। खुदा-नै-खास्ता जौं किछु भऽ जानि तऽ अहिठाम के देखत। केओ लाशो जड़ौनिहार नहि भेटत। सभक नजरि 'चाले' दिस रहतैक। काकी के मोन मे अंदेशाक जोबार उठय लगलनि। कका सेहो अपना कें असुरक्षित बूझय लगलाह।

बड्ड सोच विचार कयलाक पश्चात कका बंबई छोड़बाक निश्चय कयलनि। समस्या छलैक चालक। चाल बेचब लेल कका दु-एक गोटे सँ गप्प कयलनि। सभ ककाक विवशताक फायदा उठैबाक प्रयास मे छल। केओ किछु कहैत छलनि तऽ केओ किछु। जतेक मे किनने छलाह ततबो केओ नहि दऽ रहल छलनि। बड्ड मुश्किल सँ एकटा ग्राहक ठीक भेलनि। चाल बिका गेलनि। कका सामान सहित बंबई कें नमस्कार कऽ गाम दिस विदा भेलाह।

ओना गाम पर हुनका मुश्किल नहि भेलनि, परंच जाहि हुलास सँ स्वागतक अपेक्षा छलनि से नहि भेटलनि। भैया यजमनिका मे छलथिन। भौजी सेहो। गाम पर दू कोठली वाला घऽर मे सँ एकटा मे ताला बंद छलैक। पितिऔत लग चाभी छलैक। हुनका सँ चाभी लऽ कोठरीक ताला खोललनि आ सामान सभ जचौलनि। एहि प्रकार हुनक दोसर जीवन शुरू भेलनि।

हम अपन पितिऔत बहिनक द्विरागमन मे गाम गेल रही तऽ कका अपन अंगना मे खाट पर सुतल भेटलाह। गोड़ लगलियनि तऽ उठि कऽ बैसि रहलाह। कुशल-छेम भेल। पुछलनि, 'के सभ आयल अछि? सतीश आबि गेलाह।'

टटका जानकारी प्राप्त करैत ओ खाट सँ उतरलाह आ कान्ह पर गमछा रखैत बजलाह, 'चल, तोरे दरवज्जा दिस चलैत छी?'

दुनू गोटे विदा भेलहुं। अहू अवस्था मे हुनका मे फूर्ति देखि कऽ अचंभित छलहुं। हम हुनका पाछां छलहुं। हाथ पकड़ि कऽ बामा दिस खिंच लएलाह।

– 'माय ठीक छथुन्ह?'

– 'हां, ओहो आयल छथिन?'

– 'बच्चा सभ सेहो?'

– 'हां, सभ आयल अछि।'

– 'कखन पहुंचैत जाइ गेलाह?'

– 'एंह..... राति एगारह भऽ गेलैक। हम सभ सांझ मे भिट्ठामोड़ पहुंचि गेल रही। मुदा ओहि ठाम सँ गामक लेल कोनो सवारी नहि छलैक। रिक्शावाला सभ अनाप-शनाप भाड़ा मंगैत छलैक। संयोग सँ राति नौ बजे एकटा जीप भेटल तऽ ओकरा पकड़लहुं आ सभ गोटे कहुना कें गाम पहुंचलहुं।'

– 'एतेक राति मे गाम पर तऽ बड्ड दिक्कत भेल होयत? हमरा कियैक नहि जगा देलहुं? हम किछु व्यवस्था करितहुं।'

– 'गाम पर केओ नहि रहने, व्यवस्थाक नाम पर किछु नहि छलैक। स्टोव संगे आनने छी। कोनो तरहे किछु रान्हि कय बच्चा सभ कें खुआयल गेल आ एम्हर-ओम्हर सूतय पड़क सेहो व्यवस्था भेल।'

– 'कका आहां कहिया गाम अयलहुं?'

– 'एंह एक वर्ष भऽ गेल।'

– 'बंबई साफे छोड़ि देलियइ?'

– ' हां.... साफे।' इ कहैत कका गंभीर भऽ गेलाह। हमरा बुझायल ओ दुख मे डूबि गेलाह। संभवतः प्रवासक दर्दक टीस उठि रहल छलनि। ppp

ÑÏGeÙLªÙÑÑ

दहिना पएरक आंगुरक नीचा मे उठैत फोंका सँ टीस बढ़य लागल। गाड़ी अपना गति सँ आगू बढ़ि रहल छल। बच्चा सभ थाकल मुदा सचकित छल। कनिया सेहो गंभीर मुद्रा मे। केओ बाजय नहि चाहति छलथि। कखन की भऽ जायत। हम सभ सिमरी गाम दने जा रहल छलहुं। लगन खूब जोर पर छलैक। कएकटा बरियाती सभकें एम्हर-ओम्हर करैत देखलहुं। राति तखन दस बजैत छल। त्रिमुहान पड़ कएकटा दोकान फुजल छलैक। एहि गाम मे बिजली छैक। दोकान सभ पर बल्ब जड़ैत छलैक। डेका कें इशारा कयलहुं। गाड़ी रोको। हम चलल रही तऽ अपन सामान लैत काल शेविंग किट्स मे ब्रश नहि राखि सकलहुं। बैग के हथोरति काल किट्स पर हाथ गेल तऽ हल्लुक बुझायल। फोललहुं तऽ ब्रश नहि रहैक। रहिका मे मोन नहि पड़ल। दोकान सभ पर नजरि जाइत ब्रश मोन पड़ि गेल। सासुर मे एको दिन बिना शेव केने कोना रहब।

गाड़ी सँ उतरि कऽ एकटा भरिगर दोकान मे पुछलहुं, – 'दाढ़ी बनाबय वाला ब्रश अछि?'

दोकानदार चट नहि मे माथा हिला देलनि। पुछलियनि, 'आओर कोनो दोकान पर भेटत?'

– 'पुछियौक?' दोकानदार सेहो भरि दिनका थाकल छलाह।

दोसर दोकान मे पुछलहुं-तेसर मे आ अंतिम दोकानो मे। कतहु नहि भेटल। एक तऽ घावक टीस ऊपर सँ इ व्यर्थ प्रयास-मोन खौंजा जकां गेल। धुर इ बजार रहितो कोन फायदा। जरूरीक सामाने जौं नहि भेटय।

इ मोन मे नहि आयल जे सभ ठाम लोक के एकहि वस्तु कें बेगरता नहि होइत छैक। एहि ठाम लोक कोन दैनिक आफिस जाइत छथि, से साबुन ब्लेड खर्च करताह। अपन हजामक घसल छूरेटा पर्याप्त छैक।

गाड़ी मे बैसलहुं आ मुरलियाचकक लेल विदा भेलहुं। एहि थकान यात्रा मे बच्चा सभक चुहचुही गायब भऽ गेल छल। ओना दोकान देखैत देरी फरमाइशक पहाड़ लागि जाइत छल। एहि ठाम एक दर्जन दोकान मे पइसैत आ निकलति देखि एकटा शब्द मुंह सँ नहि खसलनि जे पप्पा इ लेब-ओ लेब।

– 'गाम आयब-जायब बड्ड त्रासदपूर्ण कार्य छैक। तइयो लोक एतेक कष्ट सहबे करैत छैक।' कनिया बजलीह।

– 'की करबै। गामक मोह जे नहि छुटैय छैक। देखैत नहि छियैक रामआसरेजीकें। कएक पुस्त सँ आसाम धेने छथि। ओहि ठाम खेतीबारी सेहो छनि। मुदा गाम नहि छूटल छनि।

एखनो छठि-फगुआ मे गाम जाइत छथि। विवाह-दान गामे सँ होइत छनि।'

-'मुदा आब रामआसरेजी मे सेहो परिवर्तन भेल जा रहल छनि।'

-'से कोना बुझलियैक।'

-'आहां कें नहि बुझायल? एहि बेर डेरा पर आयल रहथि तऽ देखलियनि नहि हुनक मुंह लटकल रहनि। कहबो कैलनि जे आब एहिठाम सँ सभ किछु समेटि कऽ गाम धऽ लेब।'

-'हां से तऽ कहैत छलाह। हम नहि बुझि सकलहुं जे ओ एतेक गंभीर छथि। ओना हुनक सोचब ठीके छनि। संकीर्णतावादी मानसिकताक उभार भऽ रहल छैक। एहन खराब स्थिति तऽ 'विदेशी भगाओ' आंदोलनक समय मे सेहो नहि छलैक।'

-'कतेक लोक आसाम छोड़ि देलनि। एखनो बहुत लोक स्थान परिवर्तनक इच्छा रखैत छथि। जौं रामआसरेजी एहेन सोचैत छथि तऽ इ अस्वाभाविक नहि छैक।'

- से तऽ ठीक। मुदा हड़बड़ी मे एहन कोनो निर्णय नहि लेबाक चाही।'

कनिया चुप भऽ गेलीह। समस्या रामआसरेजीक छलनि। जौं ओ आसाम छोड़बाक निश्चय कऽ लेने छथि तऽ हुनका कें रोकत। ओना हुनका आसाम छोड़ि देला सँ समस्याक समाधान नहि भऽ सकैत अछि। आसामक इतिहास एहि तरहक घटना सँ भरल छैक। के आयल आ के गेल तकर हिसाब रखनाइ कठिन।

रामआसरेजीकें विषय मे सोचि कऽ कष्ट होइत अछि। कतेक परिश्रम सँ हुनक बबा घऽर बनौने छलाह। गाछीक विकास कैयने छलाह। ओ बाग आब उजड़ि जायत। अपन किस्सा कहैत रामआसरेजी कतेक बेर हमरो आसाम मे जमीन लेबाक लेल प्रोत्साहित कयलनि। हुनक मोन छनि-'जखन ज्ञान भेलनि तऽ ओ आसाम मे छलाह। गुवाहाटी सँ साढ़े चारि सौ किलोमीटर दूर एकटा गाम मे बिहार सँ आयल लोकक बस्ती। एहि मे असमिया परिवार सेहो छलैक। प्रतिशत मे बराबर-बराबर। असमिया आ बिहारी छोड़ि आन केओ नहि छल। दुनू मे तेहन मिलनसारिता रहैक जे एक दोसर कें बिना नहि बनैत छलैक। रामआसरेजीक पिता वृंदा भगत वास्तव मे भक्त लोक छलाह। ओ एहि गाम मे दोकान चलबैत छलाह। सहज दोकानदार कें रूप मे लोक हुनका चिन्हैत छलनि। ककरो कोनो तरहक बेगरता भेलैक वृंदा भगत चौबीसों घंटा तैयार रहैत छलाह। अपने कोनो तरहे लीखि-पढ़ि सकैत छलाह, मुदा गामक विद्यालय मे हुनक योगदान बड्ड बेसि छलनि। खाली हिन्दी विद्यालयेटा मे नहि, बल्कि असमिया भाषा माध्यमक विद्यालय मे सहो हुनक योगदान अविस्मरणीय अछि। पहिने असमिया माध्यमक विद्यालय फुजल। विद्यालय आरंभ करक लेल गाम मे बैसार भेल रहैक। बैसारक अध्यक्षता वृंदा भगत कयने छलथि। एहि बैसारक विवरण एखनो विद्यालय मे राखल छैक। विद्यालयक स्थापनाक चर्चा शुरू भेलैक तऽ सभ सँ पहिने जमीनक आवश्यकता महसूस भेलैक। कएक गोटा अपन जमीन देबाक लेल प्रस्तुत भेलाह। एहि मे दुनू भाषीक लोक छलथि, मुदा विद्यालयक लेल पर्याप्त उपयुक्त स्थान पर जमीन किनको नहि छलनि। वृंदा भगत कहलथिन,

'गाम मे पइसैति काल बाटक सटल जे जमीन हुनक छनि से आइ सँ विद्यालय कें भेल। बैसार मे उपस्थित लोक सभ खूब ताली पिटलक। यैह टा नहि अपितु वृंदा भगत विद्यालय निर्माणक हेतु बांस-घास देबाक सेहो घोषणा कयलनि। खूब वाह-वाही भेटलनि। विद्यालयक लेल आरो कतेको गोटे सहयोग देबाक सार्वजनिक घोषणा कयलनि। एहि तरहे गामक असमिया माध्यमक प्रथम विद्यालय शुरू भेल।

एहि विद्यालय मे सभ भाषा-भाषीक विद्यार्थी छलैक। वृंदा भगत विद्यालय कें विकास कें लेल गाम-शहर एक कऽ देलथिन। अंततः विद्यालय कें सरकारीकरण कराकऽ दम लेलनि।

वृंदा भगत एहि गामक विकास लेल प्रतिबद्ध छलथि। विद्यालयक स्थापनाक बाद इनारक समस्या छलैक, एकटा इनार सँ सौंसे गामवासी उपकृत होइत छलाह। वृंदा बाबू जखन सौदा लाबय लऽ शहर गेलाह तऽ विधायक सभ सँ भेंट करैत अयलाह। विधायक साहब हुनका केंद्र सरकारक योजना सँ इनार खुनैबाक युक्ति बुझा देलथिन। ओहि पर चलि कें वृंदा भगत गाम मे तीनि टा इनार आओर खुनबा लेलनि। सौंसे गामक लोक इ सभ इनारक पानि पीबैत छलाह।

-'मुदा पानि लोक कें नहि बांटैत छैक।' रामआसरेजी इ बजैत नोरे-झोरे भऽ गेल छलाह।

-'हमर बाबा ओहि गाम कें अपन गाम बुझैत छलाह। तैं खून-पसीना एक कयने छलाह। आब लोक कहैत अछि-यहां से जाओ। ये गाम तुम्हारा नहीं है।'

रामआसरेजीक वेदना हम बुझैत छलहुं। हमरो आंखि भीजि गेल। जौं पानि लोक कें नहि बांटैत छैक तऽ फेर के बांटैत छैक? ppp

– '**जौं** आओर कोनो बड़का व्यवधान नहि उपस्थित भेल तऽ हम सभ बीस मिनट मे मुरलियाचक पहुंचि जायब।' हमरा मुंह सँ इ वाक्य निकलैति देरी कनिया लपकि लेलीह।

– 'एखन इ सभ नहि बाजू। नीके ना पहुंच जायब तखन। एखनो चारि किलोमीटर जयबाक अछि।'

– 'हां, से ठीके कहैत छी।इ कनिकबा बाट मे जौं कोनो तेहन व्यवधान बीच मे आबि गेल तऽ इ घनघोर राति मे की करब। मोन आकच्छ भऽ गेल अछि। गाम पर पहुंचितै पहिने स्नान करब। तकरा बाद फोंका के इलाज।'

–'राति मे फोंका कें नहि फोरबे।भिनसर मे कोनो डाक्टर कें देखा लेब।डाक्टर फोंका चीरि देथि सैह नीक। गाम-घर मे बड्ड सावधानी सँ चलऽ पड़त। गाम-घऽरक डाक्टरो सभ तेहने होइत छथि। फोंके पर 'प्रैक्टिश' करय लगताह आ जौं 'रिसर्च' करबाक मोन भेलैन तऽ 'फोंका' जानलेबा सेहो भऽ सकैत अछि। तैं खूब सावधान रहबाक आवश्यकता छैक। बेसि चीर-फाड़ मे नहि जायब।' कनिया आशंकित मोने बजलीह।

कनियाक आशंका हम बुझैत छलहुं। गाम-घऽर मे चिकित्सक, उपयुक्त व्यवस्था एखनो उपलब्ध नहि छैक।सरकारी चिकित्सालय मे कर्मचारी, औषधि, डाक्टर, नर्सक अभाव छैक। एहन चिकित्सालय सभ मे चिकित्सा छोड़ि कऽ सभ काज होइत छैक। सरकार ध्यान नहि दैत छैक। जनप्रतिनिधि अपन-अपन लायक योजना मे व्यस्त रहैत छथि। एहन स्थिति मे चिकित्साक भार प्राइवेट प्रैक्टिश करऽ वाला डाक्टर सभ पर छनि। मुदा इ चिकित्सा सभ तरहक लोक कें वश मे नहि छैक। डाक्टर सभ रोगी कें पानि चढ़ाबऽ मे बड्ड कुशल छथि। तैं कनेक पेटो झरि गेल तऽ चारि बोतल पानि चढ़ा दैत छथिन। दवाई मे सभटा एंटीबायटिक मोन छन्हि। एक बेर रोगी डाक्टर केर चक्कर मे पड़ल तऽ बुझू एक कट्ठा खेत बन्हकी मे गेल। लोक सभक समक्ष दोसर उपायो नहि छैक। दुनिया चांद पर जा रहल अछि, मंगलक परिक्रमा कऽ रहल अछि आ मिथिलांचलक गाम सभ मे मैट्रिक फेल डाक्टर रोगी कें पानि चढ़ा रहल छथि। अद्‌भुत समन्वय छैक। गाम पर रहऽ वाला कतेक कष्ट सहैत छथि! ओना परदेश रहऽ वाला सभकें कष्टक पारावार नहि छन्हि। शिक्षा चिकित्सा केर कष्ट नहि छन्हि। मुदा भाड़ाक घऽर कहियो अप्पन नहि होइत छैक। रामआसरेजी एकर ज्वलंत उदाहरण छथि।

गाम जयबाक क्रम मे रामआसरेजी डेरा पर आयल छलाह। गप्प-सप्प मे बड्ड किछु कहलनि। – 'आब ओहि ठाम मोन नहि लगैयऽ। सैकड़ों वर्ष सँ स्थापित संबंध बेमाय जकां काटि रहल छैक। सीमा पर सँ आयल लोक सभकें गाम मे सन्हियेला सँ समूचा माहौले बदलि गेलइए। ओ सभ जतऽ-ततऽ प्रवेश कऽ रहल छैक आ हम सभ उपटि रहल छी।'

– 'से किएक। अहां सभ तऽ ओहि गामक पुरान बासिन्दा छी।'

– 'से तऽ छी। मुदा लोक आब इ बात के नहि मानैत छथि। कहैत छथि हमर सभक घऽर बिहार अछि। कहियौ तऽ कऐक पुस्त सँ अरजल संपत्ति सँ हमरा सभ कें विमुख होमय पड़त। आब नबका लोक सभ सौंसे गाम मे तन्न-तन्न कऽ घूमैत छैक। ओ सभ जमीन कीनि रहल अछि। राशन कार्ड, परिचय पत्र सभ किछु हथिया लेलक।'

– 'ओना देखियौ तऽ असमक इतिहास आव्रजन सँ भरल छैक। लोकक आबाजाही लागले रहल छैक। पौराणिक काल सँ हमर सभक संबंध एहि क्षेत्र सँ अछि।तऽ हम सभ केना बहरिया भेलहुं?'

– 'सैह तऽ यक्ष प्रश्न छैक। हमर सभक विचरणक व्यापक क्षेत्र अछि। ओहि मे पूर्वोत्तर क्षेत्र सेहो छैक।तैं कतहु सँ सन्हिया वाला हमरा सभकें बहरिया नहि कहि सकैत छथि। रामआसरेजी अहां असमक इतिहास पढ़ने छी।'

– 'कनेक-मनेक।'

– 'तऽ सुनू हम कहैत छी।

असमक प्राचीन नाम कामरूप आ प्रागज्योतिषपुर छैक। कामरूपक सीमाक जे उल्लेख भेटैत अछि ताहि आधार पर कहि सकैत छी जे महाभारतक एक प्रतिभागी शैलाधिपति भगदत्तक राज केर अंतर्गत आजुक असम समेत समस्त उत्तरांचल पहाड़ छलैक। एहि राजक सीमा कश्मीर सँ लागल छलैक।कश्मीर सँ कामरूपक वैवाहिक संपर्क सेहो छलैक।कल्हणक राजतरंगिणी एहि तथ्यक प्रतिपादन करैत अछि। एहि प्रदेश सँ वाणासुर, नरकासुर, घटोत्कच, बभ्रुवाहन सहित अनेक रथी-महारथीक संबंध छलन्हि। भगवान श्रीकृष्णक पत्नी रूक्मिणीक जन्म एहि प्रदेश मे भेल छलनि। ऊषा, चित्रलेखा, हिडिंबा, चित्रांगदा प्रभृति पौराणिक महिला एहि क्षेत्रक छलीह। भगदत्तक वंशज भास्कर वर्मा स्थाणीश्वरक शासक हर्षवर्द्धनक समकालीन आ मित्र छलाह।भास्कर वर्माक राज बिहार धरि पसरल छलनि।प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन सांग भास्कर वर्माक राजसभा मे बड्ड समय धरि छलाह। ह्वेन सांग अपन यात्रा विवरण मे कामरूपक धर्म, समाज आ भाषा आदि पर विस्तृत चर्चा केनऽ छथि। महाराज आरिमत्त केर शासनकाल धरि एहि प्रदेश मे असुर आ हिनू सभक राज छलन्हि।हिनू शासनक सांध्यकाल मे पूर्व मे अहोम वंश, पश्चिम मे पाल वंश आ दक्षिण मे कछारी वंश मे विभाजित भऽ गेल।'

रामआसरेजी कथा सुनबा मे मगन भऽ गेल छलाह। पुछलियनि, – 'इ सभ तऽ अहां कें बुझले छल नैयौ?'

– 'नहि –के कहत। एकटा मास्टर साहब किछु-किछु कहैत छलाह, मुदा माथा मे घुसबै नहि करै। तखन जरुरतो नहि रहैक। आब किछु जानऽ चाहैत छी।'

– 'जानऽ चाहैत छी तऽ सुनू।

असम मे जखन किरातीय वा हिनू राज मे पारिवारिक संघर्ष शुरू भेल तऽ एकर सुयोग लऽ एहि प्रदेश पर (1228 ई.) शान देशीय शासक कब्जा कऽ लेलनि। यैह समय रहैक जखन पालवंशीय शासन कें मुसलमान आक्रामक खत्म कऽ देलनि। एकरा बाद कोच वंशक स्थापना भेल। एकर परिणामस्वरूप कामरूप केर पूर्व आ पश्चिम मे दू टा महान शासक समुदाय पल्लवित पुष्पित होमय लागल।

एतबे नहि। आओर छैक।

भारत मे मुगल शासन पएर जमा लेने छल, मुदा साम्राज्य कें ब्रह्मपुत्र पार पहुंचायब बड्ड कठिन रहैक। बंगाल पर कब्जाक उपरांत कोच राजक अधिकांश भू-भाग पर मुगल कब्जा जमा लेने छल। मुगल शासकक गिद्ध दृष्टि अहोम शासन पर छल। एकटा छोट राज्य ओकरा अधीन नहि भेलैक तकर मलाल छलैक। इ अपमान जखन बर्दाश्तक सीमा अतिक्रमण करऽ लागल तऽ ओकर परिणाम भेलैक असम पर आक्रमण। असमक वीर पुत्र लाचित बरफूकन मुगल आक्रमणकारी कें तेहन मारि मारलनि जे मुगल शासक फेर असम पर ताकक साहस नहि कैलनि। उन्नीसम् शताब्दी धरि असमक शासक विदेशी आक्रमण सँ अपना कें रक्षा करैत रहलाह। अहोम राजा शिवसिंहक पश्चात एकटा धार्मिक संघर्ष शुरू भऽ गेलैक। इ संघर्ष डेढ़ वर्ष धरि चलल आ एकर परिणाम भेलैक जे राजसत्ता समाप्त भऽ गेलैक आ असम क्षत-विक्षत। असंख्य लोक सभ गृह विहीन भऽ गेल। गुवाहाटी अंचलक राजा बदनचंद ब्रह्मदेश भागि गेलाह। ओहि ठाम ओ सैन्य सहायता लेलनि आ संघर्ष शुरू भऽ गेल। अनेक वर्ष धरि यैह स्थिति रहैक आ असम कें उद्धार करबाक लेल असम मे ईस्ट इंडिया कंपनी केर पदार्पण भऽ गेलैक। ppp

जकरे डर छल सैह उपस्थित भऽ गेल। इ एकटा छोटकी पुलिया छैक। नहरि जकां बाटक दुनू कात खधिया छैक। बाढ़ि अयलाह पर पानिक रेला अहि दने बहैत छैक। तैं बाट पर पुल छैक। खूब ठोस पुल। संभवत: कोनो नवसिखुआ ठेकेदार बनौने हेताह। मुदा दुनू कात सड़क बड्ड नीच छैक। ट्रेक्टर, जीप तऽ पुल पर चढ़ि जाइत हेतैक, मुदा कार केर लेल तऽ इ पहाड़ जकां बुझाइत छैक। डेका एक बेर प्रयास कयलनि मुदा गाड़ीक आगां मे बोनटक नीचा लागल 'बाडी' जमीन सँ सटि गेलैक। डेका चट्ट दऽ गाड़ी कें पाछां कयलक। टार्च लऽ कऽ हमहुं गाड़ी सँ बाहर निकललहुं तऽ देखैत छी जे डेका ईंट उखाड़ि रहल अछि। हमहुं लागि गेलहुं। ईंट सभकें पुल बाटक संयोग स्थल पर नीक जकां ओछाओल गेल। ओकरा ठोकि कऽ सेहो देखल गेल। तत्पश्चात् डेका गाड़ी मे बैसल आ स्टार्ट कऽ आगां बढ़ौलक तऽ कोनो दिक्कत नहि भेलैक। गाड़ी पुल पर चढ़ि गेलैक।

आब आगां बाजार भेटत। बाजार सँ बामा बाट सोझे गामे मे गेलइए। दस मिनट मे हम सभ दरवज्जा पर रहब। गाम पर सभ चिंता करैत होइताह। कतऽ फंसि गेलाह।

लोक गाम सँ कमाय लेल जौं बाहर जाइत अछि तऽ ओकरा बड किछु त्याग करऽ पड़ैत छैक। सर्वप्रथम गाम मे प्राप्त स्वाधीनता छिना जाइत छैक। जतऽ पएर पड़ैत छैक तऽ बुझाइत छैक जे दोसरक जमीन पर अनाधिकार पएर पड़ि रहल अछि। इ अपराध बोध परदेशिया कें हीन भावना सँ ग्रस्त कऽ दैत छैक। तकरा उपरांत भाड़ाक घऽर मे कहुना सिमटि-सिकुड़ि कऽ रहऽ पड़ैत छैक। जौं कनिको एम्हर-ओम्हर भेलैक कि 'घऽर छोड़क नोटिस' भेटि जायत। तैं बच्चो सभके बड्ड संयत सँ राखय पड़ैत छैक आ एकर मनोवैज्ञानिक प्रभाव बच्चा सभ पर पड़ैत छैक। तैं कतबो चंसगर बच्चा कियाक नहि रहत, मकान मालिकक भुसकोल बच्चा सँ आगू नहि बढ़ि सकैत अछि।

प्रवास भेलैक भाड़ाक जिनगी। सभ किछु कैंचे पर तौलल जाइत छैक। मुदा रामआसरेजी कें अनुभव दोसरे छनि। आसामक गांव हुनक लेल अपन गाम छलनि। बिहारक गाम घूमय-फिरक वास्ते। गाम पर ओ सभ अतिथि भऽ कऽ जाइत छलाह। आसाम मे अधिकार सँ छलथि।

रामआसरेजी आब अपन कथा कहऽ लगलाह—

'चारि भाइ आ तीन बहिन मे हम सभ सँ जेठ। बाबू हमरा असमिया स्कूल मे नाम लिखा देलनि। स्कूल मे हम अपन कक्षा मे असगरे बिहारी छलहुं। हमरा असमिया स्कूल मे पढ़ेबाक बाबूक इच्छाक पाछां स्थानीय समाजक संगे एकरस भेनाइ रहैक। बाबू सामाजिक समरसताक प्रबल पक्षधर छलाह। हुनक विश्वास छलनि जे एहिना आपस मे मिलि-जुलि कऽ हम सभ एक सुंदर समाजक निर्माण कऽ सकैत छी। चूंकि बाबूक इच्छा छलन्हि तैं हमर

इच्छाक कोनो प्रश्ने नहि छल।

यद्यपि हम पढ़य-लिखय मे बेसि चंसगर नहि छलहुं, मुदा हमर सहपाठी आ शिक्षक सभ हमरा खूब मानैत छलाह। शिक्षक हमरा घऽर पर आबि कऽ पाठ बुझा जाइथि। बाबू शिक्षक सँ बतियाबथि आ हमर प्रगतिक विषय मे पता करथि।

स्कूल मे सरस्वती पूजा खूब धूमधाम सँ होइत छलैक। विद्यार्थी सभ चंदा एकत्र कऽ शहर सँ मूर्ति आनैत छल आ मंडप कें खूब सजा कऽ पूजा होइत छलैक। पूजाक लेल स्कूल मे एहि दिन पढ़ाई बंद रहैत छलैक। हम सभ खूब आनंद मनबति छलहुं।

दसम् कक्षा मे अबिते बाबू अस्वस्थ भऽ गेलाह। पढ़ाइ छोड़य पड़ल। छोट-छोट भाइ-बहिन के देखऽ पड़ल। ओकर सभक शिक्षाक व्यवस्था करऽ पड़ल। जाबत धरि बाबू स्वस्थ भेलाह हम दोकान सम्हारि लेने छलहुं। नीक पूंजी आ साख दुनू छल। तैं व्यापार मे कठिनाइ नहि भेल। लोक सभ बाबू कें कहऽ लगलनि अहांक बेटा सुपात्र निकलल। आब अहां आराम करू। एहि प्रकारें दिन बीतऽ लागल। बाबूक संगे हमरो नाम पड़ोपट्टा मे खूब उचरऽ लागल।

एक दिन गाम सँ खबरि आयल जे पीसी चलि बसलीह। तऽ बाबू आ हम पीसीक गाम गेलहुं। गाम पर पीसीक काज संपन्न भेलाक पश्चात दरवज्जा पर बरतुहार सभक लाइन लागि गेल। गप्पे-सप्पे मे हमर विवाह ठीक भेल आ संपन्नो भेल। गाम आयल छलहुं दू गोटे। लौटलहुं तीन गोटे। एम्हर असम मे अपन गाम अबिते सौंसे हल्ला भऽ गेलैक जे वृंदा भगत अपन बेटाक विआह कराकऽ गाम सँ एलाह अछि। गामक लोकक आग्रह पर बाबू सत्यनारायण भगवानक पूजा कैलनि आ ओहि दिन सौंसे गाम के खुऔलनि। लोक गद्‌गद् भेल।

सभ किछु ठीके छलैक। हमर भाइ सभ बालिग भेल। सभकें विआहदान भेलैक आ सभ अपन-अपन काज मे लागल। बहिनक विआह गामे पर भेल। भगवानक कृपा सँ सभ संतुष्ट छलीह। जहिया सँ एकटा नव लोक गाम मे घुसल, अपशकुन शुरू भऽ गेल।

गामक हजारिका के नशा-पानिक आदति भऽ गेल रहैक। कमाइ-धमाइ किछु नहि छलैक। घऽर मे कनिया आ पांच टा धिया-पुता। कनेक खेत सँ उपजा बारी ततेक नहि होइत छलैक जे घऽर नीक जकां चलैक आ ओकर अपन आदत सेहो बनल रहैक। तैं घऽर मे अशांति लागले रहल छलैक। बच्चा सभ केर देह पर कहियो नीक कपड़ा नहि देखलहुं। सभ राति जखन हजारिका चौक पर सँ लौटति छलाह तऽ घऽर मे एक बेर कऽ कोहराम बजरि जाइत छलैक।

– 'जनैत छी हजारिका के अपने लोक सभ खूब दूरि करैत छलैक। ओकर कनिया दोकान पर अबैक तऽ ओकरा सौदा नहि दैयक लेल हमरा कहऽ वाला ओकरे लोक सभ छलैक। तैओ ओकरा सौदा भेटि जाइत छलैक। ओकर दिन एहिना जाइत छलैक। बीच-बीच मे ओ शहर जाइत छल। ओहिठाम रिक्शा चलाकऽ किछु आमदनी करैत आ लौटऽ काल मे बोतल सेहो नेने आबथि। फेर घऽर मे कोहराम मचि जाइक। एक दिन ओ शहर सँ लौटल

तऽ ओकरा संगे एकटा विदेशी परिवार सेहो रहैक। पुछलियैक तऽ कहलक इ गाम घूमय लेल आयल अछि। किछु दिन मे लौटि जायत। पुछलियैक-'तोरा अपने खाय-पिबाक व्यवस्था नहि छौक आ तों अतिथि आनले हें तऽ एकरा सभ कें की खुयेबहीं।'

–'से व्यवस्था भऽ जेतैक। शहर सँ कमा कऽ आनने छी।' तीन दिन, चारि दिन बीतल। सप्ताहो बीति गेल। महीना लागय लगलैक मुदा अतिथि नहि लौटलाह तऽ फेर एक दिन पुछलियैक-'की हौ, अतिथि सभ एहिठाम रहथुन।'

– 'सएह देखियौन। आब इ सभ कहैत छथि एहि ठाम मोन लागि गेल अछि। एहि ठाम रहब।' नहुए-नहुए सभटा बुझाय लागल। हजारिका अपन घरारी मे सँ आधा सँ बेसि ओकरे नामे लीखि देलिकैक। अतिथि अपन जड़ि रोपऽ मे व्यस्त भऽ गेलाह। एहि प्रकारें गाम मे बहरिया सन्हिया लगलैक आ हम सभ बहरिया होमय लगलहुं।'

कथा कहैत रामआसरेजी केर दुनू आंखि मे नोर ढबढबा गेलनि। ppp

ÑÑÃ-Ïîÿ@ÛÑÑ

– हे, आब आबि गेलहुं। देखतहि छिएक ओ जे इजोत देखाइत अछि। गामक पहिने

जे चौक छैक संभवत: तकरे छैक।

कनिया उत्साह सँ बाजि उठलीह। सभ केओ चौंकल।

– ठीके तऽ। मुदा इ राति मे चौक पर दोकान फुजल छैक से आश्चर्यक गप्प।

हम कहलियनि। गाड़ी आगू बढ़ि रहल अछि। पांच मिनटक उपरांत हम सभ ओहि इजोत लग छलहुं। इ एकटा पानक गुमटी छलैक। अगल बगलक सभटा दोकान बन्न भऽ गेल छलैक। पान दोकान पर चारि-पांच गोटे ठाड़ छलाह। गाड़ी सँ उतरि कऽ हुनका सभक लग गेलहुं आ पुछलियनि, – 'मुरलियाचक इयैह छैक?'

– 'हां। किनका ओतय जायब?'

नाम कहिते जेना ओ चीन्ह गेला। कहलनि-इयैह छैक मुरलियाचक। सोझे बाट परसौनी जाइत छैक। गाम मे जयबाक लेल बमा घुमि जाऊ। सोझे गाम मे पहुंचि जायब।

हुनका धन्यवाद दऽ कऽ गाड़ी मे बैसलहुं आ विदा भेलहुं। गाम पहुंचियोक घऽर धरि पहुंचनाई ओतेक सहज नहि छलैक। कतेक घुमाव वाला बाट सँ होइत हम सभ आगू बढ़ैत गामक दक्षिण पहुंचि गेलहुं। इ रूपौली अही बाटे जाइत छैक। मगर धैर्य जबाव दऽ रहल छल। आब की करू।

– 'ककरो सँ पूछि तऽ लियऽ।'

– 'ककरा सँ पूछू, केओ तऽ नहि छैक।'

– 'गाड़ी के साइड मे लगाउ आ हमही देखैत छी।' कनिया साधिकार बजलीह। इ हुनक नैहर छनि। ओ किनको सँ किछु पूछि सकैत छथि। लोग हुनके चिन्हबो करतनि। तें कहलियनि, 'ठीक छैक अहीं उतरू आ पूछू।'

कनिया गाड़ी सँ उतरि कऽ बाटक किनारवाला पक्का घऽर कें केबाड़क जंजीर धऽ कऽ झिझोरलनि। इ काज हुनका कैयेक बेर करऽ पड़लनि। तखन केबाड़ फुजल आ एक गोटा घऽर सँ निकललाह। कनिया अपन ककाक नाम लऽ कऽ घऽरक पता पुछलथिन।

– 'अच्छा, हुनका ओतय जायब! हमहुं तऽ अखने हुनके ओतय सँ दूधक आर्डर लऽ कऽ अबैत छी। चलू हम लऽ चलैत छी।' आ ओ संगे चलऽ लेल विदा भऽ गेलाह। तखन हुनकर नजरि गाड़ी पर पड़ि गेलनि तऽ बजलाह।

– 'गाड़ी दरवज्जा पर लऽ गेनाइ कठिन अछि। खूब पिच्छर छैक। एना करू गाड़ी कें अही ठाम दरवज्जा पर लगा दियौक। ड्राइवर गाड़ीये मे सूति रहत। ओना गाड़ी मे जौं नहि सुतय तऽ हमर दरवज्जा पर सेहो सूति सकैत छथि। हमर जीप तऽ एही ठाम रहैत अछि।'

बाटक घऽरक घरवैया अपन सलाह दैत छलाह। ओना ओहि सज्जन के सहयोग करैत देखि नीक लागल। ताबत धरि हुनका सँ परिचय नहि भेल छल। हम बीच मे पैसय नहि चाहैत छलहुं। कनियाक नैहर छनि तऽ ओहे फरियौती। तखने एकटा वृद्ध महिला कें घऽर सँ बहराइत

देखिलियनि। कनियाक नजरि गेलनि तऽ ओ आश्चर्य मिश्रित स्वर मे बाजि उठलीह-'के नानी!'

– 'तों के चौधरीक धिया!'

हुनको आश्चर्य भेलनि। कनिया हुनका गोड़ लगलथि। हमहुं नमरिकय हुनक पएर छूलहुं। आब दूनू गोटे बतियाबऽ लगलीह। बच्चा सभ गाड़िये मे बैसल छल।

– 'हम ममा के चिन्हबे नहि कैलियनि।' ओ सज्जन जे हमरा सलाह दऽ रहल छलाह कनियाक ममा छलथिन।

– 'तों सभ तऽ एकरा सभकें देखिनहि नहि छहुन। तऽ केना चिन्हबहुन। इहो तोरा सभकें केना चिन्हतौक। अइ काज मे बहुत लोक कें देखब।'

– 'हं ये नानी। हमरो तऽ एहि ठाम आयल कतेक वर्ष बीति गेल। बहुत गोटे तऽ नहि भेटत। सर-कुटुम सभ जे अओताह हुनका सभ सँ भेंट-घाट होयत।'

ताबत मे ममा बजलाह-'चलऽ तोरा सभकें घऽर धरि दऽ अबति छियौक।' इ कहि ममा आगां-आगां चलय लगलाह।

आगां-आगां चलयवाला नेता होइत छैक। अनुसरण करऽवाला ओकर अनुगामी। हम सभ ममा कें अनुगामी छलहुं। नानी धुरखुर धेने ठाढ़ छलीह। हमरा सभ दिस तकैत। एहि अन्हार मे हुनक आंखि कतेक काजक छैन्ह से नहि पता, मुदा इ आभास छल जे ओ थाल-पानि पर बजरति पएरक ध्वनि हुनका इ आभास दैत छलैन जे हम सभ कतेक आगू बढ़लहुं अछि।

काकी कें कहलियनि जे कका अबैत छथि तऽ हुनका विश्वासे नहि भेलनि, मुदा टमटम के घोड़ाक कान्ह पर झुलैत माला सँ जे झुनझुनक मोहक ध्वनि सुनाई पड़लनि तऽ खुशी केर अतिरेक मे भरि उठलीह। कका दू वर्षक बाद गाम आयल छलाह। दस-पंद्रह दिन रहताह फेर पटना चलि जयताह। प्रेसक नौकरी छन्हि। छुट्टी बड्ड कम भेटैत छनि।

कका टमटम पर सँ उतरि कऽ दाई कें प्रणाम कैलथिन। हमहुं नमरिकय पएर छूलियनि। कान पकरि कऽ बजलाह, 'पढ़ति छह कि नहि?'

– 'हं पढ़ैत छी।'

– 'की पढ़ैत छह?'

– 'हमरा बीस कान तक मोन अछि।'

– 'अच्छा सुनाबऊ।'

कका के कहि तऽ देलियनि, मुदा छटपटी लागि गेल। कोना सुनैबनि। सभटा हमरा कंठस्थ नहि छल। कका तऽ दरवज्जा वाला मास्टर नहि छथि। दरवज्जा वाला मास्टर साहेब के हम ठकि दैत छलियनि। ओ एक दिन एक कान लिखबवथि आ रटय लेल कहि दैथि। हम

कोनिया घऽरक भीत पर ओकरा लीखि लैत छलहुं। आ दोसर दिन वएह लिखल के सिलेट पर उतारि कऽ मास्टर साहेब कें देखा दैत छलियनि तऽ शाबाशी भेटति छल। मास्टर साहेबक काज छलनि हमरा सभ कें पढ़ा देनाई। हम सभ पढ़लहुं आ कि नहि से जांचक समय हुनका नहि छलनि। कका लग इ चालाकी चलत कि नहि। मोन मे बड्इ चिन्ता होमय लागल। तथापि करेज कें मजबूत बनौने छलहुं। जे हेतैक से देखल जेतैक। अहुना कका तऽ किछुए दिन रहताह। हम कतबो नीक काज कऽ लेब मुदा हुनक कनैठी सँ तऽ बचनाई कठिन अछि।

जकरे डऽर छल सएह भेल बखरा। सांझ मे कका दरवज्जा पर बैसल छलाह। लालटेन ओरियानी मे टंगा गेल छल। कका हमरा बजौलनि।

– 'आ तऽ देखियौ कि पढ़ैत छें?'

हमर तऽ देह–हाथ फूलय लागल। आब हमरा केओ नहि बचा सकैत अछि। हमरा मोन पड़ि गेला गोसाईं बबा। रातुक समय छलैक। माय हमरा पठौने छलीह छोटका भायक लेल भभूत लाबक लेल। हुनक दरवज्जा पर तऽ पहुंचि गेल रही मुदा अपना घऽर आबय मे हमरा बड्ड डऽर लगैत छल। कहलियनि, –'बबा हम असगरे अंगना नहि जायब। हमरा डऽर लगैत अछि। मुसफिरा कहैत छैक जे एहि बाट मे भूत रहैत छैक।'

बबा ठठा कऽ हंसि पड़लाह। कहलनि –'मुसफिरा बड्ड बदमाश अछि। ओ धिया–पुता सभकें एहिना डराबैत रहैत छैक। अच्छा तों जुनि डेराबऽ। हम तोरा सिखा दैत छियौक।' इ कहैत बबा नीचा सँ एक चुटकी माटि लेलनि आ हमरा तरहत्थी पर धऽ कऽ कहलनि – 'ले मुट्ठी बान्हि ले। आ बबा....बबा कहैत चलि जो। तोरा लग केओ नहि अयतौक।'

बड्ड भरोस भेल। बुझायल जेना बबा हमरा हाथ मे बंदूक पकड़ा देने छथि। एहन बंदूक जकर घोड़ा दबैबाक प्रयोजन नहि छैक। भूत कें देखिते ओ अपने मने चलय लगतैक। मुट्ठी बन्हने हम अपन दरवज्जा पर आबि गेल रही।

मुदा एखन तऽ बबा नहि छथि। हमरा के बचा सकैत अछि। हे भगवान आब की करू।

हमरा इतस्तत:क स्थिति मे देखि कका डपटलनि –'की भेलौ, निकाल सिलेट। लीख एक कान सँ बीस कान धरि।'

सिलेट निकालहुं आ लीखय लगलहुं। बारह कान धरि तऽ तुरत्ते पहुंच गेल रही। तेरह कान मे अधा। आगां लिखाइते नहि छल। मोन रहे तखन नइ। कका हमर मनोदशा ताड़ि गेलाह। सिलेट लऽ कऽ देखिलनि आ एक सिलेट माथ पर ठोकि देलनि।

– 'यैह पढ़ैत छह?'

हमरा किछु नहि फुरायल। एम्हर सिलेट बजरल आ हम भोकासी पाड़ि कऽ कानय लगलहुं। घऽर सँ दाई दौड़लीह। पँछे लागल माय सेहो। हमरा बुझायल जे आब हम एहि संकट सँ उबरि जायब। दाई कका के जोर सँ डटलथिन। माय किछु नहि बजलीह। दाई कोरा मे

बैसाकऽ आंचर सँ हमरा झांपि लेलनि। हम भीतरे सँ जोर–जोर सँ कानय लागलहुं। हमरा डऽर छल जे जौं हमर कननाई कम भेल तऽ कका हमरा झपटि लेताह।

– 'इ भग्गल धेने छौक। एकरा एम्हर ला। हम ठीक कऽ देबैक।'

हमर स्वर आओर ऊँच भऽ गेल। दाई बजलीह – 'अही लेल गाम आयल छह। बच्चा के कनाकऽ तोरा की हेतौक।'

हमर माथ पर दाई हाथ फेरय लगलीह। बांचि गेलहुं। हे भगवान। बबा नहि तऽ दाई। केओ तऽ भेल। ppp

ÑÑãæÚÜâÚÜÑÑ

अन्हार मे पएर सम्हारि–सम्हारि कऽ राखति दरवज्जा पर पहुंचलहुं। बुझायल यात्राक लक्ष्य पाबि गेल छी। पहुंचति देरी दरवज्जा पर कोलाहल शुरू भऽ गेलैक।

– 'हे डिबिया कनेक एम्हर लाऊ। एहिठाम अन्हार छैक। तखने सँ कहैत छलियैक

जे लालटेन-डिबिया दरवज्जा पर रहय दियऊ। हमर बात केओ सुनैयऽ।'

इ बाबूजीक आवाज रहनि। 'बच्चा सभ कतय अछि।'

अवैत छथि। हौऽवाऽऽ आबि गेलाह। '-ना...ना....जी।'

- 'हं....हं....हं। गोर नहि लागब। एखन गोर नहि लागल जाइत छैक।' लाल कका बच्चा सभकें बुझौलथिन।

- 'गाड़ी कतऽ अछि।'

घर सँ बहराइत साढ़ू बजलाह। कनिया हुनका बुझाबय लगलथिन। गाड़ी कोना ममा के दलान धरि पहुंचल आ गाड़ी ओही ठाम लगाबय पड़ल-सभ वृतांत कहैत देरी साढ़ू बजलाह-

- 'गाड़ी दरवज्जा पर आबि जेतैक। ड्राइवर गाड़िये संगे अछि नै? हम जाइत छी। चलू ओ मुन्ना कका।'

ताबत धरि दरवज्जा ठसाठस भरि गेल। एकटा के कहे अनेक डिबिया आबि गेल। लालटेन सेहो। आब एक दोसर कें मुंह चीन्हब शुरू भेल। बच्चा सभ गाम पहिल बेर आयल छल। ओकर नानी आ मौसी ओकरा सभकें दुलार करय लगलथिन। ओम्हर साढ़ू आ मुन्ना कका टार्च लऽ कऽ गाड़ी आनक लेल पोखरिक दक्षिण ममाक घऽर दिस विदा भेलाह। हमर पएरक आंगुर मे फेर टीस उठए लागल।

ओहि दिन रामआसरेजी कें कतबो बुझौलियनि, ओ नहि मानलाह।

- 'अपने के जाय पड़त। सभ केओ अपने कें बाट तकैत होयत।' यैह वाक्य के ओ कतेको बेर कहलनि। हम नबे-नबे आसाम आयल छलहुं आ एक दिन पलटन बाजार मे रामआसरेजी सँ भेंट भऽ गेल।

हम घऽर सँ पहिल बेर कतहु असगरे रहक लेल निकलल रही। कंपनीक तरफ सँ रहक नीक व्यवस्था छलैक। फैलगर कमरा। कमरा मे बिजली-पंखा आ एकटा टीवी सेहो। मुदा घऽरक मोन पड़ितै केनादनि होमय लगैत छल। कहियो-कहियो तऽ मोन उचाट भऽ जाइत छल आ होइत छल जे बेडिंग बान्हि कऽ नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस मे बैसि रहू। प्रवासक पहिल पीड़ा हमरा घऽर छोड़लाक तीनिये दिन बाद बूझय मे आबि गेल। रवि रहैक। निन्न फुजल तऽ बुझायल जेना नौ सँ बेसि भऽ गेल छैक। रौद खिड़की सँ होइत कमरा मे पसरि गेल छल। हड़बड़ा कऽ उठलहुं। दहिना दिस तकलहुं। टेबल पर चाह मोन पड़ि गेल। एहिठाम नहि टेबल छल आ नहि चाह। माय हमर भोरुका बेगरता नीक जकां बुझैत छलीह। हमर निन्न फुजला सँ पहिने ओछाओनक बगल मे टेबल पर चाह राखि दैति छलीह। नींद फुजल आ हाथ टेबल दिस चल जाइत छल। जौं माय केर नजरि पड़ि जाइत तऽ दूरे सँ कहैत छलीह, 'हेरो कनिक ठहरि जो। चाह ठंडा भऽ गेल हेतौक, गरम कऽ दैत छियौक।'

ताबति धरि तऽ हाथ गिलास सहित मुंह लग आबि जाइत छल आ कंठ चाह सँ जुड़ा जाइत छल।'

- 'तोरा मे कनेको धैर्य नहि छौक। ठंडे चाह घोंटि गेलैं।'

- 'तऽ की करु। हमरा जयबाक अछि।'

मुदा एहिठाम नहि टेबल छल आ नहि चाह। मोन जेना कड़ुआहट सँ भरि गेल। माय मोन पड़ि गेलीह। एहिठाम चाह के देत? कमरा सँ निकलि कऽ बाट पर जाय पड़त। गुप्ताजीक चाहक दोकान छन्हि। दोकान भोरे फुजि जाइत छनि। लोक सभ चाह-नाश्ता कऽ अपन काज पर जाइत छथि। हमहुं पायजामा पहिरलहुं आ बाट पर बिदा भेलहुं। चाह पीलहुं। नित्यकर्म सँ निवृत भऽ तैयार भेलहुं, मुदा लागे जेना मोन प्रसन्न नहि अछि। बड्ड एसगर जकां लगैत छल। मित्र तिवारीजी पुछबो कयलनि, 'क्या बात है। आज मुंह लटका हुआ है?'

- 'कुछ नहीं।' संक्षिप्त उत्तर सँ बुझा देलियनि जे एकर कारण हम हुनका नहि बुझा सकैत छी। ओना ओहो हमरे संगे आसाम अयलाह। मुदा हुनकर बात दोसर छनि। ओ नान्हियेटा सँ अपन माता-पिता सँ दूर रहलाह। छात्रावास मे रहबाक अभ्यास छनि। हम अपन पीड़ा कहि कऽ हुनका अपना मे केना मिला लियऽ।

दुनू गोटे एके संगे आफिस गेलहुं। भोजन एक्के संगे कयलहुं। तहियो मोन फरहर नहि भेल। तऽ चारि बजे आफिस सँ निकलि गेलहुं। प्रभारीकें कहलियनि जे मोन ठीक नहि लागि रहल अछि। कनेक बाहर घूमि अबैत छी। आफिस सँ निकलि बाट पर अयलहुं आ बाट पार कऽ स्टेशन दिस विदा भऽ गेलहुं। बुझायल जेना सम्मोहित अवस्था मे छी। आखिर स्टेशने दिस कियैक? सचिवालय दिस कियैक नहि?

पएरे विदा भेलहुं। बाट सँ गाड़ी सर्र-सर्र निकलि रहल छल। रिक्साक घंटी सेहो कान मे अबैत छल, मुदा हम सोझे स्टेशन दिस जा रहल छलहुं। भक्क तखन फुजल जखन हम उलुबाड़ी चौराहा पर पहुंच गेलहुं आ चौराहा पार करब मे पएर के बुद्धिक सहयोगक आवश्यकता भेलैक। ओहि ठाम धरि तऽ आंखि आ पएरक काज छलैक। आब दहिना-बामा देखब आ ट्राफिकक सिगनल के चीन्हब बुद्धिक काज छलैक। पएर ठहरि गेल छलैक। ओकर बुद्धिक आदेशक प्रतीक्षा छलैक। तखने एगोटा हड़बड़ाइत हमरा ठेलैत निकलि गेलाह। धोती-कुरता पहिरने। पएर मे चप्पल। हमरा बुझायल गामक केओ छथि।

- 'हे यौ। कनि सुनू यौ।' हम आवाज देलियनि।

हमर आवाज सुनितै ओ बीचे बाट मे थमकि गेलाह। दुनू कात सँ गाड़ी सभ आबि गेलैक आ जोर-जोर सँ हार्न बजाबय लगलैक। पाछां सँ एगोटा बाजल, 'कैसा बेवकूफ है। बीच सड़क पर खड़ा हो गया है।' हमर अपन गलतीक अहसास भेल। इशारा केलियनि जे अहां बाटक ओहि पार जाऊ। हमहुं अबैत छी।

ओ बाटक ओहि पार गेलाह। हमहुं गेलहुं।

– 'अहीं हमरा बजौने छलहुं।'

आह.....। सुंदर मैथिली। इयैह सुनबाक लेल कान जेना तरसि गेल छल।

– 'हं यौ हमही आवाज देने छलहुं।'

– 'कहू... की कहय चाहैत छी?'

– 'की नाम अछि?'

– 'रामआसरे भगत।' ppp

ÑÑãÌÙ¿ãÚÑÑ

कनिया काकी बच्चा दुनू के अंगना मे लऽ गेलथिन। भोजन तैयार छलैक। हमरा भूख नहि छल। कनिया कहलथिन–'बच्चे सभ संगे हमहुं किछु खा लेब।' ताबत मे गाड़ीक इजोत सौंसे दलान कें जगमगा देलक।

– 'केना लऽ ऐलियइ यौ।' साढ़ू सँ पुछलियनि।

– 'एंह औतई नइ कोना। अपनेक ड्राइवर 'फिट' अछि। मुदा एहि कसरत मे अपनेक गाड़ी हमरा थाल सँ भरि देलक।'

– 'कहलियनि जे गाड़ीक पाछू नहि जाऊ तऽ हमर बात सुनबे नहि कैलनि। गाड़ी खधिया सँ निकालय लेल जोर कैलकै तऽ ओकर पहिया सँ निकलल थाल हिनका भरि देलक।' मुन्ना कका उत्साहित होइत बजलाह।

– 'हौऊ रहय दियऊ। गाड़ी अही ठाम रहत। काल्हि आगां–पाछां करब। ड्राइवर के कहियनु मुंह–हाथ धो के भोजन करत।' छोटका कका हाथ मे तमाकू चुनबैत बजलाह। ड्राइवर डेका बुझि गेल जे ओकरे भोजनक लेल कहल जाइत छैक। बाजल–'हें... हम खाना नहीं खायेगा। अभी सोयेगा।'

– 'ओकरा छोड़ि दियौक। थाकल छैक। गाड़िये मे सूति रहत। भोरे खुआ देबई।' बाबूजी अपन आसन सँ उठलाह। संगे कंबल सेहो हाथ मे झुला लेलनि आ अपन सूतक स्थान लेल विदा भेलाह।

ताबत धरि भीड़ छटि गेल रहैक। दलान पर हम सभ पांच गोटे छलहुं। हम, लाल कका, छोटका कका, मुन्ना कका आओर साढ़ू।

– 'ककाजी एक जूम तमाकू देल जाओ। कनेक ठहरि कऽ हाथ मुंह धोयब। ताबत धरि ओछाओन सेहो लागि जायत।' ककाजी के तमाकू चुनबैत देखि कहलियनि।

– 'एहि तमाकू मे अपनेक सीधा सेहो लागल अछि। अपनेक आवाज सुनिते हम बुझि गेलहुं जे अपने अम्मल संगे आनने छी।' ककाजी कें कहिते सभ लोक ठठा कऽ हंसि पड़ल।

ककाजी गामे पर रहति छथि। दोकान छनि। मिल चलबैत छथि। लोक सभकें बेगरता के सेहो सम्हारति छथि। तैं गाम मे आदरणीय छथि। एकटा जन हरदम रहति छनि। समांग जकां। सभटा काज देखैत छनि। सत्तन नाम छैक। जेहने नाम तेहने गुण। भोरे आबि कऽ कका–काकी कें पएर छूबि कऽ प्रणाम केनाई ओ कहियो नहि बिसरैत अछि। प्रणाम कयलाक बादे ओ कोनो काज करत। बेदा कका कहियो दैत छथिन्ह, 'जो... सभटा संस्कार तोरे मे पैसि गेलउयै।' गप्प चलियै रहल छलैक कि एकटा दुब्बरि–पातरि लोक के पांच हाथ दूर ठाढ़ देखलहुं।

– 'आबऽ नहि सत्तन। ओम्हर कियैक ठाढ़ छह।' कका ओकरा आवाज देलथिन, सत्तन सँ परिचित नहि छलहुं।

– 'के छथि सत्तन?' पुछलियनि।

– 'हमरे लोक अछि। काज सम्हारैयऽ।'

– 'पाहुन आबि गेलाह? सत्तन नजदीक आबि पुछलथिन।

– 'हं... एखने पहुंचैत जाइत गेलाह।'

तखने एक गोटा आरो पहुंचलाह। माथ पर पगड़ी। पिंडश्याम रंग। खाली देह। ठेहन

धरि धोती। एक हाथ मे लाठी आ दोसर मे लालटेन।

– 'इ छथि कुनकुन कका।' कका हुनका सँ परिचय करौलनि।

– 'परिचय करा देलियनि। हमरा भेल जे कतहु अपने एकरा देखि कऽ डेरा नहि जाइ। एकर रंगे रूप तेहन छैक जे नीक–नीक करेजवाला सभ देखिये कऽ डेरा जाइत छैक। की हौ कुनकुन?' ककाजी आरो फरिछा कऽ परिचय करा देलनि। कुनकुन ककाक मुंह फुजि गेलनि। उज्जरि–उज्जरि दांत झलकय लगलनि। हमर पएरक आंगुर सँ फेर टीस उठय लागल।

– 'की भऽ गेल अछि?' कका पुछलनि।

– 'की जाने की भऽ गेल। बाट मे अचानक पएरक आंगुर मे जे टीस उठय लागल तऽ एखन धरि कष्ट दऽ रहल अछि। बाट मे कतहुं एकोठाम देखेबाक फुरसत नहि भेल।' हम कहलियनि आ पएर के आगां बढ़ा देलियनि। ककाजी टार्च लऽ कऽ देखय लगलाह।

– 'इ तऽ फोंका उठल अछि। एखन पकबो नहि कयल अछि। राति भरि मे पाकि जायत तऽ भिनसरे एकरा बहा देबैक। एखन एकटा गोटी खा लियऽ। दर्द नहि हैत।' कका अपन विशेषज्ञता देखौलनि। ओना गामक दोकानदार छोट–मोट डाक्टर होइत छथि। किछु 'एंटीबायोटिक' एकटा डिब्बा मे रहैत छनि। ककरो पेट खराब भऽ गेलैक तऽ हाजमोलाक पुरिया बना कऽ दऽ दैत छथिन्ह। माथ दुखायल तऽ एनासिन एखनो कारगर दवाई छैक। बोखार भेल अछि तऽ एही प्रकारक कयेकटा गोटी (टेबलेट) भेटि जायत। एहि स्तर सँ जौं बीमारी ऊपर स्तरक छैक तऽ बैगवाला डाक्टर कें बजबियौन। अबिते ओ दू टा सूई भौंकि कऽ पानि चढ़ा देताह। बीमार ठीक भेल तऽ ठीक आ नहि तऽ शहर जायके सलाह। ककाजी के कहलियनि, 'हम गोटी नहि खायब। दर्द हेतैक तऽ होबय दियौक।'

– 'तखन भिनसरक प्रतीक्षा करू। विजइया के बजा लेब। ओ बड्ड नीक जकां घाव बहबैत छैक। किछु दवाइयो दऽ देत। घाव जल्दी सूखा जायत।'

– 'नै यौ ककाजी। विजइया–तिजइया के जरूरत नहि पड़तैक। हम अपने घाव बहा लेब। आ जतय धरि दवाई केर सवाल छैक तऽ घाव बहलाक बाद ओकर कोनो आवश्यकता नहि छैक।'

– 'पाहुन ठीके कहैत छथि गुरुजी। इ शहर मे रहयवाला छथि। घाव–घूस के डाक्टरी अपने अबैत हेतैन। हमर एगो भाई बंबई मे रहति अछि। अपने कें हम कहने रही। एक बेर हमरो बंबई लऽ गेल रहथि। ओकरा घऽर मे देखलहुं जे एकटा बड़का डिब्बा मे ततेक दवाई रहैक कि जतेक चौक पर दोकानो मे नहि भेटत। हम पुछलिएक तऽ कहलक एहि डिब्बा मे सभ किछु के दवाई छैक। हमर माथ दुखाइत छल। कहलिएक एगो दवाई हमरो दियऽ। ओ हमरा एगो गोटी देलक। कहैत छी जे एक्के गो गोटी सँ हमर मथदुक्खी कतय पड़ायल से आई धरि फेर नहि उठल।' सत्तन शुरू भऽ गेल छलाह। हुनका रोकक लेल कुनकुन कका कें हस्तक्षेप करऽ पड़लनि।

– 'आब बस करू सत्तन। अहां तऽ नहि समय देखैत छी आ नहि सकाल।' शुरू भऽ जाइत छी। अहांक भाईवाला खिस्सा हम कतेको बेर सुनल छी। आब कान पाकि गेल अछि। एतेक सनेहक भाई अछि तऽ एक्को बेर कहां खबरि लैत अछि।' कुनकुन कका के बात सुनि सत्तन भभकि उठल।

– 'हे यौ। हमर भाई तऽ बंबई मे रहैत छैक। ओहि ठाम जाय मे चारि दिन लगैत छैक। मुदा अपनेक भाई तऽ जौड़े छथि। कहां देखैत छी जे ओ एक्को बेर अपनेक पुछारी करैत छथि। ओहि बेर अपने बोखार सँ तड़पैत रही आ ओ खेत अगोड़ने छलाह।'

– 'हे सत्तन अपना कें सम्हारू। पाहुन आयल छथि। इ नहि होय जे पाहुन आ अहां कें मालिक दुनू गोटे एक्के बेर अहांक सभ कर्म जानि जाथु।'

– 'हमर कोन करम छिप्पल अछि। अपने कथी उघार कऽ देब। अपने कें इज्जति करैत छी तकर मतलब इहै होयत छैक जे दस लोक मे अहां हमरा बेइज्जत करी।'

– 'हे.... सत्तन। हम तोरा बेइज्जत केलियऊ़ै? हम तऽ खाली इयैह कहऽ चाहैत छलहुं जे अहां अपन बात कनेक संक्षेप मे कहि दियौन। पाहुन थाकल छथि। हिनका विश्राम करबाक छनि।' कुनकुन कका अपने सँ स्थिति संभारलाह। छोटका कका हुनका समर्थन आ सत्तन के दुलार करैत कहलथिन–'ठीके तऽ कहैत छौक। तों जखन–तखन अपन भाईवाला खिस्सा पसारि लैत छैंऽ। हमरा नीक लगैत अछि। तऽ की सभ कें नीक लगनाई आवश्यक छैक? तोरा भोरे सँ काज छौक। मधुबनी जाय पड़तौक। रहिका मे सेहो बड्ड काज अछि। जो अंगना मे देखहुन पाहुनक ओछाओन भेलैन कि नहि। झूठ–फूसि मे लागल रहैत छैंऽ।'

कुनकुन कका के छोटका कका के बात नीक नहि लगलनि। लाठी कें जमीन पर ठोकि कऽ ओ अपन असंतोष व्यक्त कयलनि आ गाछी दिस विदा भऽ गेलाह।

एम्हर लाल कका कें तऽ हंसैत–हंसैत पेट मे बल पड़य लगलनि। मुन्ना कका के एहि प्रकरण मे हस्तक्षेपक अवसर नहि भेटबाक मलाल छलनि। एहन रसगर वार्तालाप तऽ हमरो नीक लागि रहल छल, मुदा थकान सँ आंखि अपने मने झपा रहल छल। ताबत मे सत्तन आबि गेलाह।

– 'चलियौ पाहुन। ओरियाओन भऽ गेल अछि।' ppp

ÑÑ¥æÚUÊÌÑÑ

हमर गामक नाम सुनिते रामआसरेजी हमरा पांज मे भरि लेलनि। हुनक प्रसन्नता हमर देह छूबि रहल छल। नाक सँ निकलति हवा आ माथ पर पोचारल तेल गंध हमर नाक सँ भीतर करेज छूबि रहल छल। परदेश मे केओ अप्पन भेटलाक आवेग जल्दी सम्हार मे नहि अबैत छैक। रामआसरेजीक आंखिक कोर सँ नोर जेना आब खसत–ताब–खसत।

– 'अपने तऽ हमर एकलेखे गौंवें भेली की नइ?'

– 'हं यौ बुझू तऽ एक्के गामक छी। कनेक बाध आ नहरि आ नहरिक पार अहांक गाम। सैह नइ। ओना अहां सभ जतय कतहुं जाइत होयब तऽ हमरे गाम दने जाय पड़ैत होयत।'

– 'हमर गाम तऽ बुझू अपने गामक एकटा टोल।'

– 'अच्छा कहू एहिठाम कतऽ रहैत छी आ की करैत छी?' हम पुछलियनि।

– 'हम एहिठाम नहि रहैत छी। एहिठाम सँ पांच सौ किलोमीटर पूरब मे तिनसुकिया जिला छैक। तिनसुकिया शहर सँ आरो दूर सदिया शहर छैक। ओकरे नजदीक हमर गाम अछि।'

रामआसरेजीक निवासक गप्प सुनि माथ घूमय लागल।

– 'अईं यौ। हम तऽ एकरे परदेश बुझैत छलिये। अहां तऽ परदेशो के परदेश मे रहैत छी। एतेक दूर कोना ऐलियइ।'

– 'हमर बाबा आयल छलथिन। तखन ब्रह्मपुत्र पर पुल नहि छलैक। दड़िभंगा सँ कयेकटा ट्रेन बदलति ब्रह्मपुत्र धरि अमीनगांव आबऽ पड़ैत छलैक। स्टीमर सँ ब्रह्मपुत्र पार कऽ के पांडु मे फेर ट्रेन मे बैसू आ तिनसुकिया जाऊ। तखन पांडु सँ तिनसुकिया जाय मे अट्ठाइस घंटा लगैत छलैक। आ गाम सँ अमीनगांव अट्ठाइस घंटा। हमर बाबा जहिया एम्हर अयलखिन तहिया ट्रेन-स्टीमर रहैक। छप्पन घंटा ट्रेन मे यात्रा करयवाला कें आंखि फूलि कऽ कुप्पा भऽ जाइत छलैक। लाल सेहो। कोयला वाला इंजिनक धुआं संगे कोयलाक छोट-छोट कण आंखि कें फुला दैत छलैक। बाबा कहैत छलाह जे यात्रा समाप्त भेलाक उपरान्त लोक के चारि दिन धरि होश नहि रहैत छलैक। देह-हाथ सोझ करय मे आ आंखि के सामान्य बनयबा मे चारि दिन लागि जाइत छलैक। तैं एक बेर जे आयल तऽ गाम घूमय मे पांच-पांच वर्ष लागि जाइत छलैक। ओम्हर गाम पर लोक सभ चिंता मे डूबि जाइत छलैक। लोक के इहो अंदेशा होमय लगैत छलैक जे परदेश गेल मनुक्ख गाम लौटत कि नहि।'

रामआसरेजी इतिहासवेत्ता जकां हमरा पढ़ा रहल छलाह। हमरो इ सभ जानब जरूरी छल। एकाग्र भऽ कऽ सुनि रहल छलहुं। रामआसरेजी इतिहास बखान करबा मे मग्न छलाह।

– 'जनैत छी। गाम पर जखने केओ लोक पूरब दिस जाय के लेल सोचैत छल तऽ लोक सभ ओकरा मना कऽ दैत छलैक। पूरब देशक विषय मे लोकवेद मे अजब धारणा छलैक। लोक मान्यता छलैक जे पूरब देश जायवाला लोक घूमि कऽ नहि अबैत छैक। ओहि ठाम जादूगरनी रहैत छैक जे एहि देशक लोक सभ के बकरी बना दैत छैक। हमर बाबा जहिया पूरब दिस विदा भेलाह तऽ घऽर मे कन्ना-रोहट लागि गेलैक। ठीक ओहिना जेना ककरो मुइला पर होइत छैक। यद्यपि बाबा कमायलेल शहर के हाकिम संगे पूरब देश जाइत छलाह, मुदा हमर दाई बुझथिन्ह जे बाबा आब लौटि कऽ नहि आओताह। गाम सभक लोकक इ मान्यता वास्तव मे यात्रा कष्टक कारणे बहुत-बहुत दिन गाम नहि लौटबाक कारणे छलैक।

परदेश गेल व्यक्ति सोचैत छल जे किछु नीक पाई कमा लेब तखने लौटब। जखन की गामक लोक सोचैत छल जे ओकर परदेशिया बकरी बनल मिमियाइत आ दूबि चरैत होयत।'

रामआसरेजी अपन इतिहास ज्ञान पर मुग्ध होइत बजलाह-'अपनो तऽ सुनने होयब गाम-घऽरक गीत सभ। ओहि गीत सभ मे कनिया सभक एकेटा निहोरा रहैत छनि जे कतहु जाऊ मुदा पूरब देश नहि जाऊ।'

– 'हं...यौ। एहन कयेकटा लोकगीत हमरो सुनल अछि।' हम हुनका उत्साह देलियनि।

– 'ओना पूरब देश कमाय-खटाय लेल नीक जगह छलैक। हमर बाबा एकटा हाकिम संगे आयल छलाह। पहिने तिनसुकिया मे छलाह। ओहि ठाम सरकारी काज सभ छलैक। बाबा काज मे एहन मग्न भेलाह कि छह साल गाम पर कोनो खबरि नहि छलैन। एम्हर गाम पर चिंता-अंदेशा लागि गेलैक। बाबू कहैत छलाह जे एक दिन पोस्ट आफिस सँ डाक प्यून अयलैक। हमर बाबूक नाम लऽ कऽ घर पुछलकैक तऽ सौंसे गाम मे हल्ला भऽ गलैक जे पूरब सँ तार आयल छैक। इ हल्ला हमर घऽर मे सेहो पहुंचि गेलैक आ कन्ना-रोहट शुरू भऽ गेलैक। हमरा इ घटना कनिको मोन नहि अछि। तखन हम बड्ड छोट छलहुं। बाबू इ किस्सा कहैत खूब हंसैत छलाह। वास्तव मे डाक प्यून तार नहि मनिआर्डर आनने छलैक। जखन इ भेद खुजलै तऽ जेना बुझाओल जे घऽर मे हर्षक गंगा बहि रहल छैक।

– 'वाह....वाह।' हमरा मुंह सँ निकलल।'

– 'अईं यौ रामआसरेजी, अहां कहिया असम अयलहुं?'

– 'हमर तऽ जन्मे आसाम मे भेल। बाबा मनिआर्डर पठौलन्हि। घऽरक कष्ट क्षणे मे क्षणाक भऽ गेलैक। छह मास बाद बाबा गाम लौटलाह। तीन मास गाम मे बिता कऽ दाई आ बच्चा सभ कें लऽ कऽ फेर आसाम चलि गेलाह। हमर बाबू केर जन्म गामक छलैन्ह मुदा ज्ञान आसामे मे भेलन्हि। आ हमर जन्मभूमि-कर्मभूमि दुनू आसामे अछि।'

उलुबाड़ी चौराहा सँ गप्प करैत दुनू गोटे पलटन बाजार आबि गेल छलहुं। गुवाहाटीक सभ सँ बेसी चहचहाइत स्थान। एक दिस असम राज्य परिवहन निगमक मुख्य बस अड्डा छैक। ओकर ओहि कात गुवाहाटी रेलवे स्टेशन। प्राइवेट बस सभक काउंटर सभ छैक। इ इलाकाक यात्री सभ कें आवागमनक कारणे चौबीसों घंटा जागल रहैत छैक। होटल आ लॉजक गिनती नहि छैक। दोकान सभ सेहो छैक। पानक गुमटी पचास सँ कम नहि हेतैक। डाला पर पान धऽ कऽ बेचयवाला सेहो कम नहि छथि। स्टेशन सँ निकलि बाट पार करिते प्रमोदजीक होटल छैन्ह। एहिठामक विशेषता छैक जे प्राय: सभ प्रांतक लोक सभ होटल-लॉज खोलने छथि। दक्षिण भारतीयक होटलक साइन बोर्ड पर असमिया, अंग्रेजी आ हिन्दी मे होटलक नाम तऽ लिखले छैक, संगे तमिल मे सेहो लिखल छैक। तहिना सरदारजीक होटलक साइन बोर्ड पर गुरुमुखीक दर्शन होयत अछि तऽ बंगभाषी सज्जनक होटल-दोकानक साइन बोर्ड पर

बंगला लीपि मे सेहो लिखल छैक। पलटन बाजार मे संपूर्ण भारत बसल अछि। प्रमोदजीक दोकान हमरा सभक लेल विशेष महत्व रखैत अछि। एहि होटलक तीमन आ कि डलना मे गामक सुगंध छैक। कचरी आ सिंघाड़ाक स्वाद तऽ अलबत्ते बुझू। अहू सँ पैघ बात इ छैक जे एहि होटल मे जेम्हर देखू तेम्हरे गाम सनक लोक सभ। मोन गद्‌गद्‌ भऽ जायत अछि। रामआसरेजीक कें कहलियनि – 'चलू। कनेक चाह पियल जाय।' ppp

ÑKÕU ÙhaÑÑ

एके निन्ने भिनसर भऽ गेलैक। बुझायल जेना बहुत दिनक बाद सूतक मौका भेटल। जौं अंगना मे कोलाहल नहि होइतै तऽ हम आरो सूति सकैत छलहुं। शरीर भारी बुझा रहल छल। ओम्हर बाबूजी अंगना मे घाट पड़क सरंजामक लेल जोर-जोर सँ बाजि रहल छलाह। दू गोटे हुनक बात पर एहि घऽर सँ ओहि घऽर आ ओहि घऽर सँ अहि घऽर कऽ रहल छलैक। एकटा अन्नपूर्णा पीसी और दोसर छोटकी काकी। लाल काकी चित्र मे कतहु नहि छलीह।

–'जौं एना करब तऽ घाटे पर राति भऽ जायत। काल्हिये बुझा देने रहियनि जे पात्रक सूची सँ सभ मिला लियऽ।' बाबूजी एक डपटान आओर देलथिन। छोटका कका अंगना मे प्रवेश कयलनि। बाबूजी कें व्यग्र देखि कहलथिन-'अहां चिंता कियैक करैत छी, सभ भऽ जयतैक।

–'भऽ जयतैक की कपार। एखन धरि हम अही ठाम छी। एतबा धरि तऽ कर्म आरंभ भऽ जयबाक चाहैत छल।'

–'अच्छा हौऊ.... अहां घाट पर जाऊ। हम आ छोटन इ सभ सामान लऽ कऽ अबैत छी।'

छोटन कका पाचक बनल छथि। बनारस रहैत छलाह। गामक जमीन-जायदाद देखबाक लेल आब गामे पर रहैत छथि। एहिठाम घऽर नहि छलैन तऽ दुइ कोठरी के पक्का मकान बनौलनि। ज्योतिष के ज्ञान छनि। अहुठाम किछु-किछु काज चलि जाइत छनि।

बाबूजी छोटन कका कें बुझा-सुझा कऽ घाट दिस विदा भऽ गेलाह। कोनो काज सँ मुन्ना कका धम्म सँ हमर कक्ष मे प्रवेश कयलाह। हमरा जागल देखि हुनका बड्ड आश्चर्य भेलनि।

–'हे देखहुन गे दाई। पाहुन जागि गेलथुन।'

–'हं...तऽ आब आठ बजतैक आ एखनहुं नहि जगताह।' छोटका कका तमाकू चुनबैति अयलाह।'

–'कि यौ चाहो-ताहो लेल पुछलक की नहि?'

–'एखने सूति कें उठलहुं अछि। आब देखैत छी। केओ जौं आबथि।'

–'ठीक छैक। हमही व्यवस्था करैत छी।' इ कहि ककाजी बाहर निकलि गेलाह। हमरा विशेष प्रतीक्षा नहि करऽ पड़ल। बीस मिनट बाद छोटकी काकी हाथ मे गिलास-बाटी नेने पहुंच गेलीह। गिलास मे चाह छलैक।

–'उठथु चाह पीबि लौथु। नहि तऽ ठंडा भऽ जयतनि। भिनसर सँ हम तीन बेर चाह लऽ कऽ आबि चुकल छी। इ चारिम खेप छनि।' छोटकी काकी हमर जरूरत-स्वभाव सँ पूर्ण परिचित छथि। बियाह मे हमर बिधकरी सेहो छलीह। हुनका पता छनि जे हम कप मे चाह नहि पीबैत छी। आश्चर्यक गप्प इ जे एहि बेर हम कएक बरखक बाद गाम आयल छी। एतेक दिन बादो हुनका इ छोट-छोट बात स्मरण छनि। चाह खत्म नहि भेल छल कि ककाजी पुनः अयलाह। –'यौ चाह खतम करु। तमाकू अगुता रहल अछि।' नित्यकर्म सँ निवृत्त भऽ दलान पर अयलहुं तऽ ककाजी हमर प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह। घाटपरक लेल किछु सामान सेहो रखने छलाह। तखने धर्र-धर्र करैत जीप दलान पर आबि गेल। जीप मे दूधक पैकेट छलैक। ककाजी दूध उतारय मे भीड़ि गेलाह। हमरा मुन्ना कका संगे घाट दिस विदा कऽ देलाह।

– 'आइ एकादशाक कर्म छैक। सर–कुटुंब सभ जुटय लागल छथि।' मुन्ना कका कहलनि।

– 'एखन धरि के सभ आयल छथि?' हम पुछलियनि।

– 'भैया तऽ चारिम दिन पहुंचलथिन। *(भैया याने हमर ससुर)* ताबत धरि उतरी छोटके भैया के गरा मे छलनि। भैया अबिते उतरी लऽ लेलथिन तऽ छोटका भैया कें जान बचलनि। एहिठाम ततेक काज छैक जे अपने देखिये रहल छी। भोरे रहिका गेलहुं। दूधक पैकेट लऽ कऽ आबि रहल छी। सांझ मे भोज छैक तकर सरंजाम करक अछि।'

– 'मुन्ना कका अहां प्रसंग सँ भटकि जाइत छी। हमर प्रश्न छल जे एखन धरि कोन–कोन सर–कुटुंब पहुंच गेलाह?'

– 'वैह तऽ कहैत छी। हमरा कोनो बात विस्तार मे कहबाक आदति अछि। अहूं लग फैल समय अछि। तऽ हमर बात कनेक सूनि लियऽ।

मुन्ना कका आ रामआसरेजी मे कएकटा पैघ समानता छनि। दुनू गोटेक हृदय निर्मल छनि। तैं कोनो बात मोन मे नहि राखि सकैत छथि। एकटा प्रसंग उठौताह तऽ कतेक प्रसंग आबि जाइत छनि। ओहि दिन पलटन बाजार मे प्रमोदजीक होटल मे चाह पिबाक लेल बैसलहुं। दूई घंटा भऽ गेल, मुदा रामआसरेजीक गप्प खत्मे नहि होइत छलैन। अपन बाबा सँ शुरू कयलनि। पिता वृंदा भगतक स्मरण करैत ओकरा विस्तार देलनि। हम पुछलियनि जे अहां कें कतय बेसी मोन लगैत अछि। आसाम मे आ कि गाम पर। ओ फेर शुरू भऽ गेलाह–

– 'ओना गाम सँ हमरा बड्ड स्नेह अछि। मुदा गाम पर हम रहबे कतऽ केलियैक। बेसी सँ बेसी बरख मे दस दिन। ज्ञान भेल तऽ असमिया सभ के बीच अपना के पौलहुं। संगीतुरिया सभ बेसी असमिया। हम सभ ओकरा सभ कें संगे असमिये भाषा मे गप्प कयल करी। घऽर मे मैथिली। स्कूल मे छुट्टी वा गाम पर कोनो काज–तिहार होइक तऽ गाम जाइत छलहुं। जतेक दिन गाम पर रहैत छलहुं सभ किछु नवीने लगैत छल। गाम सँ लौटलाह पर ओ सभ बात मोन पड़ैत छल। हम तऽ एखनि धरि अपन गामक सभ लोक कें नहि चीन्ह सकैत छी। हमरा सभ के लेल तऽ बुझू गाम परदेश आ आसाम अपन देश अछि।'

– 'गाम जाइत छलहुं तऽ केहन लगैत छल?'

– 'बुझाइत छल पिकनिक पर आयल छी। छौंड़ा सभ संगे हिन्दी मे बात करी तऽ ओकरा सभ के बड्ड खराब लगैक। कहैत छल–अंग्रेजी छांटति अछि। तखन जेना बुझाय जे अपन 'क्लास' कनि ऊपर अछि। गामक पंडितजी कें हमर बाबू दरवज्जा पर तमाकू खायक लेल रोकि लेथिन आ हमरा सँ अंग्रेजी मे बातचीत करबाक आग्रह करथि। पंडितजी गामक हाईस्कूल मे अंग्रेजी कें मास्टर छलथिन। हमरा खूब मानथि। दू–चारि टा प्रश्न अंग्रेजी मे पूछथि आ हम अपन सामर्थ्य केर अनुसार गलती–सलती जवाब दियनि तऽ हमर बाबू बड्ड प्रसन्न

भऽ जाइत छलाह। गाम तऽ गामे होइत छैक। पाकल आम जकां स्वादिष्ट। हमरा सभ के भोग कहां?'

– 'एखन गुवाहाटी मे रहब?'

– 'नइ यौ। सांझुक बस सँ तिनसुकिया चलि जायब। भोरुका ट्रेन सँ गाम सँ अयलहुं अछि। सामान सभ होटल मे अछि। दिन भरि कोनो काज नहि छल तऽ मणिपुरिया बस्ती गेल छलहुं। हमर गामक किछु गोटे ओतय रहति छथि। बेसी गोटे सँ तऽ भेंट नहि भेल। सभ अपन–अपन काज मे निकलल अछि। सुदर्शन पूर्वे केर बेटा ओही ठाम दोकान केने अछि। ओकरा सँ भेंट भेल। ओकरे घऽर मे भोजन कयलहुं आ गौंवां सभक हालचाल बुझलहुं। आब होटल जायब। सामान लेब आ बस पकड़ब।'

रामआसरेजी कुर्सी सँ उठलाह आ जेबी मे हाथ देलनि। हमरा बुझायल ओ चाहक कैंचा देबाक उपक्रम मे छथि। हम मना कैलियनि–

– 'रहऽ दियौक, हम दऽ दैत छी। कहुना तऽ एहिठाम अपने हमर अतिथि छी।'

– 'से की कहैत छी। अपने आसाम पहिल बेर आयल छी। तऽ अतिथि अपने भेलहुं। हम तऽ अहीठामक छी। ओहुना पहिल बेर भेंट भेल। मोन बड्ड प्रसन्न भेल। एहि प्रसन्नताक के कैंचा सँ नहि तौल सकैत छी। आइ चाहक कैंचा हमरे देबय दिअऽ। आब तऽ हमरा अहांक भेंट मुलाकात होइते रहत। कुनू काज बेगरता सँ हमरा गुवाहाटी आबऽ पड़त अछि। तऽ अपने सँ जरूर मुलाकात करब।'

इ कहि रामआसरेजी चाहक कैंचा दोकानदार कें पकड़ा देलनि। दुनू गोटे दोकान सँ निकललहुं। नमस्कार करिते ओ फेर भरि पांज पकड़ि लेलनि आ अपन होटल दिस विदा भेलाह। हमरो मोन बड्ड हल्लुक लागि रहल छल। पएरे आफिस दिस विदा भेलहुं। अबैत–अबैत मणिपुरी बस्ती कें बाटे सँ तकलहुं। एहि गली मे रामआसरेजीक गौंवां सभ रहैत छनि। हुनक गौंवां तऽ हमरो गौंवां। के सभ छथि? की करैत छथि? मोन मे अनेक प्रश्न आबय लागल। मणिपुरी बस्ती मे जयबाक इच्छा तीव्र होमय लागल। मुदा एखन आफिस पहुंचनाई जरूरी छलैक। तैं मोन मसोसि कऽ झटकारति चलय लगलहुं। सांझ होमय जा रहल छलैक। बाटक कातक दोकान सभ मे बिजली जरि गेल छलैक। म्यूनिसिपैलिटीक बिजली सेहो जगमगा गेल छलैक। उलुबाड़ी चौराहा पर भीड़–भाड़ बढ़ि गेलैक। सांझ मे इ चौराहा कनेक बेसिये व्यस्त भऽ जाइत छैक। चौराहा पार करैत लाचितनगर मोड़ आ ओकर सौ कदम पर हमर आफिस। गेटे पर तिवारीजी भेंट भऽ गेलाह।

– 'कहां चले गये थे? अग्रवालजी आपको ढूंढ़ रहे थे।'

अग्रवालजी हमर अधिकारी छथि। ओहो पहिल बेर आयल छथि। आफिस मे हमरा पर हुनका बड्ड भरोस छनि। हुनका मोने एहि क्षेत्रक विषय मे हमरा विशेष जानकारी अछि।

– 'चलिये.....। अग्रवालजी से मिल लेता हूं।' हम कहलियनि आ दुनू गोटे आफिसक

बड़का लोहा वाला गेट पार करैत भीतर पैसलहुं। ppp

ÑÑÕèâÑÑ

नम्हर-नम्हर डेग बढ़बैत हम आ मुन्ना कका घाट दिस जा रहल छलहुं। मुन्ना कका पाहुन सभक विषय मे हमरा जानकारी दऽ रहल छलाह।

- 'हं तऽ मुन्ना कका, के सभ पाहुन एखन धरि आबि गेलाह?' हम पुछलियनि।

- 'पहिने तऽ भैया अयलाह।'

- 'अपने हुनकर नाम कियैक कहैत छी। ओ तऽ घरबैये छथि।'

- 'घरबैया रहितो ओ पाहुने छथि।'

- 'से कोना?'

- 'से नहि बुझलियइ। तऽ हम अपने कें बुझबैत छी, सुनू।'

भैया बाहर रहैत छथि। गाम कुनू काजे-तिहार मे अबैत छथि। काज-तिहार मे अबयवाला तऽ पाहुने होइत छैक नहि। जेना अपने आयल छी। अपने तऽ हरसट्ठे नहि अबैत छी। तैं अपने पाहुन छी। तहिना भैया सेहो हरसट्ठे गाम नहि अबैत छथि। देखियो नऽ एहि बेर भैया चारि बरखक बाद गाम आयल छथि। सेहो तखन जखन कि मायक स्वर्गवास भेलैन्ह। जौं माय एखन जीवित रहितथिन तऽ की भैया एखन गाम अबितथि?'

- 'तखन की प्रवास मे रहयवाला सभ केओ गामक लेल पाहुने छथि?' हम पुछलियनि।

- 'सभ नहि। मुदा जे लोकनि गाम सँ संपर्क कम रखैत छथि तिनका तऽ पाहुने बुझू।'

- 'संपर्क रखनाइ आ नहि रखनाइ, इ तऽ निर्भर करैत छैक जे व्यक्ति कतऽ रहैत अछि आ कोना रहैत अछि। जौं दड़िभंगा आ समस्तीपुर मे रहयवाला गाम सँ संपर्क नहि रखैत छथि तऽ अपने हुनका जे चाही से कहि सकैत छी। मुदा जे लोकनि हजार-हजार किलोमीटर दूर रहैत छथि, तिनका सँ अपने इ अपेक्षा नहि राखि सकैत छी जे ओ दू-दू महीना पर गाम आओताह आ अपने सँ संपर्क रखताह।'

- 'तऽ हमरो सुनि लियऽ। गाम सँ सरोकार नहि रखनाहर कें गामक लोक सभ सँ कुनू अपेक्षा नहि राखक चाही।' मुन्ना कका आवेश मे अबैत बजलाह।

- 'आवेश मे नहि आऊ मुन्ना कका। लोकक विवशता पर सेहो कनिक ध्यान दियौक। आखिर लोक परदेश कियैक जाइत अछि। लोकक मोन मे तऽ इ इच्छा नहि रहैत छैक जे परदेश जायब आ खूब ऐश-मौज करब। गामक संपन्नताक वास्ते ओ परदेश धरइत अछि।'

- 'हे अपने आब परदेशिया सभक पक्ष नहि लियऊ। अपने सेहो परदेशिया छी आ लोक सभ अपनेक बातक बिसवास नहि करत।'

- 'मुन्ना कका हम परदेशिया सभक पक्ष नहि लैत छी। मुदा परदेशिया सभक पक्ष नहि छैक से बात तऽ नहि छैक नइ। अपने कनेक ठंडा दिमाग सँ चिंतन करयौक तऽ बात पकड़ि मे आओत। लोक कोनो आकर्षण सँ आबद्ध भऽ कऽ परदेश नहि जाइत अछि। परदेश जयबाक मुख्य उद्देश्य जीविका होइत छैक। जौं जीविका गामे पर भेटि जाइक तऽ केओ परदेश कियैक जायत। मुदा हमर सभक दुर्भाग्य अछि जे गाम पर जीविका हमर सभक सात पुस्त ऊपरवाला कें नसीब नहि भेलैक। एखन धरि लोक सभ जीविकाक वास्ते भटकति अछि। परदेश रहितो लोक गामक चिंता मे निमग्न रहैत अछि। गामक खबरि सुनक लेल व्याकुल रहैत अछि। जकरा जेहन सुविधा होइत छैक ओ ओही प्रकारे गाम सँ संपर्क राखति अछि।

परदेश मे रहयवाला गामक संपन्नताक एक पैघ माध्यम सेहो छथि। पोस्ट आफिस सँ खबरि करियौक गाम मे कतेक मनिआर्डर अबैत अछि। आब तऽ परदेश सँ पाइ पठयबाक लेल आरो कतेक माध्यम बनि गेल छैक।'

हमर भाषण सुनि मुन्ना कका संभवतः अगुता गेल छलाह। कहलनि – 'छोड़ू अपन गप्प। घाट आबि गेल। वैह देखियऊ पोखरिक महाड़ पर खरक घऽर।'

मुन्ना कका देसिया-परदेशियाक विवाद के आब आओर बेसी घींचऽ नहि चाहैत छलाह। हमहुं नहि चाहैत छलहुं, मुदा बाबूजीक संबंध मे हुनक टिप्पणी हमरा नीक नहि लागल छल। बाबूजी कें शहर धरय पड़लनि। इ हुनकर पैघ विवशता रहनि। गाम पर केओ कमायवाला नहि रहनि आ गाम पर कुनू तरहक आमदनी सेहो नहि। इ शहर, ओ शहर करैत, कमाइत बोकारो पहुंचल छलाह। ओहिठाम नीक नौकरी लागि गेलैन तऽ ओहिठाम रहि गेलाह। गामक सभ बेगरता कें समय-समय पर निर्वाह करैत आब नौकरी सँ अवकाश लेलनि। एहि सँ पहिने सभ काज-तिहार मे गाम आबि कऽ काज संभारित रहलाह अछि। अपन दुनू बेटीक विवाह गामे सँ कैलनि अछि।

गामक प्रति बाबूजीक स्नेह अटूट छनि। तैं मुन्ना ककाक बात हमरा नीक नहि लागल। यद्यपि मुन्ना कका एहि विषय कें आब विश्राम देबाक पक्ष मे छलाह, मुदा हम एकरा एकटा परिणति धरि लऽ जाइत चाहति छलहुं। मुन्ना कका आब आत्म समर्पणक मुद्रा मे छलाह, परंच हम हुनका सँ हरदि-चून कहबेबा लेल चाहति छलहुं। हम कहलियनि – 'मुन्ना कका गामक प्रति बाबूजीक स्नेह अपने कें बुझल नहि अछि। गामक संबंध मे जतेक बेर हुनका सँ चर्चा भेल हुनक उत्साह मे कखनो एको रत्ती कमी नहि छलैन। एहिठामक खेत-खरिहान, गाछीक संबंध मे हमरा की पता। मुदा अपने हमरा सँ पूछि लियऽ जे हिनक खेत कतय-कतय आ कतेक-कतेक कट्ठाक छैन, हम कहि देब। कोन गाछक की नाम छैक हम सेहो अपने कें कहि देब। घऽरक आगां खलिया जगह मे जे गलीचा वाला घास रहैक आ धिया-पुता सभ ओहि पर ओंघड़ा-ओंघड़ा कऽ खेलैत छल, सेहो हमरा ज्ञात अछि। जौं बाबूजी कें गाम सँ स्नेह नहि रहितनि तऽ इ सभ हमरा कोना ज्ञात होइतऽ।'

– 'छोड़ू-छोड़ू। आब इ प्रकरण छोड़ू। हमरा सँ गलती भेल। भैया पाहुन नहि छथि।' मुन्ना कका अपन बात सँ सोझे खहरति बजलाह। ओ आब दुनू हाथ ऊपर कऽ देने छलाह। हम सभ घाट पर आबि गेल छलहुं आ हमर ध्येय सेहो पूरा भऽ गेल छल। तैं हमहुं एहि प्रकरण कें विश्राम देलहुं।

घाट पर बीस-पच्चीस गोटे उपस्थित छलाह। अधिकांश हमरा चिन्हैत छलाह। जे नहि चिन्हैत छलाह तिनका दोसर सँ कनफुसकी करैत देखलहुं। अनुमान लागल जे ओ हमरे विषय मे पूछताछ कऽ रहल छथि।

घाट पर पहुंचैत देरी कयेक गोटा अपन-अपन आसन सँ उठि गेलाह। ओहि मे किछु

नवयुवक रहथि। बेसी गोटे उम्रदराज। हमरा संकोचो भेल। सभ तरफ सँ आग्रह आबय लागल, 'आऊ-आऊ।' ppp

ÑÑº••ðêÑÑ

रवि दिन। आफिस मे छुट्टी छलैक। तिवारीजीक इच्छा भेलैन जे ब्रह्मपुत्र के बीच मे स्थित उमानंद मंदिर जाइ। हमर इच्छा छल मणिपुरी बस्तीक दर्शन करी आ गौंवां सभसँ परिचय करी। तिवारीजी के कहलियनि जे हम मणिपुरी बस्ती घूमय चाहैत छी। तैं आइ उमानंद नहि जा सकब। तिवारीजीक तर्क रहैन जे हम दुनू गोटे संगे रहैत छी। आफिस संगे जाइत छी आ भोजन सेहो संगे करैत छी। आइ छुट्टी छैक तऽ असगरे कियैक रहब। हुनको कहब उचिते छलैन। हम हुनके पर छोड़ि देलियनि। तिवारीजी बीचक रास्ता निकाललनि। कहलनि जे पहिने

उमानंद चलू। ओहिठाम सँ लौटलापरांत अहां मणिपुरी बस्ती चलि जायब आ हम अपन चाचाजी सँ भेंट करक लेल गीतानगर चलि जायब। बेश।

सिटी बस सँ दुनू गोटे शुक्रेश्वर मंदिर घाट पहुंचलहुं। घाट पर भीड़-भाड़ नहि छलैक। एकटा नाव वाला सँ पुछलियैक-'उमानंद ले जायेगा।'

नाव वाला हां अथवा नहि मे जवाब नहि दऽ कऽ सोझे कहलक-'दस रुपया लगेगा।' तिवारीजी संकेत कयलनि आ हम दुनू गोटे नाव मे बैसि रहलहुं।

ब्रह्मपुत्र नद छैक। पुरुष। विश्व मे दुइयेटा नद छैक। एकटा भारत मे आ एकटा विदेश मे। एकर एकटा नाम लोहित सेहो छैक। ब्रह्मपुत्रक चर्चा पुराण मे विस्तार सँ कयल गेल अछि। ब्रह्माक पुत्र भेलाक कारणे हिनक नाम ब्रह्मपुत्र पड़लनि। कहल छैक जे भगवान परशुराम क्षत्रिय सभक वध कयलाक उपरांत अपन फरसा ब्रह्मपुत्र मे धोलनि। तैं एकर पानि ललाओन लगैत छैक। आ पानिक कोनो महत्ता नहि छैक। मात्र अशोकाष्टमीक दिन लोक ब्रह्मपुत्र मे स्नान करैत छथि। अशोकाष्टमी दिन भगवान श्रीकृष्ण ब्रह्मपुत्र तट पर आयल रहथि आ हुनक घोड़ा अहिठाम विश्राम कयलक। ओहि स्थानक नाम अश्वक्लांता छैक। नद कियैक छैक? वस्तुतः एकर स्वभावक कारणे एकरा पुरुषवाचक नाम भेटल छैक। ऊपर सँ शांत स्निग्ध ब्रह्मपुत्रक धार भीतर सँ छैक। नदी कें देखि कऽ बूझि सकैत छी जे पानि बहि रहल अछि। ब्रह्मपुत्र कें देखला सँ बुझायत जेना पानि ठहरल अछि। नदी उत्थर होइत छैक, मुदा ब्रह्मपुत्र गहीर छैक। एतेक गहीर जकर थाह पौनाइ कठिन।

मानसरोवर के दक्षिण पूर्व मे स्थित चेमायुंग डांग ग्लेशियर एकर स्त्रोत छैक। एहि ग्लेशियर सँ निकलल धाराक नाम तामचुक खंबाब छैक। इयैह पातर धारा आगां चलि कऽ महाबाहु ब्रह्मपुत्र बनि जाइत छैक। चेमायुंग डांग ग्लेशियर सँ बांग्लादेश मे पदमा नदी धरि 2 हजार 7 सौ 3 किलोमीटरक यात्रा पथ मे सँ 1250 किलोमीटर तिब्बत घाटी मे छैक। तिब्बत मे एकरा छांग्पू सेहो कहल जाइत छैक। तिब्बत सँ निकलि दक्षिणमुखी भऽ अरुणाचल प्रदेशक सियांग जिला मे प्रवेश करिते एकर नाम सियांग भऽ जाइत छैक। पहाड़ी क्षेत्र सँ निकलि मैदानी क्षेत्र मे अबिते एकर रूप गंभीर भऽ जाइत छैक आ दिहांग, दिबांग व लुइत नदी एकरा मे विलीन भऽ जाइत छैक। आसामक दक्षिण छोर धुबड़ी कें पार करैत ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश मे प्रवेश करैत अछि आ पदमा नदी सँ एकाकार भऽ जाइत अछि।

ब्रह्मपुत्र अपना मे अनेक रहस्य नुकौने अछि। आ एही मे कार्तिक कका केर बहिन, भागिन आ नहि जानि कतेको लोक कें सलिल समाधि प्राप्त भेलनि।

आफिस मे किछु विशेष कार्यवश बेसि राति धरि रहय पड़ल। डेरा अबिते ओछाओन पकड़ि नेने रही। भोर भऽ गेल रहैक, मुदा तंद्रा भंग नहि भऽ रहल छल। फोनक घंटी घनघनायल तऽ इच्छा नहि रहितहुं उठय पड़ल। रिसीवर उठौलहुं तऽ ओम्हर सँ केओ मैथिली मे हमर नाम पूछि रहल छलाह। अपन नाम कहिते ओम्हर सँ जे परिचय भेटल तऽ बुझलहुं

कार्तिक कका छथि।

-'कतऽ सँ बाजि रहल छी?'

-'गुवाहाटीये सँ।'

- कार्तिक कका गामे पर रहैत छथि। खेती-गृहस्थी नीक छनि। लकड़ी चीरेयवाला मिल सेहो रखने छथि। नीक कमाई छथि। अचानक गुवाहाटी कियैक अयलाह?

- 'कहिया अयलहुं?' हम पुछलियनि।

- 'से सभ कहब। अहां सँ कखन भेंट होयत।' ककाक आवाज थरथराय लागल छलैन। बुझायल जेना कानि रहल छथि।

-'की भेल कका? अहां एखने डेरा पर चलि आऊ।' इ कहैत हम हुनका अपन डेराक पता बताबय लगलहुं। इ कहलियनि जे जौं डेरा नहि भेटय तऽ कतहुं सँ अहां फोन करब तऽ हम आबि कऽ लऽ जायब।

- 'हम डेरा ताकि लेब।' इ कहैत कका फोन राखि देलनि।

रिसीवर राखति जेना बुझायल माथ भारी भऽ गेल अछि। कार्तिक कका कियैक कनैत छलाह-एहिठाम कियैक अयलाह। इ सभ प्रश्न माथ मे घूमि रहल छल। जल्दी-जल्दी नित्यकर्म सँ निवृत्ति भेलहुं आ कार्तिक ककाक प्रतीक्षा करय लगलहुं।

मुश्किल सँ आधा घंटा बीतल होयत कि 'कॉल बेल' बाजल? केवाड़ खोललहुं तऽ कार्तिक कका दू गोटे सँ ठाढ़ छलाह।

- 'इ हमर साढ़ू छथि। एहिठाम एकटा चाह कंपनी मे काज कऽ रहल छथि।' कका अपन संगी सँ परिचय करौलनि। दुनू गोटा कें भीतर आनि बैसौलहुं आ पुछलियनि।

- 'की बात छैक?'

-'हौ की कहियो, विपत्तिक पहाड़ माथ पर खसि पड़ल अछि। बहिन, भागिन ब्रह्मपुत्र मे डूबि गेल। कोनो अता-पता नहि छैक।' कका फफकि-फफकि कऽ कानय लगलाह। बुझायल जेना अकस्माते बुधि हेरा गेल। शरीर-दिमाग जड़ भऽ गेल।

- 'केना भेलैक?'

-'की कहू। हमरा तऽ काल्हि भोर मे साढ़ू फोन पर सूचना देलनि।' आब ओ आरो बाजक स्थिति मे नहि छलाह। हुनक साढ़ू कहय लगलाह—

-'छठिक भोरुका अर्घ्य दिन अनरोखे झाजी बच्चा सभ कें घाट पर लऽ गेल छलथिन। ओहिठाम कएकटा नाव छलैक जे लोक सभ कें ब्रह्मपुत्र मे घुमाबति छलैक। झाजी सँ बच्चा सभ कें लऽ कऽ ओहि पर चढ़ि गेलाह। घूमि फीरि कऽ नाव कछेर पर लगतैक की एकटा दोसर नाव पांडू दिस सँ अयलैक आ ठोकर मारति एहि नाव पर चढ़ि गेलैक। झाजी एकटा

भगिनी कें लऽ कऽ ठोकर मारय वाला नाव पर चढ़ि गेलथिन मुदा बहिन आ भागिन ओही नावक संगहि डूबि गेलैक।'

–'ओह.... बड़का कांड भऽ गेल।' हमरा मुंह सँ निकलल। इ नाव दुर्घटनाक विषय मे हमरा पता छल। अखबार मे विस्तार सँ छपल छलैक। काल्हि हमहुं दुर्घटनास्थल पर गेल छलहुं आ मिलिट्री गोताखोर सभ कें डूबल नाव आ लोक सभ कें खोजति देखने छलहुं। अही काज मे काल्हि हम भरि दिन मिलिट्री वाला जहाज पर छलहुं। भोजन–जलपान सेहो ओकरे सभक संगे कयने छलहुं। मुदा इ नहि ज्ञात छल जे इ दुर्घटना हमरो लेल कतेक दुर्भाग्यपूर्ण अछि।

–'आब की करबैक!'

–'जौं बहिन आ भागिन कें किछु पता लागि जाय। तकरे आशा मे छी। मिलिट्री सभ लागल छैक। हमरा कियो लऽग नहि जाय दैत अछि। तों तऽ पत्रकार छह। अपने संगे लऽ जइतहुं तऽ देखियो कऽ तऽ कनेक संतोष करितहुं।'

–'बेस, हम अपने कें लऽ जायब। एही ठाम तैयार भऽ जाऊ।' ppp

ÑÑÕæèSuãÑÑ

उमानंद मंदिर गुवाहाटी कें छूबि कऽ बहैत ब्रह्मपुत्रक बीच मे स्थित द्वीप पर उपस्थित छैक। तट पर स्थित नीलाचल पर्वत पर भगवती कामाख्याक मंदिर छन्हि। उमानंद आ कामाख्या मंदिरक महत्ता वर्णनातीत थिक। दुनूक बीच शाश्वत संबंधक थाह पौनाई सेहो असंभव अछि। उमानंद मंदिरक द्वीप विश्वक लघुतम द्वीप छैक। ब्रह्मपुत्र मे विश्वक सभ सँ पैघ द्वीप सेहो छैक–माजुली। हम आ तिवारीजी उमानंद जा रहल छलहुं। छोटकी नाव गंभीर ब्रह्मपुत्र पर छताइत जा रहल छल। बीच मे जाइते नाव घूमय लगलैक। हम सभ डेरा जकां

गेलहुं। मलहा कहलक–'डेराउ नहि। इ छोट भंवर छैक। पार भऽ जायब।'

ओकर कहब छलैक आ एम्हर नाव स्थिर भऽ गेल। बुझायल जेना जान बांचि गेल। पोखरि मे हेलबक अभ्यास अछि, मुदा इ अथाह पानि कें देखितें झुरझुरी होमय लगैत छल।

मलाह सँ पुछलियैक–'कतेक गहीर हेतैक?'

–'मालिक एकर थाह के पाओत। एहि मे तऽ दसमंजिला मकान तेना गुम भऽ जयतैक, जे ओकर कोनो चिन्हो भेटब मुश्किल।'

मलाह ठीके कहैत छल। डूबल नावक खोज मे तीन दिन सँ लागल सैकड़ों लोक के एखन धरि नावक कोनो पता धरि नहि चललय। कार्तिक कका आ हुनकर साढ़ू के लऽ कऽ हम मिलिटरी वाला जहाज पर सँ डूबल नाव कें खोजक प्रयास देखि रहल छलहुं। मिलिटरीक गोताखोर सभ पीठ पर आक्सीजन लदने पानि मे जाइत–अबैत छल। ऊपर अबै तऽ लोक सभक जिज्ञासु आंखि ओकरे पर गड़ि जाइत छलैक आ जखने ओ निराशा मे मूड़ी डोला दैत छलैक तऽ लोक सभ निराशा मे डूबि जाइत छलाह।

मिलिटरीक एहि अभियानक नेतृत्व युवा कप्तान कऽ रहल छलाह। हुनका एहन कयेकटा अभियानक अनुभव छलैन। तैं ओ हमर कनहा पकड़ि सगर्व कहलाह–'डोंट वरी। नाव मिल जायेगा।'

हम पुछलियनि–'क्या आपने इससे पूर्व ब्रह्मपुत्र मे ऐसे किसी अभियान का नेतृत्व किया है।'

–'नहीं।' कप्तानक उत्तर छलनि।

कप्तानक उत्तर सँ हमरा निराशा भेल। इ युवक यद्यपि पूर्ण उत्साह सँ अभियान मे लागल अछि, मुदा हिनका ब्रह्मपुत्रक स्वभाव व स्थितिक अनुभव नहि छन्हि। किताबक ज्ञान सौ फीसदी सफलताक गारंटी नहि छैक। तथापि जौं ओ अभियान चलाकऽ नहि थाकि रहल छथि, तऽ हम सभ देखि कऽ कियैक थाकी।

सांझ होमय लागल छलैक। सूर्य अस्ताचल दिस जा रहल छलाह। डूबैत सूर्य कें देखि लोक सभक आशा सेहो डूबय लगलैक। आइ फेर कनिको सफलता नहि भेटल। विस्तृत ब्रह्मपुत्रक पश्चिम मे सूर्यक अस्त भेनाइ एकटा अद्‌भुत दृश्य उपस्थित कऽ रहल छल। बुझाइत छलैक जेना सूर्य ब्रह्मपुत्रक पानि मे पैसि रहल अछि। ओकर दिव्य छटा ब्रह्मपुत्रक छाती पर पसरल कोनो विस्तृत लाल मैदानक आभास करा रहल छल। दोसर समय रहति तऽ ब्रह्मपुत्रक एहि सौंदर्य पर मुग्ध होइतहुं, मुदा एखन एहि अभूतपूर्व आ मनोहारी सौंदर्य सँ मात्र करुण रस बहि रहल छल। पीसी आ हुनक बेटाक कोनो पता नही चललैक। कार्तिक कका निराश भऽ गेल छलाह।

ओम्हर ब्रह्मपुत्र तट पर लोक सभक करमान टूटिये नहि रहल छलैक। पुलिस आ

सीआरपीएफक जवान के लेल भीड़ संभारनाई मुश्किल भऽ रहल छलन्हि। शुक्रेश्वर सँ भूतनाथ धरि सौंसे तट कें मोटका रस्सा सँ घेर देल गेल छलैक। ककरो पानि दिस अइनाइ मनाही छलैक। तहियो लोक सभ दूरे सँ 'बचाव अभियान' जे आब 'उद्धार अभियान' भऽ गेल छलैक, तकर एक झलक देखक लेल टूटि रहल छलैक।

कप्तान साहब गोताखोर सभकें आजुक लेल अंतिम बेर पानि मे पैसक आदेश देलथिन। एक बेर फेर आशा सँ लोक सभक आंखि पानि दिस गड़ि गेल। कार्तिक ककाक मुंह सँ निकललनि-'हे भगवान बौआक मुंह कनिक देखा दियअ।'

जहाज पर कोलाहल थमि गेल छलैक। कप्तान साहब आ हुनकर संगी अधिकारी सभ सेहो पानिये दिस ताकि रहल छलाह। कतहुं सँ बुलबुला निकललैक तऽ सभक नजरि ओम्हरे गड़ि जाइत छलैक। प्राय: पच्चीस मिनट बाद एकटा गोताखोर ऊपर आयल। माथ सँ हेलमेट उतारलक तऽ ओकर मुखमंडल प्रत्याशा सँ दमकि रहल छलैक। ओ बाजल-'नाव मिल गया है।'

गोताखोर के इ कहिते सौंसे हरबिर्रो मचि गेलैक। लोक सभ मे हर्ष लहरि जकां दौड़ि गेलैक। कार्तिक कका मोने-मोने भगवान के धन्यवाद देबय लगलथिन्ह।

-'अब क्या होगा कप्तान साहब।' कप्तान साहब अपन संगी सभ सँ विचार-विमर्श कऽ रहल छलाह।

-'वही तो सोच रहा हूं।' कप्तान साहब उत्तर देलनि। एही बीच आन-आन गोताखोर सभ सेहो ऊपर आयल।

कप्तान साहब, गोताखोर आ अधिकारी सभ मंत्रणा कऽ रहल छलाह। किछु लोकक विचार छलनि जे एखने नाव कें रस्सा सँ बान्हि कऽ ऊपर आनबाक चाही। किछु गोटेक मंतव्य छलनि जे एखन नाव कें बान्हब आ ऊपर आनब दुष्कर कार्य छैक तैं आब काल्हि इ प्रयास करबाक चाही। ओही मे इहो कहनिहार छलैक जे काल्हि धरि नाव मे बालू-माटि भरि जेतैक तऽ ओकरा ऊपर अननाई कठिन भऽ जेतैक। तैं अखने इ प्रयास करबाक चाही।

एही घमर्थन मे बात गोताखोर सभ पर ऐलैक। ओकरे सभक निर्णय के मानबाक सुझाव ऐलैक। एकटा गोताखोर बाजल, जे एखन नाव कें पतरका रस्सा मे बान्हल बैलून सँ जोड़ि देल गेल छैक। बैलून पानि पर छताइत रहतई तऽ नाव बुझू हाथ मे अछि। ओना एखन नाव के मोटका रस्सा सँ बान्हि कऽ ऊपर खिंचनाई संभव नहि छैक। काल्हि भिनसरे प्रयास करबाक चाही।

गोताखोरक बात कें अंतिम मानल गेल। जहाज परक लोक सभ अपन-अपन समान समटय लगलाह। कप्तान साहब कहलनि-'कल आइये।'

ओह सफलता एक हाथ लग मे आबि कऽ भरि राति दूर भऽ गेल। कार्तिक कका के बुझाबय लगलहुं। जौं तीन दिन तऽ एक दिन आरो प्रतीक्षा करु। अपन हाथक बात नहि अछि।

हमहुं सभ लौटय लगलहुं। हमरा आफिस जयबाक छल। ओम्हर बाटक कात मे लोक सभक करमान लागल छलैक। लोक सभ टस सँ मस नहि होइत छलैक।

कार्तिक कका अपन साढ़ूक संगे चलि गेलाह। हम आफिस विदा भेलहुं।

एकटा समय छलैक जखन छठि पूजा एकटा प्रांत विशेषक लोक सभक धार्मिक अनुष्ठान छलैक। आब से नहि रहलैक। छठि पूजा मात्र एकटा धार्मिक अनुष्ठाने टा नहि रहि गेल। अपन सामाजिक विशिष्टताक कारणे एकर स्वरूप सर्वभारतीय भऽ गेल अछि। विभिन्न भाषा-भाषी लोक सभ सेहो एहि अनुष्ठान सँ जुड़ि रहल अछि। गुवाहाटी मे आब छठि पूजा मे घाट पर जगह भेटनाई कठिन। किछु गोटे पूजाक उद्देश्य सँ अबैत छथि तऽ किछु गोटे धार्मिक आस्थाक कारणे तऽ किछु गोटे सिर्फ घूमक वास्ते सेहो अबैत छथि। छठि केर माध्यम सँ विभिन्न भाषा-भाषी, वर्ग व समुदायक लोक सभ आपस मे एक समूह बनि रहल छथि। इ समूह संपूर्ण भारतीयताक दर्शन करबति अछि।

मुदा छठिक सर्व भारतीय स्वरूप सँ स्थानीय प्रशासन कें कोनो मतलब नहि देखलहुं। हजारों लोकक उपस्थिति मे संपन्न होमयवाला एहि सामाजिक उत्सव केर संदर्भ मे स्थानीय प्रशासनक उदासीनताक ज्वलंत उदाहरण थिक इ नाव दुर्घटना। जौं प्रशासन 'छठि पूजा' कें देखति नाव सभक यातायात कें नियंत्रित कयने रहितथि तऽ इ दुर्घटना कें टालल जा सकैत छलैक। मात्र इयैह टा नहि। दुर्घटनाक पश्चात सेहो प्रशासनक भूमिका संतोषजनक नहि छलैक। अखबार लिखलक-'अगर जिला प्रशासन ने समय पर उचित संसाधन के साथ बचाव कार्य शुरू किया होता तो डूबे नाव और उसमें मृत लोगों के शव निकाले जा सकते थे। मुख्यमंत्री के शहर में नहीं होने के कारण प्रशासन ने इस दुर्घटना को महत्व ही नहीं दिया।'

आखिर प्रशासनक एहि निर्लिप्तताक की अर्थ छैक? किछु वर्ष पूर्व पटना मे छठि पूजाक समय भेल नाव दुर्घटनाक लेल सौंसे बिहार आंदोलित भऽ गेल छलैक। एहिठामक प्रशासन एकरा महत्व कियैक नहि देलथि? जिला प्रशासनक इ घोर सम्प्रदायवादी सोच सँ मोन मे विषाद जेना भरऽ लागल। स्कूटर स्टार्ट कयलहुं आ आफिस विदा भेलहुं। ppp

ÑÑlÕ&ÜãÑÑ

घाट पर पूजन सामग्री कर्मकांडक अनुसारे पसरल छलैक। इ घाट हमर गाम जकां नहि छैक। बाबूक कर्म गाम पर भेल रहनि। गामक कात मे वास सँ दूर पोखरिक महाड़ पर। जतय प्राथमिक विद्यालयक टूटल-फूटल एकटा कमरा आ उत्तरवरिया महाड़ पर किछु मकान। निर्जन वातावरण मे श्राद्धकर्म जेना भेयोन लगैत छलैक। एहिठाम से सभ नहि छैक। पोखरिक चारु कात वास छैक। उत्तर-पूबक कोन पर श्राद्धकर्म भऽ रहल छलैक। कयेकटा आमक गाछक बीच मे खरक घऽर मे छोटका कका (पाचक) बैसि कऽ चुल्हा सुनगा रहल

छलाह। कर्मक समान सभ क्रम सँ एहि कात सँ ओहि कात धरि लागल छलैक। सभ कूरी पर अलग-अलग पूजा हेतैक। एम्हर आगंतुक सभक लेल दरी ओछाओल छलैक। किछु कुर्सी सभ सेहो छलैक। इ स्थान तीन टा मकानक आगां मे छैक। तैं तीनो टा गृहस्थ अपन-अपन दरवज्जा सँ कुर्सी-चौकी उतारि देने छलथिन आ आगंतुक सभक आदर-सत्कार, गप्प-सप्प मे लागल छलाह।

हमरा देखिते ओहिठाम जुमल लोक सभ ठाढ़ भऽ गेलाह। आऊ-आऊ होमय लागल। हमरा चकविद्दर लागि गेल। कतय बैसू। कोन समूह मे बैसने नीक होयत। कुर्सी सभ बुजुर्ग लोकनि हथियौने छलाह। किनको हथियाओल कुर्सी पर बैसक तऽ प्रश्ने नहि उठैत छल। तैं दरी पर बैसलहुं। दरी पर हमरे उम्र के युवक सभ बैसल छलाह। हमरा दरी पर बैसिते लोक सभ सेहो बैसलाह। अधिकांश लोक हमरा चीन्हैत छलाह। जे नहि चीन्हैत छलाह से अगल-बगलवाला सँ फुसफुसा कऽ परिचय लेलनि।

– 'हे यौ....। पाहुन के पान दिऔन।' एकटा बुजुर्ग आग्रह देखौलनि।

– 'पहिने चाह पीता... तखन नहि पान देबनि।' एक गोटे दरी पर सँ चिक्करि कऽ बजलाह।

– 'नहि...नहि। हम चाह नहि पीयब। एखने पीने छलहुं।' हम कहलियनि, मुदा हमर स्वर ओइ आग्रह मे दबि गेल। मंत्र पढ़ैत बाबूजी घूमि कऽ हमरा दिस तकलनि। हुनको आंखि मे आग्रह रहैन। घाट पर चाह-पानक नीक व्यवस्था छलैक। कयेकटा नवयुवक एहि व्यवस्थाक जिम्मेवारी संभारि रहल छलाह। घऽर सँ चाह आनक दिक्कतक कारणे घाटे पर स्टोव जराओल गेल छलैक। चाहक पानि अनवरत खौलि रहल छल। एक गोटे कप-गिलासक व्यवस्था मे लीन छलाह। दोसर गोटे ट्रे लऽ कऽ चाह बांटि रहल छलाह। एक तौला पान सभ दिस घूमि रहल छल। ओम्हर पात्र सभ कर्म कराबय मे व्यस्त छलाह। आम सँ लदल गाछक ठाढ़ि कड़कड़ायल गर्मी मे शीतलता प्रदान कऽ रहल छल। अद्भुत दृश्य छलैक।

गाम पर नहि रहलाक कारणे एहन अवसर सभक औपचारिकताक संबंध मे हमर ज्ञान सुनले धरि छल। सुनल छल जे मिथिलांचल मे विध-व्यवहार दुनियानक आन कोनो सभ्यता सँ बेसी स्पष्ट आ व्यावहारिक छैक। विध-व्यवहार ततेक छैक कि सभ केर मोन रखनाई कठिन। जन्म सँ लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त विध-व्यवहारक अंत नहि छैक आ सभ सँ समूचा समाज जुड़ल छैक। कोनो एहन काज नहि छैक जाहि मे समाजक सभ वर्गक सहभागिता नहि छैक। कनियाक दाईक श्राद्ध वास्तव मे सामाजिक सहभागिताक एकटा अद्भुत अनुष्ठान छैक। घाट पर विद्वान पात्र छथि। पैघ आसान जमौने। खाली देह। एकटा जांघ पर पोथी छन्हि, मुदा पोथी दिस एको बेर ताकक आवश्यकता नहि छन्हि। सभटा पोथी कंठस्थ छन्हि। इहो मोन छन्हि जे कखन पन्ना पलटक छन्हि। तैं किछु अंतराल पर पन्ना पलटति जरूर देखलहुं। बाबूजीक विशेषता छन्हि जे ओ मंत्र पढ़ऽकाल मे विशेष सतर्क रहति छथि। अशुद्ध उच्चारण नहि

होयबाक चाही। तैं जे सुनय मे नहि अबैत छलैन तकरा पात्र सँ दोहरा लैत छलाह। बनारस रहल छथि। संस्कृत पढ़ल छलैन। तैं मंत्र पढ़ब मे दिक्कति नहि होइत छलैन।

– 'हौऊ कुटुम चाह पीबू। पान तैयार अछि।' एकटा युवक आग्रह कयलनि।

– 'हमरा नहि चीन्हैत हैब। हमर नाम अछि विकास। अपनेक जहिया विआह भेल छल तऽ हम छोटे छलहुं। दीदी हमरा बड्ड मानति छलीह।' ओ अपन परिचय देलनि।

– 'अच्छा। तऽ अहां हमर सार भेलहुं।' हम चट कहलियनि। तऽ ओ लजा गेलाह।

– 'विकास। पाहुन बहिनोई छथुन तऽ एहन साफ-चिक्कन परिचय कियैक दैत छहुन। दूटा गारि-आशीर्वाद सेहो देबहुन की नहि।' संभवत: इ दोसर सार छलाह। हिनकर बात पाछां मे बैसल एकटा बुजुर्ग सुनि गेलथिन। तमतमा कऽ कहलिथन-

– 'तों सभ समय-स्थानक ख्याल नहि करैत छह। एखन आ एहिठाम इ सभ नहि होयबाक चाही।'

नवयुवक सभ सकपका गेलाह। हमहुं आश्वस्त भेलहुं। गाम पर बहिनोई के सार सभ की दशा करैत छैक से हमरा बाबूजी सँ सुनल छल।

बाबूजी अपन सासुर मे छलाह। गीत-संगीत मे विशेष रुचि आ विनोदप्रियताक कारणे गामक सार सभ मे खूब लोकप्रिय छलाह। सासुर पहुंचति देरी सार सभ जे हुनका सँ लटकि जाइन तऽ पाछां छोड़ायब कठिन भऽ जाइत छलनि। ओहि बेर गाम मे कयेकटा विवाह भेल छलैक। नवका-नवका जमाय सभ सँ गाम गमगमायल छलैक। लाल धोती पहिरने, आंखि मे काजर कयने जमाय सभ जखन पोखरि दिस विदा होइत छलाह तऽ सार सभ आगां-पाछां रहैत छलैन्हि। सार जौं खुरलुच्ची नहि होयअ तऽ आनंद कतऽ सँ औतैक। एकटा वर कनेक पिनपिनाह छलाह, सार सभ सँ नहि पटैत छलैन्हि। मजाक-तजाक जेना बुझिते नहि छलथिन। हुनका सारो सभ तेहन भेटल छलैन्हि जे पिंड नहि छोड़यवाला। ओझाजी जतेक पिनपिनाथि सार सभ ततेक सटल जानि।

एक सांझ ओझाजी पोखरि दिस विदा भेलाह। सार सभ संगे रहनि। एकटा सार हाथ मे लोटा लेने छलथिन। सूर्य अस्त भऽ गेल छलाह, मुदा कनेक-कनेक इजोत पसरल छलैक। गामक दक्षिण नहरि पर पहुंचि ओझाजी कें हाथ मे लोटा थम्हा देल गेल आ सार सभ ओट भऽ गेलाह। ओझाजी पोखरि सँ आरो दक्षिण कलमक बीच मे बैसि रहलाह। सार सभ पोखरिक महाड़ पर ओझाजीक प्रतीक्षा मे छलाह। आब आओताह-ताब आओताह। अन्हार भऽ गेलैक मुदा ओझाजी नहि लौटलाह। यद्यपि सार सभ अहि विलंबक कारण सँ भिज्ञ छलाह, तथापि कृत्रिम चिंता व्यक्त कऽ रहल छलाह। अत्यधिक विलंब भेला सँ घऽर पर सेहो चिंता हेतैक। महुअक समय सेहो बीतल जा रहल छलैक। आब तऽ दुर्बाक्षतक समय होमय जा रहल छलैक। सार सभ चिंतित होमय लगलाह। ओही मे सँ दू गोटे आगां बढ़लाह-आ आवाज देलथिन-'ओझाजी....ओझाजी।'

ओम्हर सँ गारिक अन्हड़ छूटल। ओझाजी सार सभकें गरियबति बजलाह-'पहिने एक लोटा पानि लाऊ।'

इ कहि ओझाजी लोटा जुमा कऽ फेंकलनि।

'धम्म...।' लोटा खसल। एकटा सार लोटा उठौलनि आ पोखरि सँ पानि भरि आगां बढ़ि कऽ राखि देलथिन। ओझाजी गाछक ओट सँ निकलि झपटि कऽ लोटा लेलनि आ शौच मे व्यस्त भऽ गेलाह। अही संगे बड़बड़ाय से लगलाह-'चलऽ सार सभ। तोरा सभकें हम बुझबति छियौक। एखने हम गाम लौटि जायब। तखन हिनका सभकें पता लगतनि।' वरक पित्त मुंह सँ आगि बनि निकलि रहल छलनि आ एम्हर सार सभ हंसैत-हंसैत ओंघड़ाय लागल छल। इ कथा कहैत-कहैत बाबूजी सेहो हंसैत-हंसैत बेहाल भेल रहथि, आ हम सभ एकर रहस्य जनबाक उत्सुकता मे आंखि मिलमिलबति बाबूजीकें देखि रहल छलहुं। बाबूजी रहस्य पर सँ परदा हटौलनि-

-'सार सभ ओहि दिन पिनपिनहा ओझाजी कें सिखैबाक नियार कयने छल। ओझाजी के लऽ कऽ जखन घऽर सँ पोखरि दिस चललाह तऽ लोटा मे पानि रहैक। बाट मे पानि के हरा कऽ ओहि मे बाउल भरि देल गेलैक। लोटा कें नीक जकां पोछि-पाछि कऽ पोखरि पर ओझाजी कें पकड़ा देल गेलैक। मैदानक वेगक धड़फड़ मे ओझाजी लोटा लऽ झटकारति कलम मे जा कऽ बैसि रहलाह। तखन धरि ओ इ भेद नहि जनैत छलाह। जखन शौचक लेल लोटा उठौलनि तऽ शंका भेलनि। लोटा कें टेढ़ करिते बाउल भभकय लगलैक। आब की हैत। ओझाजी मूड़ी गोंतने बैसल रहलाह।' ppp

ÑÑaeÒeaÑÑ

मलहा जौं नाव के कसि कऽ नहि पकड़ने रहितय तऽ तिवारीजी ब्रह्मपुत्र मे खसि पड़ितथि। उमानंद घाट लग नाव लगा कऽ, मलहा नाव कें खींचि कऽ व्यवस्थित करिते छल कि तिवारीजी धम्म सँ कूदि गेलाह। कुदला सँ नाव पानि पर छिटकि गेलैक आ तिवारीजी कनिक सँ बांचि गेलाह। हुनका घाट पकड़ा गेलनि। नाव के डोलला सँ हम हड़बड़ाय लगलहुं। हमरा भेल आब नाव उनटि जेतैक। मलहा कहुना कऽ नाव कें सम्हारलक तऽ हम नाव सँ नीचां डेग धयलहुं।

मलहा के कहलियैक-'तों अही ठाम नाव राख। हम सभ दर्शन-पूजा कऽ अबैत छी।'

-'नहीं। यहां नाव नहीं रख सकता। अभी बड़ी नाव आ जायेगी तो मुश्किल होगी। मैं नाव को थोड़ा आगे रखता हूं। आपलोग नीचे उतरेंगे तो मैं भी नाव लेकर आ जाऊंगा।' मलहा बाजल।

-'ठीक है।' तिवारीजी ओकर बात कें समर्थन कयलथिन आ हम दुनू गोटे उमानंद पहाड़ पर चढ़य लगलहुं। पहाड़ पर चढ़बाक लेल जे बाट छैक तकरा बनाओल नहि गेल छैक, अपितु लोक सभ के अबैत-जाइत मे इ अपने सँ बनि गेल छैक। कहुना हम सभ पएर जमबैत ऊपर पहुंचलहुं। एकदम सुनसान पहाड़ पर बानरक झुंड हमरा दुनू गोटा के देखिते प्रसन्न भऽ कऽ एकटा ठाहड़ि सँ दोसर ठाहड़ि पर कूदय लागल। ओकर सभक प्रसन्नताक कारण छलैक हमर हाथक झोरा मे राखल प्रसाद। एहि निर्जन पहाड़ पर एहि जीव सभ केर भोजनक समस्या कठिन हेतैक। तखने पंडाजी अयलाह। हुनका झोरा थम्हा देलहुं आ ओ हमरा दुनू गोटा के मंदिर मे लऽ गेलाह।

पुछलियनि - 'इ बानर सभ की खाइत छैक।'

-'भगवान जकरा एहि संसार मे पठबैत छथिन तकर सभक आहारक व्यवस्था सेहो करति छथिन। एहि पहाड़ पर बारहो मास फरयवाला गाछ सभ छैक। बानर सभ कें कोनो बेसी परिश्रमो नहि करय पड़ैत छैक। ओना एहिठाम दर्शन करऽ आबय वाला सभ अपना संगे बानरक लेल किछु नहि किछु जरूर आनैत छथि। अहां सभ ज्यौं नहि आनने छी तऽ प्रसाद मे सँ निकालि कऽ ओकरा सभ कें दऽ देबई। नहि तऽ ओ सभ अहांक हाथ सँ पोटरिये छीनि कऽ परा जायत।' पाछां घूमि कऽ देखलहुं तऽ तीन टा बानर हमरा सभ कें एकटक ताकि रहल छल। छोटका बानर किछु विशेष आह्लादित छल आ कूदि-फानि कऽ रहल छल।

पंडाजी सँ पुछलियनि - 'कनेक भगवान उमानंदक संबंध मे हमरा कहू।'

-'पूजा कऽ लियऽ तऽ कहैत छी।' इ कहि पंडाजी असमिया उच्चारण मे मंत्र पढ़य लगलाह। - **ओम अपवित्रो पवित्रो वा....।'**

भगवान उमानंद कें प्रणाम करैत काल पंडाजी मंत्र पढ़लनि—

धर्म कामार्थ मोक्षाय सर्वपापहराय च। नमस्तिशूल हस्ताय उमानंदाय वै नमः।

प्रसीद पार्वतीनाथ उमानंद नमःस्तुते॥

पंडाजी भगवान उमानंद के दर्शन करौलनि आ मंत्र पढ़लनि—

'देव देव महादेव शशांकांकिहशेखरे। तब दर्शन मात्रेण पुनर्जन्म न विधते।।'

पंडाजी कहलनि भगवान के स्पर्श करु आ मंत्र पढ़य मे लीन भऽ गेलाह—

'जन्मकोटि सहस्त्रानि कल्प कोटि शतानि च। उमेश-स्पर्शनात सद्यः पापं यातू क्षयं नम्॥

जन्मजन्मार्जितं पापं ज्ञानेनाज्ञानतः कृतम्। तन्मे हस्तू गौरीश स्पर्शानाद वृषभध्वज॥

शिवलिंग महापून्यं सर्वपापप्रनाशनम्। यः स्पृशेदपि पानिभ्यां न स पापेन लिप्यते॥'

स्पर्शक पश्चात पंडाजी कहलनि - 'आब अपने सभ मां भगवती कामाख्याक दर्शन करबाक हेतु भगवान उमानंद सँ आज्ञा लियऽ, हमरा आश्चर्य भेल। इ विधान नीक छैक। चलू तिवारीजी नीके भेल। आब कहियो कामाख्याधाम चलि चलब। आज्ञा आइये लऽ लियऽ, पढ़ाऊ यौ पंडाजी। आ पंडाजी मंत्र पढ़य लगलाह—

'उमानंद नमस्तेहस्त पार्वती-प्रीतिवर्द्धनम्।

निर्विघ्ना यातु मे सिद्धि र्युष्मत्पूजा कृता च मे॥

जगन्नाथ प्रसादेन श्रीमतकामेश्वरीं शिवाम्।

अर्चयाम्यदय देवेश आज्ञा परमेश्वर॥'

पूजा-आरतीक पश्चात पंडाजी प्रसाद देलनि। दुनू गोटे प्रसाद पौलहुं आ जल सँ आचमनि कयलाक पश्चात पंडाजी कहलनि - 'उमानंद मां कामाख्याक भैरव छथि। एहि विषय मे तंत्र चूड़ामणि मे उल्लेख अछि—

'योनिपीठं कामगिरौ कामाख्या तत्र देवता। यत्रास्ते त्रिगुणतीता रक्तपाषाणरुपिणी।

तत्रास्ते माधवः साक्षाहुमानन्दोहथ भैरवः। सर्वदा विहरेद्दपि तत्र मुक्तिर्न संशयः॥

तत्र श्री भैरवी देवी तत्र नक्षत्र देवता। प्रचंड चंडिका तत मातंगी त्रिपुरात्मिका॥

वगला कमला तत्र भुवनेश्वरी चधुमिनी। एतानि नव पीठानि शंसन्ति परभैरवाः॥

मोन बड्ड प्रफुल्लित छल। तिवारीजी सँ कहलियनि - 'चलू। आब हमरा मणिपुरी बस्ती जयबाक अछि।'

मंदिर सँ बहार होइते बानरक झुंड धमाक सँ सामने पड़ि गेल। झोरा मे सँ केरा आ अन्य प्रसाद निकालि कऽ छीटि देलियैक। एम्हर बानर सभ प्रसाद चुनब मे व्यस्त छल, हम सभ खरकि कऽ पहाड़ सँ निच्चा पहुंचि गेलहुं। नाव ओही ठाम लागल छल। ppp

ÑÑÂ'¿èâÑÑ

एम्हर पात्र जोर-जोर सँ मंत्रोच्चार कऽ रहल छलाह आ ओम्हर लोकसभ अपन-अपन गुट मे अपन-अपन रुचिक विषय पर चर्चा कऽ रहल छलाह। विषय उम्र अनुसारे बांटल छलैक। नवयुवक सभ सिनेमा सन हल्लुक विषय पर गप्प कऽ रहल छलाह। आठ-दस टा कुर्सी के गोलिया कऽ बैसल लोक सभक विषय छलनि राजनीति आ समाज। किछु गोटे मिथिलांचलक दुर्दशा पर चर्चा कऽ रहल छलाह।

रामगोपाल कका नौकरी सँ अवसर लेलाक पश्चात गामे पर रहति छथि। नीक खेती-कलम छन्हि। जीप रखने छथि आ पेंशन सेहो उठबैत छथि। बाटक कात मे पक्का मकान छनि। बाड़ी मे किसिम-किसिम के गाछ। नेबो तऽ छन्हिये, आमक अनेक किस्मक गाछ सेहो छनि। एहि बेर फरबो कयलनि अछि। चर्चा मे हिस्सा लैति रामगोपाल ककाक स्वर सुनलहुं—

–'मिथिलांचलक दुर्दशाक लेल मिथिलांचलक लोके सभ दोषी छथि।'

– 'तों से कियैक नहि कहबहक। चालीस बरखक बाद गाम अयलाह। पहिने अबैत छलाह तऽ पांचे-दस दिन मे शहरक छरहरी खत्म भऽ जाइत छल तऽ पड़ाइत छलाह। गामक विषय मे वा मिथिलांचलक विषय मे तोरा सँ एहि सँ बेसी की उम्मीद राखब।' विश्वनाथ कका बिगड़िकय कहलथिन।

– 'अहां तऽ कोनो बात पर बिगड़य लगैत छी। अहांक इ स्वभाव भऽ गेल अछि। कनेक हमरो तर्क तऽ सुनि लियऽ। हम मिथिलांचलक दुर्दशाक लेल मिथिलांचलवासी कें कियैक जिम्मेदार मानैत छी।'

– 'हे यौ बबा। कनिक हिनको बात सुनि लेल जाऊ।' कयेक गोटा एके स्वर मे बजलाह तऽ विश्वनाथ बबा कनेक शांत भेलाह।

रामगोपाल कका तौनी के सम्हारिकऽ बामा कन्हा पर रखलनि। दुनू पयर कें कुर्सीये पर जमाकऽ एक तरह सँ चुक्कीमाली भऽ कऽ बैसलाह आ पान चिबबति बाजय लगलाह—

– 'देखियौ अपन इ क्षेत्र कोनो मायने मे कम नहि अछि। उर्वरा भूमि छैक। शिक्षा छैक। सभ गाम मे इंजीनियर, डाक्टर, प्रशासनिक अधिकारी भेट जयताह। मुदा क्षेत्र पिछड़ल अछि। नीक उपजावाला खेत सभ रहितो खेती नीक जकां नहि होइत छैक। आइ काल्हि खेती मे टका लगैत छैक। खेती मे फसल पूंजी लौटत की नहि ताहि मे संदेह रहैत अछि। तैं बाबू- भैया सभ खेत बटाई पर दऽ कऽ शहर धऽ लैत छथि। सरकारी योजना राजनेता आ अधिकारीवर्गक कमाईक साधन छैक। रहिका सँ परसौनी धरि बाट नहि बनल आ नहि बनत, जौं एहि क्षेत्रक लोक सभ अहिना सूतल रहताह। अंय यौ हम पूछैत छी जे जखने हम सभ बाहर कमाईक गप्प करैत छी तऽ बंगाल, आसाम, पंजाब, गुजरात कियैक मोन पड़ैत अछि। एही लेल नहि जे ओहि सभ राज्य मे उद्योग धंधा छैक। एहिठाम की अछि। टूटल बाट।'

– 'तऽ की बाटे टा विकासक केंद्र छैक।' एक गोटे बीच मे टपकलाह।

– 'हं..यौ। बाट विकासक केंद्र छैक। अहां मधुबनी जाइत छी तऽ आबय-जाय मे भरि दिन लागि जाइत अछि। जखन कि आजुक समय मे लोक रहैत अछि एक देश मे आ नौकरी करैत अछि दोसर देश मे। हवाई जहाज सँ अबैत जाइत अछि। ओकरा सभ के लेल हजारो कि.मी. दूरी घऽर-खरिहान जकां छैक। तऽ विकास ओही ठाम नहि हेतैक? सौंसे मिथिलांचल घूमऽ मे अहां कें एक वर्ष सँ कम नहि लागत।' रामगोपाल कका कसि कऽ सांस घिंचलनि आ फेर शुरू भऽ गेलाह।

– 'सौंसे मिथिलांचल मे एकटा पैघ उद्योग नहि अछि। की इ क्षेत्र उद्योगक अनुकूल नहि छैक? उद्योग भेला सँ लोक के रोजगार भेटैत छैक। रोजगार भेटला सँ आरो कतेक छोट-छोट उद्योग स्थापित होइत छैक। मुदा देखैत छी जे मिथिलांचलक लोक सभक ध्यान एहि दिस किन्हु नहि जाइत छैक। खेती करु वा नौकरी। जखन हम नौकरी पर छलहुं आ गाम अबैत छलहुं तऽ कतेक बाबू-भैया अपन-अपन बेटा-पोता कें लऽ कऽ हमरा लग अबैत छलाह। हुनक सभक एकेटा आग्रह रहैत छलन्हि जे एकरा अपने संगे लऽ जाऊ आ कतहु नौकरी धरा दियौक। कहू तऽ भला। एहनो कतहु होय। अंय यौ धिया-पुता कें पढ़ैबाक उद्देश्य नौकरीये टा कियैक रखै छियैक। पंजाब मे पीएचडी कयलाक उपरांत पंजाबी खेती करैत नहि अघाइत अछि आ साल मे कयेक लाख बचा लैत अछि।'

– 'मिथिलांचल मे आई धरि एकोटा उद्योग नहि जमल। उद्योगक संभावना छैक, मगर ओकरा काज मे नहि लगायल जा रहल अछि। औद्योगिकीकरणक हेतु क्षेत्र मे आधारभूत संरचना ठाढ़ करब जरूरी छैक। इ काज सरकारक छैक, सरकार सँ काज करैबाक जिम्मेवारी जनप्रतिनिधिक छैन्हि आ जनप्रतिनिधि केर जिम्मेवारी निर्वहनक लेल प्रेरित करबाक दायित्व मैथिल सभक छैन्हि।'

– 'हे...अहांक बात आब बूझि नहि पड़ति अछि। काल्हि द्वादशाक कर्म हेतैक। आब काल्हि केर लेल छोड़ि दियऊ।' बलभद्र बाबू एक तरह सँ निहौरा करैत बजलाह।

रामगोपाल कका तमकि कऽ बजलाह-'अहां सभक इयैह मानसिकता तऽ मिथिलांचल के डुबा देलक। आजुक काज काल्हि पर छोड़ि दैत छी आ इ नहि बुझैत छी जे एहि सँ समाजक कतेक बड़का नुकसान भऽ रहल छैक।'

बड़का बबा के बीच मे हस्तक्षेप करऽ पड़लनि-'रामगोपाल तों बेकारे पिताई छौ। आरे महीषक आगां बीन बजौला सँ की हेतौक। ओना आब ओम्हर आजुक कर्म समाप्ति पर छैक। अन्हार भऽ रहल अछि आ गाम पर भोजक बात-व्यवस्था सेहो करबाक छैक। ताहि हेतु आजुक चर्चा कें विश्राम दियौक। पान खाऊ आ चलू।'

एकटा बड्ड जरूरी चर्चा बीचे मे स्थगित भऽ गेलैक। हमरो नीक नहि लागल। अगत्ती सार सभक मजाक सँ नीक इ सामयिक प्रसंग मे हमहुं शामिल होमय चाहैत छलहुं, मुदा मौका नहि भेटल। लोक सभ उठि गेलाह। बाबूजी अपन आसन सभ लऽ चललाह। पाछां-पाछां पाचक छोटका कका। तखने केम्हरो सँ मुन्ना कका आबि गेलथि-'एखन धरि अहि ठाम छी। चलू-चलू। गाम पर बजाहटि भऽ रहल अछि।'

दूरे सँ देखलहुं दरवज्जा पर मरकरी जरि रहल अछि। दरवज्जाक दक्षिण पोआरक टालक पाछां सँ जेनरेटरक धुक-धुकी आवाज आबि रहल छल। भोज खायवाला सभ लोटा लऽ कऽ तैयार छलाह आ सत्तन सपरिवार बीड़ी बनाबय मे जुटल छल। ppp

ÑÑAU-ÕëâÑÑ

गुवाहाटीक मणिपुरी बस्ती। हमर गामक लघु रूप। रामआसरेजी ठीके कहने छलाह। ओहि दिन आफिस मे काज करैत-करैत मोन थाकि गेल छल। तऽ मोन मे भेल जे रामआसरेजीक बातक सत्यता जानि ली। टेबुल परक कागज-पत्तर सभ सरियाकय रखलहुं आ विदा भऽ गेलहुं। पएरे मणिपुरी बस्ती पहुंचय मे दस मिनट लागल। बस्ती बड्ड पैघ छैक। भीतर अनेक बाट एक दोसर मे मीलि जाइत छैक। दू बगली घऽर-दोकान। मुख्य बाट सँ

मणिपुरी बस्ती मे पैसिते एकटा सुखद अहसास सँ गद्‌गद् भऽ गेलहुं। छोट-छोट मकान। कोनो पर खड़ह तऽ कोनो पर टिन। काठक दुमंजिला सेहो। दुनू कात खोंमचा-ठेला।

- 'रे थरिया ला रे....। बाबू हो.....।'

सुनिते लागल जेना गामक टोल पर सँ जा रहल छी। गामक बोली गुड़ सन मिट्ठ।

गामक ध्वनिक आस्वादन करैत जा रहल छलहुं। एक फर्लांगक पश्चात् एक टा पानक दोकान पर ठाढ़ भेलहुं। पानवालाक चीन्हक प्रयास कयलहुं। संभवत: ई हमरे ग्रामीण अछि।

हमरा ठेकियबति देखि पानवाला अधकच्चर असमिया मे पुछलक।

- 'की लागे?'

- 'की नाम अछि?'

प्रश्नक उत्तर मे प्रश्न सुनि पानवाला छौंड़ा अकचका कऽ हिन्दी मे बाजल।

- 'क्या चाहिए।'

हमरा विश्वास भेल जे ई हमरे ग्रामीण अछि।

- 'तोरा सँ हम नाम पुछति छियौक आ तों कहैत छह-क्या चाहिए।' ओकरा बड्ड आश्चर्य भेलैक। हमरा ऊपर सँ नीचा देखलक। ओकरा भेलैक जे हम गाम सँ आयल छी। बाजल-'हम अहाँ कें नहि चीन्हैत छी। अपने कुन गाम सँ आयल छी?'

- 'हं....। हम गाम सँ आयल छी। तोहर की नाम छौक?'

- 'विनोद...। विनोद पूर्वे।'

- 'ककर बेटा छह?'

- 'असरफी पूर्वे के।'

असरफी के बेटा एतेक टा भऽ गेलैक। असरफी हमरे सभक तुरिया। हमर घऽर सँ पूब बिनही खत्ताक भीड़ पर ओकर घऽर। ओना सबिकाहा घऽर तऽ गामक बीच मे छैक, मुदा ई घऽर सँ भिन्न भऽ कय अपन गृहस्थी अलग बसा लेलक। खूब उपजगर खेत आ कलम हिस्सा मे पड़लैक। अपनो खूब मेहनती। घऽर पर एकटा दोकान। दोकान घरवाली चलबैक छलैक। तखन बच्चा सभ छोट-छोट छलैक।

हम अपन परिचय देलियैक तऽ विनोद हमरा चिन्हलक।

-'अहां सभ गाम नहि जाइत छी। अहांक कोठाक दरवज्जा झड़ि गेल अछि आ कएक ठाम सँ ईंट सभ सेहो उखरि रहल अछि।'

- 'तों कहिया अयलह?'

– 'हम तऽ अहि ठाम दू बरिख सँ छी। गाम सँ दस दिन भेल अयलाह। दोकान बन्न छलैक। आब एकरा सम्हारय मे लागल छी।'

– 'गाम परक दोकान चलैत छौक।'

– एंह... ऊ जौं ठीक रहितैक तऽ हम अहि ठाम कियैक अबितहुं। बाबू के 'बाई पेचिश' धऽ लेलकैय। ओकरे इलाज मे दोकान स्वाहा भऽ गेलैक। दोसर कोनो रास्ता नहि भेटल तऽ हम रामबिरिछ संगे गुवाहाटी चलि अयलहुं। महाजन सँ रुपया लय-कऽ पहिने फेरी करैत छलहुं। धीरे-धीरे ई दोकान जमौलहुं।'

– अहां कहिया अयलहुं?'

– एक महीना भेल। ओना तऽ हम सभ सिलीगुड़ी रहैत छी। गाम गेला बड्ड दिन भऽ गेल। आब कोनो काजे-तिहारे मे जायब। अहि मोहल्ला मे अपन गामक के सभ अछि?'

– 'बहुते गोटा छी। जोड़ब तऽ एक हजार भऽ जायत। ककर-ककर नाम कहू।'

हमरा आश्चर्य भेल।

– 'बाकी सभ की करैत अछि?'

– 'सभ के अलग-अलग धंधा छैक। केओ फेरी करैत अछि, केओ खोंमचा घूमबैत अछि तऽ केओ भुट्टा-चना बेचैत अछि। हमरा सभ के लेल तऽ गुवाहाटी दोसर गाम अछि। दस गोटे अबैत अछि तऽ दस गोटा जाइत अछि। गामक समाचार रोज भेटि जाइत अछि। पान खायब?'

– 'लगबह। जर्दा कनिके। छोट-छोट सुपारी।'

मणिपुरी बस्तीक ई एकटा अंश छैक। बाटक दुनू तरफ टिनक छोट-छोट घऽर सभ। भरल घऽर। कोनो मे चारि गोटे तऽ कोनो मे छह गोटे।

– 'ई अगिला काठक दुमंजिला देखैत छी। ई अपन गौंवाक अछि। छोटे मे गुवाहाटी आयल रहैक। एखन करोड़ो रुपयाक संपत्ति छैन। गाड़ी, मिल, घऽर।'

गाम आ गौंवा सभक बात सुनि खूब नीक लागि रहल छल। बुझायल जेना गामे मे छी।

– 'लियऽ पान खाऊ।' विनोद एक खिल्ली पान बढ़ौलक।

– 'तोहर निवास कतय छौ?'

– 'दोकाने मे। पाछां दिस सँ रहय वाला बनौने छी। ओहि मे भानस करैत छी, आ खाइत छी।'

विनोद अनेक लोकक विषय मे बतौलक। अहि गली केर अंत मे एकटा मास्टर साहब रहैत छथि। बहुत दिन सँ छथि। हुनका सँ भेंट करबाक इच्छा भेल, मुदा समयाभावक कारणे

आगां नहि जा सकलहुं। फेर कहियो। विनोद सँ विदा लेलहुं। – 'अबैत रहब।' विनोद कहलक। लौटतिकाल विचित्र अनुभूति भऽ रहल छल। गामक नीमबाड़ी आ गुवाहाटीक मणिपुरी बस्तीक ई गली। बड्ड समानता छैक। दुनू दिस सँ लोक सभक कोलाहल माथ मे एम्हर-सँ-ओम्हर घूमि रहल छल।

– 'रे थरिया ला। हे देखियो पानि हेरा देलक। ठेला निकाल जा.... आरो कतेको शब्द।'

आई कतेको दिन बाद खूब नीक लागि रहल छल। अपना के ऊर्जा सँ भरपूर पाबि रहल छलहुं। डेरा पर अबिते तिवारीजी हमर उत्फुल्लता के पढ़ि गेलाह। पुछलनि-'बहुत खुश दिखाई दे रहे हैं। क्या बात है?'

हम निरुत्तर छलहुं। हुनका कोना बुझबियनु जे हमरा आई की भेटल अछि। ppp

ÑÑáeæSüàÑÑ

दरवज्जा ठसाठस भरल छल। विज्झो भऽ गेल छलैक। अंगना मे बड़का-बड़का तीन टा चूल्हा धधकि रहल छल। काशी कका भनसिया सभक मुखिया बनल छलाह। भनसिया सभ पट्टी-पटीदार मे सँ छलथि। बिना पारिश्रमिक अप्पन काज छैक। गाम-घऽरक इ व्यवहार अतुलनीय अछि। शहर मे तऽ एक गिलास एम्हर सँ ओम्हर कयनिहार केयो नहि भेटैत छैक।

मजदूरी पर राखू। ताहू मे जतेक अढ़ेबै ततबे काज करत। अढ़ायल काज मे किछु करत, किछु राइ-छित्ती करत। कतेक काज करत आ कतेक चोरायत से कहब मुश्किल। गाम पर कोनो काज गामक भऽ जाइत छैक। अपन-अपन कौशल वला काज चुनि कऽ ओहि मे भीड़ जेनाई गामक स्वभाव छैक। भनसिया सभ अपन-अपन काज कऽ रहल छलाह। मुन्ना कका कहलनि-'फ्रेश भऽ जाऊ आ भोज देखू।'

-'हमर एकटा जिज्ञासा अछि मुन्ना कका।'

-'से धरि पूछि लियऽ।'

-'घाट पर जिनका सभ कें देखलहुं, ओ सभ की गामे के छलाह।'

मुन्ना कका हंसि पड़लाह-'नईं यौ। किछु अपन गौंवां छलाह आ बाकी सभ नौ गामक लोक छलथि।'

-'नौ गामक लोक।' हमरा आश्चर्य भेल।

-'हं..। नौ गामक लोक। गामक नाम जोड़ा दैत छी। परसौनी, बलिया, नवटोली, केरवाड़, रूपौली, बजराहा, सिमरी, नहसा, सहसा। इ सभ गामक लोक घाट पर छलथि। भैया मंडली भोज कऽ रहल छथि आ मंडली मे इ सभ गाम अबैत छैक। सभ गाम के एकादशाक हकार आ द्वादशाक निमंत्रण देल गेल छैक। तैं इ लोकनि एकादशाक कर्म के हकार पूरय आयल छलथि।' मुन्ना कका विस्तार सँ बुझौलनि।

-'मुन्ना कका मंडली भोजक आयोजन छैक। तकर मतलब खूब लंबा-चौड़ा आयोजन छैक। केना सम्हरति? आ नौ गामक लोक एके दिन केना भोजन करताह।' हम पुछलियनि।

मुन्ना कका फेर ठठाकय हंसय लगलाह। अंगनाक कल पर मुंह धोइत हम आश्चर्य सँ हुनका दिस ताकय लगलहुं।

-'भोजक सभ व्यवस्था भेल छैक। गामे-गामे न्योत-हकार गेल छैक। मात्र विज्झो नहि कराओल गेल छैक। एक दिन मे एक्के गाम भोज खायत। जाहि दिन जाहि गाम के खुयैबाक व्यवस्था हेतैन ताहि दिन ओहि गाम मे विज्झो कराओल जेतैक।'

-'एतेक बड़का आयोजन।'

-'हं....यौ। की बुझैत छियैक। काकीक स्वर्गवास भेल छनि। जिनका तीनो बेटा आ कयेकटा पोता खूब कमाईत छनि। तऽ लोकसभ के पता तऽ होयबाक चाही।'

यद्यपि मुन्ना ककाक बात पर अविश्वास नहि कयल जा सकैत अछि तथापि बाबूजी एतेक बड़का आयोजन करताह से हमरा विश्वास नहि भऽ रहल छल।

-'अंय यौ मुन्ना कका। बाबूजी की इ आयोजन अपन इच्छा सँ ठनने छथि।'

-'से बड़का खिस्सा छैक। अहां के परोक्ष मे कहब। चलू दलान पर भोज देखू।'

मुन्ना ककाक बात सुनि दिमाग भारी भऽ गेल। सोचने छलहुं जे बेसी सँ बेसी चारि-पांच दिन लागत। काज सम्हारि कऽ एक सप्ताह मे लौटि जायब। एहिठाम तऽ पंद्रह दिनक काज पसरल छैक। आइ-काल्हि लोक एतेक दिन भोज-भात करइयै? बाबूजीक दिमाग मे मंडली भोजक बात केना ऐलैन? अनेक प्रश्न तत्काल उपस्थित भऽ माथ के मथय लागल। मुन्ना ककाक संगे दलान पर अयलहुं। दलानक आगां मे दस-दस कट्ठाक दू कोरिया खेत के आड़ि काटि कऽ एकाकार कऽ देल गेल छलैक। ओकरा समतल करा कऽ ओहि मे भोजक व्यवस्था कयल गेल छैक। विज्झो होइत देरी लोक सभ एक-एकटा बीड़ी (पोआरक बनाओल आसन) लऽ पाँत मे बैसि रहलाह। सचेष्ट बारीक सभ सेहो अपन-अपन निर्दिष्ट सामग्री केर बासन लऽ दौड़य लगलाह।

-'गनियो तऽ कतेक लोक छैक?' मुन्ना कका हमरो एकटा काज देलनि। हम गनय लगलहुं। गणना समाप्त भेल साढ़े तीन सौ। ओम्हर पात पर दही बहय लागल।

-'अखन दू तोर आरो हेतैक। देखैत नहि छियैक। लोक सभ आबिये रहलाह अछि।' भोजस्थल पर हो-हल्ला मचि रहल अछि।

-'हे यौ एम्हर चिन्नी परसू। कनिक अचार दियऽयौ। पानि वाला बारीक के देखिते नहि छियैन।'

एकटा बारीक घऽर सँ तरकारीक परांत उठौने आयल तऽ दोसर बारीक ओकरा झटकि लेलनि।-'ले। अहि मे भरिकऽ ला।' अपन खाली परांत ओकरा हाथ सँ लगा देलथिन। चिन्नी वाला बारीक के बड्ड काज छलैक। जतय-जतय दही परसाइत छलैक, पाछू-पाछू चिन्नी वाला बारीक के रहनाई अति आवश्यक छलैक। पानि के बारीक के तऽ सौंसे संसारे पियासल बुझाइत छलैक। एकटा तमघैल निऽघटल की दोसर मे हाथ लागि गेल। खेत मे चारो कोन आ बीच-बीच मे मरकरी जरि रहल छल। मरकरी के घेरि कऽ कीट-पतंग सभ सेहो भोजनक आनंद लऽ रहल छल। बाबूजी कल जोड़ने घूमि रहल छलाह। हुनका मुंह सँ 'नून-चूड़ा' शब्द निकलि रहल छलनि। इ एकटा नियम छैक। एम्हर एक खेपक पश्चात दोसर खेप के खुयैबाक जुगत भिड़ रहल छल। दोसर खेप खेत मे नहि बैसि सकैत अछि। सौंसे गधकिच्चनि भऽ गेल छल। दही आ तरकारी मिज्झर भऽ पचपच कऽ रहल छलैक। तैं दोसर खेप के दरवज्जे पर चारिटा पंक्ति मे बैसाओल गेल। ओम्हर पहिल खेपक लोक सभ भोजन पर सँ उठि कऽ हाथ धोबय आ पान-सुपारी लेबा मे व्यस्त भऽ गेलाह। पान-सुपारी बांटय वाला पर बुझायल जेना मधुमाछी टूटि पड़िलइयै। ओ एकटा कुर्सी पर ठाढ़ भऽ कऽ पान-सुपारी बांटि रहल छलाह। जतय देखू ततय हाथे-हाथ। कतेक हाथ एके बेर उठि गेल!

मुन्ना कका कहलनि एहिठाम सँ हटि जाऊ नहि तऽ केओ अईंठ लगा देताह आ अहां के स्नान करय पड़त। हम दुनू गोटे ओहि ठाम सँ हटि गेलहुं। मुन्ना कका ठीके कहैत छलाह। हुनका एहि सभक बड्ड अनुभव छनि। गामे पर रहति छथि। मुदा ओ अपने कें फौरेन रिटर्न

कहैत छथि। देशक सभटा बड़का शहर भऽ आयल छथि। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई सभ हुनक शब्द मे हुनक लेल घथारल शहर छनि। एक बेर गुवाहाटी सेहो गेल रहथि। गुवाहाटी प्रवासक काल ओ अपन आत्मकथा कहने छलाह। फराक-फराक शहर के फराक-फराक मिजाज आ रंग।

एकादशाक भोज राति एगारह बजे धरि चलल। तीन खेपक पश्चात छोटका-छोटका कयेकटा खेप। एहि मे घरबैया आ पाहुन सभ सेहो निबहति गेलाह। भोजन कयलाक पश्चात दलान पर तमाकूक बैसार भेलैक। बाबूजी विश्राम करय चलि गेलाह। मुन्ना कका सँ कयेक बेर पुछलियनि जे कोन-कोन पाहुन आयल छथि, मुदा ओ सभ बेर लटपटबैत गेलाह। तमाकू बैसार मे लगभग सभ पाहुन सँ स्वयमेव साक्षात भऽ गेल। बड़ागाम वाला पीसा, बजराहा टोल, धमियापट्टी, धारक कातक टोल, मिसरौली, मोसिढ़, जगवन प्रभृति गाम सँ पाहुन सभ आयल छलाह। सभ गोटे सँ विस्तार सँ पुनः परिचय भेल। दलान बुझाइत छलैक जेना जगमग-जगमग कऽ रहल अछि। कार, जीप, मोटर साइकिल आ साइकिल सभ लागल अछि। ओम्हर सत्तन पाहुन सभक लेल व्यवस्था कऽ रहल छल। काल्हि द्वादशाक कर्म छैक। भोज सेहो। छोटका कका व्यवस्था कें अंतिम रूप दऽ रहल छलाह। हाथ मे तमाकू चुनबैत कका अपन टीम कें बुझा रहल छलाह। गप्प-सप्प मे आधा राति बीति गेलैक। काल्हि भिनसरे सँ लागय पड़त। एखन विश्राम जरूरी छैक। ppp

ÑÑ¥_æSüãÑÑ

रामआसरेजी किन्नहु नहि मानलाह। हुनक आग्रह पर कामाख्या मंदिर जाय पड़ल। आयोजन यद्यपि खूब नम्हर नहि छलैक, मुदा अपन-अपेक्षित खूब जुटल छलैन। ई तेसर बेटाक मूड़न छलैन। रामआसरेजीक अनुसारे पूर्वोत्तर प्रवास पर रहयवाला लोक सभ मूड़न

एहि ठाम भगवतीक समक्ष करबैत छथि। उपनयन, बिआह आदिक हेतु गाम जाइत छथि। हम पुछलियनि जे मूड़न जेना गाम पर होइत छैक की तहिना अहू ठाम होइत छैक।

रामआसरेजी कहलाह-'मूड़नक अर्थ छैक बच्चाक पहिल बेर केश कटौनाई, से एहि ठाम केश कटा जाइत छैक। गाम पर मूड़नक विध-विधान विस्तृत छैक। गामे-गामे सँ विदागरी कराऊ। प्रसादक खूब पुष्ट व्यवस्था राखू। प्रायः एक सप्ताह धरि धमगज्जड़ि होइत छैक। कामाख्या मे से सभ नहि छैक। एहि ठाम हजामक व्यवस्था अछि। पोखरिक पूरबी भीड़ पर हजाम सभ अपन दोकान लगौने छथि। बच्चा के ओहि ठाम केश कटा देबई। पोखरि मे स्नानक पश्चात मां भगवतीक दर्शन करा प्रसाद खुआ देबई आ उपस्थित अपन-अपेक्षित के प्रसाद दऽ विदा करब। यैह छैक मूड़न।'

- 'गाम सँ एहि ठाम संक्षेप मे भऽ जाइत छैक?' हम पुछलियनि।

- 'से जे केओ गुवाहाटी मे रहैत छथि, तिनका वास्ते ई सुविधा छैन। हमरा सभ के तऽ पांच सौ किलोमीटर सँ आबय पड़ैत अछि। हमरा लेल तऽ गाम जाऊ अथवा कामाख्याधाम। एक्के पड़ति अछि। ओना बच्चा के कामाख्या मे मूड़न मानल छलैक। तैं आबय पड़ल। एकर मूड़नक लेल आब गाम जयबाक आवश्यकता नहि अछि।

मूड़न मे किछु गोटे छागर बलि दैत छथि। ई अपन-अपन ईच्छा पर निर्भर करैत छैक। जिनकर मांगल रहैत छनि से ई काज करैत छथि।'

गप्प-सप्प करैत हम सभ कामाख्या पहुंच गेलहुं। कामाख्याक पंडा मनोहरलाल के पहिने सँ सूचना छलैन। ओ सभ बात व्यवस्था केनय छलाह। देशक कोनो तीर्थ सँ एहि ठाम पंडाक व्यवस्था नीक छैक। लूट-खसोट नहि। आ नहि ठग-फुसलौनाई। पंडा सभ सहयोगी छथि। एतबे नहि, अपितु हुनक व्यवहार गाम-घर जकां देखलहुं। जखन जाहि वस्तुक उपलब्ध भेल, जजमानक मुंह सँ खसला सँ पहिने ओकर व्यवस्था भऽ जाइत छैक।

मनोहरलालजीक पूरा परिवार एहि काज मे लागल छल। पूजनक सामग्री एकटा थार मे सजल छलैक। प्रसाद एकटा अलग थार मे। बदाम आ मूंग भीजल। खंड-खंड आद। रामआसरेजी कहलनि भीजल मूंग, बदाम आ आद, एहि ठामक विशेष प्रसाद छैक। प्रसाद मे नून सेहो मिलायल जाइत छैक।

बारह बजे सभटा काज संपन्न भऽ गेलनि। रामआसरेजी पलटन बाजार स्थित होटल मे लौटलाह। भोजनक पश्चात हम आफिस लेल विदा भेलहुं। ओ फेर जिद कऽ देलनि। सांझ मे आऊ। राति मे संगहि भोजन करब।

सांझ मे फेर हम दुनू गोटे एक-दोसरक समक्ष छलहुं। तीन-चारि गोटे आरो छलाह। रामआसरेजी परिचय करौलनि। सभ गोटे हुनक संबंधी छलथिन। आन-आन गामक। असम मे अपन-अपन व्यवसाय-नौकरी छैन। ओहि मे सँ दू गोटे तऽ असम मे तेसर पीढ़ीक छलाह। नीक बात ई जे एखन मैथिली बजैत छथि आ काज-तिहार पर गाम जाइत छथि। अपन

सांस्कृतिक पहचान के अक्षुण्ण रखने छथि। दू गोटे सद्य: असम आयल छथि। गामे पर पढ़ैत छलाह। पढ़ाई संपूर्ण कयलाक बाद नौकरीक लेल आवेदन कयलथिन। एक गोटे एहि ठाम बैंक मे छथि आ दोसर गोटे रेलवे मे।

रामआसरेजी चर्चा शुरू कयलनि। अपन अनुभवक बात। हुनक अनुसार असम सन शांतिपूर्ण राज्य संभवत: आन दोसर केओ नहि छल। मुदा असम आंदोलनक पश्चात ई राज्य ततेक अशांत भऽ गेल अछि जे एकर जोड़ भेटनाई मुश्किल।

–'हम सभ असम आंदोलनक समय खूब डेरायल रही। बंगलादेशी भगाओक आंच मे दोसर राज्यक रहनिहार सभक जीवन पर सेहो प्रभाव पड़ल। स्थानीय आ बाहरीक बीच मे एकटा अघोषित रेखा पड़ि गेल। यद्यपि हमर गाम मे सभ समुदायक वास छलैक, मुदा असमिया आ गैर-असमियाक विभाजन रेखा स्पष्ट देखा रहल छल। गाम मे सभ आदमी के एक दोसर सँ सरोकार रहैत छैक। तैं हम सभ बड्ड बेसि प्रभावित नहि भेलहुं। किछु नवजवान सभ बेसि उत्साहित छल आ कहियो-कभार दोकान पर आबि चंदा चिट्ठा लऽ जाइत छल।'

रामआसरेजी कनेक सांस लैत पुन: बजलाह—

–' ओना असम आंदोलन के पक्षधर हमहुं सभ छलहुं। असम मे बंगलादेशीक अबाध प्रवेशक चलते असमिया सभक अस्तित्व पर संकट आबि गेल छलैक। ओना देखल जाओ तऽ एहि मे एहिठामक लोकक कमजोरी स्पष्ट छलैक। जीवनक सिद्धांत छैक जे सभ तरह सँ सक्षम गुटक अस्तित्व अक्षुण्ण रहैत छैक। बड़ुआर सभ मे कमजोर लोकक कोनो वश नहि छलैक। तहिना कमजोर पर बड़ुआर अपन प्रभाव शीघ्र स्थापित कय लैत अछि। बुझू तऽ बंगलादेशीक समक्ष असमिया समाज बड्ड कमजोर छलैक। आरामपसंद एहि समुदाय के पएर पसारि कऽ खैबा आ आराम करबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि छलैक। एकरा सभक लेल जीवक लेल संघर्ष करबाक कोनो प्रयोजन नहि छलैक। जाहि जाति मे जीवनक लेल संघर्षक आवश्यकता खत्म भऽ जाइत छैक ओ जाति भीतर सँ खोहरि भऽ जाइत अछि। जीवटता खत्म भऽ जाइत छैक। जीजीविषाक लेस नहि रहैत छैक। अन्यथा अपने देखियो जे बंगलादेशी तऽ आन-आन राज्य मे सेहो पसरल छैक, मुदा ओहि ठामक भाषा-संस्कृति आ जीवन शैली पर तऽ कुनू संकट नहि अयलैक। असम मे आयल बंगलादेशी सभ जीवनक लेल जुझारू बनि गेल छल आ एहि ठाम कमजोर असमिया जाति पर प्रभाव विस्तार करय लागल। असम संकट चरम पर पहुंचय लागल तऽ असमिया समुदाय के होश अयलैक आ आंदोलन शुरू भेल। सात वर्ष आंदोलन चलल। लोकतांत्रिक आंदोलन कतहु-कतहु हिंसक भऽ गेल। कतेक लोक एहि आंदोलनक भेंट चढ़ि गेलाह तकर कोनो हिसाब नहि।

असम आंदोलनक समय बुझायल जेना सभ किछु ठप भऽ गेल अछि। महीना-महीना भरि हड़ताल सँ जनजीवन अस्त-व्यस्त भऽ गेल। हम सभ महीना-महीना धरि घऽर मे नुकायल रहैत छलहुं। कखन कतय गोली चलि जायत कहब कठिन। रेडियो पर भरोसा छल। अपने

के की कहू असम आंदोलन सँ ततेक नुकसान भेलैक, जकर कोनो हिसाब नहि। ओहि नुकसानक भरपाई एखनो धरि नहि भेल आ नहि कहियो होयत।

आखिर ई आंदोलन एतेक असफल कियैक भेलैक? हम जे अपने के कहब से एकदम निरपेक्ष होयत। ओना अनेक चिंतक, विश्लेषक एकर विश्लेषण कयने छथि, मुदा हमर विश्लेषण सभ सँ कराक अछि।' ई कहि रामआसरेजी हमरा मुंह दिस ताकय लगलाह। संभवत: ओ हमर प्रतिक्रिया जानय चाहैत छलाह।

हम कहलियनि-'अहां अपन विश्लेषण कहू। हम जानय चाहैत छी। आखिर एतेक बड़का जनआंदोलन कोना भ्रमित भऽ गेलैक। अनेक लोकक बलिदानक पश्चातहु आंदोलन अपन उद्देश्य कें नहि पाबि सकल।'

–'ठीक छैक। तऽ पहिने चाह पीबू।' रामआसरेजी उत्साहित होइत बजलाह। ppp

ÑÑ@UkÙÌéâÑÑ

कखन भोर भऽ गेलैक से नहि जानि। आंखि खुजल तऽ छोटकी काकी चाहक गिलास नेने ठाढ़ छलीह। अंगना मे रौद पसरल छलैक। चारु चूल्हा धधकि रहल छलैक। ओहि पर दूध औंटा रहल छल। दही पौरैतैक। आजुक लेल काल्हिये पौरा गेल छैक। दूध औंटलाक बाद दोसर व्यंजन बनतैक। ककाजी आबि कऽ पलंग पर बैसलनि। संभवत: हुनका किछु मंत्रणा

करबाक छलैन। काकी हुनको लेल चाह आनय चलि गेलथिन।

– 'की ककाजी। सभ ठीक छैक ने?' हम पुछलियनि।

– 'हं... सभ ठीके छैक। दियाद सभ जे नहि कराबे।'

– 'से की कहैत छी। देखैत छी जे दियादक उपस्थित सभ लोक काज मे भीड़ल छथि।'

– 'से तऽ भीड़ल अछि। ओकरे सभक काज छैक तऽ नहि भीड़ने चलय वाला नहि छैक।'

– 'ओकरे सभक काजक मतलब। काज तऽ सभक छैक नहि?'

– 'हं... काज सौंसे समाजक छैक। मुदा हम पुछैत छी जे कि एहिना चांच पर चढ़ाओल जाइत छैक?'

– 'चांच परक मतलब नहि बुझलहुं?'

– 'से बाद मे बुझा देब।'

हम जिद कयलियनि – 'नहि ककाजी एखने कहल जाओ।'

'तऽ सुनू।'

ताबत काकी चाहक गिलास ककाजी कें पकड़ा देलथिन। बामा हाथ मे चुनाओल तमाकू आ दहिना हाथ मे चाहक गिलास। ककाजी शुरू भऽ गेलाह।

– 'भैया के गाम पहुंचला सँ पहिने मायक दाह-संस्कार भऽ गेल रहैक आ उतरी हमरा गरा मे छल। भैया एलथि तऽ विध-विधान सँ उतरी अपना गरा मे पहिरि लेलनि। हम मुक्त भेलहुं। जरूरीओ छल। एतेक जे काज देखैत छी से जौं हम बाझल रहितहुं तऽ मुश्किल छल। खैर। एक दिन बाद छोटको भैया पहुंचि गेलाह। एकरा बादे नाटक शुरू भऽ गेल।

– 'नाटक... !'

– 'हं....यौ....नाटक। पटिदार सभ नाटक शुरू कऽ देलक। हम तीनू भाई विचारने छलहुं जे मायक श्राद्ध खूब नीक जकां करब। चारु टोल के आमंत्रित कऽ खूब नीक जकां खुआयब। मुदा हमर सभक योजना पर पटिदार सभ पानि फेर देलक।'

– 'से कोना?'

– 'श्राद्ध कर्मक लेल पटिदार सभकें बैसार केनय छलहुं। समय पर सभ गोटा आबि गेलाह। भैया सँ पुछलथिन जे श्राद्ध आ भोजभात कोना करब। जेना हम तीनू भाई विचारने छलहुं, भैया कहि देलथिन। एम्हर भैयाक बात खत्म भेलनि आ ओम्हर किछु प्रमुख लोक सभक मुंह फुलि गेलनि। एक गोटे तमकि कऽ कहलथिन, काकी बड्ड धर्मात्मा छलीह। ऐना नहि होयत।'

हम सभ तीनू भाई गुम्मे रहि गेलहुं।

भैया पुछलथिन – 'तऽ अहां सभक की विचार अछि?'

– 'मंडली भोज करय पड़त। श्राद्धकर्म जेना कहलहुं से ठीक छैक?' देबा भैया बजलाह। संभवत: ओ सभ अपना मे पहिने सँ विचार केनय छलाह। देबा भैयाक कहब पर सभ चुप छलाह।

भैया कहलथिन – 'हम सभ मंडली मे नहि सकब। नौ गाम के खुओनाई आजुक समय मे साध्य नहि छैक। जेना हम विचारने छी तेना करु। चारु टोल के खुआऊ। जेना कहब आ जे कहब से खर्च करक लेल हम सभ तैयार छी।'

लाल भैया सेहो कहलथिन – 'इ बरखा-बुन्नीक समय मे अहां सभ तरहत्थी पर दूबि जन्माबयलेल कहैत छी। अंय यौ आबो एहन भोज-भातक प्रचलन रहि गेलइयै? विवाह मे तऽ लोक आब एक संझू पर उतरि गेल अछि आ अहां सभ पाषाण युगक बात करैत छी।'

लाल भैयाक बात खत्म नहि भेलैन कि कामाख्या भैया सोझे भभकि उठलाह – 'तोरा सभ के बड्ड पाई भेलउयै तऽ गया कियैक नहि चलि गेलैंह। ओहि ठाम खूब प्रशस्त सँ पंडा सभ के खुअबितऽ। एहिठाम अयबाक की प्रयोजन छलौक। एहिठाम हमरा सभक जे दायित्व छल कऽ देलियौक। काकीक दाह-संस्कार कऽ देलियौक।'

कका हमरा मुंह दिस ताकि बजलाह – 'अहां कें तऽ बुझले अछि जे भैया कतेक पिताह छथि। देबा भैया आ कामाख्या भैयाक बात सुनिते भैया पित्त सँ थर-थर कांपय लगलाह। जोर सँ चिक्करि कऽ बाजि उठलाह – 'अंय यौ माय हमर मुइली। कैंचा हम खर्च करब आ अहां सभ हमरा जेना चाहब तेना नचायब। अहांक प्रस्ताव हमरा पसिन्न नहि अछि। हम सभ जेना विचारने छी तहिना करब।'

भैयाक बात सुनि सभ दियाद सतरंजी पर सँ उठि गेलाह। कामाख्या भैया इ बजैत कोठरी सँ निकलि गेलाह कि ठीक अछि जेना इच्छा हो तेना करु। आ कोठरी दियाद से शून्य भऽ गेल। हम तीनू भाई रहि गेलहुं।

– 'जाय दियौक। ओ सभ अपने आओत। देखैत नहि छियैक – एही चालिक कारणे देह पर कनिको रूहानी नहि छैन्हि। आ बात करैत छथि नम्हर-नम्हर। छोड़ू एकर सभक बात। जाऊ यौ छोटू अपन काज मे लागि जाऊ।' भैयाक बात पर हमरा कनिको भरोस नहि भेल। एकरा सभ के हम चीन्हैत छियैक। भैया सभ तऽ सभ दिन बाहरे रहलाह। एहिठाम जतेक काज होइत छैक ओहि मे जौं एकर सभक मोन सँ नहि चलू तऽ इ सभ घिनाबय पर लागि जाइत छैक। तखन इ नहि बुझैत छैक जे इ ककर काज छैक।

हमर आशंका कें भैया संभवत: बुझि गेलाह। कहलनि-'चिंता कियैक करैत छह। एखन समय छैक। सभ ठीक भऽ जायत।'

भैयाक आश्वासन सँ मोन कनेक हल्लुक भेल। एहन समय मे अप्पन लोक सभ कहुना

काज निकालय मे सहयोग करैत अछि, मुदा अपन दियाद भऽ कऽ इ सभ कयल काज पर पानि हेरा देबाक उपक्रम मे अछि। अच्छा भगवान छथिन। इ सोचि अपन काज मे विदा भेलहुं।

एक दिन बीतल, दूई दिन बीतल आ दियाद सभक कोनो पता नहि छल। एगोटा सँ पुछलियनि तऽ कहलाह जे अहां सभ जौं अपना मोने काज करब त करु, दियाद काज मे शामिल नहि हेताह। भोज खाय बेर मे उपस्थित भऽ जेताह।

कका कहति गेलाह – 'हमर आंखिक निन्न आ मोनक शांति जेना दुनू हेरा गेल छल। भैया कें कहलियनि जे कम सँ कम ओकरा सभ के बजाकऽ बात तऽ करियौक। ओकरा सभ कें कहि दियौक जे जौं ओ सभ 'मंडली भोज' करताह तऽ जोगाड़ हम सभ लगा देबनि, मुदा करय हुनके सभ कें पड़तनि।'

लाल भैया हमर बात सुनिते पिता गेलाह – 'ठीक छैक तऽ अहां सभ महीना भरि भोज करैत रहब। हम तऽ 'मत्स्य स्पर्श' कऽ विदा भऽ जायब।'

हम कहलियनि – 'अहां कियैक पिताई छी। दियाद सभ जेहन अछि तेहेन कर्म के तऽ भुगतै पड़त। नहि करबै तऽ ओ सभ छोड़ि नहि देत, परंच, अहांक कयल–धयल पर पानि हेरा देत।'

– 'फेरा देत तऽ फेरा देमय दियौक। तैं ओ सभ जेना कहत तेना हम सभ नहि करब। हमरा छुट्टी नहि अछि। मत्स्य स्पर्शक प्राते हम चलि जायब। अहां सभ मंडली करैत रहब।'

बड़का भैया हस्तक्षेप कयलथिन – 'ऐना नहि पिताऊ। काज तऽ करय पड़त। अपना मोन सँ करी वा दियादक मोन सँ। ओकरा सभ के बजबति छी। बात करब। देखियो ने की होइत छैक।'

– 'आई दिन मे ओकरा सभ कें बजाऊ।'

भैया कें आदेश भेलनि आ हम सत्तन के संवाद प्रेषण मे लगा देलहुं। बड्ड टाल–मटोल करैत दियाद सभ जुटलाह।

भैया पुछलथिन जे आब तऽ समय नहि रहि गेलई। अहां सभ कहू जे की करब? देबा भैया कहलथिन – 'साफ बात सुनि लियौक। जौं मंडली भोज नहि होयत तऽ हम सभ अहांक सहयोग नहि करब। तखन अहां सभ के जे मोन होय से करय जाऊ।'

भैया तर्क देलथिन – 'अहां सभ कहैत छी 'मंडली भोज' करय लेल। हमरा कोनो आपत्ति नहि अछि। मुदा कनेक विचार करैत जाऊ जे मंडली भोजक लेल कतेक काज करय पड़त।'

– 'से हमरा सभ पर छोड़ि दियौक। कनिको दिक्कति नहि होमय देब। सभटा काज हम सभ करब।' एके संगे कयेक गोटा बाजि उठलाह।

– 'से तऽ ठीक छैक। अहां सभ मीलिकऽ काज उठा लेब। मुदा एखन वर्षाकाल छैक।

कखन वर्षा भऽ जायत नहि कहि सकैत छी। जौं वर्षा भऽ गेलैक तऽ ब्राह्मण सभ के कतय बैसेबनि, कतय खुयैबनि।' भैया आशंका व्यक्त कयलनि।

– 'से की कहैत छी तरहत्थी पर बैसा कऽ खुयैबनि।' दियाद सभक तरफ सँ देबा भैया बजलाह।

– 'तऽ ठीक छैक। करैत जाऊ 'मंडली भोज।' भैया घोषणा कऽ देलथिन। ppp

ÑÑÌèâÑÑ

होटलक ई छोट–छिन कक्षक परिवेश गंभीर भऽ गेल छल। एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा चलि रहल छल। रामआसरेजी कहि रहल छलाह आ हम सभ सुनि रहल छलहुं। सात वर्ष चलल आंदोलन। जाहि उद्देश्य सँ आंदोलन कयल गेल तकर छदाम भरि पूर्ति नहि भऽ सकल। एकर विपरीत आंदोलन सँ जे नुकसान भेल तकर भोग लोक एखनि धरि भोगि रहल छथि।

रामआसरेजी कहय लगलाह—

– 'जनैत छी, आंदोलन सँ एकटा संपूर्ण पीढ़ी बरबाद भऽ गेल। नहि तँ ई घऽर के रहल आ नहि घाट के। एकर शुरुआत भेलैक मंगलदै सँ। मंगलदै लोकसभा सीट सँ हीरालाल पटवारी चुनाव जीतल छलाह। किछुये समयक पश्चात हुनक मृत्यु भऽ गेलैन आ एहि सीट पर उप-चुनावक प्रक्रिया शुरू भऽ गेल। उप-चुनावक तैयारी मे देखल गेल जे मतदाता सूची मे अनेक नवीन मतदाताक नाम आबि गेल अछि। ई सभ के छथि? लोक सभ के संदेह भेलैक। लोक सभ मे ई बात घूमय लगलैक जे एहि तरहें जौं असम मे नवीन लोक सभक घुसपैठ होइत रहत तऽ असमक सिर्फ आर्थिक-सामाजिक स्थितियेटा नहि बल्कि सांस्कृतिक स्थिति सेहो बिगड़ि जायत। मंगलदैक सूत्र धय देखल गेल जे असमक प्रायः प्रत्येक क्षेत्र मे एहि तरहें नवीन आ अवांछित लोक सभक भीड़ जुटि गेल अछि।

बस, तकरा बाद जे भेलैक से सौंसे संसार जनलक। असम जरि उठल। सौंसे आगि जकां लागि गेलैक। लोक सभ 'बंगलादेशी भगाओ' आंदोलन मे जुटि गेलाह। धरना, बंद, प्रदर्शन होमय लागल। जनजीवन ठप भऽ गेल। धीरे-धीरे आंदोलन अपन उद्देश्य सँ भटकय लागल। समाज के भीतर विभाजन होमय लगलैक।

आंदोलनक सभ सँ अधलाह पक्ष छलैक सैकड़ों वर्ष सँ एकजुट भेल वृहत्तर समाजक खंड-खंड भेनाई। ओहि सात वर्ष मे समाज जे विभाजित भेल तकर नुकसान एखन धरि भुगतल जा रहल अछि। बीच-बीच मे सामुदायिक संघर्ष एकरे देन छैक।

वास्तव मे आंदोलनक भटकाव मे एकर 'नेतृत्व वर्ग' मे दूरदृष्टिक अभाव स्पष्ट रूप सँ देखल गेल। एहि बात पर चिंता नहि कयल गेल जे मंगलदै लोकसभा क्षेत्रक उप-चुनावक समय मे मतदाता सूची मे अवांछित लोक सभक नाम केना आयल। हुनक आगमनक की उद्देश्य अछि? एहि संदर्भ मे विभिन्न तथ्य की कहैत अछि? एहि सभ पर तर्क नहि कयल गेल। उद्विग्न जनता आ आंदोलनकारी सभक बीच किछु धुरंधर लोक पैसि गेलाह आ असमक कपार पर निष्ठुर इतिहासक भविष्य लिखि देलनि। आबि गेल 'बहिरागत' शब्द। व्याख्या भेल- असमक बाहर सँ आबय वाला 'बहिरागत'। एहि मे अन्य प्रांत सभक लोक सभ के मिला लेल गेल। यैह टा नहि बल्कि विभिन्न प्रांतक लोक सभक नामक संगे घृणास्पद विशेषण सेहो जोड़ल गेल। ई सभ भेल आंदोलनकारीक अपरिपक्व चिंतनक कारणे। नारा उठल-आवश्यक भेला पर दाढ़ी राखब, मुदा एक प्रांत विशेषक लोक सभ कें भगा कऽ दम लेब।'

रामआसरेजीक विश्लेषण गजब छलैन्ह।

– 'अपन सांस्कृतिक सम्मान के अपने हाथ सँ लुटैबाक दृष्टांत ई प्रांत छोड़ि आर कतहु नहि भेटत। एहि संदर्भ मे आंदोलनकारी जे किछु कयलनि तकरा पर विचार कयल जाओ—

समन्वयक नाम पर 'नामघऽर' मे नमाज पढ़बाक लेल आमंत्रित कयल गेल, मुदा मस्जिद मे 'नाम' गयबाक लेल कोनो उपक्रम करबाक साहस नहि कयलनि। आंदोलनक

शहीदक श्राद्ध मे नमाज पढ़नाई आ बाईबल पाठ अनिवार्य कयल गेल। शंकर-माधवक असम के शंकर अजान फकीरक असमक आख्यान देल गेल।

'आंदोलनकारी सभ मंगलदै लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र मे पैसल अवांछित लोक सभक चिंता छोड़ि देलनि आ 'बहिरागत' शब्दक आधार पर अपन स्वजन-बंधु सभ के अपना सँ अलग कऽ लेलनि। अन्य प्रांतक लोक सभ कें विदेशी कहैत नोटिस देल गेल। असली समस्या छलैक पड़ोसी राष्ट्रक घुसपैठिया, मुदा धर्म निरपेक्षताक कृत्रिम आवरण सँ फांसल लोकनि असली बात कहबाक साहस नहि कयलनि। कहल गेल जे ई असमियाक अस्तित्वक संघर्ष अछि, मुदा 'असमियाक' परिभाषा निश्चित नहि कयल गेल। पड़ोसी राष्ट्र सँ पैसल लोक सभ नव असमिया भऽ गेलाह आ आंदोलनकारी मुंह तकैत रहि गेलाह।'

एहि सभ कारणे आंदोलनकारी हताश भऽ गेलाह, जकर परिणति भेल 'असम समझौता' आ एकर पुण्य फल भेटलनि एकटा विशेष कानून-जे आंदोलनक जड़ि पर एखनो धरि कुरहरि चला रहल अछि।'

रामआसरेजी आंदोलन कथा-व्यथा कहैत थाकि गेल छलाह। माथ पर पसीनाक बूंद छलकि रहल छलैन। मुदा कथा खत्म नहि भेल छल। रामआसरेजी कहलनि—

– 'आंदोलनक व्यर्थताक कुपरिणाम थोड़बे दिन मे सामने आबि गेल। तखन आंदोलनकारी सभक शासन छलन्हि। सौंसे राज्य मे लूट-खसोट चलि रहल छलैक। भूमिगत संगठनक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे देखा रहल छल। ई एकटा अत्यंत भयावह समय छलैक।'

रामआसरेजी के थाकल देखि कहलियनि—

– 'रहय दियऊ रामआसरेजी। काल्हि भोर मे तऽ अपने सँ भेंट होयत। कथाक दोसर अध्याय भोर मे सुनायब।'

रामआसरेजी मानि गेलाह। हम हुनका सँ विदा लऽ अयलहुं, मुदा एतेक पैघ आंदोलनक व्यर्थता पर मोन मे अनेक प्रश्न उठि-खसि रहल छल। ppp

ÑÑ°·¯çÌãÑÑ

द्वादशाक कर्म छलैक, तैं ओसार-पसार सेहो नीक जकां लागल छलैक। पात्र लोकनि अपन-अपन कार्य मे व्यस्त छलाह आ बाबूजी-छोटका कका सेहो भीड़ल छलाह। आम सँ लदल गाछिक नीचा मे कर्म भऽ रहल छलैक आ कनिके हटि कय आगंतुक सभक बैसारक व्यवस्था छलैक। आई नवयुवकक संख्या कम छलैक। बेसी युवक भोजक काज मे लागल छथि। बुजुर्ग लोकनि आबि-आबि कय अपन आसन जमा रहल छलाह। विश्वनाथ कका सौंसे

गामक कका। बच्चो के कका आओर ओकर बापो के। कनिया-पुतरा सभ सेहो विश्वनाथ कका कहि कय संबोधन करैत छैन्ह आ हुनक सासुक लेल सेहो विश्वनाथ कका।

कोनो काज तिहार मे विश्वनाथ ककाक उपस्थिति अपरिहार्य छैन्ह। हुनक सलाह केओ टारि नहि सकैत अछि। ओना ओ बिना मंगने सलाह नहि देताह। सलाह देताह तऽ ओकर तार्किक परिणति धरि पाछां नहि छोड़ि सकैत छथि।

विश्वनाथ कका गंजी पहिरने आ कन्हा पर तौनी रखने घाट पर आबि बिचला कुर्सी पर बैसि रहलाह। एकटा युवक फुसफुसाइत बाजल, –'अध्यक्ष आबि गेलाह।'

ताबत चाह चारु कात घूमि रहल छल। मटकूरी मे पान छलैक। चाहक बाद पान आ तमाकू। फेर चाह। भिनसर आठ बजे सँ कै तोर चाह-पान चलि चुकल छलैक। आई दोसर गामक लोक सभ नहि छलाह। गौंवा आ पाहुन। पाहुनो मे अधिकांश स्नान-ध्यान मे व्यस्त छलाह। ठाकुरजी अटैची मे सँ झकझक करैत धोती आ गंजी निकाललनि आ कऽल पर स्नान करबाक लेल विदा भेलाह। मिसरजीक गाम टोल सँ सटले छैन्ह। ओ अपन गामे सँ तैयारी कऽ कय धड़फड़ाइत पहुंचलाह। हुनका जखन देखैत छी तऽ एक्सप्रेस ट्रेन मोन पड़ि जाइत अछि। जेना एक्सप्रेस ट्रेन धड़धड़ाइत आबि कऽ प्लेटफार्म पर लागि जाइत छैक तहिना मिसरजीक आविर्भाव होइत छैन्ह। अपन उपस्थिति दर्ज करेबाक बाद कोना सरकि जाइत छथि तकर पता केओ नहि लगा सकैत अछि। ठेहुन सँ चारि आंगुर नीचा धरि फहराइत धोती, नील सँ चितकबरा रंगल कमीज आ हाथ मे तौनी। आबि कय विश्वनाथ कका केर बगल मे कुर्सी पर उचकि कऽ बैसलाह। विश्वनाथ कका घूमि कऽ हुनका दिस तकलथिन तऽ ओ सकपका गेलाह। विश्वनाथ कका सांत्वना देलथिन, –'सकपकाइत कियैक छी पाहुन? कोनो हम अपनेक बाप-पित्ती के सदिखनि गारि पढ़ैत छी?'

विश्वनाथ ककाक बात सुनिते छौंड़ा सभ पिक्की पाड़य लागल। बुजुर्ग लोकनि मुस्कियाय लगलाह। ओम्हर बाबूजी आंखि तड़ेर कऽ छौंड़ा सभ दिस तकलथिन। छौंड़ा सभ सकपका गेल। मिसरजीक स्थिति तऽ विचित्र भऽ गेलनि। विश्वनाथ कका के विशेषाधिकार छलनि। ओ कोनो पाहुन के चाहे ओ कोनो खाड़ी मे कियैक नहि होथि, लपकि लैत छलथिन्ह। मिसरजी तऽ सद्य: बहनोईक खाड़ी मे छथिन।

– 'विश्वनाथ कका, रामगोपाल कका एखन धरि नहि अयलाह। काल्हुक बात सँ बिगड़ि तऽ नहि गेलाह?' एकटा युवक पुछलथिन।

– 'काल्हि की भेल रहनि जे बिगड़ल होइताह। काल्हि तऽ ओ वक्ता छलाह आ हम सभ श्रोता छलहुं। हमरे सभ कें कटघरा मे ठाढ़ कयलनि आ बिगड़ल छथि। नहि हौ। ओ अवस्स अओताह।' विश्वनाथ कका बात कें फरिछा देलथिन।

– 'आईयो की हम सभ श्रोता रहब?' वैह युवक फेर प्रश्न कयलथिन।

– 'हे तों बड्ड लबड़-लबड़ बाजय लगलह। बूढ़-पुरानक सभा मे तों वक्ता बनबह?

अरे रामगोपाल बाबू किछु कहैत छथिन तऽ ई हुनक अनुभव छैन्ह। तों कोन विदेश गेल छह। जनकपुर जायल तऽ पारे नहि लगैत छह।'

विश्वनाथ ककाक उपराग सुनि युवक गुम साधि गेल। ओम्हर रामगोपाल कका पहुंचि गेलाह।

मुन्ना कका बाजि उठलाह-'लियऽ, रामगोपाल कका सेहो आबि गेलाह।'

– 'तोरा की बुझाइत छलहु जे हम पड़ा जायब?' रामगोपाल कका मुन्ना कका कें प्रश्न कैलथिन। हुनक प्रश्न मे कनेक पित्त सेहो रहनि। मुन्ना कका काजक बहाना करैत ओहि ठाम सँ निकलि गेलाह।

– 'से गप्प नहि छैक रामगोपाल। ई धीया-पुता सभ तोहर काल्हुक गप्प सँ बड्ड प्रभावित छौक। हमरो नीक लागल। तैं तोहर प्रतीक्षा कऽ रहल छलहुं।'

– 'हमर गप्प साफ-सपाट होइत अछि। ककरो नीक लागय अथवा बेजाय।' रामगोपाल कका कुर्सी पर सम्हारि कय बैसलाह। चाहक गिलास हाथ मे आबि गेलनि। चाहक घोंट लैत देरी बाजि उठलाह-

– 'ऐं यौ.... ई चाह छैक की सरबत। चिन्नीक कोटा समाप्त भऽ गेलैक तऽ एकर की मतलब जे चिन्नी मे चाह धऽ कय पिबाक चाही। अहि पर जौं हम बाजब तऽ सभ कहब जे रामगोपाल बड्ड बजैत छथि।' उपस्थित जन समुदाय कें बुझा गेलनि जे रामगोपाल कें अपन भाषण शुरू करबाक लेल मुद्दा भेट गेलनि।

– 'कोनो चीजक अति होइत छैक। दालि मे जौं मात्रा सँ अधिक नून दय देबैक तऽ की नीक लागत? ओहिना चाह मे एकटा निश्चित मात्रा मे चिन्नी देबाक चाही। हम सभ शहर मे बेसी लाल चाह पिबैत छलहुं। ओ भेलैक असली चाह। दूध मिला देने तऽ चाहक स्वाद खत्म भय जाइत छैक। ओहू पर निश्चत मात्रा सँ अनेक गुन बेसी चिन्नी। कहू तऽ भला। अईं यौ भाई, शहर सँ गाम अयलाह अछि मायेक श्राद्ध करबाक लेल। अपने सभ ऐना चाह मे चिन्नी धऽ कय चिन्नीक श्राद्ध कियैक करैत छी। आ की बुझैत छियैक जे एकटा परदेशिया गाम आयल अछि तऽ जेना-तेना ओकरा चूइस ली!'

– 'देख रामगोपाल।' विश्वनाथ कका हस्तक्षेप कैलथिन। 'तौं जे प्रवासी आ गामक बीच जे विभेद सृष्टि करय चाहैत छह से ठीक नहि। चाह मे कनेक चिन्नी बेसी पड़ि गेने एहन कोन आफत खसि पड़लैक। ओहुना गामक लोक कनेक मिठ चाह पीबैत छथि।'

– 'हम विभेद सृष्टि करय नहि चाहैत छी, मुदा विभेद छैक। अही काज मे स्पष्ट झलकि रहल अछि। भाई सोचने छलथिन जे गामक चारू टोल लऽ कऽ काज करब। तऽ अहिना होयबाक छलैक नै। भाई परदेश मे रहैत छथि। एहिठाम हुनका दिक्कत छैन्ह। तैयो गामक मोह छलनि तऽ गाम अयलाह। आ एहि ठाम देखैत छी जे हुनक कंठ पर चढ़ि कऽ

'मंडली भोजक' सहमति लऽ लेल गेलनि।'

– 'जतय धरि मंडली भोजक बात छैक तऽ भाई अपने सहमति देलथिन। आ ओना जौं लोक सभ मंडली भोज करक लेल हुनका कहलथिन तऽ ओहि मे बेजाय की। सामर्थ्य तऽ हिनके नै काज अओतनि आ की गौंवा कय देतनि। कैंचा भाई खर्च करताह आ बेजाय तोरा लगैत छह।' विश्वनाथ कका कहलथिन।

– 'सैह देखियनु।' पाछां सँ देबा भैया बजलाह।

– 'हे तों चुप रह। तोंही छहौक नै जे कहलहौक मंडली भोज नहि करब तऽ हम सभ भोज मे काज नहि करब।'

– 'हे आब हमरा पर लांछन नहि लगाऊ रामगोपाल बाबू। हमहुं उकटि देब। अपनेहुं तऽ माय केर श्राद्ध कैलहुं। कयकटा गौंवा जनैत अछि। हमर काकी बड्ड धर्मात्मा छलथिन, हुनक यज्ञक लेल जौं हम सभ भाई के कहबे कैलयनि तऽ अहां कें बेजाय कियैक लगैत अछि?'

परिस्थिति क्रमशः उत्तप्त भऽ रहल छलैक।

रामगोपाल बाबू तमतमा कऽ बजलथिन –

– 'तौं की उकटबह। तोरा सभ-सन लोक सभ सँ उल्टी छोड़ि की उम्मीद कऽ सकैत छी। हम अपन मायक श्राद्ध गया मे कैलहुं। तोरा सभ कें नहि चटौलियऊ तऽ की हमर माय कें पैठ नहि भेलनि। भाई तऽ एहिठाम आबि तोरा सभ के शिकंजा मे फंसि गेलथुन।'

विश्वनाथ कका कें नहि रहल गेलनि। ओ हस्तक्षेप कैलथिन –

– 'देख रामगोपाल, उकटा-पैंची नीक गप्प नहि थिक। एहन बहसक कोनो अंत नहि छैक। ओना तोहर कहब जे गौंवा आ प्रवासी के बीच एकरसता नहि छैक तऽ सभ ठाम ई बात नहि छैक। हमरा देखल अछि जे नौकरीपरांत बाबू साहब गाम अयलाह तऽ बड्ड दीन-हीन दशा मे छलाह आ गौंवे सभ हुनका सम्हारलकनि। कतहु-कतहु गौंवा आ प्रवासी मे संघर्ष होइत छैक।'

– 'हमहुं तऽ सैह कहैत चाहैत छलहुं, मुदा बीच मे देबा केहन नीम-सन बात उगलि गेल।'

– 'नीम-सन बात ओ नहि उगलत तऽ के उगलत। सभटा कयल तऽ ओकरे छैक। कहुना हिनका सभ के मंडली भोज मे फंसेबाक छलनि, ताहि मे ओ सफल भेलाह।' श्रवणजी के नहि रहल गेलनि तऽ बजलाह।

कनेक नर्म होइत रामगोपाल बाबू बजलाह– 'हमर कहब छल जे ई दसगर्दा काज छैक। सभ गोटे मीलि कऽ क रहल छी तऽ नीक बेजाय देखबाक जिम्मेवारी सभक छैक। एना पानि मे चिन्नी हेरा देनाई जिम्मेवारी नहि छैक। काल्हि भोजक समय मे चिन्नी घटि जेतैक तऽ गामक हँसी हैत।'

हंसी-ठट्ठा, गर्म-नर्म बात होइत सांझ पड़य लगलैक। ओम्हर कर्म सेहो संपन्नता पर छलैक। सभा विसर्जन भेल। लोक सभ भोजक दिस विदा भेलाह। ppp

ÑÑÕç•eaê ÑÑ

'**हमरा** ओ तारीख मोन नहि अछि, मुदा ओहि दिनक भयावहता एखनो मोन सँ नहि मिटा रहल अछि। संभवतः हमर जीवनक सभ सँ बेसि आ आजीवन स्मरण रहय वाला भयावह दिन छल। ओहि दिनक स्मरण करिते सौंसे देह मे झुरझुरी उठि जाइत अछि।' ई कहि रामआसरेजी हमरा दिस ताकय लगलाह। हुनक आंखि मे विशेष तरहक व्याकुलता आ असहाय प्रगट देखा रहल छल।

हम पुछलियनि – ‘ओहि दिन की विशेष छलैक यौ रामआसरेजी।’

रामआसरेजी शुरू भऽ गेलाह—

– ‘दिन कुनू विशेष नहि छलैक आ नहि कुनू बातक पहिने सँ अपेक्षा छलैक। हम अपन दोकानक सौदा लयबाक लेल गुवाहाटी आयल छलहुं। सौदा नहि भेटल, कियैक तऽ ओहि दिन बंदी छलैक। पता चलल जे भूमिगत उग्रवादी संगठनक अत्याचारक विरोध मे बंद कयल गेल छैक। बेस, हमहुं ओहि दिन होटले मे बितौलहुं। सांझ मे मोन भेल कनेक टहलक चाही। तऽ तैयार भऽ कऽ बाहर निकललहुं। बाट पर गाड़ी-घोड़ा नहि छलैक। किछु स्कूटर-मोटर साइकिल एम्हर सँ ओम्हर कऽ रहल छल। मुदा लोक सभ खूब छलैक। दोकानक पाट बंद छलैक। पान-बीड़ीक खोमचा वाला सभ एकटा पट खोलि बेचि रहल छल। चाट-पुचका सेहो बिका रहल छलैक। प्राय: एक घंटा धरि घूमलहुं। अन्हार भऽ गेलैक। बाट परक बिजली जड़ि गेलैक। जाड़क समय छलैक। कनेक-कनेक हवा बहि रहल छलैक, ताहि सँ बीच-बीच मे देह सिहरय लगैत छल। फुटपाथ पर एकटा चाहक खोमचा लग ठाढ़ भऽ कऽ चाह पिलहुं। चाह खत्म भेल आ गिलास राखि चाहक कैंचा देबाक उपक्रम करय लगलहुं कि बुझायल जेना सौंसे इलाका के सांप सूंघि गेल हुये। चाह वाला पाई की ताकत, गिलासो सभ पर नजरि नहि देलक आ खोमचा बन्न कऽ गायब भऽ गेल। लोक सभ जकरा जेम्हर परि लगलैक परा गेल। हम अवाक रहि गेलहुं।

सामने सँ एक गोटा कें पराइति देखलहुं तऽ ओकर बांहि पकड़ि पुछलियैक।

– ‘क्या बात है? क्या हुआ है?’

ओ व्यक्ति हमर प्रश्नक तऽ जवाब देनाई दूर, हमरा दिस तकबो नहि कयलक आ अपन संपूर्ण ताकत लगा हमर हाथ सँ बांहि छोड़ेलक आ क्षण मे गायब भऽ गेल। हम अपन होटल सँ दूर आबि गेल छलहुं। मुख्य बाट श्मशान भऽ गेल छलैक। कोना होटल लौटू? आखिर की बात भऽ गेलैक जे लोक सभ एतेक बदहवास छथि? हमरा किछु नहि सूझि रहल छल।’

हम सभ रामआसरेजीक मुंह दिस कौतुहल सँ ताकि रहल छलहुं।

– ‘की भेल छलैक?’ हम पुछलियनि।

– ‘से तत्काल हमरो पता नहि लागल। हमरा समक्ष जरूरी समस्या छल होटल लौटबाक। बाट जनशून्य छलैक। कखनो-कखनो पुलिसक जीप हवा जकां निकलि रहल छल। चुप्पी पसरल छलैक। एहन चुप्पी जे बतासक सरसराहट के कान स्पष्ट बुझि रहल छल। कर्फ्यू नहि छलैक, मुदा स्थिति कर्फ्यू सँ भिन्न नहि बुझा रहल छल। मोन बड्ड आशंकित भऽ गेल। की करु? कतय जाऊ।

तखन एकटा रिक्शा के क्षमता सँ अधिक वेग सँ अबैत देखलहुं। हमरा बुझायल जे इशारा सँ ठहरय लेल कहबैक तऽ नहि रुकत। तैं बाटक बीच मे आबि गेलहुं। पहिने तऽ रिक्शा

वाला सेहो विचारने छल जे हमरा कतिया कऽ निकलि जायब। मुदा ठीक सामने पड़ति देखि ओ अकबका गेल आ कसि कऽ ब्रेक मारलक। ब्रेक मारला सँ बुझायल जेना रिक्शा बाम दिस उनटि जायत। खैर, कहुना रिक्शा संभारलक आ हमरा अनुरोध कयला सँ पहिने बाजि उठल—

– ‘बाबू हमरा छोड़ि दियऽ। हम अपन घऽर जाइत छी।’

– ‘किम्हर जाइत छह?’

– ‘पलटन बाजार।’

– ‘तऽ हमरो लऽ चलह।’

– ‘जायब तऽ मुदा गलिये-गलिये।’

– ‘मंजूर अछि।’ ई कहि हम रिक्शा पर बैसि रहलहुं आ रिक्शा वाला अपन सभ शक्ति खर्च करैत अत्यंत वेग सँ गलिये-गलिये पलटन बाजार हमरा होटलक आगां धरि पहुंचा देलक। जान मे जान आयल। रिक्शा वाला के अपेक्षा से बेसि मजदूरी दऽ विदा कयलहुं। ओ भाड़ा दिस तकबो नहि कैलक आ रुपया जेबी मे ठूंसि विदा भऽ गेल।

एम्हर होटलक प्रवेश द्वार बन्न छलैक। बड़का भारी मुश्किल। बाहर मे केओ नहि छल। की कयल जाओ। सोचैत विचारैत केवाड़ के खड़खड़ौलहुं कि केवाड़ भक्क सँ फुजि गेल। एकटा वेटर छल। हमरा चिन्हैत छल। संभवत: ओ केवाड़क भूर सँ सेहो हमरा देखि नेने छल। केवाड़ बजबिते ओ खोलि देलक। हम भीतर पैसलहुं आ फेर केवाड़ भड़ाक ध्वनिक संगे बन्न भऽ गेल।

होटलक भीतर लोक भरल छलैक। सभ के देखलहुं कनफुसकी गप्प करैत। गजगज करैत कक्ष मे वेटर चाह लऽ कऽ आबि-जा रहल छल। हम सोझे काउंटर पर गेलहुं। होटल मालिक चौधरीजी अपने काउंटर पर बैसल छलाह। हमरा देखि बैसक संकेत कैलनि। संभवत: हमर उद्विग्नता के बुझि गेल छलाह। कहलनि–

– *‘अनर्थ हो गया। भूमिगत संगठन के लोगों ने वाणिज्य संगठन के मुखिया को गोली मार दी है। टीवी मे खबर आई है।’*

– ‘अच्छा।’ हमरा मुंह सँ निकलल।

बेसि गप्प नहि भेल। मुदा स्थितिक भयावहता परिलक्षित भऽ रहल छल। ओहि दिन केंद्र सँ कयेकटा जिम्मेवार नेता गुवाहाटी मे छलाह। तैयो एहेन घटना भऽ गेलैक। – ‘पुलिस की करैत अछि?’ हमरा मुंह सँ अचानक निकलि गेल।

चौधरीजी कहलनि – *‘पुलिस क्या करेगी। वह खुद ही भयभीत है। भूमिगत वालों के पास अत्याधुनिक हथियार है। घटना घटने के एक घंटा बाद पुलिस वहां पहुंची थी।’*

हम अपन कमरा मे पहुंचलहुं। मोन कनेक शांत भेल। स्थिति बड्ड जटिल भऽ गेल छलैक। एहि ठाम सँ कोना निकलब से समस्या। सौदा तऽ नहिये भेल। कहुना अपन स्थान

पर पहुंच जाई। ओहि ठाम सेहो खबरि गेल हेतैक। घऽरक लोक सभ चिंतित होइताह।

भोजन नीक नहि लागल। कहुना पेट भरलहुं आ सूतक चेष्टा करय लगलहुं, मुदा आंखिक निन्न परा गेल छल। भविष्यक चिंता गंभीर भऽ गेल। सात वर्षक आंदोलन सँ कहुना उबरल छलहुं। स्थिति ओहू सँ भयावह होमय जा रहल छैक। ppp

ÑÑÌñ çlaÑÑ

– ‘**आई** कोन गाम खायत ओ मुन्ना?’

माथ पर पगड़ी बन्हने, हाथ मे भरिगर छिट्टा नेने भोला कका दरवज्जा पर डेग धरिते पुछलथिन। मुन्ना कका कुर्रूर कऽ रहल छलाह। मुड़ी ऊपर उठा कय देखलथिन्ह आ बजलनि–

– ‘गोर लगैत छी भोला भैया। आई रूपौली खायत।’

– ‘विज्झो भेल छैक की नहि।’

– ‘ई ड्यूटी देबा भाई आ संतोष के छैन्ह। हकार, निमंत्रण आ विज्झो तीनो यैह दुनू गोटे करा रहल छथि। भिनसरे निकलल होइताह – विज्झोक लेल।’

– एम्हर सभ व्यवस्था ठीक–ठाक छैक की नै हो?’

– ‘भगवानक कृपा सँ एखन धरि सभ ठीके–ठाक छैक। आब भोज ठीके–ठाक निपटि जाइक तखन नै।’

– ‘से की कहैत छह?’

– ‘से की अपने नहि देखलियई। आठे दिन तऽ भेलइयै। सुंदरलाल भाई एकादशी यज्ञक भोज कयने छलाह। यज्ञ संपन्न होमय धरि केहन सुंदर छलैक। आमंत्रित लोकनि आबि गेल रहथि। बीड़ा पर बैसलाह। पात, जलक उपरांत चूड़ा, दही, चिन्नी, अचार परसल गेल। सुंदरलाल भाई के माय आमंत्रिक ब्राह्मण सभ के कर जोड़ि भोजन करबाक आग्रह कयलथिन्ह आ ओम्हर पानि झमकय लगलैक। पात पर सँ दही बहय लागल। जिनका पड़ि लगलैन से चटपट दही सोंटलनि, जिनका पड़ि नहि लगलैन आ आकाशे दिस तकैत रहि गेलाह, तिनकर पात वर्षाक पानि सँ धोआ गेलनि।’ मुन्ना ककाक गप्प सुनि भोला कका ठहाका पारि कय हँसय लगलाह।

– ‘हौ.... ओहि पांति मे हमहुं बैसल रही। वर्षा शुरू होइत देरी हम पात हाथ पर उठा लेने रही, मुदा सुंदर भाईक समधि चानन–टीका कय खूब सजि–संवरि कय बैसल छलाह। थाल सनल पानिक रेला एलैक आ हुनक धोती के तऽ रंगिये देलक, पात आ ओहि परक सामग्री कें सेहो अपना सन कऽ लेलक। हम एक बेर पात दिस आ एक बेर समधि केर मुखमंडल दिस तकैत छलहुं। हँसैत–हँसैत पेट मे मरोड़ उठय लागल।’

भोला कका जोर–जोर सँ हँसय लगलाह। हँसैत–हँसैत मुंह लाल भऽ गेलनि। हुनक ई ठहाका आधुनिक युग मे पुरातनपंथी व्यवस्था मे ओझरायल लोक सभक प्रति सेहो उपहास छलैन। रामगोपाल बाबूक आक्रोश लकीरक–फकीर बनल मैथिल समाजक पुरातनपंथी आ अव्यवहारिक सोचक प्रति छलैन। यद्यपि ओ अपन बात लोक सभ कें बुझाबय चाहैत छथिन, मुदा हुनक प्रयास सफल होमय मे देबा भाई सन–सन अनेक लोक बाधक बनि जाइत छथि।

मुन्ना कका भोला कका कें कहलथिन जे कनेक आंगन सँ भऽ अबियऊ। बात–व्यवस्था सभ बूझि पड़त। एम्हर भोला कका अंगना दिस विदा भेलाह आ ओम्हर मुन्ना कका महीष के खुआबक लेल बथान दिस डेग बढ़ौलनि।

भोजक तैयारी छलैक। सतना बीड़ी ढेर बनोने छल। पाहुन सभ एम्हर–सँ–ओम्हर कऽ रहल छलाह। धिया–पुता सभ उत्सवक आनंद मे मग्न छल। जेनरेटर वाला अन्हार होमक प्रतीक्षा मे छल। आमंत्रित गाम रूपौलीक लोक सभक प्रतीक्षा मे घरबैया आ गौंवा सभ दक्षिण दिस आंखि टिकौने छलाह। तखने एक हुंज लोक हाथ मे लोटा नेने खेते–खेते अबैत नजरि

पड़लैन। आहिरो बा.... ई तऽ बलिया वाला सभ छैक। हिनका सभ के तऽ आई निमंत्रण नहि छलैन। संभवत: ई लोकनि कोनो दोसर गाम जाइत छथि।

ओम्हर रूपौली वाला सभ के कोनो पता नहि छलैक आ एम्हर बलिया वाला सभ दुनू हाथ भंजने पेट सोहरबति धमाधम दरवज्जा पर पहुंचि गेलाह।

– 'कतऽ घऽर अछि?'

–'बलिया।'

– 'आई अपने गामक विज्झो छलैक?'

– 'अपने कें ईहो पता नहि अछि?'

पूछय वालाक मुंह केहन दनि भऽ गेलैन। एम्हर घरबैया सभ कें ठकविद्दुर लागि गेलनि। बाबूजी के खबरि गेलनि तऽ ओ अलगे पित्ते अग्नि शर्मा भऽ गेलाह।

सभ के मुंह पर एकैटा प्रश्न छलैक। ई कोना भेलैक। के एहन काज कयलक। लोक सभ देबा भैया आ संतोष कें ताकय लगलाह। व्यवस्था एक गामक छैक आ खयतैक कोना दू गाम।

विश्वनाथ कका, रामगोपाल कका, भोला कका सभ जुमलाह।

– 'की हौ, की होयबाक चाही।'

– 'हेतैक की, जिनका विज्झो कयल गेल छनि से खयताह!

– 'आखिर विज्झो कोन गामक भेल छलैक?'

– 'देबा आबय तखन नै भेद फुजत।'

घरबैया सभ मे फुसुर–फुसुर होइत देखि बलिया वाला सभ सेहो चकित छलाह। कतय बैसेबाक, भोजन करैबाक गप्प छलैक आ अहिठाम लोक सभ एक दोसरक मुंह ताकि रहल छलाह। हुनका सभ कें नहि रहल गेलनि तऽ तीन गोटे आगां अयलाह आ विश्वनाथ कका के पुछलथिन –

– 'की यौ.....। भोजक व्यवस्था नहि छैक की?'

– 'व्यवस्था तऽ छैक मुदा एकटा गप्प उपस्थित भऽ गेल अछि। नीक भेल जे अपने आगां आबि कऽ पूछि रहल छी तऽ हमरो एकटा प्रश्न अछि जौं अपने अन्यथा नहि ली तऽ।'

– 'पूछू....पूछू।'

– 'हे यौ, आई की बलिया के विज्झो भेल छलैक?'

– 'अपने तऽ गजब बात कय रहल छी। बलिया वाला की एहन मूर्ख छथि जे बिना विज्झो के अपनेक दलान पर आबि जेताह।'

– 'से नहि। हमरा तऽ पता छल जे आई रूपौली गाम के विज्झो भेल छैक। देखियो, वैह रूपौलीक लोक सभ आबि रहल छथि।'

– 'तऽ अपने हमरा सँ कियैक पुछैत छी, जे लोकनि विज्झो कराबय गेल छलथि तिनका बजायल जाओ।'

– 'सैह तऽ मुश्किल छैक।'

आब आपस मे खूब घमर्थन होमय लागल। एक–एक टा व्यक्ति दोसर व्यक्ति सँ पूछताछ, नोंक–झोंक मे व्यस्त भय गेलाह। अई गप्प–सप्प मे रूपौली वाला सेहो ओझराय लगलाह। विज्झो कराबय वाला दुनू गोटे गायब छलाह। कयेकटा छौंड़ा एहि कोन सँ ओहि कोन धरि दौड़ि गेल। देबा भैया आ संतोष दुनूक कोनो अता–पता नहि छल। किनको साहस नहि होइत छलैन जे बलिया वाला सँ गप्प कय कऽ मामला फरिछा लेल जाओ।

अंत मे विश्वनाथे कका आगां बढ़लथि। बलिया वाला मे से दू–तीन टा बुजुर्ग के बजाकय समझौलथिन जे हमरा सभ कें पता अछि जे आई रूपौली खायत। बलियाक विज्झो नहि भेल छैक।

– 'तऽ अपने विज्झो कराबय वाला कें कियैक नहि बजबैत छी?'

– 'ओ दुनू गोटे उपलब्ध नहि छथि। मुदा रूपौली वाला सभ के देखिते छियैन। ओ सभ आबि गेल छथि। आब की कयल जाओऽऽ!

– 'देखू आई हमरा सभक विज्झो छल। अपने सभ कहैत छी जे विज्झो नहि छल तऽ हम सभ लौटि जायब। संगहि संग ईहो नोट कऽ लियऽ जे आब हम सभ कोनो पाबनि–तिहार मे एहि गाम मे पएर नहि धरब।'

– 'से नहि कहियो। व्यवस्था छैक। जौं अपने सभ भोजन करब तऽ हमहुं सभ तैयार छी।'

– 'नैयोऽऽ अपने की कहैत छी। ई हमर गामक अपमान अछि। विज्झो कराकय आ कहैत छी जे विज्झो नहि अछि, भोजन करब तऽ कऽ लियऽ। हम सभ भुक्खर नहि छी आ पेट पर तौनी नहि बान्हने छी।'

– 'अपने जुनि पिताऊ। समस्याक समाधान अपने करियौक, अपने बुजुर्ग छी। अपने जे कहब से मानि लेब।' विश्वनाथ कका विनम्रताक दोपटा सौंसे देह पर ओढ़ि लेलनि।

– 'आब हम की कहू। ठीक छैक जौं अपने कहैत छी जे विज्झो नहि भेल छल तऽ हम सभ जाइत छी। जहिया विज्झो हेतैक तहिया आयब।

– 'चलै....चल हौ।' बलियाक बुजुर्ग अपन ग्रामीण सभ के कहलथिन आ सभ गोटे ससरति गेलाह।

बलिया वाला सभ कें गेलाक पश्चात रूपौली वाला खूब डटि कय भोजन कयलनि।

मुदा घरबैया सभ चिंता मे पड़ि गेलाह। आखिर ई कोना भऽ गेलैक। राति 11 बजे दरवज्जा पर कतेको लोक सभ जुटल छलाह। गप्प-सप्प चलिये रहल छलैक कि देबा भैया के आविर्भाव भेलैन। सभ आंखि हुनके देखय लागल। देबा भैया विश्वनाथ कका लऽग बैसलाह। रामगोपाल कका अहि बैसार मे उपस्थित नहि छलाह। दस बजेक बाद ओ जागि नहि सकैत छथि। विश्वनाथ कका देबा भैया सँ पुछलथिन-जे, आई ककर विज्झो छलैक। देबा भैया चट उत्तर देलथिन-'जे गाम भोज खेलक तकरे विज्झो छलैक।'

-'तहन बलिया वाला सभ कियैक आयल छलाह।'

-'से हम की जानूं।'

विश्वनाथ ककाक स्वर कनेक गर्म भऽ गेलैन।

-'अईं यौ, तों कहैत छह जे 'हम की जानूं।' सौंसे बलिया गाम की पागल छैक जे बिना बजौने तोरा ओतय चलि अयतौक। नोत तों देलहक तऽ तोरे जानब पड़तौक। संतोष कतय अछि, बजाबह।'

-'हम दुनू गोटे सिमरी गेल छलहुं। संतोष भोजन करऽ गेलाह।'

-'हे यौ, किनको पठबियौन-संतोष के बजा अनताह!

दू गोटे गामक दक्षिण विदा भेलाह।

एम्हर आरो कयेक गोटे देबा भैया सँ पूछय लगलथिन। जवाब मे देबा भैया आब गरमा रहल छलाह।

-'तोरा सभ कें हमरा पर विश्वास नहि छह तऽ काल्हि सँ सम्हार अपन काज।'

-'से नहि होयत। ई भार अहांक अछि। बैसार मे तऽ अहीं बेसी तमकैत रही जे मंडली नहि करब तऽ जे मोन हुये से करु।'

-'तकर की मतलब छैक। सभटा काज की हमरे पर छैक।'

-'अहांक पर जे जिम्मेदारी देल गेल अछि तकरा तऽ नीक जकां करु।' मुन्ना कका बजलथि।

-'हेरौ, बेसी टपर-टपर करबें तऽ राख लऽ कय जीभ खेंच लेबऊ।' देबा भैया गंजी हाथ मे नेने ठाढ़ भऽ गेलाह।

तखने संतोष सेहो चिकरति उपस्थित भेलाह।

-'अईं यौ, हम अपन तेल डाहि कऽ घऽरे-घऽरे जाकय न्योत-हकार दै छी आ हमही कटघरा मे ठाढ़ होऊ।'

विश्वनाथ कका हस्तक्षेप कयलथिन-'से बात नहि छैक। जौं तों दुनू गोटे ठीक छह तऽ काल्हि आरो दू चारि गोटे लऽ कय बलिया जा आ फरिछबैत-कल्हुका विज्झो करबैत

आबह।'

मुन्ना कका के बुझौलनि जे 'कयैक गोटा' मे हुनको नाम आबि सकैत छैन्ह, तऽ चट कहलथिन्ह-'काल्हि हमरा दूध नपाबय लेल जायक अछि। हम बलिया नहि जायब। ओ सभ एखन गरमायल होइताह। जौं मारि बजरि जाइक तऽ।' बैसार मे खूब चख-चख भेलैक आ अंत मे निश्चय कयल गेल जे देबा भैया आ संतोष काल्हि गामक अन्य चारि गोटेक संग बलिया जेताह आ फरिछा कऽ आओताह। काल्हि बलिया के विज्झो सेहो होइक।

एम्हर मुन्ना कका माइरक चर्चा कयलथिन आ ओम्हर बिचला टोल मे गर्द उठि गेल। झाजी मुखिया के सोंटा सँ अधमौगति कऽ देलथिन। बैसार छोड़ि सभ विदा भेलाह-बिचला टोल। ppp

ÑÑæã´ÇÌäÑÑ

रामआसरेजी जखन बाजय लगैत छथि तऽ एक्सप्रेस ट्रेन भऽ जायत छथि। हुनक स्मृति मे कतेक रास बात अछि तकर अंदाज लगौनाई कठिन। जखन ओ बजैत छथि तऽ ओहि समयक छवि प्रत्यक्ष उपस्थित कए दैत छथि। ओहि दिनक गुवाहाटीक थरथराइत छवि हमर मानस पटल पर अंकित भऽ गेल। गुवाहाटीक छवि राज्यभरक स्थितिक बखान कऽ रहल छल।

भोरुका बस चलि गेलैन। रामआसरेजी जानि कऽ बस छोड़ि देलनि। कहलनि ई

सत्संग फेर नहि जानि कहिया भेटत। जाहि बच्चा के मूड़न भेल छलैक तकरा लेल धन्न सन। बस सांझ पकड़ी वा भिनसर। तिनसुकिया सँ आर अन्य जे कियो आयल छलाह ओ सभ भोरे बस पकड़ि लेलनि। रामआसरेजी कहलनि जे संझुका ट्रेन पकड़ब।

हम कहलियनि – 'भरि दिनक समय अछि। हमरो आई साप्ताहिक अवकाश अछि। तऽ आई अपने गुवाहाटीक ओहि दिनक पश्चातक घटना कहि दियऽ, हमरो मोन चैन रहत।'

रामआसरेजी शुरू भऽ गेलाह—

– 'दोसर दिन हम दस बजे तक होटल मे सूतल रहलहुं। बेयरा केवाड़ ठकठका कऽ हमरा जगौलक। ओकरा चाह लाबक लेल कहलियैक आ अखबार देखय लगलहुं। कल्हुका घटनाक्रमक सचित्र विवरण छपल छलैक। चित्र मे एकटा कार देखा रहल छलैक। कारक अगिला शीशा ड्राइवरक सीट दिस सँ फूटल छलैक। मृतक ड्राइवरक सीट पर छलाह, अर्थात् वैह गाड़ी चला रहल छलाह।

खबरि मे लिखल छलैक जे व्यापारी संघक पदाधिकारी अपन कार सँ अपन घऽर जा रहल छलाह। दसे हाथ पर घऽर छलैन, मुदा भूमिगत संगठनक किछु गोटे हुनका घेरि लेलकनि आ गोली चला देलकनि। घटनास्थल पर हुनक मृत्यु भऽ गेलनि। हत्याक संबंध मे सूचना भेटलाक दू घंटा बाद पुलिस पहुंचल आ जांच आरंभ भेल। भूमिगत संगठनक लोक सभ हत्या कयलाक पश्चात कतऽ गेलाह किनको खबरि नहि छनि।'

– 'मृतक मुखर व्यक्ति छलाह। नामी वकील सेहो। हिनक हत्याक कारण कें सेहो स्पष्ट कयल गेल छलैक। भूमिगत संगठनक नाम सँ प्रकाशित खबरि मे कहल गेल छलैक जे भूमिगत संगठनक बात नहि मानबाक कारणे हिनक हत्या कयल गेल।'

– 'अखबार मे एहि घटना पर कोनो संगठनक कुनू प्रतिक्रिया नहि छल। यद्यपि अखबार मे ई लिखल छलैक जे मृतक लोकप्रिय, मुखर आ समाजसेवी छलाह। मुदा एहेन व्यक्तित्वक हत्या पर कुनू संगठनक कुनू प्रतिक्रिया नहि भेनाई महान अचरजक गप्प छलैक। स्थितिक विश्लेषण कयलाक पश्चात एकर खुलासा भेल। वास्तव मे ई महान विभूति अपन मुखरताक चलते मारल गेलाह। भूमिगत संगठनक सदस्य सभ सौंसे प्रदेश मे धन उगाही अभियान आरंभ कयने छल। ऊपरी असम के कयेकटा शहर मे व्यापारी सभ के नोटिस देल गेल छलैक। एकटा प्रमुख शहर मे तऽ दिने-देखारे ओ सभ व्यापारी सभ के पकड़ि कऽ अपन गुप्त ठिकाना पर लऽ जाइत छलाह आ मांगल राशि भेटलाक पश्चात हुनका मुक्त कऽ दैत छलन्हि। एहि अराजकताक विरोध भऽ रहल छलैक। ओहि शहर के कयेकटा संगठन एकर प्रतिवाद मे हड़ताल कयलक। गुवाहाटीक नेताजी सेहो मुखर भऽ गेलाह। ओहि दिन अपन संगठनक बैसार बजौलनि। बैसार शुरू भेला सँ पूर्वहिं हुनका एक चिट्ठी भेटि गेलनि। चिट्ठी मे लिखल छलैक जे जौं अपने हड़तालक समर्थन करब तऽ अपने कें मृत्युदंड लिखल अछि। नेताजी चिट्ठी मोड़ि कऽ जेबी मे धऽ लेलाह। ककरो नहि कहलथिन आ बैसार मे हड़तालक

समर्थन मे प्रस्ताव पारित करा लेलनि।

बैसार समाप्त भेलाक पश्चात सभ गोटे अपन-अपन घऽर गेलाह। प्रचार सचिव प्रेसक लेल विज्ञप्ति तैयारी करबा मे व्यस्त भऽ गेलाह आ नेताजी अपन घऽरक बाट लेलाह, मुदा घऽर नहि पहुंचि सकलाह।'

– 'दोसर दिन की हड़ताल भेलैक?' हम पुछलियनि।

– 'कोना होइतैक। प्रेस विज्ञप्ति बनाबय वाला प्रचार सचिव के जखन खबरि भेटलनि जे हुनक अध्यक्ष मारल गेलाह तऽ ओ तेना गायब भेलाह जेना गदहाक माथ सँ सिंघ। बैसारक खबरि प्रेस मे नहि जा सकल आ ओम्हर अध्यक्ष मारल गेलाह। दोसर दिन शहर खुजल छलैक, मुदा भीतरे-भीतरे डर सँ थरथरा रहल छल। थरथराइत शहर मे हम भरि दिन होटलक कमरा मे छलहुं। होटलक मालिक चौधरीजी हमर कमरा मे आबि हमरा धिरधिरा देलनि – *'कमरा से मत निकलियेगा। स्थिति विस्फोटक है।'*

शहर सँ छनि-छनि कऽ जे खबरि आबि रहल छलैक ताहि सँ डर बढ़ि रहल छल। एक गोटे खबरि आनलाह जे बाजार मे लूटपाट शुरू भऽ गेल छैक। पुलिस कतहु नहि छैक। एक गोटे खबरि आनलाह जे एक ठाम नाली सँ चारि टा शव बहार भेलैक अछि। रोम ठाढ़ करय वाला खबरि सभ। की करु? कतऽ जाऊ? गाम परक स्थिति की छैक, के जाने? ओकरो सभ के हमर चिंता होइत हेतैक। एतेक दिन मे एहेन खराब कहियो नहि लागल।'

रामआसरेजी के चुप देखि पुछलियनि – 'एहेन स्थिति अचानक कोना आबि गेलैक। सरकार आ प्रशासन की कऽ रहल छलैक। एहेन अराजकताक अर्थ होइत छैक नागरिक प्रशासनक व्यर्थता।'

– 'से सभटा किस्सा कहब। पहिने चाह पीबू।'

आ हम सभ गोटे चाहक गिलास उठा लेलहुं। ppp

ÑÀñ çlaÑÑ

गामक चारु टोल भरि राति जागल रहल। आशंका सँ ग्रस्त। कखन पुलिस आबि जायत आ ककरा पकड़ि लेत। जनप्रतिनिधि के मारब-पीटब बड़का अपराध छैक। झाजी मुखिया के पीटि देलथिन। आब जे हेतैक से सौंसे गाम के भुगतय पड़तैक। ओना मुखिया-बिडियो के मारब-पीटब के ई पहिल घटना नहि छैक। गाम-घर मे एहि तरहक घटना कें बढ़ा-चढ़ा कऽ 'वीररस' मे घोरि कऽ कहल सुनल जाइ छैक। फलाना बाबू बिडियो के चेम्बर मे पैसि कऽ जुता सँ पिटलखिन। कालेजिया छौंड़ा सभ टी.टी. के ट्रेन सँ उतारि कऽ खूब धोलक। मुखिया

कतेक बेर मारि खयलनि तकर कोनो हिसाब नहि। अहि सभ घटना मे कखनो कोनो गाम पर आकाश टूटि कऽ नहि खसल। तथापि झाजीक कांड सँ सौंसे गाम आशंकाग्रस्त छल। केओ कहैत छलैक जे मुखिया बड्ड पितायल छैक। ओ अपन लोक सभ के जमा कऽ रहल अछि। केओ कहैत छलैक मुखिया थाना जा कऽ केस कऽ देलकैक, आब पुलिस जांच करक लेल गाम मे औतेक। किनको आभास छलनि जे मुखिया रातिये मे बदला सधाओत, मुदा झाजी सेहो तैयारी मे छथि। की हेतैक-के जाने। झाजीक सासुर पक्षक लोक सभक अपन विभिन्न प्रतिक्रिया छलैन्ह। किनको कहब छलैन्ह-कुटुम्ब भऽ कय एहेन गुंदागर्दी नहि करबाक चाही। किनको कहब छलैन्ह जे मुखिया के पिटनाई जरूरी छलैक। ओ तेहेन काजे केनय छलैक जकरा लेल ओकरा सबक सिखेनाई जरूरी छलैक। सासु माथ-कपार पीटि रहल छलीह। बेटी कें गुमसुम देखि हुनकर करेज फाटि रहल छलनि। ओना ससुरक मुंह मे लाबा फूटि रहल छलैन। अई तरहक काज के ओ पुरुषार्थक श्रेणी मे रखैत छथि। जे हेतैक से देखल जेतैक। जौं पुलिस 'अरेस्टो' करतैन तऽ पाईक जोर सँ छोड़ा लेब। विवाह मे कम पाई लागल छल। बूझब जे विवाहक बाकी 'तिलक' भरि रहल छी। मुदा एहि घटनाक बाद केओ नजरि उठा कऽ तऽ नहि देखत।

ओम्हर झाजीक कहब छलैन्ह जे लोक सभ धय कऽ बचा देलकैक। ओकरा तऽ एखन आरो पिटाई लागक चाही। जखन बलिया वाला सभ बिना भोज खेनय दरवज्जा सँ चलि गेलैक तकर दू घंटा बाद झाजी के मोटर साइकिल फरफरबैत दरवज्जा पर देखने छलियनि। अंगना जा कऽ कनिया सँ गप्प कयलनि। सासु सँ सेहो सलाह परामर्श भेलनि। की सभ गप्प भेलनि से नहि जानि। बलिया वाला प्रकरणक संबंध मे छोटका कका सँ चर्चा भेलनि। लोक सभ चाह जलपानक आग्रह करिते रहि गेलनि आ ओ मोटर साइकिल फरफरबैत निकलि गेलाह। राति मे पता चलल मुखिया के सोंटे-सोंटे पीट देलथिन।

रातुक घटनाक संबंध मे पूर्ण जानकारी मुन्ना कका अनलाह। भोरे दतिमनि सँ दांत रगड़ति मुन्ना कका अंगना मे पैसिते कहलथिन-'सुनय छी भैया! झाजी मुखिया के अकारणे नहि पिटलथिन। ओकर जायज कारण रहैक।' रातुक जगरना सँ औंघायल लोक सभक निन्न भक्क सँ फुजि गेलनि।

-'की भेल छलैक?' एक्के संगे कयेक गोटे पूछि बैसलथिन। आब मुन्ना कका बीच मे भऽ गेलाह। जिज्ञासाक केंद्र।

-'मुखिया मारि खायक योग्य काजे केने छल। अईं यौ हम पूछति छी जे मुखियाक काज की छैक? समाज के एकजुट केनाई की नहि। आ ई मुखिया समाज कें विभाजित करक फेर मे छल। तैं झाजी ओकरा सबक देलथिन।'

बाबूजी 'समस्या पूर्ति' वाला गप्प सँ पिताइत बजलाह-

-'मुन्ना तोहर ई आदति बड्ड खराब छौक। कोनो बात कें तेना कऽ घुमा-फिरा

दैत छह जे बात बाते मे रहि जाइत छैक। की भेल छलैक, झाजी मुखिया के कियैक पिटलथिन आ ओकर उपरांत की भेलैक से कह।'

बाबूजीक डपटान सुनि मुन्ना कका सहमि गेलाह।

-'सैह तऽ कहैत छी। काल्हि जखन बलिया वाला सभ गाम लौटति छलाह, तखन मुखिया अपन दरवज्जा पर बैसि कऽ चाह घोंटि रहल छल। ओकरा संगे गामक आरो किछु गोटे छलाह। बलिया वाला सभ के लौटति देखि पूछि बैसलथिन जे भोज केहन रहल। उत्तर मे बलिया वाला सभ खिस्सा कहि देलकनि। ओकरा सभक प्रति अनुराग देखबैत मुखिया कहलकनि जे जाई जाऊ। ई सभ अपने सभ के बड्ड अपमानित कयलक। अहूं सभ कें कहैत छी जे जौं आब पुन: भोज खाइक लेल अहि टोल आबी तऽ थूक चाटब सन जानब।'

मुन्ना कका कनेक थमकला। सभक आंखि मे एकर प्रतिक्रिया देखलनि आ अपना के संयत करैत पुन: शुरू भऽ गेलाह-

-'भैया मुखियाक ई गप्प कतेक अनुचित छलैक। ओकरा लेल जरूरी छलैक जे ओ दुनू तरफ मीलि-जुलि कऽ मामला शांत करिता। ई तऽ धेने आगि भड़कौनाई भेलैक की नहि?'

-'जखन मुखिया बलिया वाला सभ के भड़का रहल छलैक ओहि समय ओहि ठाम उपस्थित लोक सभ मे सँ किछु गोटे झाजी कें सभ बात कहि देलकनि। झाजी युवक ठहरलाह, गरम खून। खोजि-खबरी लेलाक पश्चात ठोकले मुखियाक घऽर पर धमकलाह। मुखिया कें घऽर सँ बजबौलखिन आ चारि-पांच सोंटा लगा देलखिन। यैह छैक घटना।'

-'एखन की स्थिति छैक?' बाबूजी पुछलखिन।

-'स्थिति की रहतैक। मामला शांत छैक। मुखियाक दिन छैक जे ओ किछु बाजत। ओकरा मुखिया बनेबा मे झाजीक परिवार के कतेक बड़का हाथ छैक से ओकरा की बुझल नहि छैक। ओ तऽ हजारों सोंटा खा कऽ झाजी परिवारक कर्ज नहि सधा सकैत अछि।'

-'मुदा ई ठीक नहि। खैर, जे भेलैक से भेलैक, देखू देबा भाई आ संतोष आई बलिया सँ की खबरि लाबति छथि।'

जिज्ञासा शांत होइत सभ सभ दिस छितरा गेलाह। आब मात्र बलिया गेल दलक प्रति जिज्ञासा रहि गेलनि। की भऽ रहल हेतैक। कहीं मारि नहि बजरि जाइक। ओना देबा भाई संगे नीक-नीक लोक गेल छथि। देखू......।

आठ बजल, नौ बजल, दस बजल। छोटका कका अंगना दलान घुरिआइत रहलाह। काज मे मोन नहि लागि रहल छलनि। पाहुन सभ एहि सभ सँ अलग अपन चाह जलपान मे लागल छलाह।

एगारह बजे संतोष मोटर साइकिल सँ अयलाह। मोटर साइकिल नेने सोझे अंगने मे धमकलाह। छोटका कका कल पर स्नान करैत छलाह, हुनके उद्देश्य संतोष बजलाह-

-'तैयारी करू। आई बलिया वाला सभ अओताह।'

– 'की ओ सभ मानि गेलाह।' तौनी के उमेठ कऽ पानि निचोरति कका पुछलथिन।

– 'मानता कियैक नहि। गलती हुनके सभक छलैन। हेयौ, हम दुनू गोटे सौंसे गाम घूमि कय कहि आयल रहियनि जे एकादशाक हकार, द्वादशाक निमंत्रण आ विज्झो तल्लुक। हुनका सभ कें 'तल्लुक' सुनऽ मे नहि अयलनि।' संतोष व्याख्या कैलनि।

– 'मुदा ई तऽ महाभारत वाला बात भऽ गेल जे युधिष्ठिर कहलथिन–'अश्वत्थामा हतो नरा वा कूजरो' आ द्रोणाचार्य के 'कूजरो' सुनय मे नहि अयलनि। तखन तऽ 'कूजरो' कहैत काल भीम शंख बजा देने रहथिन। तोहर 'तल्लुक' कहय काल मे के शंख बजा देलकौ?' ककाक प्रश्न छलैन्ह।

– 'से बात नहि छैक कका। ओकरा सभ के बूझय मे धोखा भेलैक आ दोष हमरा सभ पर मढ़ि देलक। खैर, ओ सभ अपन गलती मानि लेलाह आ सांझ मे भोज खायक लेल अओताह।'

संतोषक गप सुनि सभ के संतोष भेलनि जे कहुना बिगड़ल बात सोझरा गेल। भोजक तैयारी शुरू भऽ गेल।

सांझ सँ पहिने सभटा तैयारी संपूर्ण भऽ चुकल छल। बारीक सभ अपन–अपन बाल्टी, छिट्टा लेने तैयार छलाह। सांझ भेल। अन्हार होइत देरी जेनरेटर चलय लागल। मुदा बलिया दिस सँ कोनो सुगबुगाहट नहि भेल। लोक सभ फेर चिंता मे पड़ि गेलाह। आखिर की भेलैक। आई विज्झो छलैक। संतोष कहैत छलाह जे मामला फरिछा गेल छैक। आशा–आशी ताकि कय बारीक सभ विदा भेलाह। दरवज्जा पर फेर बैसार जमल। विश्वनाथ कका देबा भैया आ संतोष के बजौलथिन। पूछताछ भेल। रामगोपाल कका पित्त सँ उफनैत छलाह। निश्चय कएल गेल जे गाम सँ दस–पंद्रह गोटे बलिया जाय आ ओहि गामक नीक–नीक लोक के बजाकऽ गप्प कयल जाओ। रामगोपाल कका कहलथिन–दोसरो टोल सँ लोक सभ कें शामिल करु। तखने नीक सँ गप्प होयत। हमरा अहि दुनू पर तऽ कोनो भरोस नहि अछि। ppp

ÑÑÀÙÇeêÑÑ

रामआसरेजी के रग–रग मे असम बसल छनि। असम के संदर्भ मे इतिहास–पुराणक बात जेना जीहे पर रहति छनि। असम मे भूमिगत संगठनक उत्पत्तिक संदर्भ मे हुनक विश्लेषणक तुलना नहि।

गप्पे–सप्प मे ओ कहैत गेलाह आ हम सभ सुनैत गेलहुं।

– 'भूमिगत संगठन वस्तुत: छह वर्ष चलल आंदोलनक 'साइड इफेक्ट' छैक। एखन तऽ स्थिति आब परिवर्तित भऽ गेल छैक। ओहि समय मे जखन संगठनक प्रभाव चरम पर छलैक, प्रांत मे ओकर समानांतर शासन छलैक। तखन आम लोक सेहो ओकर पक्ष मे छलथि। एकर कारण छैक। मुदा एहि सँ पहिने एकर उत्पत्तिक चर्चा करब।

जखन विदेशी भगाओ आंदोलन चलि रहल छलैक, ओहि समय मे किछु उत्साही युवक एहू सँ किछु बेसि करक लेल उत्साहित छलाह। अपने के तऽ बुझले अछि जे एकटा समूह मे सभ तरहक लोक रहैत छैक। आंदोलनकारीक समूह मे सेहो विभिन्न तरहक लोक छलैक। किछु गोटे भारतीय संविधानक भीतरे मे अपन समस्याक समाधान हेतु लोकतांत्रिक तरीका सँ संघर्ष कऽ रहल छलाह। किछु गोटे के ई पंथ अत्यधिक भलमनसाहत वाला बुझाइत छलैन्ह। हुनक कहब छलैन्ह जे ऐना संघर्ष करक कोनो मतलब नहि। सशस्त्र संघर्ष जरूरी थिक। मत–मतांतर भेलैक आ सशस्त्र संघर्षक पैरोकार सभ लोकतांत्रिक आंदोलन सँ निकलि गेलाह।

शिवसागर मे ऐतिहासिक भवन छैक। एकर नाम छैक रंगघऽर। एकरा असमिया सांस्कृतिक प्रतीक सेहो कहल जा सकैछ। एहि रंगघऽर मे एक दिन बैसार भेलैक। बैसार मे पांचे गोटे छलाह। गप्प–सप्प मे तय कयल गेल जे असम के भारतीय उपनिवेशवाद सँ मुक्त करायब जरूरी अछि। एहि केर लेल संगठन बनाओल जाओ आ ओकरा सशस्त्र संगठनक रूप देल जाओ।

वास्तव मे ई किछु युवक सशस्त्र संघर्ष मे लिप्त आन किछु गुट सँ प्रभावित छलाह। हुनका देखल छलैन्ह जे ओ गुट सभक नेता कोना राजसी ठाठ–बाट सँ रहैत अछि। ओकर सभक अपन मुख्यालय छैक। संतरी छैक। जतेक जखन चाही ततेक पाई उगाहि लियऽ आ ठाठ करु। प्रांत के स्वाधीन करबा के काज आकाश कुसुम तोड़ब सँ सहज नहि छैक, से ओकरो सभ के पता छलैक। तैयो ओ सभ एहि बाट पर जयबाक निश्चय कैलनि। संगठनक नाम तय भेल। संविधान बनल। उद्देश्य तय भेल। कार्य–धंधा ठीक कैलनि आ संगठन के विस्तार करबाक कार्य शुरू भेल। एहि वास्ते संगठनक सशस्त्र प्रभाग बनाओल गेल आ भीतरे–भीतरे कार्य शुरू भेल। जाहि समय मे छह वर्षीय आंदोलनक समाप्ति भऽ रहल छलैक आ प्रांत मे एकटा नवजीवनक संचार भऽ रहल छलैक, ठीक ओहि समय प्रांत के अस्थिर करबाक कुचक्र भितरे–भितरे एक स्वरूप ग्रहण कऽ रहल छल। साल–डेढ़ साल मे ई संगठन सौंसे प्रांत मे पसरि गेल आ चंदा–धन उगाही शुरू भऽ गेल। धन उगाही केर लेल व्यापारी वर्ग कें चुनल गेल। ओ सभ जनैत छलाह जे व्यापारी वर्ग कनेक धमकौला सँ बहुत रास धन दऽ सकैत अछि, कियैक तऽ ई वर्ग हमेशा सँ झमेला सँ अपना कें अलग राखय मे विश्वास करैत अछि।

यद्यपि भूमिगत संगठनक काज भीतरे–भीतरे चलि रहल छलैक, मुदा एकर भान पुलिस–प्रशासन आ आम आदमी के लागि गेल छलैक। एहि बीच ई संगठन अपन छवि के आम आदमी मे लोकप्रिय करबाक लेल प्रयास शुरू कऽ देलक। गाम–घऽर मे अपराध करय वाला के दंडित केनाई, जुआ खेलय वाला, शराब पीबि कऽ हंगामा करय वाला कें सार्वजनिक रूप सँ दंडित कयल जाय लागल। एक दिन खबरि भेटल जे बीच बाजार मे एक गोटा हाथ मे स्लेट लऽ दू घंटा ठाढ़ रहल। स्लेट पर लिखल छलैक – *हम चोर छी।* एक दिन एहने खबरि आरो भेटल जाहि मे सात गोटे कान पकड़ि कऽ बाजार में ठाढ़ छलाह। हिनका सभ

के शराब पी कऽ हंगामा करबाक लेल दंडित कयल गेल छलैक। एकटा ट्राफिक पुलिस दिन भरि कान पकड़ने काज करैत देखल गेलाह। एकटा पुलिस वाला के दिने-देखारे गोली मारि देल गेलैक। ओकर देह पर एकटा चिट्ठी भेटलैक, जाहि मे लिखल छलैक जे घूस लेबाक अपराधक लेल एकरा मृत्युदंड देल गेलैक। गजब भऽ गेलैक। कनिये दिन मे भूमिगत संगठनक बोलबाला भऽ गेलैक। समाज मे एकर जबर्दस्त प्रभाव भऽ गेलैक। जतय-ततय मात्र एकरे चर्चा। लोक सभ एहि संस्थाक तुलना 'राबिन हुडक' चरित्र सँ करऽ लगलैक। आपस मे बहस शुरू भऽ गेलैक। धंधा चौपट होमय लागल। अखबार सभक पहिला पन्ना एहि तरक घटना सभ सँ भरल भेटैए। बुद्धिजीवी सभ सेहो मुखरित भऽ गेलाह। ताबत धरि संगठनक असली उद्देश्यक पता किनको नहि छलैन। पतित लोकक मृत्युदंड के यद्यपि कियो समर्थन नहि कयलक, मुदा विरोध स्वर सेहो नहि निकलल। हम सौदा आनय जाई तऽ मोन डेरायल रहैत छल। किछुए दिन बाद 'बिहू' आयल। बिहूक तैयारी होमय लागल। एहि बीच भूमिगत संगठनक फरमान आयल। बिहू मे हिंदी गीत-नाद नहि होयत। अपसंस्कृति कें प्रोत्साहित करऽ वाला लोक सभ दंडित कयल जेताह। एहि फरमान सँ बुझैले जेना बिहू आयोजन पर आफति टूटि पड़ल। बिना हिंदी गीत-नाद के उत्सवक रंग कोना चढ़तैक। की कयलाह सँ भूमिगत संगठनक लोक संतुष्ट होयताह। की कयलाह सँ हुनक कोपभाजन बनब? एहि सभ प्रश्न पर आयोजन समिति सभ मे हड़कंप मचि गेल। अध्यक्ष, सचिव सभ धड़ाधर इस्तीफा देबय लगलाह। हमरा मोन अछि ओहि बेरक बिहू विधवा सन भऽ गेल रहैक। वसंतक त्यौहार पर सर्दी जमि गेलैक। ppp

ÑÑãçlãÑÑ

बलिया वाला सभ किन्नहु मानय लेल तैयार नहि छलाह। चारु टोल सँ तीस गोटे हुनका सभ कें मनाबय लेल गेल छलाह। देबा भाई आ संतोष सेहो छलाह। मंदिर पर बैसार भेलैक। विश्वनाथ कका बलिया के किछु प्रतिष्ठित लोक सभ कें भाषण पियोलखिन। हुनकर कहब छलैन जे मंडली मे नौ गाम कें न्योतल गेल छैक। सभ कें जौं द्वादशाक दिने खुआयल जेतैक तऽ की ई संभव छैक। तैं न्योत देबाक जे परिपाटी छैक ताहि अनुसार द्वादशाक न्योत देल जाइत छैक मुदा विज्झो तल्लुक राखल जाइत छैक। घरबैया के जाहि दिन जाहि गामक व्यवस्था हेतैन ताहि दिन ओहि गाम के विज्झो कराकय भोजन करौताह। एहि व्यवस्था मे किनको कोनो दिक्कति नहि छैन। एहि परिपाटी कें ध्यान मे रखैत बलिया के निमंत्रण देल गेल छल, मुदा विज्झो तल्लुक छलैक। ताहू पर अपने सभ पहुंचल छलहुं तऽ घरबैया आग्रह

करबे कयलाह। यैह नहि अपितु एहू सँ आगां बढ़ि कऽ दोसर दिन फेर पांच गोटे गाम मे आबि कऽ अपने सभ के आग्रह कैलनि। एकर उपरांतो जौं अपने सभ संबंध राखय नहि चाहैत छी तऽ कोनो हर्ज नहि छैक। ई काज संपन्न होमय दियौक, ओकर बाद निश्चय कयल जाओ।' विश्वनाथ ककाक बात सुनि बलियाक किछु गोटे तमतमायल जकां उठलाह। बाजय लगलाह-

- 'संबंध हम सभ नहि अपने लोकनि तोड़य चाहैत छी। न्योत आ विज्झो कराबय वाला दुनू गोटे एहिठाम मौजूद छथि। पुछियौन हुनके सँ।' देबा भैया ठाढ़ भऽ गेलाह। संतोष पाछू छलाह। उमकि कऽ आगां अयलाह आ बाजय लगलाह-

- 'यौ हम काल्हिये सँ अपने सभ कें कहैत छी जे हम दुनू गोटे चिक्करि-चिक्करि कय अपने सभ के निमंत्रण आ विज्झो तल्लुक कहने छलहुं। अपने सभ मात्र निमंत्रण टा सुनैत छी। विज्झो तल्लुक नहि।'

संतोषक गप्प खत्म होइते देरी पंद्रह-बीस गोटे ठाढ़ भऽ गेलाह। हुनकर सभक कहब छलन्हि जे संतोष पहिने गलत केने छथि। विज्झो तल्लुक नहि कहलथिन। आ आब तऽ सौंसे गाम कें बुड़िबक बनबैत छथि। ई फुसि बजैत छथि। बलियाक लोक 'तल्लुक' नहि बुझैत छथि से नहि। संतोष अपन बात वापस लेथु।

हंगामा भऽ गेलैक। संतोषक गप्प सँ बलियाक लोक पिता गेल छलाह। केओ ककरो बात मानक लेल तैयार नहि। आब कतहुं मारि नहि बजरि जाइक। तकरे आशंका होमय लगलैक। छौंड़ा सभ फांड़ बान्हि कऽ तैयारी कऽ रहल छल। बुजुर्ग लोकनि सभ चुप्प छलाह। परिस्थिति बिगड़ैत देखि विश्वनाथ कका ठाढ़ भऽ गेलाह। अपन बुलंद आवाज मे कहय लगलाह-

- 'कनेक हमर गप्प सुनि लियऽ। जौं संतोषक गप्प सँ अपने सभ कें असंतोष अछि तऽ हम अपने सभ सँ क्षमा मंगैत छी।' आ ओ दुनू हाथ जोड़ि लेलनि। विश्वनाथ कका के ठाढ़ भेने आ कऽलजोड़ि कऽ क्षमा मंगनेक बड्ड प्रभाव पड़लैक। सभा समुद्र जकां शांत भऽ गेल।

अपन बातक प्रभाव देखि कऽ विश्वनाथ कका फेर बाजय लगलाह-

- 'हमरा जतेक अनुभव अछि ताहिक आधार पर कहैत छी। जौं पछिला बात कें लऽ कय घमर्थन करब तऽ ओहि सँ जहरे टा निकलत। तैं हमर आग्रह अछि जे जे भेलैक से भेलैक। सभटा कें बिसरि जाऊ। हमरा गामक बटुक एकटा बड़का काज ठनने छथि। ओहि काज कें सभ गोटे मीलि कऽ संपन्न करु।'

- 'ऐना नहि होयत। पहिने देबा भाई आ संतोष के कहियनु जे ओ माफी मांगथि।'

एहि पर संतोष फेर तमकला, मुदा विश्वनाथ कका हुनका आंखि सँ संकेत कयलथिन्ह-चुप्प रह। ओम्हर बलिया दिस सँ एक बुजुर्ग दयाशंकरजी सेहो अपन ग्रामीण सभ

कें डपटलथिन–

– 'जौं बुजुर्ग भऽ कय विश्वनाथजी कहि रहल छथि तऽ हुनक बात मानक चाही।' बलियाक अन्य लोक सभ हां....हां.... कहलथिन।

– 'ठीक छैक विश्वनाथ बाबू, अपने जे कहबई से हम सभ करक लेल तैयार छी। ओना ई बात अपनहुं बूझि लेल जाओ जे अई प्रसंग सँ हम सभ बड्ड दुखित छी।

– 'अपने सभक पीड़ा कें हम बुझैत छी।' विश्वनाथ कका मरहम लगबैत बजलाह।

– 'जे भेलई तकरा बिसरि जाऊ। आई अपने सभ कें विज्झो अछि। आबि कऽ एहि अनुष्ठान के संपन्न करियौक। एहि सँ विशेष हम आओर की कहि सकैत छी।' विश्वनाथ कका ठाढ़े रहलाह।

वैह बुजुर्ग कहलथिन–

– 'ठीक छैक, हम सभ विज्झो मानलहुं आ आई आयब। मुदा एकटा बात आरो।'

– 'से की?'

– 'हम सभ भोज खायक लेल आबी तऽ आब एहि प्रसंग पर कोनो चर्चा नहि होमक चाही।'

विश्वनाथ कका कहलथिन्ह–

– 'हमरा सहर्ष स्वीकार अछि।'

– 'तऽ अपने अपन आसन ग्रहण करु आ चाह पीबू। लाबऽ हो.....चाय लाबऽऽ!

एकरा बाद चाह-पान भेलैक आ गामक लोक सभ गाम लौटलाह। गाम पर पुन: उत्साह आबि गलैक। भोजक तैयारी होमय लागल। बीड़ी बनय लागल।

विश्वनाथ कका अपने सँ दरवज्जा पर आबि भोजक व्यवस्था देखय-सुनय लगलाह। सभ के धिरधिरा देलथिन। केओ गोटे अंट-शंट जुनि बजिहऽ। पछिला बात कें कोनो जिक्र नहि होमक चाही।

सूर्यास्त भेला सँ पूर्वहिं बलिया वाला सभ आबय लगलाह। एम्हर सभ व्यवस्था छलैक। बारीक सभ प्रतीक्षा में छलाह। हुनका सभ कें अबिते बैसा देल गेल आ बारीक पात-पानि सभ परसय लगलाह। दू तोर मे बलिया वाला भोजन संपन्न कयलनि आ साढ़े नौ बजैत-बजैत भोज संपन्न भऽ गेल।

लोक सभ आश्वस्त भेलाह। बड़का समस्याक सुखद समाधान भेल। मुदा एहि संपूर्ण प्रकरण मे देबा भैया आ संतोषक भूमिका पर प्रश्नचिन्ह लागि गेलनि। भोजक काज मे दुनू गोटे लागल रहथि मुदा अपराध बोध सँ ग्रस्त छलाह।

ई मात्र एकटा घऽरक बात नहि छलैक। सौंसे गामक प्रतिष्ठाक प्रश्न छलैक। प्रतिष्ठा

रहि गेलैक। मुदा सौंसे गाम के लज्जित होमय पड़लैक। विश्वनाथ कका सौंसे चौहद्दी मे प्रतिष्ठित व्यक्ति मे बूझल जाइत छथि। हुनका हाथ जोड़य पड़लैन। एहन परिस्थिति अयबाक कारण सभ पर चर्चा भेनाई जरूरी छैक। कएक गोटाक विचार छलैन्ह जे भोजक समाप्ति पर एहि विषय पर चर्चा कयल जाओ। मुदा भोज समाप्त होमय मे आरो पांच दिन बाकी छैक। चर्चा एतेक दिन नहि रोकल जा सकैत अछि। रातिये मे एहि विषय पर बैसि कऽ बात करु। सभ गोटे सहमत छलाह। देबा भैया आ संतोष केर लेल नहि दहिना आ नहि वामा। विश्वनाथ कका कहलथिन–'आधा घंटा बाद अबैत छी। बाकी सभ कें बजा अनियौन। ppp

ÑÑ¥Ç¸ UçìaÑÑ

रामआसरेजी पुछलनि – 'हमर खिस्सा अपने के बेजाय तऽ नहि लागि रहल अछि?'

– 'कियैक बेजाय लागत? अपने सँ हमरा बहुत किछु प्राप्त भऽ रहल अछि। अपने कहल जाओ।' हम हुनका उत्साहित करैत बजलहुं। वास्तव मे रामआसरेजी इतिहासक तेहेन बखान कऽ रहल छलाह जे बुझा रहल छल कि सभ किछु आंखिक आगां घटित भऽ रहल अछि।

रामआसरेजी फेर गंभीर भऽ गेलाह। अपन स्मृति पटल पर जोर दैत बजलाह—

– 'गाम पहुंचलहुं तऽ ओहिठाम देखैत छी जे कन्ना-रोहटि भऽ रहल अछि। हमरा देखि हमर कनियाक विलापक स्वर आरो ऊंच भऽ गेल। बाद मे पता चलल जे कन्ना-रोहटिक

दूटा कारण छलैक। पहिल कारण छलैक जे हुनका सभ के भरोस नहि भऽ रहल छलनि जे हम नीके ना घुरि आयब। दोसर कारण छलैक एकटा चिट्‌ठी। भूमिगत संगठन सँ चिट्‌ठी पठाओल गेल छलैक। ओहि मे कहल गेल छलैक जे पांच लाख टका पंद्रह दिनक भीतर देबय पड़तैक। नहि देला सँ ओ सभ हमरा गोली मारि देत। पांच लाख टका बड्ड बेसि होइत छैक। कतय सँ अनबैक। घऽरक लोक सभ एहि पर बड्ड चिंतित छलाह। तीन दिन बीत गेल छलैक। बारह दिन बीतय मे देरी नहि लगतैक। चिट्‌ठी मे इहो लिखल छलैक जे पुलिस कें खबरि नहि करब।

खैर! सोचय-विचारय लगलहुं। की करबाक चाही। पुलिस के कहियौ कि नहि। कहैत छी तऽ खतरा बढ़ि जाइत अछि। नहि कहला पर पुलिसक खतरा। संगहि ईहो बात मोन मे घूमय लागल-जौं ई नकली चिट्‌ठी होइक!

बहुत सोचला विचारलाक पश्चात निश्चय कयलहुं जे चिट्‌ठी वाला बात पुलिस कें बतौनाई जरूरी छैक। घऽर के किनको ई पसिन्न नहि छलनि। सभ केओ यैह मत के छलाह जे चिट्‌ठी देबय वाला कें संपर्क करय दियौक आ ओकरे सभ सँ बात कऽ कम-बेसि कराकय झंझटि खत्म कऽ लियऽ। हमर मोन नहि मानलक आ हम चिट्‌ठी नेने थाना पहुंचि गेलहुं। ओहि दिन संयोग सँ थाना मे बड़का अधिकारी आयल छलाह। हुनके सँ गप्प भऽ गेल। ओ हमरा चिन्हैत छलाह। हुनका चिट्‌ठी देखौलियनि तऽ ओ कहला जे एहन चिट्‌ठी बहुत गोटे कें आयल छैक। बुझाइत अछि नकली छैक आ केओ अथवा कुनू गुट परिस्थिति सँ लाभ उठैबाक प्रयास मे अछि। अधिकारी महोदय हमरा सांत्वना दऽ विदा कऽ देलनि। चिंतन करैत घऽर अयलहुं। गाम मे घूमला पर पता चलल जे कएक गोटा हमरे जकां चिंतित छथि, हुनको सभ के एहने चिट्‌ठी आयल छनि। मोन मे कनेक संतोष भेल। चलू, जे हेतैक से देखल जेतैक।

पांच दिन आरो बीति गेल। कोम्हरो सँ कोनो सूचना नहि भेटल। छठम दिन थाना सँ बजाहटि आयल। घऽरक सभ गोटे फेर चिंता मे डूबि गेल। हमरो छाती बाजय लागल। कियैक बजाहटि आयल?

थाना पहुंचलहुं तऽ देखैत छी ओहि ठाम भीड़ जुटल छैक। लोक सभ सँ पुछला पर पता चलल जे चारिटा डकैत पकड़ायल छैक। ओकरा देखबाक लेल लोक सभक भीड़ जुटल छैक।

भीड़ कें ठेलि-ठालि कऽ हमहुं भीतर पैसलहुं। हमरा देखिते थाना प्रभारी बाजि उठलाह - *'आइये, आप ही की प्रतीक्षा थी।'*

हमर ठोढ़ थरथराय लागल। थाना प्रभारी एना कियैक बजलाह। बड्ड बेसि घबड़ा गेल छलहुं। थाना प्रभारी कुर्सी पर बैसक लेल संकेत कयलनि। बैसलहुं। तकरा बाद जे रहस्य पर सँ परदा हटल तऽ मोन प्रसन्नता सँ भरि गेल। जाहि चिट्‌ठी कें लऽ कऽ सौंसे गाम चिंतित छल से नकली निकलल। चिट्‌ठी वस्तुत: भूमिगत संगठनक तरफ सँ नहि आयल छल, अपितु

ई काज ई पकड़ायल डकैत सभक छल।

थाना प्रभारी कहलनि जे धन उगाही आब एकटा कुटीर उद्योगक रूप लऽ रहल अछि। चोर-डकैत-पाकेटमार सभ अपन-अपन धंधा के बदलि रहल अछि। जखन एकटा चिट्‌ठी पठा देला सँ लाख टका आबि जाइत होइक तऽ चोरी-डकैती करबाक खतरा मोल लेनाई बुद्धिमानी नहि छैक।

पुलिस चारिटा डकैत के हथियार समेत पकड़लक आ ओकरा सँ उगलबौलक तऽ सभ भेद खुजल। ई सभ भूमिगत संगठनक नाम पर लोक सभ कें चिट्‌ठी देने छलैक। जखन पाई संग्रह करबाक समय अयलैक तऽ पकड़ा गेल। फर्जी लेटरहेड, स्टाम्प सभ पकड़ा गेलैक।

बांचि गेलहुं। पछिला एक हफ्ता सँ कोन ग्रह लागल छल जे प्रसन्नता जेना हेरा गेल छल। घऽर गेलहुं आ सभ कें सभटा बात कहलियैक। सभ गोटे प्रसन्न भेलाह। मुदा ई प्रसन्नता टिकाऊ नहि छल। पंद्रह दिनक बाद हमर गामक एकटा पैघ व्यक्तिक शव बाट पर भेटलैक। गाम सन्न रहि गेल। हुनका गोली मारि देल गेल छलनि। नकली सँ ऊबरलहुं तऽ असली आबि गेल। आब कोना बांचब।

ओना देखियैक तऽ एहि क्षेत्र मे एहि तरहक संकट एकटा नहि आयल। कएकटा आंदोलन भेलैक आ प्रवासी सभ शिकार होइत छलाह। भाषा आंदोलन, लिपि आंदोलन, असम आंदोलन-आरो कतेक। ppp

ÑÑ@ÜÙàeçÜâÑÑ

भोजनादि सँ निवृत्त भेलाक पश्चात भेल बैसार मे चारु टोलक लोक सभ जुटलाह। प्रमुख लोकनि चारि टा चौकी के जोड़िकय बनाओल गेल मंच पर बैसलाह आ बाकी लोकनि केओ कुर्सी पर तऽ केओ जमीन पर जगह लेलनि। जेनरेटर चलि रहल छल आ मरकरी इजोत फेंकि रहल छल। पानक बासन एम्हर सँ ओम्हर घूमि रहल छल। ककाजी व्यवस्था मे लागल छलाह। बाबूजी समाद पठौलथिन्ह जे ओ थाकल छथि-बैसार मे उपस्थित नहि रहताह।

बैसार आरंभ भेल आ आधा राति सँ बेसि चलल, खूब धमगज्जड़ि भेलैक। हमरा नीक लागल। एहि बैसार के बहाने बहुत कुछ उघड़ल। विभिन्न तरहक विचार आयल। लोक सभ अपन-अपन अनुभव सुनौलनि। मिथिलांचलक संस्कृति-परंपराक नीक-बेजाय पक्ष बूझय मे आयल। लोक सभ केना अपन नीक परंपरा के छोड़ि आंखि मूनि कऽ एम्हर-ओम्हर नकल

मे भिड़ल छथि। अपन संस्कृति के तिलाँजलि दऽ कोना विदूषक बनि रहल छी।

बैसार मे भोजक विषय पर तऽ चर्चा भेलैक, संगहि संग अनेक विषय चर्चा मे आयल। ग्रामीण आ प्रवासी लोकनिक संघर्ष आ स्नेहक चर्चा सेहो भेल। सभागाछीक दुर्दशा पर अनेक वक्ता नोर खसौलनि आ सभा मे उपस्थित कयेकटा कन्यागत एहि दशाक लेल राजनीतिक नेता सभ पर दोष मढ़लनि। हुनक सभक कहब छलैन्ह जे पहिने वर ताकय लेल गामे-गामे घूमय तऽ नहि पड़ैत छल। भारतीय प्रशासनिक सेवा सँ डाक्टर, इंजीनियर वर सभागाछी मे पहुँचैत छलाह। आब गामे-गामे टा नहि, वर ताकय लेल सौंसे देश आ विदेश मे घूमय पड़ैत छैक।

मुदा बैसारक आरंभ भोजक व्यवस्था सँ भेलैक। विश्वनाथ कका देबा भाई आ संतोष के बजौलथिन। दुनू गोटे सँ रिपोर्ट लेल गेल। देबा भाई केर बजलाह सँ पहिने मुन्ना कका ठाढ़ भेलाह। ओ जे कहलथिन ताहि पर देबा भाई भभकय लगलाह। ओना मुन्ना ककाक अभिप्राय ककरो पर दोषारोपण करबाक नहि छलैन्ह।

हुनक कहब छलैन्ह जे परिवर्तित समय मे आब एहि तरहक भोज-भातक कोनो प्रयोजन नहि छैक। पहिने गाम-गाम मे लोकक संख्या कम छलैक। लोक एहि बहाने अपन प्रतिष्ठा स्थापित करैत छलाह आ गाम-गाम सँ लोक भोज खायक लेल अबैत छलाह तऽ अनेक सूचना आदि कें आदान-प्रदान भऽ जाइत छलैन्ह। आब ओ समय नहि रहि गेलैक, नहि लोक के गामे-गामे जाय कऽ चूड़ा-दही खैयबाक ईच्छा रहि गेलन्हि आ नहि एहि तरहक आयोजनक कोनो अर्थ रहि गेलैक।

मुन्ना ककाक ईहो कहब छलन्हि जे बड़का भैया शहर सँ गाम आयल छलाह मायक श्राद्धक लेल। ई हुनक गामक प्रति मोहक प्रतीक छैन्ह। तैं की गामक लोकक यैह उचित छलनि जे हुनक कंठ पकड़ि कय 'मंडली भोज' करा ली।

-'हे रौ। तों बड़का-बड़का भाषण झाड़ि रहल छैं। बेसि बजलैं तऽ राख सँ जीभ घींचि लेबौक।' देबा भैया तमतमा कऽ बजलाह। देबा भैयाक उग्रता किछु गोटे के नीक नहि लगलैन। ओ सभ मुन्ना ककाक के पक्ष लऽ कय जोर-जोर सँ बाजय लगलाह। बाजय वाला मे नवीन-प्रवीण सभ छलाह। देबा भैयाक बाजब किनको नीक नहि लगलैन। बुजुर्ग लोकनि मुंह लटका लेलाह।

शंभू जोर-जोर सँ कहय लगलथिन।

-'मुन्ना कका जे कहैत छथि तकर आशय बुझक प्रयास करु। देबा भैया अहाँ बात बुझबे नहि करैत छियैक आ चिचियाबऽ लगैत छी। मुन्ना कका अहाँ के तऽ किछु नहि कहलनि। आ की अपनेक मोन मे चोर पैसल अछि?'

-'सैह देखियौन्ह।' शंभू के समर्थन मे विकास झा बजलाह।

-'मुन्ना ककाक आशय छलन्हि व्यवस्थाक दोष के केना हटाओल जाय। भोज-

भातक युग नहि छैक। दाईक श्राद्धक लेल मंडली भोजक कुनू आवश्यकता नहि छलैक।'

-'आब ई सभ खत्म होयबाक चाही।' कयेक गोटा एके संगे चिक्करिकय बजलाह।'

-'मुदा विचारणीय विषय मे पहिल स्थान एकर नहि छल।' बिचला टोलक मालिक हस्तक्षेप कयलथिन। लोक सभ हुनका मालिक कहैत छन्हि। ओना हुनक नाम विश्वम्भरनाथ ठाकुर छन्हि। चारो टोल मे तऽ हुनक ख्याति छन्हि। गाम सँ बाहरो ख्याति अर्जित कयने छथि। जेहने विद्वान तेहने समृद्ध। लक्ष्मी-सरस्वती दुनूक आशीर्वाद छन्हि। मालिकक गंभीर स्वर सुनि कोलाहल शांत भेल। मालिक अपन बात स्पष्ट करैत बजलाह—

-'आजुक बैसारक पहिल विषय छल जे भोज मे गड़बड़ी कियैक भेल। हमरा बुझना जाइत अछि जे निमंत्रण देनिहार आ बलिया गामक लोकक बीच संभवत: किछु भ्रम उपस्थित भऽ गेल रहनि। निमंत्रण देनिहार लोकक कहब छन्हि जे ई सभ खूब फरिछा कऽ कहने छलथिन, मुदा बलिया वाला सभ कें कहब छलैन्ह जे ओ सभ खूब नीक जकां सुनने छलाह। एहन परिस्थिति मे यैह बुझक चाही जे दुनू मे सँ किनको कहब-सुनब मे भेल त्रुटिक कारणे सभ गोटे के परेशानी उठाबय पड़ल। आब हमर मत अछि जे एहि प्रकरण पर एहि ठाम विराम लगा देबाक चाही।

तखन एहि प्रकरण सँ आरो अन्य विषय जुड़ल अछि। ताहि पर चर्चा होयबाक चाही।'

विश्वनाथ कका अपन चुप्पी तोड़ैत खखारि कऽ बजलाह।

-'मालिक ठीके कहैत छथि। मुदा एहि प्रकरण पर विराम लगेबा सँ पहिने हमरा सभ के कनेक आत्मालोचन करबाक चाही। एहन नहि हुए जे फेर केओ प्रवासी अपन माय-बापक श्राद्ध करबाक लेल गाम आबथि आ गौंवा वा पटिदार हुनका गरा मे मंडली भोजक माला गांथि देथि। हमरा सभ के एहि समस्या पर गंभीरता सँ विचार कऽ निर्णय करबाक चाही। मृतात्मा के शांति शुद्ध श्राद्ध कर्म सँ होइत छैक। भोज-भातक प्रपंच के खत्म नहि कऽ सकैत छी तऽ ओकरा समयानुकूल साध्य आ सहज तऽ बनाओल जा सकैत अछि। हमरा ज्ञात अछि जे भाई अपन मायक श्राद्ध कर्म खूब नीक जकां करय चाहैत छलाह। भोज-भात मे सेहो कंजूसी करबाक ईच्छा नहि छलैन्ह। तखन जे हुनका धमका कय मंडली भोजक लेल मनाओल गेल-से सरासर अन्याय अछि। रामगोपाल बाबू एहि बैसार मे उपस्थित छथि। ओ समय-समय पर हमरा सभ के आगाह करैत रहथि छथि जे कुनू काज समयानुकूल होयबाक चाही। हम सभ हुनक बातक मोजर नहि करैत छी। तकरे ई फल अछि।'

विश्वनाथ ककाक बातक जबर्दस्त असरि देखल गेल। हुनक बात खत्म होयबाक संगे लोक सभ आपस मे कहब-सुनब मे व्यस्त भऽ गेलाह। एम्हर देबा भैया आ संतोष दुनूक मुखमंडल पर संतोष झलकि रहल छलनि। बांचि गेलहुं।

विश्वनाथ ककाक बात सँ उत्साहित रामगोपाल कका बाजय लगलाह।

–'देखू। हम तऽ समय-समय पर अपने सभ के जे कहैत रहैत छी, से हमर अपन अनुभव अछि। हमर कहबाक सार तत्व ई अछि जे आजुक समय मे जाहि परंपरा के आगां बढ़ेबा मे दिक्कत होइत अछि अथवा ओ व्यावहारिक नहि रहि गेल अछि, तकरा छोड़ू अथवा ओहि मे संशोधन करु। श्राद्धक समय भोज-भातक एकटा परंपरा थिक। एहि परंपराक हम सभ पालन कऽ सकैत छी, मुदा एहि मे सामर्थ्य अनुसारक भोज करय पड़त। भोज-भात करु, मुदा सामर्थ्य आ समयानुकूल होयबाक चाही। ककरो पर भार नहि पड़क चाही, अन्यथा परंपरा घृणाक रूप लऽ लैत छैक। जे वस्तु आवश्यक नहि अछि तकरा त्याग करबा मे कोन हर्ज? ओहिना जे अपरिहार्य अछि तकरा त्यागने बुद्धिमानी नहि कहल जा सकैत अछि।'

रामगोपाल कका धाराप्रवाह बाजि रहल छलाह। लोक सभ मंत्रमुग्ध हुनका सुनि रहल छलाह। मात्र मुन्ना ककाक मुंह फुजल आ आंखि बन्न छलनि। संभवत: ओ दोसर दुनिया मे छलाह। ppp

ÑÑ¿æçÜåÑÑ

– '**हे यौ!** भूमिगत संगठनक विषय मे हम सभ जेना सुनी, ताहि सँ मोन मे हुए जे ई सभ नीक काज कऽ रहल अछि। आखिर समाज सँ अधलाह खत्म केनाई तऽ नीक काज भेलैक। समाज मे उच्छृंखलता एनाई समाज केर विनाशक कारण भऽ सकैत छैक। ताहि सँ बचक हेतु कनेक सख्ती सेहो आवश्यक छैक। तैं जखन सुनय मे आयल जे जुआ खेलय वाला, घूसखोर, शराबखोर सभ के ओ दंडित करैत छैक तऽ नीक लागल। विद्यार्थी सभ केर लेल नीक-नीक बात आबय लागल। परीक्षा मे नकल करय वाला कें चेतावनी आ स्कूलिया मास्टर सभ के ट्यूशन पढ़ैबा पर पाबंदी इत्यादि व्यवस्था सभ सँ बुझायल जेना समाज मे क्रांति आबि जेतैक। विद्यार्थी पढ़ाई मे मोन लगाबय लगलाह आ मास्टर सभ ट्यूशनक मोह छोड़ि विद्यार्थी सभ के कक्षा मे समय देबय लगलथिन। ई सभ कार्य आ व्यवस्था ककरो अधलाह नहि लगलैक आ ओकर सभक छवि रोबिन हुडक वाला भऽ गेलैक। ई कहि रामआसरेजी हमरा दिस ताकय लगलाह। हम हुनक समर्थन करैत कहलियनि—

– 'जाहि समाज मे कियो एहेन व्यवस्था करय वाला भेटि जाय तऽ ओ समाज विश्वक सर्वश्रेष्ठ समाज भऽ जायत।'

– 'मुदा बात ई नहि छलैक। ई तऽ छलैक मुंहक ऊपरका खोल। भीतरक भयावहता तऽ तखन देखार भेलैक जखन ओ सभ अपन पर उतरि गेल।'

– 'से की?'

– 'हं यौ! थोड़बे दिन मे ओकर सभक असली स्वरूप ऊपर आबि गेल। शुरू भेल धन उगाही, अपहरण। सेहो एगो-दूगो नहि। सैकड़ों-हजारों। अपन नीक-नीक काज सँ समाज मे अपन स्थान बनैबाक पश्चात व्यापारी, चाह बागान, उद्योग, प्रतिष्ठान इत्यादि सँ धन उगाही शुरू भेल। कएकटा हत्या सेहो भेलैक जाहि सँ समाज मे भय आ आतंक व्याप्त भऽ गेलैक। कएकटा व्यापारी आ चाह बागानक मालिकक हत्या भेल। व्यापारी सभ पलायन करय लगलाह। अन्यत्रक व्यापारी एहि प्रांत मे एनाई बन्न कऽ देलक। प्रशासन मे ओकर सभक हस्तक्षेप ततेक भऽ गेल रहैक जे पुलिस निष्क्रिय भऽ गेल। किछु राजनेता आ कार्यकर्ता सेहो मारल गेलाह। ओकर सभक साहस ततेक बढ़ि गेलैक जे एकटा बड़का सरकारी कंपनी के पैघ अधिकारी के ओ सभ बंधक बना लेलक आ अपन साथी के मुक्त करैबाक शर्त राखि देलक। सरकार के ई शर्त मानय पड़लैक। एहि सभ घटना माध्यम सँ भूमिगत संगठन अपना कें मजबूत बनबैत चलि गेल। तखन ई बुझनाई कठिन छलैक जे एहिठाम शासन ककर छैक। संगठनक प्रवक्ता पत्रकार सभ के बजा-बजा कय अपन विचारधाराक प्रचार करय लगलाह। हुनक कथन रहनि जे ई प्रांत कहियो भारतदेशक अंग नहि रहल। ब्रिटिश आ बर्माक मध्य हस्ताक्षरित यानदाबू संधि के समय सेहो असम स्वतंत्र छल। ताहि हेतु असम के स्वतंत्र रहबाक चाही आ यैह उद्देश्य लऽ कऽ संगठन सशस्त्र संघर्ष कऽ रहल अछि।'

इतिहासक पन्ना पलटति रामआसरेजी बजलाह—

– 'जतय धरि यानदाबू संधिक प्रश्न छैक तऽ जहिया ई संधि हस्ताक्षरित भेलैक तहिया असमक भूखंड मानक कब्जा मे छल। गौरीनाथ सिंह मान कें भगैबाक लेल ब्रिटिश कें आमंत्रित कयने छलाह। यैह कारण छैक जे ब्रिटिश आ मान राजाक मध्य भेल संधि के गौरीनाथ सिंह आ असमक जनता विरोध नहि कयलनि। एकर स्वागत कयल गेल। मानक आक्रमण सँ जर्जर असमक कुनू प्रतिनिधि नहि छलाह जकरा संगे मान अथवा ब्रिटिश समझौता करितथि। ओना गौरीनाथ सिंह छलाह, मुदा ओ अपने ब्रिटिशक शरण मंगने छलाह। वास्तव मे आहोम राजा के एहि संधि के स्वीकार करबाक अतिरिक्त कुनू दोसर बाट नहि छलैन। ओना ब्रिटिश के भगैबाक लेल मणिराम, पियली सँ लऽ कऽ कुशल कोंवर, कनकलता प्रभृति सभ संघर्ष कयलनि। ई एकटा भिन्न अध्याय अछि। इतिहासक पन्ना पर स्वर्णिम अक्षर सँ लिखल ई अध्याय युग-युग धरि नव प्रजन्म के प्रेरणा प्रदान करैत रहत। एकर संगे ईहो मोन राखबाक छैक जे असम कें ब्रिटिश सँ मुक्त करैबाक लेल असम एसोसियेशनक गठन भेल रहैक आ ई संगठन बाद में कांग्रेस मे विलीन भऽ गेलैक। मानिक चंद्र बरुवाक नेतृत्व मे बनल असम

एसोसियेशनक डिब्रूगढ़ अधिवेशन मे एकर अध्यक्ष गौरीपूरक राजा प्रभात चंद्र बरुवा अध्यक्ष आ जगन्नाथ बरुवा उपाध्यक्ष छलाह। कमलाकांत भट्टाचार्य, राधानाथ चांगकाकती, प्रसन्न चंद्र घोष, मथुरा मोहन बरुवा प्रभृति एकर विशिष्ट सदस्य छलाह।'

रामआसरेजीक इतिहासक ज्ञान अद्‌भुत छलैन। एहि संदर्भ मे हुनक वक्तव्य अकाट्य प्रमाण अछि। धिया-पुता, गाम-घऽर आ व्यापार मे फंसल व्यक्ति कतेक संवेदनशील आ ज्ञानक प्रति आग्रही छथि? हमरा आश्चर्य भेल। पुछलियनि - 'ई सभ अपने के कोना ज्ञात भेल?'

- 'इतिहासक पोथी मे छैक आ एहिठामक विद्वान लोकनिक मुंह सँ सेहो सुनने छी।'

- 'ई सभ जौं सत्य छैक तऽ की भूमिगत संगठनक लोक सभ कें एकर ज्ञान नहि छैक?'

- 'से कियैक नहि रहतैक। वास्तव मे ओ सभ इतिहास के तोड़ि-मोड़ि कऽ अपना हितक योग्य बनाबय चाहैत छैक। हमर प्रश्न अछि जे यदि शोषणक विरुद्ध सामूहिक ध्वनि उठैत छैक तऽ ओकरा कि केओ रोकि सकैत अछि? असमक जनता आंदोलन कऽ ब्रह्मपुत्र पर पुल, तेल शोधनागार इत्यादि प्राप्त कयलनि। विदेशी भगाओ आंदोलन सौंसे विश्वक दृष्टि आकर्षित कैलक। यद्यपि किछु गलतीक कारणे आंदोलन संपूर्ण रूप सँ सफल नहि भऽ सकल, मुदा ई कहल जा सकैछ जे जनताक समर्थन वाला आंदोलनक सार्थकता कें कियो म्लान नहि कऽ सकैत अछि।'

- 'अच्छा, ई कहू जे अपने के भूमिगत संगठनक कुनू सदस्य सँ आमना-सामना भेल कि नहि।'

- 'भेल। आ खूब गप्प-सप्प सेहो भेल। की सभ गप्प भेल से कहैत छी।'

हमर उत्सुकता बढ़ि गेल। ppp

ÑÑ° ·œÌaeçÜãÑÑ

बैसार आब प्रवचन स्थल भऽ गेल छल। किछु गोटे औंघाय लागल छलाह। मुन्ना कका तऽ साक्षात सूति रहलाह। रामगोपाल ककाक गंभीर ध्वनि निःशब्द राति मे एम्हर-सँ-ओम्हर घूमि रहल छल। ककाजी चाहक व्यवस्था मे अंगना-दलान कऽ रहल छलाह। रामगोपाल कका सुतनाहरो सभ के संबोधित करैत कहि रहल छलाह—

- 'हे यौ। मैथिल सभक एकटा बड़का दोष छैक जे अपन नीक परंपरा के छोड़ि कय बेजाय दिस आंखि मूनि कय दौड़ि जाइत अछि। आब जेना बिआहक बात लियऽ। पहिने की छलैक। विआह ठीक भेल, सिद्धांत भेल आ पांच, सात, नौ बेसि सँ बेसि एगारह गोटे वर के लऽ कय विआह कराबय पहुंच गेलाह। एहेन परिस्थिति मे बरिआती सभक खूब आदर-सत्कार होइत छलैन्ह। तीन-तीन घंटा भोजन मे लगैत छलैक। खूब हंसी-ठट्ठा बजरैत छलैक। दोसर दिन बरिआती सभ के भोजन करा, विदा कयल जाइत छल। एहेन विआह मे घरबइया के सेहो नीक लगैत छलैक। गौंवा सभ मे उत्साह रहैत छलैक आ बरिआती सभ सेहो अघाइत राति

धरि अपन गाम पहुंचैत छलाह। आब की छैक? हम सभ बरिआतिक संख्या पर अंकुश नहि राखि सकलहुं। सौ-डेढ़ सौ के जीप-टेकर पर लाइद ठूंसि कय पठा दैत छी। तकर परिणाम भेल एक संझू। बरिआतिक एहेन अपमान वाला स्थिति कहियो देखल छल? टेबल-कुर्सी पर बैसा कय चाह-सिंघाड़ा खुआ देल जाइत छैक आ मध्य रात्रि मे बोरा ओछा कय भात-माउंस खुआ विदा कऽ देल जाइत छैक। राति मे बरिआती कतऽ जाइथ। घरबइया के ओहि सँ कोनो मतलब नहि। वर अंगना मे छथि, भऽ गेल। छीः-छीः। कतहु एहनो होइक। मुदा होइत छैक आ ई परंपरा के हम सभ स्वीकार कऽ रहल छी। की होइत छैक-खर्च खिध्यांस दुनू।'

कनेक सांस लैत रामगोपाल बाबू फेर बजलाह—

- 'ई तऽ भेल विआहक बात। पहिने विआह ठीक तऽ करु। कन्यागत लोकनिक लेल बड़का भारी समस्या भऽ गेल छैक-वरक पता लगौनाई। कोनो कन्यागत सँ पुछबनि तऽ कहता पूरब सँ पश्चिम और कश्मीर सँ कन्याकुमारी घूमि रहल छी। कतेक जोड़ी चप्पल घसि गेल तकर ठीक नहि। वर तकैत-तकैत कन्यागत के आंखि पथरा जाइत छैन्ह। खर्च जे होइत छैक से तऽ अलग। कहियो ई बात सोचलियई जे अपनेक पूर्वज एहि समस्याक कतेक सुंदर निदान स्थापित कएने छलाह। सभागाछी उन्नत समाज व्यवस्थाक विरल उदाहरण छलैक। हमरा देखल अछि जे सभागाछी मे आईएएस आफिसर, डाक्टर, इंजीनियर वर सेहो अबैत छलैक। पंद्रह दिन धरि कन्यागत सभागाछी मे वर सभ के आम जकां गेहिया-टोहिया कऽ देखैत छलाह आ मनपसंद वर चुनि कऽ लऽ जाइत छलाह। पंद्रह दिन धरि उत्सव जकां सभागाछी जगमगाइत छल। दोसर समाजक लोक सभक लेल ई एकटा कौतुहल छलैक। लोक सभ दूर-दराज सँ आबि सभागाछी केर दर्शन करैत छल। सभागाछी मे मात्र वरागत अथवा कन्यागत लोकनि नहि अबैत छलाह। एहनो लोक सभ छलथिन जे सभागाछी के जातीय उत्सव जकां बुझैत छलाह आ पाग पहिरि, पंद्रह दिन खर्चा लय सभा मे पहुंचैत छलाह।

दुर्भाग्यक बात अछि जे मैथिल अपन ई परंपरा के अपने ध्वस्त कऽ देलक आ आब रने-वने बौआ रहल अछि। कहू तऽ विश्व मे अहू सँ नीक कोनो व्यवस्था छैक। कतबो कंप्यूटर आबि गेल आ मैरिज ब्यूरो फुजि गेल, मुदा सभागाछीक व्यवस्था के केओ पार नहि पाबि सकैत अछि। एहि बेर सभागाछी गेल छलहुं। लगन कसगर छलैक। मुदा सभागाछी निर्जन छल। एक ठाम पंजिकार लोकनि अपन-अपन शिविर मे बैसल छलाह। हमर आंखि डबडबा गेल। पूर्वजक स्थापित व्यवस्था तार-तार भेल हमरा समक्ष उपस्थित छल।'

ई बात कहैत रामगोपाल बाबू तौनी सँ अपन आंखि पोछय लगलाह। मुन्ना ककाक थुथुन सँ अजबे ध्वनि निकलय लागल। नाक सेहो बाजि रहल छलन्हि। जेनरेटर चलि रहल छल आ औंघायल लोक सभ समाजक व्यवस्थाक दुरावस्थाक आख्यान सुनि रहल छलाह।

ककाजी आंगन सँ निकललाह। हुनक संगे दू टा छौंड़ा छल। एकटाक हाथ मे केतली, जकर नली सँ भाप निकलि रहल छलैक। दोसर छौंड़ा हाथ मे प्लास्टिकक गिलास पकड़ने

छलाह। चाहक व्यवस्था छलैक। विश्वनाथ कका चौकी सँ उतरि अयलाह आ दलानक कोइनटा मे जा कऽ तमाकूक अपशिष्ट थूकि देलथिन आ पुन: चौकी पर आबि बैसि रहलाह।

चाह बंटाय लागल आ औंघायल लोक सभक तबियत हरियर होमय लागल।

– 'हे यौ पान सेहो लाऊ।' एक गोटे कहलथिन।

– 'आब एतेक राति मे पान के खायत यौ। आब सूतक समय छैक।' विश्वनाथ कका उत्तर देलथिन।

– 'किछु गोटेक आदति छन्हि। बिना पान गलठियने हुनका निन्न नहि होइत छन्हि।'

– 'पानक व्यवस्था छैक। हल्ला जुनि करु।' कका कहलथिन।

एक गोटे मुन्ना कका के उठैबाक प्रयास कैलथिन तऽ मुन्ना कका कुनभुनाइत बजलथिन–'छोड़ू। हमरा सूतऽ दियऽ। हम चाह नहि पियब।' ppp

ÑÑçÕØeçÜâÑÑ

सांझ भऽ गेल रहैक। हटिया मे खूब भीड़–भाड़ रहैक। एहिठामक हटिया आ गामक पेठिया मे कुनू अंतर नहि। वैह व्यापारी आ वैह क्रेता। ओहने दृश्य। लोक एक–दोसर के ठेलैत चलि रहल छथि। गर्द उड़ि रहल अछि।

एकटा चाहक दोकान पर बैसल चाहक चुस्की लऽ रहल छलहुं। गामक आरो किछु गोटे दोकान पर छलाह। गप्प–सप्प चलि रहल छल। क्षणे–क्षणे विषय बदलि रहल छल। कखनो गामक थाना मे आयल नवका दारोगाजीक गप्प तऽ कखनो लंगड़ा आमक गप्प। कखनो राजनीतिक गप्प तऽ कखनो विआहक गप्प। कोनो ओर–छोर नहि छलैक। जखन जकरा जे मोन भेल से शुरू कऽ देलक आ लोक सभ बाझि गेलाह।

तखने एकटा छौंड़ा हमरा लग आयल आ कान मे कहलक – 'कमांडर अहां के बजा रहल छथि।'

तखन दारोगाजीक गप्प चलि रहल छलैक। हमरा भेल जे ई छौंड़ा दारोगाजी के

कमांडर कहैत अछि। ओहुना नव दारोगा अबिते गामक लोक सभ के बजबैत छथि। जान–पहिचान करबाक हेतु। संभवत: एखन हमर नंबर आयल हेतैक। पुछलियैक – 'दारोगाजी थाना मे छथि?'

ओ छौंड़ा सकपका गेल – 'की बात करैत छी? अपने के दारोगा नहि कमांडर बजा रहल छथि।'

– 'कोन कमांडर?'

– 'संगठनक कमांडर।'

सुनिते देह झुरझुरा गेल। ई छौंड़ा भूमिगत संगठनक समाद लऽ कें आयल अछि। गामक कएक गोटा के एहेन समाद आबि गेल छैक। ओ लोकनिक कमांडर सँ भेंट कऽ आबि गेल छथि। कमांडर सँ भेंट कयलाक उपरांत एक गोटे पागल भऽ गेल। बाद मे सुनय मे आयल जे कमांडर ओकरा सँ पांच लाख टका मंगने रहैक आ धमकी देने छलैक जे नहि देला पर ओकर बेटाक हत्या कऽ देल जेतैक। ओ बेचारा एतेक टका देबा मे असमर्थ छल। नहि देलकैक। समय सीमा पार भेलाक दू दिन बाद ओकर बेटा अंतर्ध्यान भऽ गेलैक। बेटाक शोक मे ओ पागल भऽ गेलैक। यद्यपि ओकर बेटा पंद्रह दिन बाद घूरि अयलैक। संगठन वाला सभ ओकरा छोड़ि देलकय। मुदा ओकर पागलपन नहि खत्म भेलैक। एहिना एकटा दोसर व्यक्ति के कमांडर बजौलकनि। ओ व्यक्ति घूरि कऽ अयलाह तऽ कौड़ीक मोल जमीन–जायदाद बेचि कऽ निपत्ता भऽ गेलाह। ओ छौंड़ाक गप्प सुनिते हमरा मोन मे ई सभ बात दन्न–दन्न घूमय लागल। की करब। विश्वास नहि भऽ रहल छल। हमरे बजाहटि अछि आ की ई छौंड़ा धोखा सँ हमरा कहि देलक।

– 'की हमरे बजाहटि अछि?'

– 'हं! अहीं के बजाहटि अछि।'

– 'तों हमर नाम जनैत छह?'

– 'हं! अहां रामआसरेजी छी।'

आब कुनू उपाय नहि छल। हम अपना के बड्ड असहाय जकां बूझय लगलहुं। देह पताय लागल। जाऊ कि नहि जाऊ? नहि जयबैक तऽ की होइतैक? जायब तऽ की होइतैक?

ताबत मे छौंड़ा अगुताबय लागल। – 'चलियौक नऽ। हुनका पास बेसी समय नहि छैन।'

छौंड़ा संगे हमरा गप्प करैत देखि किछु गोटे कें आशंका भेलनि। एक गोटे हमरा सँ पुछबो कयलनि – 'की बात अछि? चिंतित किएक भेल छी?'

हम कहलियनि – कुनू बात नहि। एहिना गप्प करैत छी। ई शहर सँ आयल अछि। घऽर लऽ जाइत छियैक।'

आ हम ओहि छौंड़ा संगे विदा भेलहुं। बाट मे पुछलियैक – ‘कमांडर कतऽ छथि?’

– ‘स्कूल पर।’

– ‘कोना जायब?’

– ‘मोटर साइकिल आगां ठाढ़ अछि।’

फेर कुनू बात नहि भेल। हाट सँ निकललाक पश्चात एकटा मोटर साइकिल ठाढ़ देखलहुं। एकटा दोसर छौंड़ा सेहो छल। मोटर साइकिल लग पहुंचलहुं तऽ ओ छौंड़ा ओकरा स्टार्ट कयलक। आगां वैह बैसल। बीच मे हमरा बैसौलक आ पाछां पहिलका छौंड़ा। कम जगह मे तीन गोटे मुश्किल सँ अँटल छलहुं। पाछां मे बैसल छौंड़ाक पेट पर काठ सनक वस्तुक आभास भेल। पीठ मे गड़ि रहल छल। अनुमान कैलहुं, पिस्तौल भऽ सकैत अछि।

अन्हार बाट पर मोटर साइकिल अपन इजोत केने फटफटाइत जा रहल छल। आशंका सँ देह कांपि रहल छल। देह डोलति बुझि ओ छौंड़ा पाछां सँ डटलक – ‘ऐना कियैक हिलैत छी? खसि पड़ब।’

स्कूल आबि गेल। मोटर साइकिल बाटे पर थम्हल। हम उतरलहुं। छौंड़ा सभ सेहो उतरल। एकटा छौंड़ा हमर बांहि पकड़ि लेलक आ धकियाबति आगां लऽ गेल। ओहिठाम दू गोटे छलाह। हमरा अबैत देखि दुनू ठाढ़ भऽ गेल।

– ‘कमांडर के नमस्कार करु।’ एकटा दाढ़ी वाला दिस संकेत करैत छौंड़ा बाजल। हम नमस्कार कैलियनि। ओ हमर बांहि पकड़ि एकटा कक्ष मे लऽ गेल। ओहि कक्ष मे एकटा मोमबत्ती जरि रहल छलैक। हमरा एकटा कुर्सी पर बैसा देल गेल। जे दुनू छौंड़ा हमरा लायल छल से बाहरे रहि गेल।

दाढ़ी वाला बाजल – ‘डेराऊ नहि। कुनू खतरा नहि छैक।’

– ‘तऽ हमरा कियैक बजौलहुं?’ हम साहस कऽ पुछलियनि।

– ‘से अहां के बता रहल छी।’

– ‘हमर सभक संगठनक संबंध मे अहां जनैत छी? ओ पुछलक।

– ‘कनेक-मनेक सुनने छी।’

– ‘हम सभ क्रांतिकारी छी। हमर संगठन अपन देश के स्वतंत्र करबाक लेल संघर्ष कऽ रहल अछि।’

– ‘देश तऽ स्वाधीन अछि। 15 अगस्त 1947 कें स्वाधीन भेल।’

– ‘ओ स्वाधीनता हमर सभक नहि अछि। हम सभ अपन मातृभूमि असम के स्वाधीन करबाक लेल संघर्ष कऽ रहल छी।’

– ‘मुदा ई तऽ एकटा प्रांत थिक।’

– ‘प्रांत नहि। हमर सभक देश, जाहि पर अहांक देश बलात कब्जा कयने अछि।’

– ‘अपने की बाजि रहल छी। हमरा किछु नहि बुझा रहल अछि।’

– ‘सैह बुझैबाक लेल हम अपने के एहिठाम बजौलहुं अछि।’

दाढ़ी वाला ई कहि हमरा दिस ताकय लागल। संभवत: ओ हमर प्रतिक्रिया जानबाक प्रयास कऽ रहल छल। दोसर व्यक्ति पाछां ठाढ़ छल। अन्हार मे ओकर रूप-रंग नुकायल छल। हम बैसल छलहुं आ ओ दुनू गोटे ठाढ़ छल। यद्यपि दाढ़ी वाला हमरा सँ शालीनता सँ पेश आबि रहल छल, मुदा तहियो हमर डर कम नहि भऽ रहल छल। बुझाइत छल जेना उत्सव मुखर परिवेश मे बलि के लेल आनल छागर छी। कतबो मोन के बुझैबाक प्रयास कयलहुं, मुदा मोन मानक लेल तैयार नहि।

किछु क्षण चुप रहलाक उपरांत दाढ़ी वाला फेर बाजय लागल। ppp

ÑÑÏñ´ÌæeçÜäÑÑ

मामा कहलनि जे चल सभागाछी घुमा अबैत छियौक तऽ मोन प्रसन्नता सँ भरि उठल। गाम अयलाह पन्द्रह दिन बीत गेल छल। सांझ-भिनसर दिनेश संगे घऽर-चौक करैत बीत रहल छल। कुनू नवीनता नहि छलैक। मामाक प्रस्ताव सुनि खूब नीक लागल।

– ‘कहिया चलब?’ हम पुछलियनि।

– ‘आइये। हम पोखरि सँ स्नान कऽ अबैत छी। तौं तैयार भऽ जाह। साइकिल मे हवा भरेबाक लेल पठौने छी।’ मामा कहलनि।

हमरा तैयारी की करबाक छल। झोरा मे कमीज-पेंट आ तौनी राखले अछि। साइकिल पर टांगब-बस।

सभागाछीक संबंध मे सुनिते छलहुं। बुझल छल जे विआह योग्य वर ओहि ठाम जाइत छथि। हमर छोटका कका सेहो सभागाछी गेल रहथि आ विआह कऽ लौटलाह। केना लोक सभ रहैत छथि, केना विआह ठीक होइत छैक, ओहि ठाम केहन लगैत हेतैक आदि-आदि प्रश्न सँ मस्तिष्क घूमय लागल। ई सभ प्रश्न अपन कक्षाक मास्टर साहबक प्रश्न जकां नहि

छल। मास्टर साहबक प्रश्न सुनिते विद्यार्थी सभ के जाड़-बोखार लागि जाइत छैक। उत्तर नहि सुझला पर घिग्घी बन्हा जाइत छैक। मुदा सभागाछीक संबंध मे मोन मे आयल प्रश्न सभ रोमांचक सृष्टि कऽ रहल छल।

एक घंटाक बाद मामा साइकिलक घंटी टनटनबैत दरवज्जा पर आबि गेलाह। बड़का कका के कहलथिन जे हिनका सभा लऽ जाइत छियैन।

– 'की हिनक विआह करेबाक ईच्छा अछि? एखन तऽ ई ओहि वयस के प्राप्त नहि भेलाह अछि?'

ककाक बात सुनिते लाज सँ देह सिहरि गेल। माथा गरम भऽ गेल।

– 'एखन विआह नहि करेबैन। सभागाछीक दर्शन करा आनति छियैन। देखल-सुनल रहतनि तऽ ठीक रहतैन।' मामा कहलथिन।

– 'बेस, तऽ लऽ जइयनु।' ककाक आज्ञा भेटल आ हम अपन झोरा साइकिल पर टांगि, पछिला सीट पर बैसि रहलहुं। मामा साइकिल आगां बढ़ौलनि।

शहर सँ असगर गाम अयबाक ई पहिल अवसर छल। गर्मीक छुट्टी छलैक। मौसाजी आ हुनक पुत्र इंद्रदेव गाम जाइत छलाह। इंद्रदेव हमरा सँ दू कक्षा निचा छलैथ, मुदा हमरा दुनू मे खूब मित्रता छल। वैह कहलक जे हम सभ गाम जाइत छी तऽ हमरो ईच्छा भेल जे गाम जाई। माय के कहलियनि। ओ किन्नहु नहि मानलीह। अंततः अर्जी बाबू के पेश करय पड़ल। बाबू कहलथिन, 'जौं गाम जयबाक ईच्छा छैक आ साढ़ू अपना संगे लऽ जयथिन तऽ जाय दियौऊ।'

एहि प्रकार हमर असगर गाम जयबाक कार्यक्रम बनल आ मौसाजीक संगे हुनक गाम, मामा गाम होइत गाम पहुंचल छलहुं।

हमर गाम सँ सभागाछी ठोकले पांच कोस छैक। मामा साइकिल चलैबा मे निपुन छलाह, तथापि खुरपैरिया बाट सँ जाइत काल कैय भटका खसल छलहुं तकर कुनू ठेकान नहि। मामा कहलनि मेन रोड पकड़ि जायब तऽ काल्हि पहुंचब। तैं चौरिये-चौरी जा रहल छी। आइर पर साइकिलक पहिया घूमि रहल छलैक। मामा सर्कस जकां साइकिल चला रहल छलाह, मुदा नियंत्रण सभ समय ठीक नहि राखि पाबि साइकिल खेत मे टपि जाइत छलैक। एहि तरह खसैत-पड़ैत हम सभ उचैठ दुर्गास्थान पहुंचलहुं। एकरा बाद आब आइर नहि पड़ल। बाट नीक छैक आ सोझे सभागाछी जाइत छैक।

दुर्गास्थान मे साइकिल लगा दुनू गोटे पोखरि मे हाथ-पएर धोलहुं आ भगवती के दर्शन कैलहुं। ओहि ठाम दोकान पर कच-चूरा-मुरही आ कचरीक जलपान कऽ पान खयलहुं आ पुनः यात्रा आरंभ भेल।

सभागाछी जाइत-जाइत राति आठ बाजि गेल। दूरे सँ बुझा गेल सभागाछी आबि गेल। चम-चम करैत गैस बत्ती। लोकसभक वार्तालापक अनुगूंज, आ सभ सँ बेसि सभागाछी जाइत-

अबैत लोक सभक भीड़। देखलहुं पाग पहिरने, कांख मे झोरा दबौने आ संगे खवास माथ पर बर्तन-बासन लेने सभागाछी जाइत लोक सभ। हुंजक-हुंज लोक। सभक उद्देश्य सभागाछी। सभागाछी सँ एक किलोमीटर पहिने सभागाछीक स्पर्श महसूस होमय लागल। अद्‌भुत रोमांच भऽ रहल छल। साइकिलक पछिला सीट पर बैसल बुझा रहल छल हवा मे उड़ि रहल छी।

सभागाछी पहुंचते साइकिल राखक समस्या भऽ गेल। मामा कुनू अपन लोक के ताकय लगलाह। तखने बतसिया भेट गेलनि।

– 'एहि ठाम की करैत छैं रौ?' मामा पुछलथिन।

– 'दोकान कएने छी मालिक।'

– 'कथी के दोकान छौ?'

– 'होटल अछि। चूरा-दही, पूरी-कचौरी, दाइल-भात-माछ वगैरह।' मामाजी के साइकिल राखक समस्याक समाधान भेट गेलनि। कहलथिन-'ठीक छैक। ई साइकिल राखह।'

बतसिया कनेक आगां बढ़ि कहलथिन—

– 'झोरा-मोटा सेहो राखि दियौक। राति मे जौं कहीं व्यवस्था नहि भऽ सकै तऽ एहि ठाम चलि आयब। एहि ठाम सभ व्यवस्था छैक।'

– 'ठीक छैक।' मामा सभ किछु ओकरे धरा देलथिन आ हम दुनू गोटे सभा मे पैसलहुं। मामा कहलनि पहिने चल पोखरि मे हाथ-पएर धोए कऽ मंदिर सँ दर्शन कऽ आबी। तकरा बाद लोक सभ के ताकब।

ओहिना भेलैक। बड़का पोखरि-ओहि पर घाट। हम सभ पएर धोलहुं-कुर्रूर कैलहुं आ आबि कऽ मंदिर मे दर्शन कैलहुं। संभवतः मामा भगवानक दर्शन करैत बात-व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित कयने छलाह। मंदिर सँ बाहर निकलिते विनोद भैया भेंट भऽ गेलथिन।

– 'कखन अयलहुं।' विनोद भैया मामा के गोर लगैत बजलथिन।

– 'एखने।'

– 'सामान कतय अछि। आ ई बटुक कतय भेट गेलाह।'

– 'सामान सभ बतसिया के राखय लेल दऽ देलियई। बतसिया अपने गामक अछि। होटल खोलने अछि।'

– 'हां....हां। चिन्हैत छिएक। हमरो सामान ओकरे होटल में अछि। मुदा हमरा सभ के नीक डेरा भेटल अछि। चलू ओहि ठाम गप्प करब।'

सभागाछी भरल छलैक। लोकसभ जतय-ततय डेरा खसौने छलाह। गाछक तर मे तऽ पोखरिक भीड़ पर। एतेक बड़का इनार हम कतहु नहि देखने छलहुं। बड़का इनार। कहल जाइत छैक जे जौं दू टा हाथी एहि मे पैसि जाय तऽ ओकरा ओहू मे घूमय-फिरय, उठऽ-

बैसऽ मे कुनु दिक्कत नहि हेतैक। ततेक बड़का इनार। इनारक पकिया ओसारा पर सेहो सौ सँ अधिक डेरा छलैक। विनोद भैया हमरा सभ के अपन डेरा दिस लऽ गेलाह। मंदिर सँ उत्तर पोखरिक पछबरिया भीड़ पर बनल अतिथिशाला मे। ओहू ठाम लोक खच-खच भरल छलैक। विनोद भैया गाम सँ एकटा भनसिया सेहो आनने छलाह। भनसिया ओहि ठाम तीन टा ईंट के जोड़ि कऽ भानस कय रहल छल। भात, राहरिक दाइल आओर परोर-आलूक तरकारी।

विनोद भैया छलाह असगरे, मुदा डेरा खसौने छलाह खूब नम्हर। पुछलियनि—

– 'खूब पैघ ओछाओन कयने छी?'

– एखन तीन टा जाजीम के जोड़ने छी। देखैत नै जा। ईहो छोट पड़ि जायत। लोक सभ तऽ एखन आयब शुरुये कयने छथि।'

ओछाओन पर देखलहुं दू बोरा चाउर, एक बोरिया दाइल। मसाला सभ कूटल सेहो राखल छल।

– 'ई सभ गामे पर सँ लायल छी। एहि ठाम तरकारी कीनय पड़ैत अछि। जारनि सेहो कीनिये कऽ लबैत छी।'

हमरा सभ के देखिते भनसिया अधहन बेसि कऽ देलक। दाइल बनि गेल छलैक। तरकारी मे परोर आ आलूक मात्रा सेहो बढ़ि गेल। हम मामा सँ अनुमति लऽ कऽ बाहर निकललहुं। सभागाछी घूमय वास्ते। खूब जगमगा रहल छलैक। कतहु कयेकटा जीप पर बरिआती सभ प्रस्थान करक मुद्रा मे छलाह। पाग पहरिने, चानन-काजर कयने वर जीप के अगिला सीट पर बैसल भविष्यक चिंता मे निमग्न। बाट सँ सटल होटल सभ मे सेहो खूब भीड़ छलैक। केओ चूरा-दही सुरकि रहल छलाह तऽ केओ पूरी-जिलेबी पर टूटि पड़ि रहल छलाह। एकटा बाबा मिरजई पहिरने, एक हाथ मे लाठी नेने दोसर हाथ सँ चाह सुरकि रहल छलाह। बाट पर वाहन सभक भीड़ आ पों...पों....टों....टों। ओहि मे टमटमक घोड़ाक गरदनि मे झूलति घुंघरुक रून-झुन सँ संगीतमय वातावरणक सृष्टि भऽ रहल छल। घूमि-फिरिकय डेरा अयलौं तऽ मामा-भैया भोजन पर हमर प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह।

– 'कतय चलि गेलाह? आबह भोजन करह।'

ओ भोजनक स्वाद हमरा एखनो नहि बिसराइत अछि। माइटक गम्मक सँ युक्त भोजन। भरि पेट भोजन कयलाक उपरांतो संतोष नहि। ओहि पर कलक लोहनगर पानि। सोना मे सोहागा। – 'एतेक सुंदर भोजन केना बनौलियई यौ भनसिया।'

हमर प्रशंसा सुनि भनसिया लजा गेल। मामा कहलनि पोआरक गेरुआ बना कऽ सूति रहय। तखन राति एगारह बजैत छलैक। अतिथिशाला मे सभ लोक अपना-अपना युक्ति लगेबा मे लागल छलाह। कयेक गोटा जिनका भानसक प्रयोजन नहि छलैन, होटल सँ भोजन कऽ आयल छलाह आ अपन ओछाओन पर बैसि देशक राजनीति के छकरि रहल छलाह। यद्यपि चारु दिस चहल-पहल, हो-हल्ला छलैक, मुदा ओछाओन पर पड़िते हम गंभीर निंद्रा मे चलि

गेलहुं।

निन्न टूटल तऽ विनोद भैया स्नान-ध्यान कऽ तैयार भेटलाह। मामा स्नान करय गेल छलाह आ भनसिया बर्तन मांजय लेल।

–'जा.... पोखरि दिस सँ भऽ आबह।' विनोद भैया लोटा पकड़ा देलनि आ हम नित्य-कर्म सँ निवृत्त होमय निकलि गेलहुं बाध दिस।

लौटलहुं तऽ मामा-भैया दुनू मे सँ केओ नहि भेटलाह। भनसिया कहलक चूरा-दही खा लियऽ। भानस देरी सँ होयत। हमहुं मेला घूमय जाइत छी।

मोन छल होटल मे टेबल-कुर्सी पर बैसि कऽ पूरी-कचौड़ी खयबाक। भनसिया के कहलियई एखन जलपान करबाक ईच्छा नहि अछि।

अतिथिशाला सँ निकलि सोझे बतसियाक होटल मे पहुंचलहुं। बतसिया हमरा हाथ पकड़ि भीतर लऽ गेल। मोन भरि पूरी-कचौड़ी, तरकारी, जिलेबी खयलहुं आ विदा भेलहुं मेला घूमय लेल।

इनार दिस अबिते मामा सँ भेट भऽ गेल, पुछलियनि विनोद भैया कतय छथि। मामा कहलनि आगां गाछक निच्चा चबूतरा पर पतरा बेचि रहल छथि। मामा के कहलियनि हम ओतय जाइत छी। हमर आवश्यकता हुए तऽ ओहि ठाम ताकब।

घूमैत-घूमैत विनोद भैया लग पहुंचलहुं। ओ पतरा बेचय मे निमग्न छलाह। गंगा पंचांग, विद्यापति पंचांग आ विश्वविद्यालय पंचांग। सभ अलग-अलग। सभक दाम अलग। हमरा देखिते विनोद भैया मुस्कियाय लगलाह।

– 'आबह। बैसह।' भैया चबूतरा के तौनी सँ झारिकय हमरा लेल जगह बनौलनि।

ओ आनंद आब कहां। खूब पंचांग बेचलहुं। बीच-बीच मे भैया पंचांग लाबय चलि जाइथ तऽ असगरे बेचलहुं। गंगा पंचांग सगरो निपटि गेलई। लोक सभ विद्यापति पंचांग पर टूटि पड़लाह।

– 'एकटा हमरो दिअ.... हमरो यौ.....कतेक दाम.....कम नहि करब आदि आदि।'

पतरा बेचैत सांझ भऽ गेलैक। विनोद भैया कहलनि आब उठाबह। आब काल्हि देखल जेतैक। हम पुछलियनि-'की आब ग्राहक नहि आओत?'

– 'आओत तऽ की करबैक? एगो-दूगो ग्राहक लेल भरि राति नहि बैसि सकैत छी।' गप्प-सप्प होइते छल कि मामा पहुंचि गेलाह।

– 'की, भऽ गेलैक दोकानदारी?' ओ पुछलथिन।

– 'हं.... आई ठीक रहल। तीन बेर पतरा लाबय पड़ल। किछु बचि गेल अछि आ काल्हि भोरे मधुबनी जा कऽ आरो आनब। गंगा पंचांग तऽ कतहु नहि छैक। विद्यापति आ

विश्वविद्यालय पंचांग छैक।'

– 'चलू डेरा पर।'

भैया पतराक मोटा उठौलनि आ तीनू गोटे अतिथिशालाक लेल प्रस्थान कयलहुं। आई विआहक नीक दिन छलैक आ सभागाछी मे अनेक कथा ठीक भेल छलैक। पंजिकार लोकनिक शिविर सेहो चह-चह करैत छल। एकटा सिद्धांत लिखक शुल्क एकावन टका। खुशी सँ जे जतेक बेसि दऽ दियऽ। आई ततेक विआह ठीक भेल छलैक जे जीपक अभाव भऽ गेल छलैक। कयेकटा बरिआती सभ के ट्रेक्टर पर बैसल देखलहुं।

सभागाछी मे बनारसी पानक कयेकटा दोकान छलैक जाहि मे पचास पाई सँ पचास टका खिल्ली वाला पान बिकाइत देखलहुं। मामा कहलथिन-'विनोद, बटुक के बनारसी पान खुआ दियनु। भरि दिन पंचांग बेचि कऽ अहां के सहयोग कयलनि अछि।'

– 'से अहां ठीक कहैत छी। बौआ कोन पान खायब।'

हमरा मुंह सँ निकलल-'मिठा।'

बनारसी पान दोकान पर तीनू गोटे पान खयलहुं आ डेरा विदा भेलहुं। डेरा पर अबिते देखैत छी जे तेरह गोटे ओछाओन पर बैसल छथि। विनोद भैया आ मामा के देखिते ओ सभ ठाढ़ भऽ गेलथिन। नमस्कार-पाति भेल। फेर सभ गोटा बैसलाह। हमहुं सभ बैसलहुं।

मामा सँ पुछलियनि-'के सभ छथि?'

– 'सभ अपने लोक छथि। किछु गोटे परसौनी के, किछु गोटे छतौनी के आ बाकी मुरलियाचक के छथि।'

अभ्यागत लोकनि मे एकटा पीसा सेहो छलाह। मुंबई रहति छथि। गाम आयल छथि। कन्यादान करबाक छन्हि। हुनका संगे हुनक ग्रामीण दू गोटे छथिन। परसौनी के अभ्यागत सभ सभागाछी घूमय लेल आयल छथिन। छतौनी वाला सभ सेहो एकटा कन्यादानक संदर्भ मे आयल छथि।

वार्ताक क्रम मे पीसा कहलथिन जे आई ओ कयेकटा वर देखलनि। समस्तीपुर जिला सँ आयल वर हुनक पसिन्न छन्हि, मुदा पाई पर नहि फरिछा रहल छैक। मामा पुछलथिन- 'वर के गाम-घऽरक परिचय भेटल। कोना की छैन्ह।'

– 'से सभ पता लगा लेने छी। वरक पित्ती मुंबई मे रहैत छथि। हुनका सँ हमरा नीक परिचय अछि। वैह कहने छलाह जे वर सभागाछी मे जेतैक। एहिठाम हुनक पिता सँ भेंट भऽ गेल। वर साहित्य सँ आचार्य कयने छथि आ हाईस्कूल मे शिक्षक छथि।'

– 'तखन तऽ ई काज भऽ जाय से नीक।' मामा कहलथिन।

वार्ता मे परसौनी के योगेन्द्रजी सेहो कूदलाह, कहलथिन-

– 'अहां चिंता कियैक करैत छी। काल्हि जेना-तेना ई काज पटबै करतैक। अपने

व्यवस्थाक संबंध मे चिंता करु।'

– 'से तऽ ठीक छैक, मुदा ओहो सभ नीक लोक छथि। हम हुनका सभ पर कोनो अनुचित दबाव देबय नहि चाहैत छी। प्रेम सँ जौं काज पटि जाय, तऽ नीक।'

– 'सैह हेतैक। अपने चिंता मुक्त होऊ। काल्हि भोरे सँ एहि काज मे लागब। हुनक सभक डेरा कतय छन्हि।'

– 'इनारक कात मे।'

गप्प-सप्प होइत रहल। आन-आन विषय पर सेहो चर्चा भेल। सभागाछीक व्यवस्था पर चर्चा खूब गर्म रहलैक। एक गोटेक कहब छलैन्ह जे सभागाछी मे आगंतुक सभक लेल नीक व्यवस्था नहि छैक। सरकार व्यवस्थाक लेल जे पाई दैत छैक ओ सभटा दलाल सभक जेबी मे चलि जाइत छैक। एहि बात के कएक गोटा समर्थन कयलथिन, मुदा एक गोटा आर नीक बात कहलथिन। हुनक कहब छलैन्ह जे सभटा दायित्व सरकारे पर नहि छोड़बाक चाही। किछु दायित्व अपनो सभ के लेबाक चाही। सभागाछी केर विकास केना हुए आ एकर फयदा वर्ष भरि होइत रहैक तकर व्यवस्था होयबाक चाही। एखन हम सभ वर्ष मे एहि ठाम एक बेर जुटैत छी। सेहो मात्र पंद्रह दिनक वास्ते। एकरा बाद सभागाछी कें बिसरि जाइत छी। एहेन नहि होयबाक चाही। एहि ठाम किछु एहेन उपक्रम होयबाक चाही जाहि सँ वर्ष भरि लोक आबथि आ अपन प्रयोजन सिद्ध करथि।

सभाक समय मे लाख सँ बेसि लोक एहि ठाम जुटैत छथि। हुनका सभ के रहक व्यवस्था कतय छन्हि। आई जौं वर्षा भऽ जाइक तऽ सभागाछी खाली भऽ जायत। ई सभ व्यवस्थाक संबंध मे जौं सोचबै जे सरकार करत तऽ सोचनाई व्यर्थ।

– 'तऽ की अपने करबैक?'

–'नहि, सभ गोटे कें मीलि कऽ करऽ पड़त। एकटा संस्था बनैबाक चाही जे सभागाछी केर विकास आ बहुद्देशीय बनैबाक प्रयास करत।'

– 'ई चर्चा आब छोड़ू। विश्राम करु। काल्हि बहुत काज अछि।' विनोद भैया कहलथिन आ सभ गोटे ओहि ओछाओन पर जेना-तेना ओङघरा गेलाह।

हमरा आंखि मे निन्न नहि छल। सभागाछीक विषय मे ओहि वक्ताक बात बेर-बेर मोन मे आबि रहल छल। ठीके तऽ कहैत छथिन्ह। मात्र पंद्रह दिनक वास्ते सभागाछी। एकर समुचित उपयोग होयबाक चाही। ई एकटा नीक पर्यटन स्थल भऽ सकैत अछि। सभागाछीक इतिहास, मंदिर, पोखरि, इनार-एकर भव्यताक आकर्षण मे कतय कमी छैक? ppp

ÑÑæñ´ÌæÑÜãÑÑ

एकटा मोमबत्ती सौंसे घऽरक प्रकाशक आधार छल। स्कूल गाम सँ हटि कय छैक। चारु दिस मात्र खेत। बाट सुनसान। कखनो-कखनो कुकुरक भूकब कान मे आबि रहल छल। एहेन भयानक परिस्थिति हमर जीवन मे कहियो नहि आयल छल। रामआसरेजी अपन भोगल यथार्थ कें बयान कऽ रहल छलाह। हम सभ हुनक मुंह दिस ताकि हुनक अनुभव सँ रोमांचित भऽ रहल छलहुं।

रामआसरेजी कहय लगलाह—

– 'हमर स्थिति बाघक मुंह मे बैसल मनुष्य जकां छल। बाघ कखन अपन मुंह बन्न कऽ लेत आ हमर खिस्सा कखन खत्म भऽ जायत, तकर कोनो ठीक नहि। दाढ़ी वाला के कोन विश्वास। जेबी सँ पिस्तौल निकालत आ एकटा गोली खर्च करत। तकरा बाद की हेतैक से के जानी। तथापि दाढ़ीवालाक गप्प सुनक लेल ओकरा दिस ताकि रहल छलहुं।

कनेक एम्हर-ओम्हर टहलि कऽ ओ फेर शुरू भेल—

'अहां तऽ हमर सभक संगठनक विषय मे कनेक-मनेक जनैत छी। अहां ईहो जनैत होयब जे केंद्रक पूंजिपति सभ एहि भूखंड के लूटि रहल अछि। ई असमिया जाति के ध्वंस करबाक षड्यंत्र छैक। यदि हम सभ कनेक गंभीर भऽ असमिया जातिक भविष्यक संबंध मे

चिंता करी तऽ देखब जे किछुक वर्षक पश्चात असमिया जाति सिर्फ इतिहासक पन्ना पर रहि जायत। महान असमिया जाति ध्वंस भऽ जायत। एहि जाति कें ध्वंस सँ बचैबाक हेतु किछु युवक आगां अयलाह। असमक आम लोकक ओकरा सभक प्रति अकुंठ समर्थन छैक आ भविष्य मे सेहो रहत। स्वाधीन देश हमर सभक अधिकार अछि। हम भीख नहि मांगि रहल छी। हम अपन अधिकार प्राप्त करबाक हेतु प्रयास कऽ रहल छी। मुदा लोकतंत्रक मुखौटा पहिरने छद्म देशप्रेमी सभ शोषण स्थली के मुक्त करबाक पक्ष मे नहि छथि आ एहिठामक लोक सभ पर जुलूम कऽ रहल छथि। ओ बंदूक सँ समाधान ताकि रहल छथि। सामयिक रूप सँ ई वांछित फलदायक जरूर छैक, मुदा लोकक मोन मे उठल अलगाववाद भविष्य मे एहेन रूप धारण कऽ लेत जे शोषक सभक गोली-बारूद सभ वृथा जायत। एहिठामक लोक सभ पर कारी कानून लगाओल गेल छैक। वृद्ध आ बालक कें आतंकवाद विरोधी कानून केर शिकंजा मे कसल जा रहल अछि। शांति स्थापनाक नाम पर हत्या भऽ रहल अछि। ई सभ ठीक नहि। हम सभ शोषणहीन सुंदर स्वप्निल देश बनैबाक लेल प्रयासरत छी। किछु गोटे एहि संग्राम के समाप्त करक लेल प्रयास कऽ रहल छथि। एहि मे समाजक लोक सभ छथि। मुदा हम सभ एहि संघर्ष के मरय नहि देबैक। मुक्ति संग्रामक लेल कर्मीक अभाव नहि छैक। असमिया जाति के ध्वंस होयबा सँ बचैबाक हेतु हमर संघर्ष के अपने सभक सहयोगक आवश्यकता अछि। हमरा बुझल अछि जे अपनेक पूर्वज डेढ़ सौ वर्ष पहिने एहिठाम अयलाह। अपने सभक अनुभव आ एहि भूखंडक विकास मे अपने सभक सहयोग कें दृष्टिगत राखि हम अपने के एहिठाम सँ चलि जयबाक हेतु नहि कहब, मुदा आशा राखब जे अपने सभ हमरा सभ कें सभ तरह सँ सहयोग करब। एकटा बात स्मरण राखब जे हमरा सभ सँ विश्वासघात करय वाला के हमर कानून मे 'प्राण दंड' छैक।'

दाढ़ी वाला कमांडरक गप्प सुनि मोन कनेक आश्वस्त भेल। बुझय मे आयल जे ई युवक सनकी नहि अछि। एकरा मे विचार छैक। तैं किछु पूछबाक सेहो साहस भेल। हम पुछलियनि—

– 'अपन जे स्वाधीन देशक गप्प करैत छी तऽ भौगोलिक सीमा सेहो खिंचने होयब। से की छैक?'

– 'हम सभ अपने देश के स्वाधीन करक हेतु संकल्पित छी। भौगोलिक सीमा खींचि कोनो आडंबर करबाक ईच्छा नहि अछि।'

– 'अपने जाहि भूखंड के देश सँ अलग करबाक लेल कहैत छी से तऽ कहियो मुख्य भूखंड सँ अलग नहि छल।'

– 'नहि। अपने फुसि बजैत छी। ई भूखंड हमेशा सँ पृथक छलैक आ एखनो छैक। एखन एहि पर उपनिवेशकारी सभक कब्जा छैक।'

– 'अपने पुराण-इतिहास उनटा लियऽ कत्तहु नहि लिखल छैक जे ई भूखंड मूल

भूखंड सँ अलग छल।' दाढ़ी वाला हमर तर्क सुनि कनेक खिसियाय लागल छल। गरजि कऽ बाजल—

– 'इतिहास-पुराण सभ तऽ अहीं सभ द्वारा लिखल छैक। अहां सभ अपन हितक अनुसारे कथा सभक रचना कयने छी।'

– 'अच्छा ई कहू असमियाक व्याख्या की छैक। अहूं के बुझल होइत जे ब्रिटिश अयलाक उपरांत एहिठामक अधिवासी सभ के असमिया कहल गेल।'

– 'असमिया जाति एकटा शाश्वत नाम छैक। युग-युगांतर सँ चलि आबि रहल अछि। आब एकरा ध्वंस करबाक षड्यंत्र कयल जा रहल छैक। कुनू कीमत पर हम सभ एकर रक्षा करब आ दासता सँ मुक्त करब।'

– 'हे यौ कमांडरजी, अपनेक गप्प हमरा नहि बुझा रहल अछि, तथापि कहू अहां हमरा सँ की चाहैत छी।'

– 'अहां एतेक शीघ्र बुझि जायब तकर आशा हमरो नहि छल। जखन हमर अपने लोक हमरा सभ के बुझब मे असमर्थ छथि तऽ अपने कें हम की कहू।

अपने सँ हम सहयोग चाहैत छी। हमर सभक सदस्य कहियो काल गाम मे आओताह तऽ हुनक रहब-भोजनक व्यवस्था होयबाक चाही आ पुलिस के कनिको आभास नहि होयबाक चाही। सहयोगक संबंध मे हमर संदेश अपने के भेटैत रहत। एखन आब अपने प्रस्थान करु। असगरे जाय पड़त।'

ई कहि दाढ़ी वाला मोमबत्ती मिझा देलक। अन्हार मे बुझायल जेना ओ दुनू कतहु ससरि गेल। किछु क्षण पश्चात दूटा मोटर साइकिल स्टार्ट भेलैक आ फेर बुझायल जे दुनू कतहु दूर जा रहल अछि। हम कुर्सी पर सँ उठलहुं आ खसैत-पड़ैत कक्ष सँ बाहर आबि बाट पकड़लहुं। मोन हल्लुक, मुदा कनहा भारी लागि रहल छल। दूरे सँ देखलहुं गाम मे दलान पर मरकरी जरि रहल अछि। लाठीवाला बिजली। दाढ़ी वाला सँ गप्प करैत तर्क शक्ति भुरकुस भऽ गेल छल। दाढ़ी वालाक स्मरण अबिते मोन घृणा सँ भरि गेल। यद्यपि ओ हमरा संगे कुनू दुर्व्यवहार नहि कयलक, मुदा ओकर गप्प में निहित देशद्रोहिताक जहरि स्पष्ट बुझा रहल छल।

ppp

ÑÑÂñ´ÌaeçÜaÑÑ

आई विनोद भैयाक दोकान पर खूब भीड़ छलैन। ओना पतरा बेचय वाला एक गोटा सँ दू गोटा भऽ गेल छलाह। विनोद भैयाक दोकान सँ कनेक हटि कऽ एक गोटे सेहो पतरा बेचि रहल छलाह। हमहुं भैया के सहयोग करय मे लागि गेलहुं। सभ सँ दिक्कत छलैक खुदरा पइसा के। लोक सभ नोटे दैत छलथिन आ घुरताक लेल भैया के बड्ड दिक्कत होइत छलैन।

बेर-बेर पान दोकान, होटल जाय पड़ैत छलैन। तथापि अजुका बिक्री खूब छलैन। ओहुना सभा काल्हिये धरि छैक। विआहक दिन परसू सेहो छैक, मुदा दिन मे। लोक सभ आइये अपन काज भजैबाक जुगत मे छथि। मामाजी पीसा संगे घूमि रहल छलाह। समस्तीपुर जिला वाला काज पटिये नहि रहल छलैन। राति मे ताल ठोंकि कऽ काज करा देबय वाला कुटुम सभक कुनू अता-पता नहि छलैन। पीसा अपन किछु गोटे ग्रामीण के जुटौलनि आ फेर पहुंचलाह समस्तीपुर वालाक डेरा पर। तखन किछु आओर कन्यागत ओहि ठाम जुटल छलाह। गप्प-सप्प होइत छलैक। वर इंटरव्यू दऽ रहल छलाह। एकटा पंडितजी हुनक संगे संस्कृते मे वार्तालाप कऽ रहल छलाह। विनोद भैयाक दोकान सँ मामा हमरो संगे नेने आयल छलाह। ताहि पर विनोद भैयाक टिप्पणी छलैन जे लऽ जाऊ। हिनको अनुभव भेनाई जरूरी छैन। आखिर दू-एक वर्ष बाद तऽ ईहो उम्मीदवार रहताह।

पीसा के देखिते समस्तीपुर वाला वरक पिता ठाढ़ भऽ गेलथिन। पीसा सँ ओहो प्रभावित

छलाह। यद्यपि ओछाओन पर जगह नहि छलैक तथापि ओ कहुना जगह बनौलनि, पीसा के बैसोलनि आ पानक डाला आगां बढ़ा देलथिन। पीसा, मामा आ हमरा दिस ताकि संभवत: समस्तीपुर वाला के इशारा कयलथिन जे ई लोकनि सेहो हमरा संगे छथि। संभावित कुटुम पीसाक संकेत बुझि गेलथिन आ अपन सहयोगीक संग ओछाओन के आरो विस्तार करय लगलाह।

एम्हर पीसा समस्तीपुर वाला सँ गप्प कऽ रहल छलाह, ओम्हर वरक मौखिक परीक्षा चलि रहल छलैक। वर सँ पूछताछक उपरांत वरक पिता सँ गप्प-सप्प भेलैक। किछु गप्प स्पष्ट छलैक, किछु संकेत मे तऽ किछु गप्प एकटा तौनी सँ हाथ झांपि कऽ भेलैक। मुदा काज नहि पटलैन तऽ कन्यागत 'अबैत छी' कहि उठि गेलाह।

एम्हर ई कन्यागत सभ विदा भेलाह आ ओम्हर पीसाक ग्रामीण सभ ओहि ठाम पहुंच गेलाह। पीसा सँ पुछलथिन-'वर सँ गप्प भेल?'

- 'हमरा तऽ भेल। अपनेक विचार होय तऽ अहूं कऽ लियऽ।' पीसा कहलथिन।

- 'हं.... हमरा तऽ विचार अछि।' ई कहि ओ व्यक्ति वर सँ गप्प-सप्प मे लागि गेलाह। हुनक संगे आयल आरो कयेक गोटा सेहो बातचीत मे भीड़ि गेलाह। एक घंटा धरि खूब भेलैक। वरक वृहस्पति मजबूत छलैन। जेहन प्रश्न-तेहने उत्तर। खूब ठसाठस। वरक परीक्षा लेबय वाला सभ वरक वाक्चातुर्य सँ खूब प्रसन्न भेलाह। एक गोटे पीसाक कान मे कहलथिन-'कऽ लियऽ। बड्ड नीक काज अछि।' वरक परीक्षा लेबय वाला मे सँ किछु गोटे वरक शैक्षणिक प्रमाण पत्र, अंक पत्र के जांचय मे लागि गेलाह।

पीसा वरक पिता सँ कहलथिन-'आब ई वर हमरा देबहि पड़त।'

- 'तऽ से हम कहां अस्वीकार करैत छी।' वरक पिता कहलथिन।

- 'मुदा खुट्टा जे गाड़ने छियैक।' पीसा टका पर कहलथिन।

- 'दोसर कोन उपाय। अपने तऽ जनैत छियैक जे बेटाक विआह मे सेहो खर्च करय पड़ैत छैक। हम नौकरी सँ अवकाश प्राप्त छी। कतय सँ खर्च करब।'

एहि बातचीत मे मामा पैसलाह।

- 'खर्च हमरा पर छोड़ि दियऽ। जतय आवश्यकता हेतैक खर्च हम सभ करब। अपने पर बोझ नहि पड़त।'

- 'अपनेक बात बुझलहुं, मुदा ऐना नीक नहि रहत। पुतोहु के जौं दस भरि सोना नहि देबैन, बनारसी साड़ी नहि देबैन तऽ गौंवा हमर कोन दशा करत से अहूं के पता हैत।'

- 'तैयो अपने कनेक नीचा आऊ।'

- 'नीचा पर नहि सकब।'

अहि घमर्थनक बीच बेनीपट्टी वाला मुखिया आबि गेलथिन। मुखियाजी दुनू पक्षक परिचित छलाह। अबिते दुनू पक्ष सँ कुशल-क्षेम भेलैक। मुखियाजी पुछलथिन - 'बात कतय अटकल अछि?' पीसा कहलथिन - 'ई मानिये नहि रहल छथि।'

- 'से कियैक यौ मिसरजी। एहेन कुटुम नहि भेटत। ई बड्ड नीक लोक छथि। कन्याक विषय मे तऽ कुनू तरहक अंदेशा नहि राखू। अहांक घऽर मे जेतीह तऽ घऽर इजोर भऽ जायत।' मुखियाजी कहलथिन।

- 'से तऽ हमहुं बुझैत छी, मुदा हम की कहू। अपने तऽ जनिते छी। खर्च हम कतय सँ करब।'

- 'तऽ की ई अपने के किछु नहि दैत छैथ?' मुखियाजी पुछलथिन।

- 'दऽ रहल छथि। मुदा पर्याप्त नहि।'

- 'अपनेक पर्याप्त कतेक मे हेतैक। तौनी तर मे कहू।'

वरक पिता अपन आ मुखियाजीक हाथ तौनी सँ झांपि लेलाह आ दस टा आंगुर गना देलथिन। अर्थात् दस हजार टका।

- 'आ अपने कतय पर छी? ' मुखियाजी पीसा सँ पुछलथिन।

पीसा हुनका कान लऽग मुंह लगा कऽ कहलथिन - 'आठ हजार टका।'

- 'तऽ बात तऽ बेसि ओझरायल नहि अछि। आब सिद्धांत इत्यादिक व्यवस्था करु। दियनु-हिनका वरक पता दियनु।'

- 'से कोना हेतैक। बात टूटि जयबाक चाही। हमरा ओझराओल गप्प पसंद नहि अछि।'

मुखियाजी तमतमा गेलाह - 'अईं यौ। अहां के हमरो बात पर भरोस नहि अछि। तऽ एतेक दिनक मित्रता कोन काजक। देखू, हमर सीधा बात अछि। अपने जौं हमरा मित्र बुझैत छी तऽ एक कम हौऊ आ अहूं सुनि लियऽ जौं ई काज करय चाहैत छी तऽ एक ऊपर आऊ।' मुखियाजीक कहब छलैन्ह नौ हजार टका। मामा कहलथिन - 'कऽ लियऽ। मुखियाजी ठीके कहैत छथि।'

ओम्हर वरक पिता अपन सहयोगी सभ के ताकय लगलाह।

- 'लाबह हौ..... पान लाबह।'

चलू ई काज तऽ ठीक भऽ गेल। पीसा बजलाह आ चारि गोटे मीलि कऽ टका गनय लगलाह।

वरक पिता मुखियाजी के बरिआती लऽ जयबाक लेल अनुरोध करय लगलाह। मुदा ओ नहि मानलथिन। कहलथिन - हमर सरबेटीक विआह अछि। हमरा ओहि ठाम जयबाक

अछि। ओना समय भेटत तऽ आशीर्वाद देमाक लेल जरूर आयब।'

टका गना गेल। पीसा आन-आन व्यवस्थाक लेल निकलि गेलाह आ मामा सिद्धांत करैबाक लेल। मामा हमरा ओहि ठाम छोड़ि देलनि। कहलथिन-'वर सँ गप्प करु। ई अहांक बहिनोई हेताह।'

करीब एक घंटाक पश्चात पीसा आ मामा अयलाह। हुनक संगे आरो लोक छलैन्ह। मामा हमरा बजा कऽ लऽ गेलाह। ओम्हर सँ विनोद भैया के अबैत देखलहुं। हम पुछलियनि - 'सभटा बिका गेल।'

- 'हं। अपनो लेल नहि रहल। अपना लेल मधुबनी मे कीनि लेब।'

- 'काल्हि दोकान नहि लागत?'

- 'नहि, आब भऽ गेल। ओहुना काल्हि सभा खहरि जायत।'

मामा विनोद भैया के कात मे लऽ गेलथिन आ पीसाक कन्यादान ठीक होयबाक सूचना दैत किछु काज सुना देलथिन। मामाक निर्देशानुसार विनोद भैया आ हम मामाक साइकिल लऽ पीसाक गाम विदा भेलहुं। मामा सिद्धांत भैया के पकड़बति कहलथिन - जे पीसी के ई दऽ देबाक छैक। ओ एकरा भगवतीक लऽग राखि देथिन। संगहि दलान पर पंद्रह टा बरिआतिक लेल टेबल-कुर्सी, ओछाओन आ नाश्ता-भोजनक व्यवस्था करक लेल सेहो कहलथिन। दहीक व्यवस्था गामे पर करबाक छैक आ पांच तरहक मिठाईक संग पीसा गाम पहुंचताह। बरिआती राति दस बजे तक गाम पर आओत। मामा ईहो कहलथिन जे हमर आ विनोद भैयाक सामान मामा अपने संगे जीप पर लऽ औताह।

ई सभ समाद लऽ-कऽ हम सभ गामक लेल विदा भेलहुं। पहिने पीच, फेर कचिया बाट आ तकरा बाद खुरपैरिया बाट। खसैत-पड़ैत पीसाक गाम पहुंचलहुं। पीसी हमरा सभ के देखिते बुझि गेलथिन जे हम सभ कुनू नीक समाद आनने छी। पुछय लगलथि - कोन गाम, कतेक पाई, बरिआतिक संख्या आदि-आदि। विनोद भैया हुनका सिद्धांत थम्हबैत सभ जानकारी देबय लगलथिन। साइकिल चलबैत भैया नहि थाकल छलाह। हुनका अभ्यास छैन्ह। साइकिल पर बैसल-बैसल हम थाकि गेल छलहुं। कुर्सी थामि कऽ सुस्ताय लगलहुं।

- 'विआहक गप्प की कहू। ओहिना भेलैक जेना होइत छैक। बरिआती राति दस बजे पहुंचलाह। हाथ-पएर धोआ कय जलपान कराओल गेल। राति एक बजे भोजन शुरू भेल। डहकनक संगे भोजन चलैत रहल। बरिआती सभ तीन बजे ओछाओन पकड़लाह। एम्हर विआह होइत रहल।'

ई कहि हम चुप्प भेलहुं। बैसार मे उपस्थित सभ लोक गद्‌गद् भेलाह। मुन्ना कका निन्न सँ उठैत बजलाह—

- 'एतेक आनंद तऽ हमरा अपनो विआह मे नहि आयल छल।' लाल कका चट्टे

मुन्ना कका के धऽ लेलथिन—

- 'तोरा तऽ अपन विआह मोन नहि हेतौऊ। जहिया तोहर विआह भेलहु तहिया तोहर उम्र मूड़न करबाक छलौक।'

ठहाका बजरि गेल। मुन्ना कका लजा गेलाह।

हमर उद्‌देश्य संपूर्ण नहि भेल छल। हम फेर शुरू कयलहुं—

- 'सभागाछीक ई वृतांत कहबाक हमर उद्‌देश्य कुनू विआहक बखान करबाक नहि छल। परुँका साल हम गाम आयल छलहुं तऽ वैह हुलास सँ सभागाछी पहुंचल रही। सभागाछीक दशा देखि मोन मे बड्ड कष्ट भेल। सुनसान सभागाछी मे दू-चारि टा शिविर छलैक, सेहो पंजिकार सभक। किछु कन्यागत के देखलहुं सिद्धांत करबैत। दोकान, मेला, डेरा सभक कोनो पता नहि छल। विश्वासे नहि भेल जे ई वैह सभागाछी छैक जतय लोकक संख्या एक लाख सँ बेसि भऽ जाइत छलैक तऽ बड़क गाछ मुर्छिया जाइत छलैक।'

विश्वनाथ कका निःश्वास छोड़ैत बजलाह—

- 'की करबै पाहुन। हम अपन पएर पर अपने कुरहरि मारैत छी तऽ लोक की करत। आबो लोक सभ के ज्ञान होइत आ सभागाछी अपन विशिष्टता कें पुनः प्राप्त करैक, तकरे कामना अछि। की हौ रामगोपाल?'

संभवतः रामगोपाल कका अपन बेरक प्रतीक्षा मे छलाह। नाम पुकार होइते व्याख्यानक मुद्रा मे आबि गेलाह।

- 'पाहुन जतेक नीक जकां बुझौलनि, तकर वर्णन केनाई मुश्किल। अपने ठीके कहैत छी भाई। लोक सभ के ज्ञान होयबाक चाही। अपन अद्‌भुत परंपरा के ऐना गर दबा कय माइर देला सँ कतेक नुकसान भऽ रहल अछि तकर हिसाब-किताब होयबाक चाही आ लोक सभ मे एकर चर्चा जरूरी छैक।

मिथिलांचलक गौरव सभ के ध्वस्त कऽ आखिर हम सभ बांचब कोना। भविष्य मे हमर परिचय की रहत। अपने के बुझल होयत जे मैथिल संस्कृति विश्व संस्कृति मे बेजोड़ अछि। मिथिलांचले मे सभ्यताक दिग्दर्शन भेल। पुराण-इतिहास उनटि लियऽ सभ मे मिथिलांचलक चर्चा भेटत। तकर आई ई स्थिति भऽ रहल छैक जे कालांतर मे एतेक समृद्ध संस्कृतिक केओ नाम लेबय वाला नहि रहत। अहि सभ बात पर चर्चा भेनाई आवश्यक छैक।

ई संतोषक गप्प अछि जे पढ़ाई-लिखाई मे अपन क्षेत्र एखनो सभ सँ आगां अछि। मुदा एहि सँ समाज के विशेष लाभ नहि भऽ रहल छैक। बौआ पढ़ि-लीखि कऽ परदेश चलि जायत छथि। पावनि-तिहार आर कुनू काज भेला पर गाम अबैत छथि। परदेश मे कमाइत छथि मुदा ओकर लाभ गाम के नहि भेटैत छैक, कियैक तऽ ओ अपन कैंचा या तऽ बैंक मे रखैत छथि अथवा ओकर निवेश बाहरे करैत छथि। तऽ हमरा कहू जे हुनक पढ़ाई-लिखाई पर भेल

खर्चक एकोटा पाई मिथिलांचल के भेटैत छैक?

तीस वर्ष-चालीस वर्ष काज-नौकरी कयलाक पश्चात ओ गाम दिस मुंह नहि करैत छथि। शहर मे फ्लैट कीनैत छथि अथवा घऽर बना लैत छथि। बिजली, पंखा, एयर कंडीशन हुनक जीवनक लेल जरूरी भऽ जाइत छनि। गाम पर डिबियाक प्रकाश हुनक स्वास्थ्यक लेल उचित नहि रहि जाइत छनि।

हमर कहब अछि जे गौंवा आ प्रवासी मैथिल केर बीच टूटल तार के जोड़नाई बड्ड जरूरी अछि। विशेष प्रयास हमरे सभ कें करय पड़त। क्षेत्र मे बिजलीक आपूर्ति सुनिश्चित करय पड़त, बाट ठीक कराबय पड़त। बिजलीक नियमित आपूर्ति आ बाट ठीक भेला सँ एहि क्षेत्र मे नियोजनक संभावना स्वमेव प्रगट होयत। धिया-पुता एहिठाम काज करताह। जे केओ बाहर जेताह, हुनक संबंध अपन गाम सँ बनल रहतनि।'

-'ई सभ कोना हेतैक?' छोटन शहर सँ गाम आयल छथि। गामे मे छोट-छिन रोजगार कऽ रहल छथि। रामगोपाल कका भाषण सँ खूब उत्साहित भऽ पुछलथिन।

रामगोपाल कका - 'ई हेतैक आ आई नहि तऽ काल्हि जरूर हेतैक, मुदा ओहिना नहि। ई बुझबै जे हम अपन दलान पर बैसल रहब आ केओ थारी मे परोसि कए हमरा भोजन कराओत - से नहि भऽ सकैत अछि। एहि केर लेल हमरा अहां के परिश्रम करय पड़त। सभ सँ पहिने तऽ जनजागरण जरूरी छैक। लोक के जगाबय पड़त। हुनका अपन अधिकार सँ परिचय कराबय पड़त। लोक के जागृत भेलाक पश्चात अहां अगां बढ़ि सकैत छी। ई कोनो एक व्यक्तिक काज नहि छैक। समूहक काज छैक। समाजक काज छैक।'

-'हम सभ वोट दैत छी। हमर सभक प्रतिनिधि विधानसभा-लोकसभा जाइत छथि। अपन काज करैत छथि आ जखन क्षेत्रक विकासक बात अबैत छैक तऽ सूति रहैत छथि। एहन जनप्रतिनिधि सँ नीक जनप्रतिनिधिहीन। एहेन जनप्रतिनिधिक हमरा आवश्यकता नहि छैक। एहि लेल जखन वोटक समय अबैक तऽ उम्मीदवार सभ सँ वचन लेबाक चाही। जितला उपरांत हुनका सँ कैफियत तलब करबाक चाही, जे अपने की सभ कहने छलहुं आ की कयलहुं। तखन हमर-अहांक आ एहि क्षेत्रक कल्याण होयत। जे लोकनि जनप्रतिनिधि बनि मलाई चाटबाक उद्देश्य रखैत छथि, तिनका कोनो कीमत पर बहिष्कार करबाक चाही। हम सभ पैघ लोकतंत्रक अंग छी आ लोकतंत्र मे 'लोक' सभ सँ बेसि ताकतवर होइत छैक। अपन शक्ति के पहचानब जरूरी अछि।'

ई कहि रामगोपाल कका चुप भेलाह। विश्वनाथ कका बैसारक समाप्ति करक घोषणा कयलनि आ औंघायल लोक सभ अपन-अपन घऽर दिस विदा भेलाह। सत्तन कान मे कहलक 'ओछाओन भेल अछि, आई छत पर सूतय पड़त।' हमहुं विदा भेलहुं। ppp

ÑÑÇÀÙØæ¿ÜàÑÑ

सांझ में होटल पहुंचलहुं तऽ देखलहुं जे रामआसरेजी समान बान्हि रहल छथि। समान मे दोकानक सौदा सेहो बुझायल। पुछलियनि-'कि एखने विदा होयब?'

-'एखन विलंब अछि। समान सभ ठीक कऽ रहल छी। सोचैत छी इंटरसिटी सँ चलि जायब। इंटरसिटी राति आठ बजे खुजतैक। एगोटा के टिकट आनय लेल पठौने छी।'

-'फेर कहिया आयब।'

-'हम तऽ अबिते रहैत छी। एहिठाम अयलाह पर अपने के फोन पर सूचना दऽ देब। अपने जमल रहू।'

-'अहांक संघर्ष गाथा सुनि हमर साहस कै गुणा बढ़ि गेल अछि। आब हम एहिठाम जमि सकैत छी।'

-'से जमब नहि कियैक? अधिकार बुझले सँ ओकर प्राप्तिक हेतु संघर्षक जीजिविषा जन्म लैत छैक। आ हम सभ कोनो परदेश मे नहि छी। कियो जौं एहि प्रांत सँ ओहि प्रांत

अयबाक-जयबाक के दोसर दृष्टि सँ देखैत छैक तऽ गलती ओकरे छैक। एहि प्रांतक संदर्भ लियऽ।

असमियाक संदर्भ मे एखनो धरि बहुत किछु नुकाएल अछि। जेना असमियाक व्याख्या। इतिहासक अध्ययन कएला सँ भेटति अछि जे एहि प्रांत मे किछु सौ वर्ष पूर्व धरि कियो असमिया नहि छल। एहि मे बोड़ो, डिमासा, कार्बी, कोच, अहोम, तिवा, मिसिंग, सोनोवाल, मरान, मटक, सूतिया, ब्राह्मण, शुद्र, कायस्थ, कलिता प्रभृति छलाह। यैह नहि बल्कि महापुरुष शंकरदेवक समय मे असम अथवा असमियाक कुनू चिन्ह धरि नहि छल। एहि अंचल के लेल कामरूप व्यवहार कएल गेल छल। शंकरदेव अपन रचना मे कतहु-कतहु अहोम राजाक उल्लेख कएने छथि, मुदा असम राज्यक उल्लेख कतहु नहि कयलनि। भारत देशक उल्लेख कतेको ठाम अछि। अहोम राजाक राजक सीमा कहियो एक नहि रहल। कहियो रंगपुर सँ कलियाबर तऽ कहियो रंगपुर सँ गुवाहाटी अथवा मनास धरि छल। एहू मे कतहु-कतहु भुयां, कोच, राजवंशी सभक छोट-छोट राज सेहो छलनि। अंग्रेजक अयलाक पश्चात अहम सँ असम भेल। एहिठाम रहय वाला असमिया भेल।'

कनेक सांस लैत रामआसरेजी फेर बजलाह—

– 'देखल जाय तऽ एहि अंचलक लोक सभक अपन-अपन भाषा छलनि। ताई-अहोम सभक भाषा ताई छलनि। बाद मे अहोम सभ एहि अंचलक भाषा के स्वीकार कऽ लेलनि। अहोम राजाक विश्वास छलनि जे स्वतंत्र अहोम राज के अटूट राखबाक लेल ब्रह्मपुत्र पार सँ संपर्क रखने बिना विकास संभव नहि छैक। यैह कारण छैक जे हिंदू पंडित आ मुसलमान कारीगर बजाओल गेलाह आ घऽर जमीन दऽ सम्मान कएल गेलाह।

भाषाक क्षेत्र में सेहो देखल जाओ जे अंग्रेज के अयलाह सँ पूर्व विभिन्न जनजातीय भाषाक संगे कामरूप मे कामरूपिया, ग्वालपाड़ा मे ग्वालपड़िया आ दरंग मे दरंगिया भाषा प्रचलित छल। ईसाई मिशनरी एहि क्षेत्र मे आबि शिवसागर के केंद्र बनौलक आ एहि अंचलक भाषा कें लिखित रूप देबाक प्रयास कयलक जे अन्य स्थानक लोक सभक वास्ते सेहो ग्रहण योग्य भेल। यैह भाषा असमियाक रूपे स्थापित भेल। नीक बात ई भेल जे एहि अंचलक विभिन्न जनजाति सभक लोक आपसी संवादक माध्यमक रूपे असमिया कें स्वीकार कयलक।

वस्तुत: असम एकटा एहन गुलदस्ता छैक जाहि मे विभिन्न गुण-सुगंध वाला फूल शोभायमान छैक। मुदा एहि प्राकृतिक स्वरूप कें विनष्ट करबाक लेल कतेको प्रयास कएल गेल।

असम मे विगत एक युग धरि चलल आंदोलन, प्रति आंदोलन सँ असमक समाज कें यथेष्ट शिक्षा भेटलनि। विदेशी भगाओ आंदोलनक प्रति आम असमियाक समर्थन छलैक आ एकरा असमियाक अस्तित्व रक्षाक आंदोलनक रूपे अभिहित कएल गेल छलैक, मुदा

आंदोलनक परिणाम भेलैक जे असमिया समाज खंड-खंड भऽ गेल। एहि आंदोलनकालक सृष्टि भूमिगत संगठन यद्यपि आब शक्तिहीन आ दिशाहीन भऽ गेल अछि, मुदा एकर क्रियाकलाप सभक दुष्परिणाम आबि रहल अछि। संगठन कें आब जनसाधारणक विश्वास प्राप्त नहि छैक। भूमिगत संगठनक संघर्ष मे अनेक मूल्यवान जीवन ब्रह्मपुत्र मे भासि गेल। असंख्य लोकक मेहनत सँ उपार्जित धन-संपत्ति नष्ट भऽ गेल। एहि समय असमिया समाजक नैतिक चरित्रक अध:पतन भऽ गेल। विगत आंदोलन के समर्थन मे के छलाह वा के नहि छलाह, ई आब विचारणीय प्रश्न नहि रहल। इतिहास मे से समग्र रूप सँ असमिया जनताक आंदोलनक रूपे स्थापित भऽ जायत आ आंदोलनक व्यर्थताक बोझ सभ कें वहन करय पड़तनि। हमहुं सभ कऽ रहल छी।

अहोमक शासनकाल मे असमिया लोक सभ मे एहन आत्मविश्वासक अभाव नहि छलैक। यैह कारण रहैक जे ई सभ संख्या बल मे कम रहितहुं प्रबल-प्रतापी मुगल शासक सँ संघर्ष करबा मे कुंठा रोध नहि कयलनि। एहि तरहक साहस कयला सँ सफलता सेहो भेटल रहनि। मुदा कालांतर मे आत्मविश्वास हेरा गेल।

भूमिगत संगठन जाहि स्वाधीनताक लेल संघर्ष कऽ रहल अछि से हजार वर्षक उपरांतो सफल नहि भऽ सकैत अछि। वास्तव मे हुनक ई उद्देश्य सेहो नहि छन्हि। एहि संघर्षक समर्थन करऽ वाला सभक धारणा अछि जे एहिठामक लोक आन प्रांतक लोक सभक संगे कुनू प्रतियोगिता मे पार नहि पाबि सकत। तैं एहन एकटा व्यवस्था बनाओल जाओ जाहि सँ एहिठामक लोक के आन प्रांतक लोक सभ संगे प्रतियोगिता कएने बिना हुनका सफलता भेट जान्हि। ई भेल हीन मानसिकता।

हीन भावना सँ ग्रस्त लोक सदिखन सहज बाटक खोज मे रहैत छथि। हुनक नहि आदर्श सँ कुनू मतलब रहैत छनि आ नहि कुनू सिद्धांत सँ। सिद्धांत आ आदर्शहीन व्यक्ति अपन महत्वाकांक्षाक समर्थन मे जे तर्क गढ़ैत अछि, वैह ओकर सिद्धांत आ आदर्श भऽ जाइत छैक। ओकरा दोसर बात बुझेबै तऽ ओ नहि बूझत।

तऽ अहीं कहू जे एहन नासमझ किछु लोक सभ सँ डेरा कऽ हम अपन अधिकार कियैक छोड़ब। एखन दुनिया भूमंडलीकरणक दिस जा रहल अछि, जाहि मे हमर सभक सनातन दर्शन 'वसुधैब कुटुम्बकम्'क प्रतिछवि स्पष्ट देखा रहल अछि। जाहि सँ सशस्त्र संघर्ष अर्थहीन भऽ गेल अछि। दुनिया मे आतंकवादक स्थिति की छैक से अहूं जनैत होयब। अहां जाहि ठाम रहैत छी तकर उन्नतिक संबंध मे चिंतन करु तऽ अपनो उन्नति होयत। प्रवास माय नहि तऽ मौसी जरूर थिक। एकर सेवाक फल मायक सेवा जकां भेटत। ओना प्रवास मे तऽ संघर्ष शाश्वत छैक। संघर्ष सँ कियो बांचि नहि सकैत अछि।

रामआसरेजीक टिकट आबि गेल छलनि। आब ओ ट्रेन पकड़क लेल तैयार होमय लगलथि।

कहलियनि–'तऽ आब अपने प्रस्थान करु आ हमहुं विदा होइत छी।'

– 'बेश। नमस्कार।'

– 'नमस्कार।'

हम होटल सँ बाहर निकललहुं तऽ अपने के एकटा अद्‌भुत ऊर्जा सँ भरल पौलहुं। प्रवास मे रहि रामआसरेजी कतेक ऊर्जा सँ भरल छथि। हमरा सभ सन लोकक लेल ओ प्रेरणा स्रोत छथि। बाट पर खूब भीड़-भाड़ छलैक। रिक्शा-कार-टेम्पो सभक अनवरत ध्वनि कोनो विशेष अपरिचित नहि लागि रहल छल। संगहि एम्हर-ओम्हर उज्जर प्रकाश फेंकैत मरकरी सभ सेहो नीक लागि रहल छल। लाठीवाला बिजली हमरा मित्रता करबाक लेल बजा रहल छल। ppp

ÑÑãñ´ÌaeçÜãÑÑ

भिनसर उठलहुं तऽ देखैत छी जे पाहुन सभ विदा भऽ रहल छथि। अधिकांश लोकनि अपन-अपन समान खोजि-खोजि कऽ एकत्र करबा मे व्यस्त छलाह। काज-तिहार मे अहिना होइत छैक। समान सभ राई-छित्ती भऽ जाइत छैक। किनको बच्चा के कपड़ा किनको मोटरी मे तऽ किनको गंजी-धोती चाड़ पर, बाड़ी मे। अहिना मे कपड़ा अदला-बदली भऽ जाइत छैक, तऽ छुटि जाइत छैक।

पाहुनो मे किछु पाहुन साकंछ रहैत छथि। अपन समान के संजोगि कऽ रखताह। तैं विदा होमय काल मे कुनू दिक्कत नहि होइत छनि। ठाकुर पीसा एहि श्रेणी के पाहुन छथि। किछु पाहुन अबिते समान सभ छीटय लगैत छथि। विदा होमय काल मे बड्ड परिश्रम कयलाक उपरांतो किछु नहि किछु अवस्से छुटि जाइत छनि। फेर कहियो अयबाक मौका लगैत छनि तऽ पुरनका वस्तु हाथ लागि जाइत छनि, मुदा फेर किछु छुटि जाइत छनि।

सौंसे घऽर मे विदाइक दृश्य छल। कियो नहा रहल छलाह, कियो समान सैंति रहल

छलाह तऽ कियो जलपान पर भिड़ल छलाह। काकी, हुनक बेटी आ काज करय वाली काज करैत-करैत अपस्यांत भेल छलीह। सभ गोटे के एके संगे जयबाक हड़बड़ी किएक भऽ गेलनि। ठाकुर पीसा कहलनि।

– 'छुट्‌टी समाप्त भऽ गेल। काल्हि पहुंचब-विश्राम करब आ प्रातः भेने ड्यूटी करब।'

– 'एतेक दिन एहिठाम अपने की कोदारि पारलहुं अछि जे जा कऽ विश्राम करब? बरु एक दिन एहिठाम रहि जाऊ। राति मे माछ खायब आ भोरे विदा भऽ जायब।' काली कका ठट्‌ठा करैत कहलथिन।

– 'अहूं बड्ड गजब करैत छी। माछ खा कऽ विदा कोना होयब।'

– 'से दिन निकलला पर विदा होयब तऽ कोनो दोष नहि लागत। कि यौ पुरहित?' काली कका पुरहित के उकसबति बजलथिन। पुरहित कथाक वास्ते आयल छलाह। बाबूजीक ईच्छा छलनि जे कथा दिने मे भऽ जाय। राति मे माछक भोज छैक तऽ पूजा नीक सँ नहि भऽ सकत।

पुरहित मुस्कियाइत बजलाह—

– 'हंसी ठट्‌ठा मे हमरा कियैक जोड़ैत छी। ओना जौं हमरा सँ पुछैत छी तऽ गाम-गामक व्यवहार भिन्न होइत छैक। कियो माछ देखिकऽ यात्रा करैत छथि तऽ कियो माछ खा कऽ। कियो नहि देखैत छथि आ नहि खाइत छथि। ठाकुरजी के गाम मे की चलैत छनि से वैह जनताह।'

– 'हिनक गाम मे लोक जेबी मे माछ धय कऽ यात्रा करैत छनि।' मौसी कहलथिन।

ओम्हर पीसा एहि वार्तालाप सँ निर्विकार अपन पेटी सैंतय मे लागल छलाह। मोनू के जयबाक ईच्छा नहि रहनि। मोनू ठाकुर पीसाक पुत्र। ओकरा गाछी सँ पकड़ि कऽ आनल गेल छल। आब ओ स्नान करय आ तैयार होमय मे लटारन्हि लगा रहल छलथि। एखन धरि दू तबड़ाक भेट गेल छलनि। संभवतः आरो लिखल छलनि। ओना मोनूक ई व्यवहार स्वाभाविक छलनि। शहर मे एतेक स्वतंत्रता कतय छैक। एहिठाम भरि दिन गाछिये-गाछी अथवा पोखरि मे नङ्टे नहायक विशेष आनंद छलैक। मोनूक ईच्छा छलनि गाम पर किछु दिन आरो रहल जाय। माय के एहि सभ सँ कुनू मतलब नहि छलनि। बापे कसाई।

जाहि पाहुनक गाम लऽग रहनि, से भोजन कऽ विदा हेताह। दूर जाय वाला पाहुन ठंडे-ठंडे निकलि जायथ तऽ नीक। ठाकुर पीसा अपन गाम नहि जयताह। सोझे शहर जयबाक छनि। एहिठाम सँ मधुबनी होइत दरभंगा धरि मैक्सी-बस सँ आ दरभंगा सँ ट्रेन पकड़ताह।

पीसा पेटी सरियबति हमरा दिस तकलाह—

– 'अपने कहिया विदा हेबई।'

– ‘सभ टा काज संपन्न भऽ गेलाक पश्चात।’

– ‘तखन घुरिआयल रहू। दस दिन आओर लागत।’

– ‘से की करबैक। आठ वर्षक बाद आयल छी। आई धरि तऽ काजे मे बीतत। पुरनका स्मृति सभ के ताजा करब। संयोग सँ आमक समय मे आयल छी। शहर मे तऽ आम पेटी मे देखैत छी। एहिठाम गाछ पर सँ चुबैत देखब।’

सांझ धरि पाहुन सभ निकलि गेलाह। बांचि गेलहुं मात्र हम सपरिवार। काकी बड्ड प्रसन्न छलीह। हल्लुक भेलनि। हंसी मे हमरा कहलथि–‘आई माछक संगे तिलकोर सेहो देबनि।’

अठारह दिन कोना बीति गेलैक से कनिको नहि बुझायल। श्राद्ध आ भोजक धमगज्जड़ि मे दिन बीतति गेलैक। आब कनेक फुरसत सँ गाम देखब। बाबूजीक आग्रह छलनि रूपौली जायब। बहिन बीमार छथिन। काज मे नहि आबि सकलीह तऽ गामे पर जा कऽ हुनका प्रणाम करक अछि। खेत–कलम घूमब। खेत मे तऽ एखन किछु नहि छैक। मुदा कलम मे आम खूब छैक।

आम खाइत आ गाम–गाम घूमैत आरो दस दिन निकलि गेल। आब लौटक चाही। बाबूजी भोरे विदा भेलाह। एम्हर हमहुं सभ तैयारी मे लागि गेलहुं। डेका के पुछलिएक–‘गाड़ी ठीक अछि की नहि।’

– ‘बिल्कुल ठीक अछि। कहिया निकलब।’

– ‘काल्हि भोर मे।’

ओहि दिन गाम सुन्न लागल। गामो पर जखन लोक जुटल रहैत छैक तखने नीक लगैत छैक। राति भरि धर–फर करैत रहलहुं। आब जाय पड़त। सांझे काली मंदिर जा कऽ दर्शन कऽ आयल छलहुं। तथापि बुझाइत छल जेना किछु छूटल जा रहल अछि। जे छूटि रहल अछि से मोने मे अछि। मुंह पर किन्नहु नहि आबि रहल अछि। एहि तरहक स्थिति भेल रहय, जखन पहिल बेर गाम छोड़ने छलहुं। शहरक आकर्षण सँ मोन पुलकित भऽ रहल छल, मुदा गाम छोड़बाक बाध्यता सँ केनादनि भऽ रहल छल। ताहि पर कका लाठीवाला बिजली देखबाक लेल कहि एकटा अद्‌भुत रोमांच भरि देने छलाह। शहर मे लाठीवाला बिजलीक कमी नहि छैक। लाठीवाला बिजली उज्जर प्रकाश फेंकैत छैक, मुदा ई चंद्रमाक प्रकाश नहि छैक। चंद्रमाक प्रकाश शीतलता प्रदान करैत छैक। ओकरा पाबऽ लेल समुद्र मे जुआरि उठैत छैक। मनुक्खक मोन सेहो व्यग्र भऽ जाइत छैक। मुदा लाठीवाला बिजलीक प्राप्तिक लेल फतिंगो प्राण उत्सर्ग नहि करैत अछि। ओकरो लट्‌टू, ढेबरी, डिबिया, लालटेनक पीयर प्रकाश चाही।

गाम सँ चललहुं तऽ कतेको गोटे जमा भऽ गेलाह विदा करबाक लेल। एक लेखें धरोहि लागि गेल। डेका गाड़ी स्टार्ट कैलक। कहलिएक जे काली स्थान जो। ओहिठाम चढ़ब। काली स्थान धरि खेते–खेते चललहुं। बच्चा सभ सेहो संगे छल। मामा गामक दुलार सँ अघायल।

काली स्थान मे भगवान के गोड़ लगलाक उपरांत बीसियो गोटे कें पएर छूबि प्रणाम कैलहुं आ गाड़ी मे बैसलहुं तऽ देखैत छी पूब दिसक आकाश कारी मेघ सँ भरल अछि। कका कहलनि–कनेक तेजी सँ निकलू। ई मेघ कखनो बरसि सकैत अछि। ppp

(âcBEL)